

रायबहादुर बुधसिहजी दुधेरिया.

जैनधर्मसिधुके आश्रयदाता

# जैनधर्मसिंधु.

यथामती सशोधन करके

श्रीपूज्याचार्य श्रीनरपतिचंद्र सूरीश्वर

जीकी आज्ञानुसार

रायबहादुर बाबु साहब बुधसिंघजीकी

सहायतासे

संग्रह और प्रकाश कर्त्ता.

यति मनसुखलाल नेमिचंद्रजीने

मुंबई नगरमें

निर्णयसागर प्रेसमें छापकर प्रसिद्ध किया

वीर सवत् २४३४ विक्रम सवत १९६४ सने १९०८

## मिलनेका पत्ता.

मुंवई.

यतिज्ञानचंद्रजी. ठि. पायधोणी श्रीशांतिनाथजी जैन-
मंदिर जैनपत्र ओफीस. ठि. कष्टमहाउस रोड. मुंवई.

सेठ. कस्तुरचंद नानचंद ठि' त्रांवाकांटा.

अहमदनगर.

सेठ वाडीलालहाथीचाई. नवी कापडमारकेट.

वालापुर.

श्रीजिनमंडली ओफीस. नवादेरासर.

# अर्पण पत्रिका.

## रायबहादूर बाबु साहब श्रीयुत बुधसिंघजी दुधेरिया.

जो कि अत्री मुर्शिदाबादांतर्गत अजिमगंजमें रहते है. इनोके आश्रयसें यह पुस्तक प्रकाशित हुवा इस लिए उक्त महोदयका संक्षिप्त जीवन वृत्तांत प्रकाशित करनेकी आवश्यकता देखतें है

बाबुसाहबके पूर्व पुरुषें हरजीमलजी दुधेरिया पहिले मारवाडशे मुर्शिदाबादमे व्यापारके लिए आय वसे थे हरजीमलके पुत्र सवाइसिघजी और तिनके कुलदीपक सुपुत्र हरखचदजी जो की अपने आश्रय दाता महोदयके पिता थे उन महोदयने व्यापार और जागिरदारीके व्योपार में कितनाक न्यायोपार्जित द्रव्य उपार्जन किया

बाबु साहेब हरखचदजी सने १८६२ में स्वर्गस्थ हुवे. जब उनको सर्वलोग परिपूर्ण श्रीमंत कहते थे और वो अच्छी नामंदारी धारण करतेथे. वे महोदय अपने पीछाडी रायबहादुर श्रीयुत बुधसिघजी और श्रीयुत बिसनसिघजी दुधेरिया दो सुपुत्रें रख गए थे.

यह दोनो सुपुत्रें अपने पिताके मरण समय लघु (बाल्यावस्थामे) थे उन समय अपने पिताकी लक्ष्मी और वणाजारी व्यापार उन दोनोके हाथमे आया यह दोनों महोदयें ज्यौं ज्यौं वढते गए त्यौं त्यौं ऐक्य और सलाह संपसे रहते थके द्वितीयाके चंद्रवत् अपना अभ्युदयमें और वलबुद्धी पराक्रममें वढते गए. राय बहादुर बुधसिंघजी विनयवान् धैर्यवान् विवेकी और मिलनसार व उद्योगी हुवे

रायवहादुर वाबु विसनसिंघजी वचपन सेंहि व्यापारी लाइनकी अद्भूत शक्ती धारक जिनोमें वुध्धी कला कुशलता, दृढता परिपूर्ण थी. सर्वजनोसे हाजिर जवावी और विशेपकर वहुत परिणाम दर्शी थे.

उनोने धीरधारका धंधा वढाया और कलकत्ता, सिराजगंज, माइमेनसींग, जंगीपोर, अजीमगंजमें वेङ्क खोली.

यह वेङ्कोंमें वेङ्करोके अथाग परिश्रमसे अथाग विश्वास आनेसें फतेहमंद रीतीसे कार्यवाही चलने लगी. रहते रहते जमीनदारो व जागीरदारोकों धनधीरनेका कार्य सिरु किया जिस्के परिणामसे दोनों महोदयें वडे जागीरदार होगए.

मुर्शीदावाद, माइमेनसींग, वीरभुम, नदीया, पडीकोट, पूर्णीया, दिनाजपुर, राजसाई, मालदा, भागलपुर, कुमका विगरह ग्रामोंकी जमीनके मालेक हुवे

दोनों वधु मात्र द्रव्य संपादान करनेमेंहि प्रवर्त्ते थे एसा नही परं उनके साथ उनोका पुण्यकर्ममेंभी प्रयत्न चालु था.

दीन दुःखी और हजारों गरव व लाचारोंकें लिए अन्नक्षेत्र स्थापन कीये. जिस्की कार्कींदी अभीभी झलाझल झलकती हे

## ( जैनमंदिरे, उपाश्रयें, धर्मस्थानेमें वहुत धन व्यय कीया जिनकी विगत )

प्रथमतः अपनी जन्मभूमी मुर्शीदावादमे श्रीचितामणजी, नेमिश्वरजी, श्रीशामलाजी, अष्टापदजी, दादाजीके मंदीरोंका जीर्णोध्धार कराया.

नेमीश्वरजीके मंदिरमें दो रत्नकी प्रतिमा हे और सिध्धचक्रजीका गट्टा हें सो भी उक्त महोदयने स्थापित किये है.

अजीमगंजसे ७ मील अंतरसे कासम वजारमे श्रीनेमिनाथजीका मंदिरकाभी जीर्णोध्धार कराया जिस्मे रत्नकी प्रतिमाजी विशेप दर्शनके लायक है

रायबहाछुरजीकी सखावत इकिले बंगालेमेंहीं नही हे परं यत्र यत्र उनोको आवश्यकीय लगा उहां धर्म धन खर्चनेमेंज्ञी पीठी पानी ज्ञरी नही.

सुरत पासके कतार गामके जीर्णोद्धारके वास्तेज्ञी बहुत प्रशंसा पात्र मदद किई

क्त्रीयकुंम और सुविधिनाथ ज्ञगवंतके चवन, जन्म, ज्ञान, कल्याणकवाले काकंदीनगरीके तीर्थमे शीखरबंधी मंदीर बनाये.

महावीर स्वामीकी निर्वाणज्ञूमी पावापुरीमें और जहा वीस तीर्थंकर मोक्ष पधारेथे एसे श्रीसमेत शिखरजी तीर्थमें जानेके स्टेसन गरेमीमेज्ञी मंदिरजी बनाया

जगीपुरमेंज्ञी नया मंदीर बनाया जाता हे. और मारवाम, राजपुताना, अजीमगंज, शीखरजी, पावापुरी, काकंदी, राणी-गाम, आबुराज, उपरांत मुंबइमेंज्ञी जैन यात्रालुयोको आश्रय-दायी धर्मशालायें उक्त महोदयकी फलाफल अचल कीर्ति स्थंज्ञ रूप सुशोज्ञित हे

तीर्थाधिराज श्रीशत्रुंजय तीर्थकी तलहटीमें सदाव्रत दीया जाता हे और सिद्धाचलजी, तलाजा, वला, प्रमुख कीतनेहि स्थानोंपर उक्त महोदयके नामकी जैनपाठशालायें स्थापित होके ज्ञानवृद्धीका उद्योगज्ञी सिरु किया गया हे

तदुपरांत उक्त महोदयने श्रीसिद्धाचलजी, पावापुरी, समेत शिखरजी, अयोध्याजी विगेरह स्थानोपर तीर्थयात्रा लेजानेका श्रीसघज्ञी निकालके संघवी तिलकज्ञी करायेथे

उक्त महोदय एसे पुण्य प्रतापी हे की जिनकी संपूर्ण प्रशंसा लिखनेमें कलमकी ताकत नही हे.

उक्त महोदयने १९०४ में बमोदे वाली तीसरी जैन श्वेतांबर कौनफरन्सके प्रमुख होके समस्त जैनोमे एक अग्रेसरपद लियाथा

उक्त महोदयके धार्मिक और सार्वजनीक हितकार्यकी उदार

वृत्तिकी प्रतिष्टा विजलीकी माफक प्रकाशक होती रही जिनका प्रत्यक्ष दृष्टांत यहहे की सने १८८८ ता २ जानेवारीके रोज वंगालाके सरकारने अत्यंत प्रसन्न चित्त होके रायवहादुरका मानवंता खिताव समर्पित कीया और मुर्शीदावाद लालवागकी कचेरीमें ओनररी मेजीष्ट्रेटका मानवंता होद्दा इनायत किया और अपनी वकतावर मर्हुम श्रीमती महाराणीकी कायमरु जुबीलीकि यादगारीके प्रसंगमे ता. २० मी जुन स. १८९७ के रोज वादशाही मानका " खरीता " दीया गया था. तैसेंहिं ता. १ ली जानेवारी स १९०३ के रोज अपने नामदार शेहेनशाह सातवे एडवरने हिंदुस्थानकी वादशाही स्वीकारी जिस्की यादगारीमें देहली दरवारके भव्य समारंभके समय रायवहादुरकी उदारता और अपने लोकोपयोगी सार्वजनीक हितकार्यकी पीछानमें दुसरी वार " खरीत्ता " दिया गया था. यह राजमान होद्देकोभी अछी तोरसें दीपातेहे.

इस दरम्यान सने १८७७ मे दोनो भाइयोने सलाह संपसे अपना अपना व्यापार भिन्नभिन्न चलाना सिरु किया हे परं जमीन जागीरोंका हिस्सा ज्योका त्यों रक्खा हे.

यद्यपि व्यापारादि कार्य भिन्नथे तथापि पारस्परीय सलाह संपसें अभिन्नता समानहि प्रवर्तनथा

सने १८९४ मे रायवहादुर वावु विसनचंदजी अपनी पीछे १४ वर्षकी उमरके राजा विजयसिंघजी नामक कुमारको छोडके यह फानी दुनियाको छोड गएथे

श्रीयुत वावु विसनचंदजीके गएवाद अपने छोटे भतीजे और उनकी वडी दोलत समालनेका और जोखमदारीका कार्य उक्त महोदयके सिरपर आय पडाथा

कायदेकी रीतसेंभी मुर्शीदावाद जिल्ले जजकी कोर्टसेंभीउक्त

महोदयही राजा विजयसिंघजी और उनकी दोलतके रक्षक निमाये गएथे.

उक्त महोदयने अपनी बहादुरी और चालाकीसे उस काममें अपनी फर्ज बहुतहि अच्छी तरहसे बजायके उनकी ऋद्धीमें अधिकता करी और राजा विजयसिंघजीकों इंग्लिश, बंगाली, जैनधर्म प्रमुखकी अच्छी केलवणी देके आगे बढाये.

बाबु विजयसिंघजीकों सने १९०० मे ता. २२ डीसंबरके रोज लायक उमरवान होनेसे उनकी मिलकतका कबजा सूपरत कर दीया.

अच्छी जैसी आशाथी वेसेहि बाबु विजयसिंघजी एक युवक बुध्धीमान् पराक्रमी पुरुष हुए

बाबु विजयसिंघजीका स्वभाव उनके पिताके माफक सद्गुणी व परोपकारी और धर्मकार्यमेभी बहुत सतत प्रयत्नशील हुवा

उपरोक्त दोनो महोदयोंने पुण्यानुबंधी प्राग्भार पुण्यके उदयसे जो जो आवश्यकीय कार्य किये है जिनका पूरेपुरा वर्णन करनेमें हमारी कलमको पूरे तोरके शब्दकोश देखनेका अवसर देखना पडता है.

हमारे लोंके गच्छके श्रीमंत श्रावक गणमे देशणोकवाले रायबहादुर चादमलजी ढढा, रींयावाले राय सेठजी चादमलजी, अजमेरवाले रायबाहादुर सेठजी शोभागमलजी ढढा, जयपुरवाले राजमान्य सेठजी लदमीचंदजी व गुलाबचंदजी ढढा, एम.ए. रायबहादुर गणपतसिंघजी दुगड, रायबहादुर महाराज बहादुर सिंघजी दुगड, रायबहादुर नरपतसिंघजी दुगड, राय लक्ष्मीपति सिंघजी छत्रसिंघजी दुगड, रायबहादुर शताबचंदजी नाहार विगरह विगरह पुण्यवंतोने यद्यपि अनेकानेक धार्मिक व्यवहारीक कार्यों करके जैन धर्मको अनेकवार दीपाया हे विशेषकर बाबु लक्ष्मीपति सिंघजीनेभी अनेकानेक स्थानोंपर जिन मंदिर बन-

वाये और रायबहाडुर श्रीधनपतसिंघजीने तो श्रीसिद्धाचलजीकी तलहट्टीपर तीर्थनायककी स्थापना समय अंजनशलाका करवायके लोंकेगच्छपर आय पड़ता अपूजेंरोंका आक्षेप दूर कराय दियाथा जिनसें इन महोंदयोंका इस अवसरपर उपकार मानना दुरस्त धारते है उपर लिखें महाशयोने यद्यपि लौंके गच्छकों शोभाया पर रायबहाडुर श्रीमंत महोदय श्रीबुधसिंघजी डुधेरियाने तो अनेक तीर्थस्थानोपर अपने पुण्यकर्मोपार्जित न्याय लक्ष्मीको सफल करनेमे अत्यतहि अगवानी करी है इतनाहिं नहि पर लोंके गच्छवाले ढूंढक हैं एसा जो आरोप था उनकों परास्त कर जैन धर्मको अत्यत दीप्यमान करश्रीसंघमे ( तीसरी कोन्फरन्समें ) अग्रणीय पद धारण कीया इत्यादि इत्यादि कौटिक गुणगण संपन्न प्राग्भार पुण्यवंत सेठजी रायबहाडुर श्रीबुधसिंघजी डुधेरियाकेहि हस्तकमलमे यह अनेकानेक जनमनानंद प्रद यह ग्रथ समर्पण कर महोदयके अचल कीर्ति स्थंभेक साथ इनकोभी अचल कीर्तिवंत करते हैं जिनके वांचन मनन श्रवण कर अनेकानेक भव्य सत्वोंकों अनंतानंद अक्षय ज्ञानपदकी प्राप्ति हो यह हमारी अभीष्टार्थ सिद्धी है तथास्तु.



---

## जाहिर खबर

# ॥ जैनधर्मसिंधु. ॥

## ॥ श्रीश्रावकस्य पंचप्रतिक्रमणादि सूत्राणि ॥

### ॥ १ ॥ प्रथमनवकार पंचमंगलरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं॥१॥नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सवपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सवेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥

### ॥ २ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥पंचिंदिअ संवरणो ॥ तह नवविह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महवय जुत्तो॥ पंचविहायार पालणसमत्थो ॥ पंच समिउ तिगुत्तो॥ छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥२॥ इति ॥२॥

### ॥ ३ ॥ अथ खमासमण ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं॥जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥३॥

॥४॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृछा ॥

॥ इछकारि सुहराइ सुहदेवसी ॥ सुख तप शरीर निराबाध ॥ सुख संजम यात्रा निर्वहो छोजी ॥ स्वामी शाता छेजी ॥ जात पाणीनो लाज देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह जगवन् ॥ इरियावहियंपडिक्कमामि ॥ इछं इछामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अनिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया गणाउंगणं संकामिया जीवियाउं ववरोविया ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥५॥

॥ ६ ॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥पायछित्तकरणेणं॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं

कम्माणं ॥ निग्घायणठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंन्नाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं न्नमलिए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं॥सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहि दिठिसंचालेहि ॥२ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अन्नग्गो अविराहिउ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो॥३॥ जाव अरिहंताणं न्नगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरेजिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ संन्नव मन्निणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं

च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं ॥ पासं तह वध्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ ॥ विहूय रयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिथ्थयरामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जेए लोगस्सउत्तमासिध्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वर गंभीरा ॥ सिध्धा सिध्धिं मम दिसंतु ॥ ६ ॥ सव्वलोए० ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ए ॥ अथ सामायिकनुं पच्चख्काण ॥

॥ करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चख्कामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ॥ न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते पम्क्किमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥

॥ १० ॥ अथ सामायिक पारवानुं ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं ॥ सामाइअ जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअंमि उ कए ॥ स

मणो इव सावर्ज हवइ जम्हा ॥ एएण कारणे
णं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायि
क विधिं लीधुं विधिं पारिउं ॥ विधि करतां जे
कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन
कायाये करी ॥ मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥१०॥

॥११॥अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् ॥ चैत्यवंद
न करुं ॥ इछं ॥ जगचिंतामणि जगनाह ॥ जग
गुरु जगरस्कण ॥ जगबंधव जगसछवाह॥जग
भाव विअस्कण ॥ अठावय संठविअ ॥ रुव
कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर ॥ जयं
तु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं क
म्मभूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्त
रिसय ॥ जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव को
डिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्म
इ ॥ संपइ जिणवरवीसमुणि ॥ बिहुं कोडिहि
वरनाण॥समणह कोडि सहस दुअ ॥ थुणि जि
अनिच्च विहाणि॥२॥जयउ सामी जयउ सामी॥
रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित पहु नेमिजिण ॥ जयउ
वीर सच्चउरि मंमण ॥ भरुअछहिं मुणिसुव्वय॥

मुहरिपास डुह डुरिअखंमणा ॥ अवर विदेहिं तिब्यरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ ती आणागय संपइअ ॥ वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा ॥ लक्का छप्पन्न अठकोडि ॐ ॥ बत्तीसबासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस कोमि सयाइं ॥ कोमी बायाल लक्ख अमवन्ना ॥ बत्तीस सहस असिआइं ॥ सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिब्ं ॥ सग्गे पायालि मा णुसे लोए ॥ जाइं जिण विंबाइं ॥ ताइं सबा इं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ अथ नमुत्तुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्तुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तिब्यराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसोत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंमरी आणं, पुरिसवरगंधहबीणं ॥ ३ ॥ लोगोत्तमा णं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपई वाणं, लोगपजो अगराणं ॥ ४ ॥ अजयदया णं, चक्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं,

बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिया णं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवर नाणदंसणधराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरक य मवावाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नाम धेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअ न याणं ॥९॥ जेअ अईआ जेअ सिद्धा ॥ जेअ नवि स्संति णागए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा॥ सबे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥१४॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरि अलोएअ ॥ सबाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तब संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥१५॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जावंत केवि साहू ॥ नरहेरवय महाविदे हे अ ॥ सबेसिं तेसि पणउ ॥ तिविहेण तिदं ड विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

॥१६॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः॥ इति ॥ १६ ॥

॥१७॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलक ल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमा री डुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर ति रिएसुवि जीवा ॥ पावंती न डुक्ख दोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस ॥ भत्तिप्नरनिप्भिरे णहिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥१८॥ अथ जयवीअराय

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह पन्नावउ भयवं ॥ भवनिव्वेउ मग्गा ॥ णु सारि आ इठ फलसिद्धि ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाउ ॥

गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो
तव्वयण ॥ सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ वारि
जइ जइवि निआण ॥ बंधणं वीअराय तुह
समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ भवे भवे तुम्ह
चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खउ कम्मक्खउ ॥ स
माहि मरणं च बोहिलाभो अ ॥ संपज्जउ मह
एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व
मंगलमांगल्यं ॥ सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं
सर्वधर्माणां ॥ जैनं जयति शासनम् ॥५॥

॥ १९ ॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं
॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ।
सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहि
लाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥
सद्धाए मेहाए धीईए ॥धारणाए अणुप्पेहाए ।
वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं॥३॥ [illegible]

॥ २० ॥ अथ कल्लाणकंदं ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं ॥ संतिं तओ
नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं
॥ भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥

सारसमुद्दपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीणवि सालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वर जाणकप्पं॥ पणासिया सेस कुवाइदप्पं ॥ मयं जिणाणं स रणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजग प्पहाणं॥३॥ कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना ॥ सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था ॥ सुहाय साअम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥

॥ २१ ॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्याविभोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहृतरस,भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति, श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहत पद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धि

मद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञे यभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहम खिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योम नीलद्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं, मत्तं घं टारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आ रूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः काम रूपी, यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरजि नचतुर्दशीस्तुतिः ॥ २१ ॥

॥ अथ संसारदावानी स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधूली हरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसारसीरं ॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन ॥ चूलाविलोलकमलावलि मालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहि तानि ॥ कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं ॥ जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चू लावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ॥ सारं वी रागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमू

लालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला॥ ऊंकारारावसारामलदलकमलागारभूमिनिवासे॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे ॥ वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥२३॥ अथ पुक्करवरदी ॥

॥ पुक्करवरदीवढ्ढे ॥ धायइसंमे अ जंबुदीवे अ ॥ भरहे रवय विदेहे ॥ धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसण, स्स ॥ सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे ॥ पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरणसोगपणासणस्स ॥ कल्लाण पुक्कलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेभोपयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सब्भुअ भावच्चिए ॥ लोगो जब पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं ॥ धम्मो वढ्ढउ सासवउ, विजयउ, धम्मुत्तरं वढ्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवउ केरमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥

॥२४॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं, बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगया णं ॥ लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ तारेइ नरंव नारिंवा ॥३॥ उजिंत सेल सिहरे, दिस्का नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्क वट्टिं,अरिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दसदो य, वंदिया जिणवरा चउब्बीसं ॥ परमठ निठि अठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति२४

॥२५॥ अथ वेयावच्चं गराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहि गराणं ॥ इति ॥ २५ ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नछ० ॥

॥२६॥ अथ नगवानादि वंदन ॥

॥ नगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥२७॥ अथ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ॥ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥ इच्छं सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ ॥ दुब्भासिअ दुच्चिठिअ ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥

॥२८॥ अथ इच्छामि ठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो दुज्झाउ ॥ दुव्विचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ असावगपाउग्गो ॥ नाणेतह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए समाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं॥चउन्हं कसायणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गुणव्वयाणं ॥ चउन्हं सिक्खावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २८ ॥

॥२९॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमित्ह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे

उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अछ तडुन्न ए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकि अ निकंखिअ, निवितिगिछा अमूढ दिठीअ॥ उववूह थिरीकरणे, वछल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ॥ एस चारित्तायारो, अठविहो होइ ना यवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे, सप्भितरबा हिरे कुसलदिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, ना यबो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअरि या, वित्ती संखेवणं रसचाउ ॥ कायकिलेसो संली, ण याय बझो तवो होई ॥ ६ ॥ पाय छित्तं विणउ, वेयावचं तहेव सप्काउ ॥ झाणं उ स्सग्गो विय, अप्भितरउ तवो होई ॥७॥ अण गूहिअ बल विरिउ, पडिक्कमइ जो जुहुत्त मा उत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायबो वीरिआया रो ॥ ८ ॥ इति ॥ २९ ॥

॥३०॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं, जावणि जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मि उग्ग हं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खम

णिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुजे ण जे, दिवसो वइक्कंतो जत्ता जे ॥ जवणिज्जं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिआए वइक्कमं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मणडुक्कडाए वयडुक्कडए ॥ कायडुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोजा ए, सवकालिआए ॥ सव मिछोवयाराए, सवध म्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआ रो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ बीजीवारने वांदणे आवसिआए ए पद न कहेवुं अने रात्रियें राइउवइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासी वइक्कंतो, पखीयें पक्खो वइक्कंतो संवछरीयें संवछरो वइक्कंतो ॥ एवी रीतें पाठ कहेवो ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ अथ देवसिअं अलोउं ॥

॥ इछाकारेणसंदिसह जगवन्देवसिअं आलोउं इछं ॥ आलोएमि जोमे०॥ इति ॥ ३१ ॥

॥३२॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंदिय॥बे लाख तेंदिय ॥ बे लाख चौरिंदिय॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंदिय ॥ चौद लाख मनुष्य ॥ एवं कारे चौराशीलाख जीवायोनिमांहि, माहारे जीवें जे कोइजीव हण्यो होय,हणाव्यो होय,ह णता प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सवेहुं मनेवचने कायायें करीतस्स मिछामि डुक्कडं ॥इति॥ ३२ ॥

॥३३॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद त्री जें अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कल ह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमें पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पा

पस्थानमांहे, म्हारे जीवें जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवता प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥३४॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ डुचिंतिअ, डुप्भासी अ डुच्चिठिअ ॥ इछाकारेण संदिसह नगवन् इछं० ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥३५॥ अथ श्रावकवंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सव्व सिद्धे, धम्मायरिएअ सव्व साहूअ ॥ इछामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइ आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्तेअ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ डुविहेपरिग्गहंम्मि, सावज्जे बहुविहेअ आरंने ॥ कारावणेअ करणे,पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसठेहिं॥रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणानोगे ॥ अनिउंगेअ निउंगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख वि

गिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्त
स्स इआरे, पम्किमे० ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे,
पयणे अ पयावणेय जे दोसा ॥ अत्तठाय पर
ठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव्व
याणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिक्खा
णं च चउण्ह, पडिक्कमे० ॥८॥ पढमे अणुव्वयं
मि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ
मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंध
छविछेए, अइ भारे भत्त पाण वुछेए ॥ पढम व
यस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्व
यंमि, परिथूलगअलिवयणविरईउ ॥ आ
यरिअमप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे
अ ॥ बीय वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरणविरईउ॥
आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं ॥
॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध ग
मणे अ ॥ कूडतूल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥१४॥
चउछे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ
॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इछ पमायप्पसंगेणं

॥ १५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्क मे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि आयरि अ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिछेए, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सु वन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि,प डिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे, दिसा सु उड्ढं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसं मिअ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्लेअ ॥ उवभोगे परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चि त्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इं गाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेवय दंत, लक्ख रस केस विसविस यं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछ णं च दवदाणं ॥ सरदह तलाय सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंत ग, तणकठे मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणुवट्टण वन्नग, वि

लेवणे सद्दरूव रस गंधे ॥ वज्ञासणआजर
णे, पडिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि
अहिगरण जोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणठाए,
तइअंमि गुणवए निंदे ॥२६॥ तिविहे डुप्पणि
हाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ
वितह कए, पढमे सिरकावए निंदे ॥ २७ ॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलरकेवे ॥
देसावगासिअंमि, वीए सिरकावए निंदे ॥२८॥
संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव जोयणा
जोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिरकाव
ए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निरिकवणे, पिहिणे
ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कमदाणे, चउठे
सिरकावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सुअ डुहिए
सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव
दोसेणव, तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहू
सु संविभागो, न कर्ज तव चरणकरणजुत्तेसु ॥
संते फासु अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि
॥ ३२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ
आसंसपउंगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मक
हुज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइणस्स, पडि

क्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअ
स्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय
सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्ती
सुअ समिईसुअ, जो अइआरो अ तं निंदे
॥ ३५ ॥ सम्मद्दिठी जीवो, जइ विहु पावं समा
यरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ वंधो, जेण न निंद
धसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहुसपम्किमणं, सप्प
रिआवं सउत्तरगुणं च॥ खिप्पं उवसामेइ वाहि
व सुसिरिकर्ज विजों ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ
गयं, मंत मूल विसरया ॥ विजा हणंति मंते
हिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३० ॥ एवं अठविहं
कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोअंतो अ
निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३ए ॥ कय
पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुस
गासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव
भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावउ
जइवि वहुरउ होइ ॥ डुरकाण मंत किरिअं,
काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा
वहुविहा, नयसंभरिआ पम्किमणकाले ॥ मूल
गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि॥४२॥

तस्स धम्मस केवलि पन्नत्तस्स ॥ अब्भुठिर्उमि
आरा, हणाए विरर्उमि विराहणाए ॥ तिविहेण
पम्किंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावं
ति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू०
॥ ४५ ॥ चिरसंचिय पाव पणासणीइ, नवसय
सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय
कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल
मरिहंता सिध्दा साहू सुअं च धम्मो अ॥सम्म
दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥प
म्सिसिध्दाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्किम
णं ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए
अ ॥ ४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमं
तु मे ॥ मित्ती मे सव्वनूएसु, वेरं मज्जं न केणइ
॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहि
अ डुगंठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंतो, वंदा
मि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ अथ अब्भुठिर्उ ॥

॥ इच्छाकरेण संदिसह जगवन्, अब्भुठि
र्उमि, अब्भिंतर देवसिअंखामेउं ॥ इच्छं खामेमि
देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं ॥ न

त्ते पाणे विणए वेआवच्चे, आलावे संलावे उ च्चासणे ॥ समासणे अंतरज्ञासाए, उवरिज्ञासाए जं किंचि ॥ मज्ज विणय परीहिणं, सुहुमं वा बायरं वा ॥ तुम्नेजाणह, अहं न याणामि॥ तस्स मिह्लामि डुक्कमं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवद्याए ॥

॥ आयरिअ उवद्याए, सीसे साहम्मिए कुलगणेअ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, जगवउ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीव रासिस्स, जावउ धम्मो निहिअ निअचित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्सअहयंपि ॥३॥

॥३७॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इह्लामो अणुसहिं, नमो खमासमणाणं ॥ नमोर्हत्० ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुत्तीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः

॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोजतः ॥ सशुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

॥३ए॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरम् ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ए ॥

॥४०॥ अथ सूत्रदेवक्षेत्रदेव स्तुतिः ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअदेवया भगवई, नाणा वरणीअ कम्म संघायं॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती॥१॥

॥४१॥ अथ खित्तदेवयाए करेमि० ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥ साहंति मुरकमग्गं, सा देवी हरउ उरिआई ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥४२॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ ॥१॥ इति ॥ ४२॥

॥४३॥ अथ भुवणदेवयादिस्तुति ॥

॥ भुवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥४४॥ अथ ज्ञानादिगुणयुतानां ॥

॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संयमरतानां ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥४५॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु दीव मुसदेसु, पन्नरसु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केविसाहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गह धारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मच्छएण वंदामि ॥ १ ॥इति॥४५॥

॥ ४६ ॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निजंवि गतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥४७॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांता शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ ३ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो ज्ञगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिक संपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडुरितौघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहज्ञूतपिशा, च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ ज्ञवतु नमस्ते ज्ञ

गवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपरा
जिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥
सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे
॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे
जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्ति
निर्वाणजननि सत्त्वानाम् ॥ अभयप्रदाननिर
ते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां
जंतूनां शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्यग्
दृष्टीनां धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥
जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जग
ति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविष
विषधर, दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः ॥ राक्ष
सरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु
कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्व
स्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति
शिवशां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जना
नाम् ॥ ॐ मिति नमो नमो ह्रौं, ह्रीं ह्रूं ह्रः ॥
यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्ना

माद्दर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवि ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५॥ इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिज्ञयविनाशी, शांत्यादिक रश्च ज्ञक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा शृणोति जावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १७ ॥ सर्वमंगलमांगब्याम्, सर्वकल्यालकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १ए ॥ ॥ इति श्री लघुशांतिस्तवः ॥ ४७ ॥

॥ ४७ ॥ अथ श्री चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लूल्लुरणु, डुज्जय मयण वाणु मुसुमूरण ॥ सरस पिअंगु वन्नुगयगामिउ, जयउ पासु ज्रुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कांति कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणि मणि किरणालिद्धउ ॥ नं नव जलहर तमिल्लय लंछिउ, सो जिणु पासु पयछउ वंछिउ ॥ २ ॥ इति चउक्कसाय ॥ ४७ ॥

॥ ४ए ॥ अथ श्री जरहेसरनी सद्याय ॥

॥ जरहेसर बाहुबली, अज्ञयकुमारो अ ढं
ढण कुमारो ॥ सिरिज अणियाउत्तो, अइमुत्तो
नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिजद्दो, वयर
रिसी नंदिसेण सीहगिरि ॥ कयवन्नो अ सुको
सल, पुंमरिज केसि करकंमू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल
सुदंसण, साल महासाल सालिजद्दो अ ॥ ज
द्दो दसन्नजद्दो, पसन्नचंदो अ जसजद्दो ॥ ३ ॥
जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकु
मालो ॥ धनोइलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो आ बाहु
मुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसु
हत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, प
ज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पजवो विन्हुकुमारो
अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कुरगमू अ
सिज्जंजव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महा स
त्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं नाम
ग्गहणे पावपबंधा विलयंजंति ॥ ७ ॥ सुलसा
चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ न
मयासुंदरी सीया, नंदा जद्दा सुजद्दा य ॥ ८ ॥
राइमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरी दे

वी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पन्नावई चिल्लणा देवी ॥ ए ॥ बंनी सुंदरी रुप्पिणि, रेवई कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारिणी, कलाव ई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पजमावई य गोरी, गं धारी लक्कमणा सुसीमा य ॥ जंवूवइ सच्चना मा, रुप्पिणि कन्हठ महिसीर्ज ॥ ११ ॥ जक्का य जक्कदिन्ना, नूआ तह चेवनूअदिन्ना य ॥ सेणा वेणा रेणा, नयणीर्ज थूलिनद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासइर्ज, जयंति अकलंकसीलकलि आर्ज ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहु अणे सयले ॥ १३ ॥ ॥ इति सता सतीयोनी सद्याय ॥ ४ए ॥

॥ ५० ॥ अथ श्री मन्हजिणाणं सद्याय ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं, मिठं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ ढव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ नावो अ ॥ सकाय नमुक्कारो, परोवया रो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिनथूणि णं, गुरुथुअ साहम्मिआणा वच्छ्लं ॥ ववहार स्स य सुद्धी, रहजुत्ता तिठजुत्ता य ॥ ३ ॥ उव

सम विवेक संवर, ज्ञासासमिई छजीव करुणा य ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहु मानो, पुत्थय लिहणं पत्नावणा तिच्छे ॥ सद्धाण किच्च मेअं नि च्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ अथ श्री तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदु करजोड्य, जिनवरना मे मंगल कोड्य ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ बीजे ला ख अठाविश कह्यां, त्रीजे बार लाख सर्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अम लख धार, पांचमे वंदु लाख ज चार, ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ ह जार, नव दसमे वंदु शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणशे सार, नवग्रैवेयके त्रणशे अढा र ॥ पांच अणुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेविश सा र, जिनवर नुवन तणो अधिकार ॥ लांबां शो जोजन विस्तार, पचास उंचां बोहोंतेर धार ॥ ॥ ५ ॥ एकशो एंशी बिंब परिमाण, सन्नासहि

त एक चैत्ये जाण ॥ शो कोम्ह बावन कोम्ह स
आल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सा
तशें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमु
त्रण काल ॥ सात कोमि ने बोहोतेर लाख ॥
जुवनपतिमां देवल जांख ॥ ७ ॥ एकशो एं
शी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण
॥ तेरशे कोम्ह नेव्याशी कोम्ह, साठ लाख वंदूं
कर जोमि ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने उंगणसाठ, ति
र्छलोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं
हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥
व्यंतर जोतिषिमां वली जेह शाश्वता जिनवर
वंडुं तेह ॥ रुषन्न चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान
नामे गुणश्रेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदूं जि
न वीश, अष्टापद वंडु चोवीश ॥ विमलाचल
ने गढ गिरनार, आबु ऊपर जिनवर जुहारा
॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री
अजित जुहार ॥ अतरीक वरकाणो पास, जीरा
वलो ने थंन्नण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पा
टण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहर
मान वंडु जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशि

दीस ॥ १ ३॥ अढीद्वीपमां जे अणगार, अ
ढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सु
मिती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥
बाह्य अभिंतर तप उजमाल, ते मुनि वंडं गु
णमणि माल॥नित नित ऊठी कीर्त्ति करूं,जीव
कहे नवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥५२॥ अथ श्री सकलार्हत् ॥

॥ सकलार्हत्प्रतिष्टान, मधिष्ठानं शिवश्रियः
॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान, मार्हत्यं प्रणिदध्म
हे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यनावैः, पुनतस्त्रिजगज्ज
नं ॥ क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, न्नर्हतः समुपास्महे
॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरि
ग्रहम् ॥ आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषनस्वामिनं
स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितं विश्व, कमलाकर
नास्करम् ॥ अम्लानकेवलादर्श, संक्रांतजगतं
स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वनव्यजनाराम, कुल्यातुल्या
जयंतु ताः ॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंनवज
गत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांतमतांनोधि, समुल्लास
नचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, नगवानन्निनंद
नः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिन

खावलिः ॥ भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिम तानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासः पुष्णंतु वः श्रियम् ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांघ्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघगगनाभोगभास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ॥ अचिंत्यमाहात्म्यनिधिःसुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतुनामगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूत, तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियां ॥१६॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,

मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥ चतुर्द्धा धर्मदेष्टारं, ध
र्म्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्यो
त्स्ना, निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः
शान्त्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्री
कुंथुनाथो भगवान्, सनाथोतिशयर्द्धिभिः ॥ सु
रासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥
अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ॥ चतु
र्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम् ॥ कर्म्मद्रून्मू
लनेहस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥ २१ ॥ जग
न्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमम् ॥ मुनिसुव्र
तनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥२२॥ लुठंतो
नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणम् ॥ वारिप्लु
वाइव नमेः, पांतु पादनखांशवः ॥२३॥ यदुवंश
समुद्रेंदुः कर्म्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भ
गवान्, भूयाद्बोऽरिष्टनाशनः ॥२४॥ कमठे धर
णींद्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यम
नोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्री
मते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानं
दसरोराज, मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृता

पराधेपि जने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पार्द्र
योर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥ जयति वि
जितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ॥
विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिजुवनचुमामणिर्जगवा
न् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं
बुधाः संश्रिताः, वीरेणाभिहतः स्वकर्मनि
चयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्र
वृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो, वीरे श्रीधृति
कीर्त्तिकांतिनिचयः श्रीवीरजद्रं दिश ॥ २९ ॥
अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरजुवन
गतानांदिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां
देवराजार्चितानां, जिनवरजुवनानां जावतोहं
नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं
परमेष्ठितम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञ, श्रीवीरं प्रणिद
ध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकजवार्जितोर्जितमहा
पापप्रदीपानलो, देवःसिद्धिवधूविशाल हृदया
ऽलंकारहारोपमः ॥ देवोष्टादशदोषसिंधुरघटानि
र्जेदपंचाननो, जव्यानां विदधातु वांछितफलं
श्रीवीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापदप
र्वतो गजपदः सम्मेतशैलाजिधः, श्रीमान् रैव

तकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंरूपः ॥ वैन्नारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषन्नादयोजिनवराः कुर्वंतु वोमंगलम्॥३३॥

॥ ५३ ॥ अथ श्री अजितशांतिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसवन्नयं, संतिं च पसंत सवगयपावं ॥ जयगुरु संति गुणाकरे, दोविजिणवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल न्नावे, तेहिं विउल तवनिम्मल सहावे॥ निरुवम महप्पन्नावे, थोसामि सुदिठ सन्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सवडुरकप्पसंतीणं, सव पावप्पसंतिणं॥ सया अजियसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तहय धिइमइ प्पवत्तणं, तवय जणुत्तम संतिकित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्मकिलेसविमुरकयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिअरं, संयय मम निवुइ कारणयंचनमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं॥ पुरिसा जइ डुरकवारणं, जइअ विमग्गह सु

रककारणं ॥ अजिअं संतिं च जावर्ज, अन्न
यकरे सरणं पवजाहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अ
रइ रइतिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर
असुर गरुड नुअगवइ पयय पणिवइअं ॥
अजिअ महमविअ सुनय नय निउए मन्नय
करं, सरए मुवसरिअ नुवि दिविजमहिअं
सयय मुवएमे ॥७॥ संगययं ॥ तंच जिणुत्तम
मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अजव मद्दव खंतिविमु
त्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम
तिज्ञयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसऊ
॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावछिपुव्वपछिवं च वरहछि
मजय पसछ विछिन्न संथिअं, थिर सरिछ वछं
मयगल लीलायमान वर गंध हछि पछाए प
छियं संथवारिहं॥हछिहछ वाहुं धंतकणग रुअ
ग निरुवहय पिंजरं, पवर लरकणो वचिअ सो
मचारु रूवं, सुइ सुहमणाजिराम परम रमणि
ज्ज वरदेव डुंडुहि निनाय महुरयरय सुहगिरं
॥ए॥ वेढ्ढर्ज ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ स
व्वज्ञयं नवो हरिर्ज ॥ पणमामि अहं पयर्ज, पावं
पसमेउ मे ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासालुध्धर्ज ॥ कुरु

जणवयहच्छिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महाच
क्कवट्टिन्नोए महप्पन्नावो, जोबावत्तरि पुरवर सह
स्स वर णगर निगम जणवय वंइ,बत्तीसा राय
वर सहस्साणुजाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण
नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवइण
सुंदरवइ, चुलसी हय गय रह सय सहस्स
सामी, छन्नवइ गाम कोडि सामी आसिजो न्ना
रहंमि न्नयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढउ ॥ तं संतिं संतिअरं
संतिण्णं सव्व न्नया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं
विहेउमे ॥ १२ ॥ रासानंदिअयं ॥ इख्खाग वि
देहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय
ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अ
जियउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि,अमिअबला
विउलकुला ॥ पणमामि ते न्नवन्नय मूरण, जग
सरणा मम सरणं॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दा
णविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ
रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दं
तपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर,
दित्त तेअ विंदधेअ सवलोअ न्नाविअप्पन्नाव
णे अ पईअसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥

विमल ससिकलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूरं क
लाइरेअ तेअं ॥ तिअसवइ गणाइरेअ रूवं,
धरणीधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुम
लया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले
अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थु
णामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगि
अं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, ते
अ गुणेहिं पावई न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणे
हिंपावइ नतं तिहसगणवइ, सारगुणेहिं
पावइ न तं धरणिधरवई, ॥१७॥ खिजिअयं ॥
तिछवर पवत्तयं तमरयरहिअं धीरजण थु
अ च्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं
तिगरण पयओ, संतिमहं महामुणिं सरण मुवण
मे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय सिरिरय
अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहा
हिव धणवइनरवइ, थुअमहिअच्चिअं बहु
सो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ,
सप्पभंतवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ
चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमा
ला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरगन

मंसियं ॥ देवकोमिसयसंथुअं, समणसंघपरि
वंदियं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं
अरुयं अजिअं अजिअं पयर्ज पणमे ॥ २१ ॥
विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्व
कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥
ससंभमो रयण रकुभिअ, लुलिअ चल कुंम
लं गय तिरीड सोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥
वेहुर्ज ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा वेर विउत्ता भ
त्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभमपिंमिअ सुठु
सुविह्मिअ सव्वबलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण प
रूविअ, भासुर भूसण भासुरिअंगा ॥ गाय स
मोणय भत्तिवसा गय, पंजलिपेसियसीस पणा
मा ॥२३॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो
जिणं, तिगुणमेवय पुणो पयाहिणं ॥ पणमिऊ
णयं जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइंतो ग
या ॥२४॥ खित्तयं॥ तं महामुणि महंपि पंजलि,
राग दोस भय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिं
द वंदिअं, संतिमुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥
खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणियाहिं, ललिअ
हंस वहुगामिणियाहिं ॥ पीण सोणत्थण सा

लिणियाहिं, सकल कमलदल लोअणिआ
हिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणजरविण
मिय गायलयाहिं, मणि कंचण पसिढिलमेह
ल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिंखिणि नेजर
सतिलय वलय विनूसणियाहिं, रइकर चजर
मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्ख
रा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदियाहिं, वंदिआय ज
स्स ते सुविक्कमाक्कमा अप्पणो निलाडएहिं मंम
णोडुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिल
य पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं
नत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिया
पुणो पुणो ॥२८॥ नारायज ॥ तमहं जिणचंदं,
अजिअं जिअमोहं॥धुअसवकिलेसं पयज पण
मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा
रिसीगण देवगणेहिं, तो देव वहूहिं पयज पण
मिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, नत्ति
वसागयपिंडिअयाहिं ॥ देव वरछरसाबहुआ
हिं, सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥३०॥ नासुर
यं॥ वंस सद्द तंति तालमेलए तिजक्खराभिराम
सद्द मीसए कए अ, सुइसमाणणेअ सुद्ध स

जा गीअ पाय जालघंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउराभिराम सद्द मीसए कए अ देवन ट्टिआहिं ॥ हावभाव विब्भमप्पगारएहिं न च्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि क्कमाक्कमा ॥ तयंतिलोअ सव्व सत्त संतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस मेस हं नमामि संतिमुत्त मं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सि रिवच्छ सुलंछणा ॥ दीवसमुद्द मंदिरदिसाग यसोहिया, सच्छिअवसहसीहणासिरिवच्छसुलंछ णा ॥३२॥ ललिअयं ॥ सहावलठ्ठा समप्पइठ्ठा, अदोस दुठ्ठा गुणेहिं जिठ्ठा ॥ पसायसिठ्ठा तवे ण पुठ्ठा, सिरीइ इठ्ठा रिसीहिं जुठ्ठा ॥३३॥ वा णवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्व लोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअसंति पायया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति जिणजुअलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गयं गयं सासयं विमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमे

ण अविसायं ॥ नासेउ मेविसायं, कुणउ अ प
रिसाविअ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउअ
नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं ॥ परिसा
विय सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं॥३७॥
गाहा ॥ पक्खिअ चाउमासे, संवछरिए अव
स्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग नि
वारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअ निसुण
इ, उभर्ड कालंपि अजिअसंतिथुयं॥न हु हुंति
तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९॥ जइइ
छह परम पयं, अहवा कित्ती सुविछडा भुवणे॥
ता तेलुक्कुध्दरणे,जिणवयणे आयरं कुणह॥४०॥
॥ इति श्रीअजितशांतिस्तवनं ॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥ अथ श्री मोहोटी शांति ॥
॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व
मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभा
जः॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरीक्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥
भोभो भव्यलोका इहहि भरतैरावतविदेहसं
भवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकं पानं
तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा

घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सहसमागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः सपंथाः इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधायशांतिमुद्घोषयामितत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवतोर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः॥ ॐ १ श्री ऋषभ,२ अजित,३ संभव,४ अभिनंदन,५ सुमति, ६ पद्मप्रभ,७ सुपार्श्व,८ चंद्रप्रभ,९ सुविधि,१० शीतल,११ श्रेयांस,१२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनंत,१५ धर्म्म,१६ शांति,१७ कुंथु,१८ अर,१९ मल्लि,२० मुनिसुव्रत,२१ नमि,२२ नेमि पार्श्व,२३ वर्द्धमानांताः२४ जिनाः शांताःशांतिकरा भवंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयोमुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकांतारेपु दुर्गमार्गेपुरक्षंतु वो नित्यं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, मति, कीर्त्ति, कांतिं,

बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या साधन, प्रवेश निवश नेषु ॥ सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रांशृंखला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गोरी, गांधारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरुट्या, अछूप्ता, मानसी, महामानसी, एता षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य ॥ श्रीश्रमणसंघस्य ॥ शांतिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुण कुबेर वासवादित्यस्कंद विनायकोपेताः येचान्येपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्तेसर्वे प्रीयंतांप्रीयंताम् ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारानर पतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र, मित्र, भ्रात, कलत्र, सुहृद्, स्वजन, संबंधि, बंधुवर्ग, सहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु अस्मिंश्च भूमंडलायतननिवासीनां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पु

ष्टि ऋद्धि, वृद्धि, मांगल्योत्सवाः ॥ सदा प्राडुर्भूतानि पापानि शम्यंतु दुरितानि ॥ शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शांतिनाथाय,नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥ १ ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट, ग्रहगति दुःस्वप्न दुर्निमित्तादि ॥ संपादितहित संप, न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जानपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरमुख्यानां शांतिर्भवतु ॥ श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु ॥ शांतिकलशं गृहीत्वा,कुंकुम चंदन कर्पूरागरु धूप वास

कुसुमांजलिसमेतः ॥ स्नात्रचतुष्किकाया श्री संघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाज्ञरणालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा ॥ शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणज्ञाजो हि जिनाज्ञिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता ज्ञवंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीज्ञवतु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तिज्ञयरमाया शिवादेवी तुम्हनयर निवासिनी ॥ अम्हशिवं तुम्ह शिवं अशिवोपशमंशिवं ज्ञवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लय· ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति श्री बृहच्छाति स्तवः संपूर्णः ॥ ५४ ॥

॥५५॥ अथ श्री संतिकरस्तवनं ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिइ दायारं ॥ समरामि ज्ञत्त पालग, निा

तत्र ज्ञानाचारें आठ अतिचार ॥ कालेवि णए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंज ण अत्र तडनए अठविहोनाण मायारो॥ १ ॥ ज्ञान काल वेलाये नण्यो गुण्यो नहिं अकाले नण्यो, विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधान हीन, अनेरा कन्हें नणी अनेरो गुरु कह्यो, देव गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सद्याय करतां नणतां, गुणतां, कूमो अक्षर कानेमात्रायें अधिको उंगे नण्यो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तडन य कूडां कह्यां, नणीने विसार्यां, साधु तणे धर्म काजें काजो अणुड रुरयां दांडो अणपमिलेहे, वसति अणशोधे, अणपवेसे, असऊाइ, अणो ऊाइमाहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत नण्यो गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, प डिक्कमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत नण्यो गुण्यो, काल वेला काजो अणउद्दरे पढियो ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सापमा सापमी, दस्तरी, वही, उंलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर मांज्यो, उशीसें

धर्यो, कने छतां आहार निहार कीधो, ज्ञानद्र व्य भक्षतां उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधें विणसतो विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्तियें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंतप्रत्यें द्वेष, मत्सर, चिंतव्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोइ प्रत्यें भणता गणतां अंतराय कीधो, आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवलज्ञान ए पंच ज्ञान तणी असद्दहणा कीधी- कोइ तोतलो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणा कीधी ॥ ज्ञानाचार व्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय,निव्वितिगिछा अमूढदिठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे, वछल्ल प्पभावणे अठ ॥१॥ देव गुरू धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधीया फल तणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. साधु साधवीना मल मलिन गात्र देखी छुगंछा निपजावी. कुचारित्रीया देखी चारित्रीयाऊपर अभाव हुउं. मि

थ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधें विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो. छती शक्तिये सार संभाल न कीधी तथा साधर्मिक साथें कलह कर्मबंध कीधो. अधोती, अष्टपड मुखकोश, पांखें देव पूजा कीधी बिंबप्रत्यें वासकूपी, धूपधाणुं कलशतणो उवको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाड्युं. उसास निःसास लाग्यो, देहरे, उपासरे, मलश्लेष्मादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार निहार कीधां, पान, सोपारी, निवेदीयां खाधां. ठवणाहारी हाथथकी पाडी, पडिलेहवुं विसार्युं, जिनभुवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्यें तेत्रीश आशातना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं ॥ दर्शनाचारव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ २ ॥

चारित्राचारें आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहि समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १॥ ईर्या समिति ते अणजोए हिंड्या, जाषासमिति ते सावद्य वचन बोल्या, एषणा समिति ते तृण, डगल, अन्न, पाणी, असूझतुं लीधुं, आदानजंडमत्तनिखेवणा समिति ते अशन शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपूंजी जीवाकुलजूमिकाये मूक्युं लीधुं, परिठापनिकासमिति ते मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजि जीवाकुल जूमिकायें परठव्युं मनोगुप्ति, मन मां आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति, सावद्य वचन बोल्युं, कायगुप्ति ते शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा, ए अष्टप्रवचन माता ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने श्रावकतणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडीपरे पाल्या नहीं, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांही सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउं होय ते सवि हुं मने,वचने,कायाये करी तस्समिच्छा

ह्णिएय लगें तेहनो धर्म मान्यो, कीधो ॥ श्रीस म्यक्त्वव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ वहबंधछविछेए० ॥ द्विपद चतुष्प द प्रत्ये रीषवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंध ने बांध्यां, अधिक भार घाल्यो, निर्लांछन कर्म कीधां, चारापाणीतणी वेलाये सार संभाल न कीधी, लेहणे देणे किणहिं प्रत्ये लंघाव्यो,तेणे भुखे आपण जम्या, कन्हे रही मराव्यो, बंधी खाने घलाव्यो, शल्यां धान्य तावमे नाख्यां, दलाव्यां, भरमाव्यां. शोधी न वावस्यां इंधण छाणां, अणशोध्यां बाल्यो तेमांहि साप, विं छी, खजूरा, सरवलां, मांकम, जूआ, गिंगो डा, साहतां मुआ, उहव्या, रूडे स्थानके न मूक्या. कीमी मंकोडीनां इंडां विछोह्यां. लीख फोडी. उदेही, कीडी, मंकोमी, घीमेल, कातरां, चूडेल, पतंगियां, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंता, मांस, मसा, बगतरा, माखी, तीम प्रमुख जीव विणछा. माला हलावतां चलावतां पंखी,

चरकलां, काग, तणां इंडां फोड्या, अनेरा एकें
द्रियादिक जीव विणास्या, चांप्या, डह्व्या, कांइ
ह्लावतां, चलावतां, पाणी गंटतां, अनेरा कां
इस्काम काज करतां, विध्ंधसपणुं कीधुं. जीवर
क्षारूमी न कीधी, संखारो सूकाव्यो, रूडुं गलणु
न कीधुं, आणगल पाणी वावस्युं. रूडी जयणा
न कीधी. अणगल पाणीयें झील्या, लुगमां धो
यां, खाटला तावरू नाख्या, झाटक्या, जीवाकु
लनूमि लींपी, वाशीगार राखी, दलणें, खांडणें,
लींपणे, रूमी जयणा न कीधी. आठम चउद
शना नियम नांग्या. धूणी करावी॥ पहेले स्थू
लप्राणातिपात विरमण व्रत विषइउं अनेरोंजे
कोइ अतिचार पद्म दिवसमांहि० ॥ १ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रते पांच अ
तिचार ॥ सहसारहस्सदारे० ॥ सहसात्कारे
कुणहींप्रत्ये अजुगतुं आल अन्याख्यान दीधुं.
स्वादारामंत्र न्नेद कीधो. अनेरा कुणहनो मंत्र,
आलोच मर्म प्रकाश्यो. किणहीनें अनर्थ पाड
वा कूमी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूमी
साख नरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, गौ, ढो

र, भूमिसंबंधी लेहणे देणे व्यवसायें वाद वढ वाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. हाथ पग तणी गाल दीधी. करडका मोड्या. मर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ २ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पयोगे० ॥ घर बाहिर खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी. वावरी, चोराइ वस्तु मोललीधी, चोर धाडप्रत्यें संकेत कीधो. तेहनें संबल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुध्दराज्यातिक्रम कीधो नवां, पुराणा, सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल संभेल कीधा. कूडे काटले, तोले, माने, मापे, वहोर्यां. दाणचोरी कीधी, किणहीने लेखे वरांस्यो. साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी. पाशंग कूडां कीधां. दांडी चढावी. लहके त्रहके कूडा काटला मान, मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची किणहीने दीधुं. जूदी गांठ कीधी, थापण उलवी. किणहीनें लेखे पलेखें

भूलव्युं. पछी वस्तु उंलवीलीधी ॥ त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष. परस्त्री गमन विरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहीया इतर०॥ अपरिगृहीतागमन इत्वर ॥ अपरिगृहीता गमन कीधुं. विधवा, वेश्या परस्त्री, कुलांगना,स्वदाराशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कधो. सराग वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेराइ पर्व तिथें नियम लइ भांग्या. घरघरेणां कीधां करा व्यां. वर वहू वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अनंग क्रीमा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिगली परणाव्यां. कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरें हुआ. कुस्वप्न लाधां. नट, विट, पुरुषांशु हांसुं कीधुं॥चोथा स्वदारासंतोषव्रतविषयिउं अनेरा जे कोइ अतिचार पक्ष०॥४॥

पांचमे स्थूल परिग्रह परिमणव्रते पांच अतिचार॥ धण धन्न खित्तवत्थू०॥धन, धान्य, खेत्र

वस्तु, रूप्प, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छालगें संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह परिमाण लीधुं नहीं, लेइने पढिउं नहीं. पढिउं विसार्युं. अ लीधुं मेल्युं. नियम विसर्या ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ५ ॥

छठें दिग्परिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ गम णस्सय परिमाणे० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा आववातणा निमम लेइ भांग्या. अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भुमि गया. पाठवणी आघी पाछी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकालें गामतरू कीधुं, भु मिका एकगमा संखेपी, बीजीगमा वधारी ॥ छठे दिगपरिमाणव्रतविषयिउं अनेरो जे कोइ अ तिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ६ ॥

सातमें भोगोपभोग विरमण व्रतें भोजन आश्री पांच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अ तिचार एवं वीश अतिचार॥सच्चित्तेपडिबद्धे० ॥

सचित्त नियम लीधे, अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्काहार, डपक्काहार, तुछोषधि तणुं भक्षण कीधुं. उंला, उंबी, पोंक, पापमी कीधां ॥ सच्चित्त दव्वविगइ, पाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभदिसि न्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगतरात्रिगत लीधा नहीं. लेइने भांग्या. बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आडु, मूला, गाजर, पिंमु, पिंमालू, कचुरो, मूरण, कुलि आंबली, गलो, वाघरमां खाधां. वाशी, कठोल, पोली, रोट, ली त्रण दिवसनुं उंदन लीधु. मधु, महुडा, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवमां, अजाण्यां फल, टिंबरु, गुंदां, महोर अथाणुं, आमणबोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, काचा कोठिंबडां खाधां. रात्रि भोजन कीधो. लगभग वेलायें व्यालुं कीधुं. दिवस विणउगे शीराव्या. तथा कर्मतः पंदरक र्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे, ए पांचकर्म ॥ दंतवाणिज्जे, लख्कवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे,

विसवाणिज्जे, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लण कम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गि दावणया, सर दह तलाय सोसणया, असइ पोसणया, ए पांच सामान्य, ॥ ए पांच कर्म्म, पांचवाणिज्य पांच सामान्य, एवं पंदर कर्मादान बहुसावद्य, महारंभ, रांगण, लीहाला, कराव्या. इंट, निभामा पचाव्या. धाणी, चणा पक्कान्न करी वेच्या वाशी मांखण तपाव्या. तिलवहोरया फागण मास उपरांत राख्या. दलीदो कीधो. अंगीठ कराव्या. श्वान, विल्लाडा, शूडा, सालहि, पोश्या. अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचस्या. वाशीगार राखी. लीपणें, घूंपणें, माहारंभ कीधो. अणशोध्या चूला संधूक्या. घीतेल, गोल, छाश तणांभाजन उघाडां मूक्यां. तेमांहि माखी, कुंति, उंदर, गिरोली पडी. कीडी, चढी तेनी, जयणा न कीधी ॥ सातमे भोगोपभोग विरमणव्रतविषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ७ ॥

आठमे अनर्थदंड विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुए० ॥ कंदर्प्पलगें विटचेष्टा,

हास्य, खेल, कूतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हाव भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राज कथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी. पराइ वात कीधी. तथा पैशुन्यपणुं कीधुं,आर्त्त रौद्रध्यान ध्यायां. खांमां, कटार, कोश, कुहाम्ा, रथ उखल, मुशल, अग्नि, घरटी, निसाह, दा- तरमां, प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण लगें माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्टमी चतु र्दशीये खांमवा दलवा तणानियम भांग्या. मूरखपणा लगें असंबद्ध वाक्य बोल्या. प्रमा दाचरण सेव्या. अंघोले नाहणे, दातणे, पग धोअणे, खेलपाणि, तेल अकिध ढांल्यां. झील- णे झील्या. जूवटें रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां, कण कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. कर्कश वचन बोल्यां, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा. करकमा मोड्या. मत्सर धर्यो. संभेडा लगाड्या. सराप दीधा. भेंसा, शांढ, हुडु, कू कमा, श्वानादिक जुझाव्या, जूझतां जोयां. खादिलगें अदेखाइ चिंतवी, माटी, मीठुं. कण, कपाशीया, काजविण चांप्या. तेउपर बेठा.

आली वनस्पति खुंदी, सुइ शस्त्रादिक निपजा व्या. घणी निद्रा कीधी. राग द्वेष लगे एकने रुद्धि परिवार वांछी. एकने मृत्यु हानी वांछी ॥ आठमे अनर्थ दंमविरमणव्रत विषयिउं अने रो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिवि हे डुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट, दोहट्ट, चिंतव्युं. सावद्य वचन बोल्या. शरीर अणपमिलेह्युं हलाव्युं. उती वेलाये सामा यिक न लीधुं. सामायिक लेइ उघामे मुखे बोल्यां. उंघ आवी, वात विकथा घरतणी चिंता कीधी. वीज दीवा तणी उजेहि हुइ, कण कपा शीया, माटी, मीठु, खमी, धावमी, अरणेटो पा षाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फुल, सेवाल हरीयकाय, वीयकाय, इत्यादिक आजड्यां, स्त्री तिर्यच् तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ, मुहुपत्तियो संघट्टि, सामायिक अणपूग्युं पाखुं, पारवुं विसाख्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ ए ॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥

आणवणे पेसवणे०॥ आणवणप्पउंगे, पेसवण प्पउंगे, सद्दाणुवाई रूवाणुवाई, बहिया, पुग्गल पक्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहे बाहेरथी कांई अणाव्युं. आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोक ल्युं. अथवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करीआपपणुं छतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगा शिक व्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १० ॥

इग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि० ॥ अप्पडि लेहिय डुप्पडि लेहिय सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडि लेहिय उच्चार पासवण भूमि ॥ पोसह लीधे सं थारा तणी भूमि न पूंजी. बाहिरला लहुडां वडां स्थंडिल दिवसें शोध्यां नही. पडीलेह्यां नही. मातरूं अणपूंज्युं हलाव्युं. अणपूंजी भू मिकाये परठव्युं. परठवतां "अणुजाणहजस्स ग्गो" न कह्यो. परठव्या पूठें वारत्रण "वोसिरे वोसिरे" न कह्यो. पोसह सालामांही पेसतां "निसिही" निसरतां "आवस्सहि" वार त्रण भणी नही. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति,

त्रसकाय तणा संघट्टपरिताप, उपद्रव, हुआ. संथारा पोरिसी तणो विधि जणवो विसार्यो. पोरिसीमांहे उंघ्या. अविधें संथारोपाथर्यो. पारणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या. पडिक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरों लीधो. सवेरो पार्यो. पर्वतिथें पोसह लीधो नही॥ इग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ ११ ॥

वारमेअतिथिसंविभाग व्रते पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपरछतां महात्मा महासती प्रत्यें असूजतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूजतुं फेडी सूजतुं कीधुं, देवानी बुद्धे परायुं फेडी आपणुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धे सूजतुं फेडी असूजतुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धे आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहोरवा वेला टली रह्यां, असूरें करी महात्मा तेड्या मछर धरी दान दीधुं, गुणवंत आवे भक्ति न साचवी, छती शक्तें साहम्मी वात्सल्य न कीधुं अनेराई धर्मक्षेत्र सीदाता छती शक्तियें उद्धर्यां नही, दीन क्षीण प्रत्यें अनुकंपादान न दीधुं॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउंगे, परलोगासंपप्पउंगे, जीवियासंसप्पउंगे, मरणासंसप्पउंगे कामभोगासंसप्पउंगे ॥ इहलोके धर्मना प्रभावलगें राजरुद्धि, सुख,सौभाग्य,परिवार, वांछ्यां परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्ति तणी पदवी वांछी, सुख आवे जीवितव्य वाछ्युं, दुःख आवे मरण वांछ्युं, काम भोग तणी वांछा कीधी ॥ संलेषणाव्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अति चार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार वार भेद छ वाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण भणीउप वास विशेष पर्वतिथें छती शक्तियें कीधो नहीं, ऊणोदरीव्रत ते कोलिया पांच सात ऊणा रह्या नहीं, वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कस्या न ही, संलीनता अंगोपांग संकोची राख्या नहीं-

पच्चरकाण ज्ञांग्यां,पाटलो ग्गगग्गतो फेड्यो नहीं, गंठसी, पोरसी, साढ्ढपोरिसि, पुरिमढ्ढ, एकासणुं, बेआसणुं नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवुं विसार्युं, वेसतां नवकार न जण्यो, उठता पच्चरकाण करवुं विसार्युं, गंठसीउं जाग्युं, नीवी, आंबिल, उपवासादिक, तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुउं, वाह्य तप विषयिउं अनेरो जे कोई अतिचार पद्म० ॥ १४ ॥

अभ्यंतरतप ॥ पायच्छित्तं विणउं० ॥ मन शुद्धें गुरु कन्हे आलोअणालीधी नहीं, गुरु दत्त प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्धें पहुंचाड्यो नहीं, देव, गुरु, संघ, साहम्मी प्रत्यें विनय साचव्यो नहीं, वाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वैयावच्च न कीधुं, वांचना; पृछना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां, कर्म क्षय निमित्तें लोगस्स दशवीशनो काउस्सग्ग न कीधो॥ अभ्यंतर तप विषयीउं अनेरो जे कोइ अतिचार पद्म दिवसमांहि० ॥ १५ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणगूहिअ बलविरिउं० ॥ पढवे, गुणवे, विनय वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, काया तणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडा पंचांग खमा समण न दीधां, वांदणा तणा आवर्त्तविधिसाच व्या नहिं. अन्यचित्त निरादरपणें बेठा, उतावलुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार विषयियो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष०॥१६॥

नाणाइअठ पइवय,समसंलेहण पण पनरक म्मेसु वारस तव विरिअतिगं, चउवीसंसय अइ यारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥ जिन प्रतिषेध अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजभक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधां, जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानक कीधां,

कराव्यां, अनुमोद्यां होय, दिनकृत्यप्रतिक्र मण, विनय, वैयावच न कीधा, अनेरु जे कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्द कीधुं, कराव्युं, अनु मोद्युं होय ॥ ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे को इ अतिचार पद्म दिवसमांहि सूद्म, वादर, जा णतां, अजाणतां हुर्ज होय ते सवि हुं मने, व चने, कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥१८॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल बारव्रत, एकसो चोवीस अतिचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पद्म दिवस मांहि सूद्म, वा दर, जाणतां अजाणतां हुर्ज होय ते सवि हुं मने वचने कायायें करी तस्स मिछामि डुक्कडं॥ इति श्रीश्रावकपख्की, चोमासी, संवछरी अ तिचार समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ अथ प्रजातना पच्चख्काण ॥

॥५७॥ प्रथम नमुक्कार सहि मुठसहितुं ॥

॥ उग्गय सुरे,नमुक्कार सहिअं, मुठिसहिअं पच्चख्काइ॥ चउव्विहंपि आहारं,असणं पाणं खाइ मं,साइमं॥अन्नछणाभोगेणं,सहसागारेणं,महत्त रागारेणं,सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥६७॥

॥५८॥ वीजुं पोरिसि, साढ्ढपोरिसीनुं ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढ्ढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चक्खाइ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि, आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥५८॥

॥५९॥ त्रीजुं वीयासणा एकासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउविहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं ॥ विगइओ पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वियासणं, पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं,

आउट्टणं पसारेणं, गुरु अप्नुठाणेणं, पारिठा वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिव त्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा अलेवेणवा अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिछेणवा, अ सिछेणवा, वोसिरे ॥ जो एकासणानुं पञ्चरकाण करवुं होय तो, वियासणांने ठेकाणे एकासणं नो पाठ केहवो ॥ इति वियासणा एकासणानुं पञ्चरकाण समाप्त ॥ ५ए ॥

॥६०॥ चोथुं आयंबिलनुं पञ्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं पोरिसिं,सा ढपोरिसिं, मुठिसहिअं पञ्चरकाइ ॥ उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, सा इमं, अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, पछन्नका लेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पञ्चरकाइ ॥ अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं गिहछसंसठेणं,उक्खित्तविवेगेणं, पारिठावणिया गारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिगारे णं ॥ एगासणं पञ्चरकाइ ॥ तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं साइमं ॥ अन्नछणाभोगेणं

सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटण प
सारेणं, गुरुअभ्भुठाणेणं, पारिठवणियागारेणं,
महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा
णस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछे णवा, बहु
लेवेणवा,ससिछेण वा, असिछे णवा॥ वोसिरे
॥ इति आयंबिलनुं पच्चरकाण ॥ ६० ॥

॥६१॥ पांचमुं तिविहार उपवासनुं ॥

॥उग्गए सूरे,अभ्भत्तठं पच्चरकाइ ॥ तिविहंपि
आहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नछणा
ोगेणं, सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं,
महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पा
णहार पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुठिसहिअं,
पच्चरकाइ ॥ अन्नछणाोगेणं, सहसागारेणं
पछन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं मह
त्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स
लेवेण वा, अलेवेणवा, अछेण वा, बहुलेवेण
वा, ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ इति
तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥ ६१ ॥

॥६२॥ छठुं चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चरकाइ ॥ चउवि

हंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नउणा नोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति चउविहारउपवासनुं ॥ ६२ ॥

॥ अथ सांऊनां पच्चरकाण ॥

तहां प्रथम बीयासणं, एकासणं, आयंबिल, तिविहार उपवास, अने ढठ जे करे तो तेणे पाणहारनुं पच्चरकाण करवुं ते आवी रीतः—

॥६३॥पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ ॥ अन्नउणानोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥६४॥ बीजुं चउविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नउणा नोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥६५॥ त्रीजुं तिविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाइ॥तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नउणा नोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्ति

यागारेणं, वोसिरे ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६५ ॥

॥६६॥ चोथुं डविहारनुं पच्चरकाण ॥

॥दिवस चरिमं पच्चरकाइ ॥ डविहंपि आहा रं, असणं, खाइमं, अन्नडणाजोगेणं, सहसा गारेणं, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागा गारेणं वोसिरे इति ॥ ६६ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासिय नुं पच्चरकाण करवुं तेनो पाठ कहे छे ॥

॥६७॥ देसावगासिअं उवजोगं परिजोगं पच्च रकाइ ॥ अन्नडणाजोगेणं, सहसागारेणं, मह त्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे६७

॥६८॥ छठुं पोसहनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि जंते पोसहं, आहारपोसहं देसउ सव्वउ, सरीर सक्कार, पोसहं सव्वउ, बंजचेर पोसहं सव्वउ, अव्वावारपोसहं सव्वउं, चउव्विहे पोसहं ठामि ॥ जाव दिवसं अहोरत्तं पज्जुवा सामि ॥ डविहं तिविहेणं ॥ मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स जंते पडि क्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसि रामि ॥ इति पच्चरकाणानि संपूर्णानि ॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जी विअं तेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय ॥ जेसिं पसंसइ जयवं, द ढवयं तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधे लीधउं विधे पारीउं विधि करतां जे कोइ अविधि हुउं होइ, ते सवि हुं मने वचने कायायें करी मि छामि डुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥ अथ संथारापोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमास मणाणं, गोयमाइणं ॥ महामुणीणं ॥ ए पाठ त था नवकार तथा करेमि जंते समाइअं ॥ एट ला सर्व पाठ त्रण वार कहीने ॥ अणुजाणहजि ठिजा ॥ अणुजाणह परमगुरू, गरुगुणरय णेहिं मंडियसरीरा ॥ बहुपडिपुन्नापोरिसि, रा इय संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुडिपायपसा रण अंतरंत पमजाए जूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संडासा, उवहंते अ काय पडिलेहा ॥ दवइ उ

वउंगं, उसास निरुंन्नणा लोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउं, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सवं तिविहेणं वोसिरिअं ॥४॥ चत्तारि मंगलं ॥ अरिहंता मंगलं ॥ सिध्धा मंगलं ॥ साहु मंगलं ॥ केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा ॥ अरिहंता लोगुत्तमा ॥ सिध्धा लोगुत्तमा ॥ साहु लोगुत्तमा ॥ केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंते सरणं पवज्जामि॥ सिध्धे सरणं पवज्जामि ॥ साहु सरणं पवज्जामि ॥ केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाइवाय मलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविण मुछं ॥ कोहं माणं मायं, लोनं पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥ कलहं अप्नरकाणं पेसुन्न रई अरई समाउत्तं ॥ परपरिवायं माया, मोसं मिछत्तसल्लं च ॥ ९ ॥ वोसिरिसु इमाइं मुरक मग्ग संसग्ग विग्घनुआइं ॥ डग्गइ निबंधणाइं अठारस पावठाणाइं ॥ १० ॥ एगोहं नछि मे कोइ, नाह मन्नस्स कस्सई ॥ एवं अदीण मणसों, अप्पाण वणुसासई ॥ ११ ॥ ए

गोमे सासउं अप्पा, नाण दंसण संजुउं॥सेसा मे बाहिरा मावा, सव्वे संजोगलरकण ॥ १२ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता ङुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं॥१३॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ सवह जीव निकाय ॥ सिद्धह साख आलोयण ह, मुज्जह वइर न ज्ञाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्म वस्स चउदह राज ज्ञमंत ॥ ते मे सव्व खमाविआ, मुज्जवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण मासिअं पावं ॥ जंजं काएण कयं, मिहामि ङुक्कमं तस्स ॥ १७ ॥

॥ इति संथारा पोरिसी ॥ ७० ॥

॥ अथ चैत्यवंदन

॥ तत्र प्रथमं सीमंधरजिनचैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिव सुखना दाता ॥ पुरकल वइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंमरीगिणी, नयरीये शोहे॥ श्री श्रेयांस राजा तिहां, ज्ञविअणनां मन मो

हे ॥२॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी रा
णी मात ॥ कुंथुं अर जिन अंतरे, श्री सीमंधर
जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रभु जनमीया, वली
यौवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमिणी
परणावे ॥ ४ ॥ भोगवी सुख संसारनां, संजम
मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्र
भु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या
केवल नाण ॥ रिखभ लंछने शोभता, सर्व भा
वना जाण ॥६॥ चोरासी जस गणधरा, मुनि
वर एक शो कोड ॥ त्रण भुवनमां जोयतां, न
हीं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या
केवली, प्रभुजीनो परिवार ॥ एक समय त्रण
कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल
जिनांतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जश विज
य गुरु प्रणमतां, शुभ वांछित फल लीध ॥९॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुंचैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञानकमला, कलित त्रिभु
वन हितकरम् ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज,
नमो आदिजिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर
शृंगमंडण, प्रवरगुणगणभूधरम् ॥ सुर असुर

किन्नर कोडि सवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरम् ॥ निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥पुंडरिक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरम् ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सिद्धा॥नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडि नंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही, विमल गिरिवरतोपरम् ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइयें ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मविजय सुहित करम् ॥ ८ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठे दुर्गति वारे॥
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनोराय॥
पूर्व नवाणुं रुखभदेव, ज्यां ठविआ प्रभुपाय

॥ २ ॥ सूरज कुंम सोहामणो, कविड जङ्क अ
भिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं
प्रणाम ॥ ३ ॥ इति चैत्य० ॥ ७४ ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥
अचल अकल अविकार सार, करुणा रससिं
धु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु
॥२॥ गुण अनंत प्रभु ताहारा ए, किमही क
ह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदा
नंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ७५ ॥

अथ सीमंधर जिनस्तवनं ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे
जावजो ॥ मुज विनतमी, प्रेमधरीने एणि परे
तुमें संभलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रणय भुव
ननो नायक छे ॥ जस चोसठ इंद्रें पायक छे॥
नाण दरिसण जेहनें खायक छे ॥ सुणो०॥१॥
जेनी कंचन वरणी काया छे ॥ जस धोरीलंछन
पाया छे ॥ पुंडरीगिणि नगरीनो राया छे ॥ सु
णो० ॥ २ ॥ वार पर्षदामिहिं बिराजे छे॥ जस

चोत्रीश अतिशय गजे छे ॥ गुण पांत्रीश वा णीए गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ज्ञविजनने ते प डिबोहे छे ॥ तुम अधिक शितल गुण शोहे छे॥ रूप देखी ज्ञविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो हुं ॥ पण ज्ञरतमां डरे वसीयो हुं ॥ महामोह राय कर फसीयो हुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिबचित्तमां धरीयो छे॥ तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो छे ॥ पण कांईक मुजथी मरीयो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठें हुवे पूरो॥ कहे पद्मविजय थाउं शूरो ॥ तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ जशोदा मावडी ॥ ए देशी ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीये विमलगिरी ॥ जात्रा नवाणुं करिये ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणुं वा र शेत्रुंजगिरि, रुखन्न जिणंद समोसरीये ॥ वि० ॥ १ ॥ कोमि सहस ज्ञव पातक त्रूटे॥शेत्रुं ज साहामो मग ज्ञरीये ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छह दोय अठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीयें ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरखे, अध्य

वसाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभ
व्यी न नजरे देखे, हिंसक पण उद्धरीये ॥वि०॥
॥४॥ भुइं संथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी
परिहरीयें ॥वि०॥६॥ सचित्त परिहारीनें एकल
आहारी, गुरु साथे पद चरीयें ॥वि०॥७॥ पडि
क्कमणा दोय विधिशुं करीयें,पाप पडल विखहरी
यें ॥ वि०॥८॥ कलिकालें एतीरथमोटुं, प्रवह
ण जिम भव दरीए ॥वि०॥ए॥ उत्तम ए गिरि
वर सेवंतां, पद्मकहे भव तरीयें॥विमल०॥१०॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीये रे में आज, शत्रुंजो दीठो रे॥
सवा लाख टकानो दहाडो रे, लागे मुने मी
ठो रे ॥ ए आंकणी॥ सफल थयो मारा मननो
उमाहो ॥ वाला मारा ॥ भवनो संशय भांग्यो
रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभु
जीने लाग्यो रे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥ मानवभवनो
लाहो लीधो ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीधी रे ॥
सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षीणा
दीधी रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥दुधडे पखालीने केशर
घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वरपूज्यारे ॥ श्रीसि,

॰शाचल नयणें जोतां, पापमेवासि धुज्यारे॥ श त्रुं०॥३॥ स्वयमुखसुधर्मा सुरपति आगे॥वा०॥ वीरजिणंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ शत्रुंजा तोले रे ॥शत्रुं०॥४॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी॥ वा०॥ चाकरी चित्त मां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरज कुंडमां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्ध खेत्र ॥वा०॥ साधु अनंता सीधा रे॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधारे ॥शत्रुं०॥६॥नाजिराया सुत नयणे जोतां॥वा०॥ मेह अमीरस वूठ्यारे ॥ उदयरतन कहे आज मारे पोते, श्रीआदीश्वर तूठ्यारे ॥ शत्रुं०॥७॥ इति स्तवनं ॥ ८० ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें, नरजवनो ला हो लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुततरु, जय वा मासुत अलवेसरु॥१॥ दोय राता जिनवर अति जला, दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या, शोले जिन कंचन व र्ण लह्या ॥२॥ आगम ते जिनवरें जाखीयो, ग

णधर ते हीयमे राखीयो॥ तेहनो रस जेणे चाखी यो, ते हुउ शिव सुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणी धर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गाव ती ॥ सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ शिखामण सझाय ॥

॥ जीव वारुं छुं मोरा वालमां, परनारीथी प्रीति म जोम ॥ परनारीनी संगत नहीं नली, तारा कुलमां लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जी व आ संसार छे कारमो, दीसे छे आल पंपाल॥ जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल माछीमे ना खी छे जाल ॥ जी० ॥ २ ॥ जीव मात पिता नाइ बेनमी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ जीव वेती वारे सहु सगुं, पछें लांबा कीधा जुहार ॥ जीव० ॥ ३ ॥ देंहली लगें सगो आंगणो, शे रीअ लगें सगीमाय ॥ जीव सीम लगें साजन नलो, पछें हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जातां थकां नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो वार कुवार ॥ जीव गाडुं नरीयुं ईंधणे, वली खो खरी हांडलीसार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठ

म पाखि न उंलखी, जीव बहुला कीधा पाप जीव सुमतिविजय मुनि एम जणे, जीव आ वागमण निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ इति ॥ ठ७॥

॥ अथ श्री अनाथी मुनिनी सद्याय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखीयो मुनि ए कंत॥वररूप कांतें मोहीउं, राय पूछे ए कहोनें विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिक राय हुं रे अनाथी नि ग्रंथ ॥ तिणे में लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥श्रेणि क० ॥ ए आंकणी ॥ इणें कोसंबी नयरी वसे, मुऊ पिता परिगलधन्न ॥ परिवार पूरें परिवस्यो, हुं छुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी में न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, पण समाधि किणे नवि थाय, ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिउरडी, चोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, कोणे न कीधी मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राज्य वैद्य बोलाविया, कीधला कोडि उपाय ॥ बावना चंदन चरचिया, तोहिपण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमांहि को केहनो न हीं, ते जणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना धरमसा

रिखो, नहीं कोइबीजो रे मुक्तिनो साथ ॥श्रे०॥
॥ ६ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे,तो लेउं संजम भा
र ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधुं में हर्ष
अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोमी राय गुण स्त
वे, धन धन ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित
पामीयो, वांदी पोहोतो रे नगर मऊार ॥श्रे०॥
॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां तूटे कर्मनीकोड
गणि समय सुंदर तेहना, पाय वंदे रे बे कर
जोड॥श्रे०॥९॥इति अनाथीनी सबाय ॥८८॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मूकी श्रावक श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती, चरवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र, जग्या पूंजी, कटासणा उपरबे सी, मुहपत्ती डाबा हाथमां मुख पासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी, एक न वकार गणी, पचिंदिअ कहीयें; अने जो आ गलथी ते स्थानकें आचार्यप्रमुखनी स्थापना क रेली होय, तो तिहां पंचिंदिय न कहेवुं,पछी इ छामि खमासमण देइ, इरियावहिया०तथा त स्स उत्तरी० अने अन्नह उससीएणं कही,एक

लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, "इञाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ॥इछं"॥ एम कही मुहपत्ति तथा अंगनी पम्लिेहणना पञ्चास बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें, पछी खमासमण देइ, "इञाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, संदिसाहुं ॥ इछं॥ कही खमा० इञा० ॥ सामायिक ठाउं, इछं" एम कही, बे हाथ जोडी, एक नवकार गणी, इञाकार जगवन् पसाय करी,सामायिक दंडक उच्चरावो जी. तेवारें वडिल, करेमि जंते कहे, पछी खमासमण देइ इञा० ॥ बेसणे संदिसाहुं ॥ इछं ॥ खमा०॥ इञा० ॥ बेसणें ठाउं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इञा०॥ सज्जाय संदिसाहुं ॥ इछं ॥ खमा० ॥ इञा० ॥ सज्जाय

---

(खमा० होय, त्या खमासमण देवुं इच्छा० होय, त्यां इच्छाकारेण सदिसह जगवन् कहेवुं, तथा ए सर्व विधि जे लख्यो छे, ते स्थापनाजी संनमुख क्रिया करवा आश्रयी समजवो, परंतु साक्षात् गुरु विराजमान होय तो इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सज्झाय सदिसाहु, एम शिष्य कहे तेवारें गुरु कहे "संदिसह" तथा इरियावहि पडिक्कमवाना आदेशमा गुरु "पम्किमेह" कहे, एम सर्व स्थानकें समजी लेवुं )

करुं ॥ इछं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा॥ पछी वे घमी सज्झाय धर्मध्यान करवुं॥इति॥एद॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ ॥ इरियावहिपमिक्कमवाथी यावत्लोगस्स सुधी कही ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ मुहपत्ती पडीलेहुं एम कहीमुहपत्ती पमिलेही, खमासमण देइ ॥ इछा० ॥ सामायिक पारुं ॥ यथाशक्ति ॥ वली खमा० इछा० ॥ सामायिक पार्युं ॥तहत्ति॥ कही पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणाउपर थापी एक नवकार गणी "सामाइयवयजुत्तो" कहियें ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणी उठवुं ॥ इति सामायिक पारवानो विधि समाप्त ॥ ए७ ॥

॥ अथ पच्चरकाण परवानो विधि ॥

॥ प्रथम "इरियावहियाए" पडिक्कमी यावत् "जगचिंतामणि" नुं चैत्यवंदन "जयवीयराय" सुधी करवुं ॥ पछी "मन्हजिणाणं" नीसज्झाय कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह भगवन् पच्च

रकाण पारुं यथाशक्ति " इच्छामि० इच्छा० पच्चरकाण पार्खुं " तहत्ति " एम कही जमणो हाथ कटासणां अथवा चरवला उपर थापी, एक " नवकार " गणी, पच्चरकाण कर्खुं होय तेनुं नाम कहीने पारवुं. ते लखीये छैयेः- उग्गए सूरे नमुकारसहिअं,पोरिसिं,साढ्पोरिसिं, गंठिसहिअं,मुठिसहिअं,पच्चरकाण कर्खुं;चउवि हार, आंबिल, निवी,एकासणुं,बे आसणुं कर्खुं, तिविहार पच्चरकाण, फासिअं, पालिअं, सोहि अं, तीरिअं, कट्टिअं, आराहिअं, जं च न आ राहिअं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं, एम कही एक नवकार गणवो ॥ इति ॥ एठ ॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिअं कही, इरियावहियाए कहेवुं, थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवो. पछी तस्स उत्तरी कही एक लोगस्स अ थवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, उभे पगें बेसी मुहपत्ती, चरवलो कटासणुं, उत्तरासणुं, धोतीयुं, कंदोरो आदि नुं पडिलेहण करवुं, पछी काजो काढ़ी, जीव

कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पढी काजो काढ
नार आपनाजी सामो ऊन्नो रही, इरियावहि
पम्किमी, काजो परठववा जग्या शोधी, त्रण
वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवी
ने पढी त्रणवार "वोसिरे" कहे ॥ इति ॥९९॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम सामायिकलीजें, पढी पाणी वाव
र्युं होय तो, मुहपत्ति पम्लिेहवी, अने आहार
वावर्यो होय तो, वांदणां बे देवां, त्यां बीजा
वांदणामां "आवसियाए" ए पाठ न कहेवो ॥
पढी यथाशक्ति पच्चरकाण करवुं ॥ पढी खमा
समण देई इञ्चाकारेण संदिसह न्नगवन् चै
त्यवंदन करु "इवं" एम कही, वमेरायें अथवा
पोतें चैत्यवंदन कहेवुं ॥ पढी जंकिंचि कही
नमुत्थुणं कहेवुं ॥ पढी ऊन्ना थईने अरिहंत
चेइयाणं० अन्नत्थं० कही एक नवकारनो काऊ
स्सग्ग करी, पारीने, जेने वमेरा हुकम आपे
ते धणीयें "नमोऽर्हत्" कहीने प्रथम थोय क
हेवी ॥ पढी प्रगट लोगस्स कही, सव्वलोए अ
रिहंतचेइयाणं कही,एक नवकारनो काउस्सग्ग

पारी बीजी थोय कहेवी ॥ पछी पुस्करवरदी कही, "सुअस्स जगवउ करेमि काउस्सग्गं वंद णवत्तिआए" कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, त्रीजी थोय कहेवी ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धा णं० वेयावच्चगराणं० करेमिकाउस्सग्गं अन्न त्थ० नो पाठ कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी "नमोऽर्हत्" कही, चोथी थोय क हेवी ॥ पछी बेशी हाथ जोडीने "नमुठुणं" कही खमासमण देइ, "जगवानहं" कहेवुं. वली बीजुं खमासमण देइ, "आचार्यहं" कहेवुं, वलीत्रीजुं खमासमण देइ, "उपाध्यायहं" कहेवुं वली चोथुं खमासमण देइ, सर्व साधुन्योऽहं " क हेवुं, ए रीतें चार खमासमण देवापूर्वक जग वानादि चारने थोज वंदन करीयें ॥ पछी खमा समण आपी इछाकारेण संदिसह जगवन् "दे वसिप्रतिक्रमणें ठाउं" एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने, इछं सव्वस्सवि देवसिअं० नो पाठ कही ऊभा थई, करेमि जंते०इछामि ठामि काउस्सगं जो मे दे वसिउं० तस्स उत्तरि० कही अतिचारनी आठ

गाथानो काउस्सग्ग करवो, जो आठ गाथा न आवमती होय तो आठ नवकारनो काउ स्सग्ग करवो, ते पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो॥ पछी बेशीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडि लेहीने वांदणां बे देवां ॥ पछी ऊन्ना थईने इछाकारेण संदिसह नगवन् देवसिअं आलोउं इछं आलोएमि कही जो मे देवसिउ कहेवुं, पछी सात लाख० कही, अढार पापस्थानक आलोइने, "सबस्सवि देवसियं" कहेवुं ॥ पछी नीचें बेसी जमणो ढींचण ऊन्नो राखी, एक नवकार गणी, करेमिन्नंते० इछामि पडिक्क मिउं० कही वंदितासूत्र संपूर्ण कहीने वांदणां बे देवां ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदि सह नगवन् अप्नुठिउंहं अप्निंतर देवसियं खा मेउं एम कही, अप्नुठिउं खामीने वांदणां बेवार देवां ॥ पछी ऊन्ना थई "आयरिय उवजाय" कही करेमि नंते इछामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिउ० कह "तस्स उत्तरी" कही बे लो गस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी सब

लोए अरिहंतचेइआणं कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी पछी पुक्खरवरदी,सुअस्स भगवउ,करेमि काउस्सग्गं वंदण० अन्नच्छ० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही, सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नच्छ० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी, "नमोऽर्हत्०" कही, पुरुषें "सुअदेवया" नी पहेली थोय अने स्त्रीयें "कमलदल" नी पहेली थोय कहेवी ॥ पछी खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी "नमोऽर्हत्" कही खित्तदेवयानी बीजी थोय स्त्रीयें तथा पुरुषें कहेवी ॥ पछी प्रगट एक नवकार गणी, बेशीनें छठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देईने, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक, चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण, कर्युं छे जी, ए रीते छ आवश्यक, संभारवां ॥ पछी "इच्छामो अणुसहिं" "नमोखमासमणाणं०" "नमोऽर्हत्०" कही, पुरुष, नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे अ

ने स्त्री संसारदावानी त्रण थोयो कहे ॥ पठी न मुत्थुणं कही, खमासमण आपी इछाकारेण संदिसह भगवन् स्तवन भणुं. एम कही नमोऽर्हत्०कही स्तवन कहेवुं ॥ पठी वरकनक०कही पूर्वली रीतें चार खमासमणपूर्वक भगवान् आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, ए चारने वांदी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी अट्ठाइज्जेसु० मुनिवंदन कहेवुं ॥ पठी खमासमण आपी इछाकारेण संदिसह भगवन् देवसिय पायछित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं, इछं देवसिय पायछित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थऊससिएणं०कही चार लोगस्स अथवा शोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स कहीने नीचे बेशी खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय संदिसाहुं, इछं कही वली बीजुं खमासमण देई इछाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय भणुं एम सज्जायनो आदेश मागी एक नवकार गणी सज्जाय कहेवी ॥ पठी एक नवकार गणी, खमासमण देई इछाकारेण संदिसह भगवन् डुक्खक्खउ कम्मक्ख

उं निमित्तं काउस्सग्ग करुं, इछं डुक्खक्खउ क म्मक्खउ निमित्तं करेमि काउस्सग्गं "अन्नठ०" कही "संपूर्ण चार लोगस्स अथवा शोल न वकार" नो काउस्सग्ग करवो, ते जेने लघु शां ति कहेवी होय एवो एक वडेरो, अथवा पोते शांति कहेवावालो होय तो पोतेज पारीने " नमोऽर्हत्० " कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे ॥ पछी इरियावही अने तस्स उ त्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी चउक्कसाय कही, नमुथ्थुणं कही, जावंति चेइआइं कही खमासमण देइ जावंति केवि साहु कही उवसग्गहरं कही हाथ जोडी मस्तकें राखी जयवीयराय कही खमासमण देइ मुहप त्ति पडिलेहवी ॥ पछी खमासमण देई इछाका रेण संदिसह जगवन् सामायिक पारुं. आ स्थानकें जो साक्षात्गुरु विराजमान होय तो ते कहे के "पुणोवि कायब्बं" तेवारें शिष्य "यथाश क्ति" कही फरी खमासमण देईइछाकारेण संदि सह जगवन् सामायिक पार्युं. तेवारें गुरु कहे

" आयरं न मुत्तवं " ते सांजली शिष्य तहत्ति कहे ॥ पछी जमणो हाथ चवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी " सामाइयवयजुत्तो०' कहीने आपेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ राखी एक नवकार गणी ऊठे ॥ ए देवसि प्रतिक्रमणनो विधि सामान्य पणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि वमेराथी समजवो ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ राइप्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवुं तेज्यां सुधी त्रण नवकार गणीयें तिहां सुधी सर्व विधि जाणवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् कुसुमिण डुसुमिण राइजवहृणि पायछित्तविसोहणछं काउस्सग्ग करुं. इछं करेमि काउस्सग्ग "अन्नछ उससिएणं० ,, कही चार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी खमासमण देई इछाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी, कहवुं ॥ पछी पूर्वोक्त देवसीनी रीतें जगवान्

आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु, ए चारेने प्रत्येके एकेकुं खमासमण देइ वांदवा ॥ पछी बे खमासमण देवापूर्वक सज्झायनो आदेश मागी एक नवकार गणी भरहेसरनी सज्झाय कही फरी एक नवकार गणी इच्छाकार सुहराई० कही इच्छाकारेण संदिसह भगवन राइप्रतिक्रमणे ठाउं एम कही जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी इच्छं सवस्सवि राइय दुच्चिंतिय० कहीयें पछी नमोत्थुणं,०करेमि भंते०इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जोमे राइउं०, तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने सबलोए अरिहंतचेइयाणं कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो ॥ पछी पुक्खरवरदी०, सुअस्स०, वंदण०, कही, अतिचारनी आठ गाथा (अथवा) गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी सिद्धाणं बुद्धाणं कही बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देवां ॥ पछी ऊभाथई इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइयं आलोउं इच्छं आ

लोएमि जो मे राइउं अइआरो कउ० कही "सातलाख" नो पाठ कही, अढार पापस्थानक आलोई सव्वस्सवि राइयंनो पाठ कहेवो ॥ पछी बेशीने जमणो ढींचण ऊन्नोराखी एक नवकार गणी करेमि जंते० इच्छामि पडिक्कमिउं० कहीवंदितासूत्र संपूर्ण कही बे वार वांदणां देवा. वली अप्नूठिउंहं अप्निंतर राइयं खामीने फरी बे वार वांदणां देवा ॥ पछी ऊन्ना थईने आयरिय उवज्झाए करेमि जंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जोमे राईउं० कही तस्स उत्तरी० कही तप चिंतामणि करतां न आवमे तो चार लोगस्स अथवा शोल नवकरनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही ठ्ठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीनें वांदणां बे वार देवां ॥ पछी सकल तीर्थ वंदन करीने यथाशक्तियें पच्चरकाण करवुं ॥ पछी इच्छकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चरकाण कर्युं छेजी एम छ आवश्यक संन्नारवां ॥ पछी पच्चरकाण कर्युं होय तो कर्युं छे जी, धार्युं होय तो धार्युं छे जी, कहेवुं ॥ पछी इच्छामोअणु

सहिं नमो गमासमणाणं कही नमोऽर्हत्०कही यें॥पछी विशाललोचन,०नमुछुणं,०अरिहंत चेइयाणं,०कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्०कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय कहेवी पछी लोगस्स० पुक्करवरदी,०सिद्धाणं बुद्धाणं,०कही अनुक्रमें चार थोयो कहीयें छैयें, तिहां सुधी सर्व कहेवुं॥ पछी नमुछुणं०कही जगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा॥ पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी "अड्ढाइज्जेसु" कहेवुं ॥ पछी ईशान खुणानी सन्मुख श्रीसीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें, तिहां सुधी सर्व करवुं ॥ पछी खमासमण देई श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत कहीयें छैयें, तिहां सुधी सर्व करवुं ॥ पछी सामायिक पारवाना विधिनी रीतें सामायिक पारवा सुधीनो सर्व विधि करवो॥ इति राइप्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥ २ ० ३॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणविधि ॥

॥ प्रथम दैवसिकप्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही

रहियें तिहां सुधी सर्व कहेवुं, पण चैत्यवंदनस कलाऽर्हतनुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्यानीक हेवी. पढी खमासमण देईनें इछाकारेण संदि सह जगवन् देवसिअं आलोइअ पमिक्कंता इ छाकारेण० पक्की मुहपत्ति पडिलेहुं. एम क ही मुहपत्ति पडिलेहियें पढी वांदणां बे दीजें, पढी इछाकार० संबुक्षा खामणेणं अप्नुठिर्जहुं अप्निंतर पक्किअं खामेउं इछं खामेमि पक्किअं पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि अपत्तियं० ॥ कही इछाकारेणसं० ॥ पक्किअं आलोएमि इछं आलोएमि जो मे पक्किउ अ इआरो कर्ज०कही इछाकारेण सं० ॥ पखीअ तिचार आलोउं एम कही अतिचार कहियें. प ढी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल बा रव्रत, एकशो चोवीश अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार पक्क दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणता हुर्ज होय, ते सवे हुं मने, वचनें, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ सव्वसवि पक्किअ डुचिंतिअं, डुप्नासिय, डुच्चिठिअ, इछाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स मिछामि डुक्कमं॥इछाका

रि नगवन् पसाउं करि पक्कि तपप्रसाद् करो जी. एम उच्चार करीने आवी रीतें कहियेंः-च उत्थेणं एक उपवास, बेआंबिल, त्रण नीवि, चार एकासणां, आठ बे आसणां, बे हजारस जाय,यथाशक्ति तप करी (प्रवेश) कस्यो होय तो पइठी कहियें, अने करवो होय तो तहत्ति कही यें, तथा न करवो होय तो अणबोल्या रहीयें. पछी वांदणां बे दीजें. पछी इच्छाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अप्नुठिउंहं अप्निंतर पक्किअं खामे उं इछं खामेमि पक्किअं पनरस दिवसाणं पन रस राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० पछी वांदणां बे दीजें. पछी देवसिअं आलोइअ पम्किंताइ छाका० ॥ नगवन्० पक्किअं पम्किमुं समपडि क्कमामि इछं एम कही करेमि नंते सामाइयं०॥ कही इछामि पडिक्कमिउं जो मे पक्किउं० कहे वुं. पछी खमासमण देइ इछाकारेणसंदि०॥ प क्किसूत्र पढुं. एम कही त्रण नवकारगणी सा धु होय तो पक्किसूत्र कहे अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तुं कहे पछी सुअदेवयानी थोय केहेवी. पछी हेगा बेसी

जमणो ढिंचण ऊंचो राखी एक नवकार गणी करेमि जंते० ॥ इछामि पडि० ॥ कही वंदित्तुं कहेवुं. पछी करेमि जंते० इछामि ठामि काउस्सग्गं जोमे पक्खिउं० ॥ तस्सउत्तरी० ॥ अन्नछ० ॥ कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा. अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्सग्ग करी पारवो. पारीने प्रगट लोगस्स कही मुहपत्ति पडिलेहिनें वांदणां बे दीजें, पछी इछाका०॥समाप्त खामणेणं अप्नुठिउंहं अप्निंतर० ॥ पक्खिअं० ॥ खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं एक पक्खाणं पनरस दिवसाणं पनरस राइयाणं जंकिंचि अपत्तिअं कही पछी खमासमण देइनें इछाका० ॥ पक्खि खापणां खामुं. एम कही एक खमासण देई तीन तीन नवकार गुणी एम खामणां चार खामवां. पछी देवसि प्रतिक्रमणामां वंदित्तुं कह्या. पछी बे वांदणां देइने तिहांथी ते सामायिक पारीयें तिहां सुधी सर्व देवसीनी पेठे जाणवुं, पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे "ज्ञानादि"नीथोयो कहेवी.स्तवन अजि

य शांतिनुं कहेवुं. सद्यायने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थोयो चार कहेवी. अने लघुशांतिने ठेकाणे मह्रोटी शांति कहेवी॥ इति पक्किप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ अथ चउम्मासीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ ए उपर कह्या मुजब पक्कीना विधि प्रमाणे करवुं, पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने पक्कीना आगारने ठेकाणे चउमासीना केहवा तथा तपने ठेकाणे छठेणं बे उपवास, चार आंबिल, छ नीवि, आठ एकासणां शोल बे आसणां, चार हजार सज्झाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरीप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ ए पण उपर लख्या मुजब पक्कीना विधि प्रमाणे करवुं, पण बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे चालीस लोगस्सनो काउसग्ग तपनें ठेकाणें अठम भत्तं एटले त्रण उपवास, छ आंबिल नव नीवि, बार एकासणां, चोवीस बे आसणां, अने छ हजार सद्याय ए रीतें कहेवुं" ने

पक्कीना आगारने ठेकाणे संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति संवत्सरीप्रतिक्र० सं० ॥

## पोसह लेवानी विधि.

प्रथम खमासमण दइ, प्रगट लोगस्स कहेवा पर्यंत इरियावहि पडिक्कमी, इछाकारेण संदिसह भगवान् पोसह मुहपत्ती पडिलेहु ! एम बोली, गुरु आदेश आपे एटले 'इछं' कहीने मुहपति पडी लेहवी. पछी खमा[1] इछा[2] पोसह संदिसाहु? इछं खमा० इछा० पोसह ठाउं? पछी इछं कही बे हाथ जोमी नवकार गणी,इछकारी भगवन् पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी. कहेवुं एटले गुरु पोसहनी करेमिभंते[3] उच्चरावे.

पछी खमासमण दइ इछा० सामायिक मुहपत्ति पडि लेहुं ? इछं कही, मुहपत्ति पडीलेहीने,

---

१ खमा० खमासमण देवुं

२ इछा० इछाकारेण संदिसह भगवन् कहेवुं

३ करेमि भंतेमा चार पहोरनो दिवसनो करनारने माटे "जाव दिवस " कहेवु, आठ पहोरनो करनारने माटे ' जाव अहोरत्त' कहेवु रात्रीना चार पहोरवालाने 'जाव शेष दिवस रत' कहेवुं अने दिवसनो चार पहोरनो करनारज रात्रिनो चारपहोरनो पण करे तो कोटीसहित छे माटे 'जाव अहोरत' कहेवुं

खमा० इच्छा० सामायिक संदिसाहुं? इच्छं. खमा०इच्छा० सामायिक ठाउं? इच्छं कही बे हाथ जोडी नवकार गणी इच्छाकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी, गुरु 'करेमि भंते सामाइयं' नो पाठ कहे. तेमां एटलुं विशेष जे जावनियमं ने ठेकाणे जावपोसहं कहेवुं. पछी खमा० इच्छा० बेसणे संदिसाहुं? इच्छं खमा० इच्छा० बेसणे ठाउं? इच्छा. खमा० इच्छा० सझाय संदिसाहु? इच्छं. खमा० इच्छा० सझाय करुं? इच्छं कही,त्रण नवकार गणवा. पछी खमा० इच्छा० बहुवेल संदिसाहुं? इच्छा० बहुवेल इच्छं. खमा० इच्छा० बहुवेल करशुं. इच्छं खमा० इच्छा० पडिलेहण करुं? इच्छं कहीने मुहपत्ति विगेरे पांचवाना पडिलेहवा. [1]मुहपत्ति ५० बोलथी, चरवलो १० बोलथी, कटासणुं २५ बोलथी. [2]सुत्रनो कंदोरो १० बोलथी अने धोतीयुं २५ बोल

१ मुहपत्तिना ५० बोल पाछल लख्या छे. ओछा बोल होय त्यां ते ५० माहेना प्रथमना ग्रहण करवा

२ पोसहमा आभूषण पहेरवा न जोइये कंदोरो सुत्रनो जोइये ते छोडी, पडिलेही, पाछो बांधीने ते संबंधना इरियावहीतेज वखत पडिकमवा ( बंन्ने टंकनी पडिलेहणामा समजवुं.

थी पडिलेहवुं.' पछी खमासमण दइ, इच्छाकारी भगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी. एम कही वडीलनुं अण पडिलेहुं एक वस्त्र उत्तरासन पडिलेहवुं. पछी खमा० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेहवी पछी खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं? इच्छं खमा० इच्छा० उपधि पडिलेहुं? इच्छं कहीने पूर्वे पडिलेहतां वाकी रहेल उत्तरासण,मात्रुं करवा जवानुं वस्त्र अने रात्री पोसह करवो होय तो कामली विगेरे २५ पचीस बोलथी पडिलेहवा. पछी एक जणे डंडासण जाची लेवुं तेने पडिलेही, इरियावही पडिकमीने काजो लेवो. काजो[1] शुद्ध एटले तपासीत्यांज स्थापनाचार्यनी सन्मुख उभडक वेसीने इरियावही पडिकमवा. पछी काजो यथा योग्य स्थानके अणुजाणह जस्सग्गो कहीने परठववो. परठव्या पछी त्रणवार वोसिरे कहेवुं. पछी मूल स्थानके आवीने सौ साथे देव वांदे अने सझाय करे.

---

१ काजामा सचित्त एकेंद्री नीकले तो गुरु पासे आलोयण लेवी. त्रस जीव नीकले तो यतना करवी.

## ॥ पोसह पारवानी विधि ॥

खमा० दइ इरियावही पडिक्कमी, चउक्कसा यथी जयवियराय पर्यंत कहीने, खमा० इच्छा० मुहपत्ति पडीलेहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडीले हवी. पछी खमा० इछा० पोसह पारुं ? यथाश क्ति खमा० इछा० पोसह पार्यो. तहत्ति कही नवकार गणी चरवला उपर जमणो हाथ स्था पीने सागरचंदो० कहे ॥

पछी खमा ०इच्छा० मुहपति पडिहुं ? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेहीने खमा०इच्छा सामायिकपारु? यथाशक्ति. खमा० इच्छा० सामायिक पार्युं. तहत्ति कही,चरवळा उपर हात स्थापी नवकार गणीने सामाइय वयजुत्तो कहे. पछी विधि करतां जे काइ अविधि थइ होय तस्समिछामी डुक्कडं कहे. इति

हवे जेणे सवारे आठ पहोरनोज पोसहली धो होय ते सांजना देव वांद्या पछी[1] कुंडल ली धा न होय तो लइने तथा डंडासण अने रात्री

१ कुडंळ–रुना पुमडा ते बे कानमा राखे जो गुमावेतो आळोयण आवे

ने माटे अचित्त पाणी चुनो नाखेलुं जाची रा
खीने पछी खमा० दइ इरियावही पमिक्कमीने
खमा० इग० स्थडिल पडिलेहुं ? इच्छं कही
चोवीश मांडला करे ते आ प्रमाणे—

आ मांमला वडी नीति लघु नीति विगेरे प
रठववा योग्य जग्या प्रतिलेखण निमित्ते कर
वाना छे तेमां प्रथम संथारापासेनी जग्याए छ
मांडला करवा—

१ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे,
३ आघामे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्जे पासवणे अणहियासे.
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे,
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे,
१ आघामे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे,
२ आघामे आसन्ने पासवणे अहियासे,
३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अहियासे,
४ आघामे मज्जे पासवणे अहियासे,
५ आघामे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे
६ आघामे दूरे पासवणे अहियासे,

१ अघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
२ आघाडे आसन्ने पासवणे आणाघाडे,
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
४ आघाडे मज्झे पासवणे आणाघाडे,
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे आणाघाडे,
६ आगाडे दूरे पासवणे आणाघाडे,

बीजा छ उपाश्रयना बारणानी मांहेनी तर फना मांडला उपर प्रमाणेज कहेवा.

त्रीजा छ मांडला उपाश्रयना बारणा बहार नजीक रहीने करवाना तथा चोथा छ मांडला उपाश्रयथी सो हाथने आशरे दूर रहीने करवाना तेमां पण त्रीजा छ मांडला प्रमाणे अणाघाडे शब्द कहेवो बाकीना शब्दो उपरना त्रण मांडला प्रमाणे

ए प्रमाणे २४ मांडला कर्या पछी इरियावही पडिक्कमीने चैत्यवंदन पूर्वक प्रतिक्रमण पूर्ववत करे. इति श्रीतपगछ प्रतिक्रमणविधि॥



॥ अथखरतरगछप्रति०

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुरक जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस डरिअकरिके सरि॥ तिहुअण जण अविलंघियाण जुवणत्त य सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास थंजणय पुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति झत्तिवर पु त्त कलत्तहि, धस सुवन्न हिरस पुस जणजुंजहि रज्जहि ॥ पिरकहि मुरक असंखसुरक तुह पासप साइण, इयतिहुअण वरकप्परुरक सुरकहि कुण महजिण ॥ २ ॥ जरजजर परिजुस कणणहु ठ सुकुठिण, चरकुरकीणरवएणखुड्डनरसल्लिअ सूलिण॥ तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंतिपु णणव, जय धणंतरिपास महवि तुहुं रोगहरो जव॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धिउ अपय त्तिण, जुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं वि सुत्तइ, चरथिरगरल गहुग्गखग्ग रिउवग्गवि

गंजइ, ऊवियसब्व अणत्थ घब्व निवारइ दय करि, ऊरिअइं हरउ सुपासदेव ऊरिअकरिके सरि ॥५॥ तुह आणाथंनेइ नीमदप्पु ध्दर सुरव र, रक्कस जक्क फणिंद विंद चोरानलजलहर॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पव्विअ अब्व अणत्थ हिब्रनत्तिभ्भरनिभ्भर, रोमं चंचिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसु सेवहि कमकमलजुअल परकालिअकलिमलु, सो नुवणत्तयसामि पास महमद्दउ रिउबलु॥७॥ जय जोइअ मणकमलनसल नय पंजरकुंजर, तिहुअणजणआणंदचंद नुवणत्तयदिणयर॥ज य मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंन णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवसुअवसु सुसु वसिउ ब्प्पसहि,सुरकधम्मु कामउकाम नर नियनिय सत्थ हि ॥ जं जायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिध्दउ, सो जोइअ मण कमलनसलसुह पास पवध्दउ ॥ ए॥ नय विब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर लिअ नयणविसन्नुसुन्नुगग्गिरगिरकरुणय॥ तइं

सहसत्तिसरंति हुंतिनरनासिअ गुरुदर, महवि
जविसजसइपास नय पंजरकुंजर॥ १० ॥ पइं
पासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह
पवूढरूढ उहदाहसुपुलइय ॥ मण्हिमणुसजण्
पुण्अप्पाणं सुरनर,इयतिहुअण आणंदचंदज
य पास जिणेसर॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट
टंकारव पिल्लिअ, वल्लरमल्ल महल्लनत्ति सुरवर
गंजुल्लिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति नवणेहि
महूसव, इय तिहुअण आणंदचंद जयपाससुहु
न्नव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु
रिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थसत्थवित्थरि
अ पहानर ॥ कलिकलुसिअ जण घूअलोयलो
यणह अगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह नुव
णत्तय दिणयर॥१३॥ तुह समरणजलवरिससि
त्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थवोह कं
दलदल रेहणि॥जायइ फलनरनरिय हरिय उ
हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि
पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणव
ल्लिउल्लूरियउहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग उ
ग्गइगम वारणुं॥जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणि

यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय जं तुपिआमहु ॥ १५ ॥ जुवणारसनिवासदरिअ परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविसंठुल चिठहिं, इय तिहुअण वणसीह पास पावाइ पणासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कररं जिअनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगंजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंभणयपुरठिअ ॥ १७॥ महमणुतरलपमाणनेय वायाविविसंठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तउ, इयमहमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुणकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिठिउकिठदेवदीणय मविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्पल्ललल्लुअह्मेहिंदुहत्तइं, तह विनपत्तउताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं॥१९॥तुहुं सामिहुतुहुंमाय वप्पतुहुं मित्तपियंकरु,तुहुंगइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु॥हउं दुहभरभारिअबराउ राउलनिब्भग्गउ,लीणउ तुह

कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ प
इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि
विमइं मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि
वि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल,
मइं अवहीरहि केणपाससरणागयवछल ॥२१॥
पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्नपयोअण,तुहुं जिण
पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
चित्तवित्तिनयनिंदिअसममण,माअवहीरिअजु
ग्गउविमइं पासनिरंजण ॥२२ ॥ हउं बहुविहउ
हतत्तगत्ततुहुं उहनासणपरु,हउं सुयणहकरुणि
क्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउं जिणपासअ
सामिसालुतुहुं तिहुअणसामिअ,जं अवहीरहि
मइं ऊखंतइय पासनसोहिअ॥२३॥जुग्गाजुग्ग
विभागनाहनहुजोअणतुहसमभवणुवयारसहा
वभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण
नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय उहबंधवपासनाह
मइं पालथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
विअन्नविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ
वयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह
णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चं

गउ ॥२५॥ अहअसविजुग्गयविसेसकिविमण हि दीणह, जं पास विउवयारुकरइ तुहनाहसम ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प सीयह, किं असुंण तंचेव देव मामइअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्रण नहु होइ विहल जिणजाण उ किंपुण,हउं डुक्खिउ निरुसत्तचत्तडुक्कउ उस्सु यमण ॥ तं मसउ निमिसेण एण एउविजाइ ल ब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ ॥ २७॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप यासिउ, किजउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि उ ॥ असु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिसदयास उ, जइ अवगिससि तुंहिजअहहकिंहोइसहया सउ ॥२८॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवे लविउ, तउजाणुंजिणपासतुह्महउंअंगीकरिअ उ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउंहावण, रक्कंतह नियकित्तिणेयजुजाइअवहीरण ॥२९॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अण लिय गुणगहण तुह्म मुणिजणअणिसिम्हउ ॥ इय मइं पसियसुपासनाहथंभणयपुरठिअ, इय मुणिवर सिरि अभयदेव विसवइ अणिंदिअ॥

॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनक तीर्थराज श्रीपार्श्व नाथस्तवनम् ॥

॥ पीछें जय महायस कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभा ग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समच्छ परम च्छ जाणय, जय जय गुरु गरिम गुरु ॥ जय छु हत्त सत्ताण ताणय, थंभणयठिय पासजिण ॥ भवियह भीम भवुत्तु, भव अवणंता णंत गुण तुझ त्तिसंझ नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

अथ सदाकालका अवश्य कर्तव्य सामायक पडिक्कमणा शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥

॥ प्रणम्य श्री जिनाधीशं सद्गुरुं च विशेषत श्राद्धाहोरात्रकृत्यानि लिख्यन्ते लोक भाषया ॥ १ ॥

॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्या पोशह शा लाये ( अथवा) गुरुकने अथवा घरने एक प्र देशे ( आवी ) प्रथम दिवस संध्याये पम्लि ह्या वस्त्र पहिरी (जो) गुरुनो जोग न हुवे (तो) आप प्रमार्जित थानकें खमासमणपूर्वक तीन

नवकार गुणी थापनाजी थापे (पछे)खमासमण देई कहे इच्छाकारेण संदिस्सह भगवनसामाय कमुहपत्ती पडिलेहुं ( गुरु कहै पम्लिेह ) पछे इछं कही, दूजीखमासमण देई मुहपत्ती पडिले है उन्नो होय खमा० कहे ॥ इच्छा० सं ॥ भ० सामायक संदिस्साऊं ( गुरुकहे संदिस्सावेह ) पछे इछं कही, वलेख० देने कहे इच्छाका० सं भ० ॥ सामायिक ठाउं ( गुरु कहे ठाएह)इछं कही खमासमण देई अर्धावनतकाय उन्नो रही तीन नवकार गुणी कहे इछकार भगवन पसाव करी सामायक दंड उच्चरावोजी ( गुरु कहे उचरावे मो)पछे करेमि भंते सामाइयं(इत्यादि) सामायक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई॥ इच्छा० सं० भ० इरियावहियं पडिक्कमामि ( गुरु कहे पम्किम है ) पछे इछं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए ( इत्यादि पाठ कहे ) इरियावही पडिक्कमि॥ एक लोगस्सनो काउसग्ग करी णमो अरिहताणं कही काउसग्ग पारीमुखे प्रगट लोगस्स कही खमा० देई ॥ इच्छा० सं०

भ० वेसणो संदिस्साउं(गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इछं कही खमा० देई इछा० सं० भ० वैसणेठाउं ( गुरु कहै ठाए है ) पछै इछं कही खमासमण देई ॥ इछा० सं० भ० सिझाय संदिस्साउं ( गुरु कहे संदिस्सावेह ) पछै इछं कही ॥ पांगरणोपमिग्घाउं ( गुरु कहै पडिग्घाएह ) पछै ॥ इछं ॥ कही ॥ वस्त्र ग्रहण करै. इति प्रभातसामायक ग्रहणविधि ॥

॥ अथ देवसी प्रतिक्रमण ॥

॥ प्रथम चैत्यवंदन ॥ जयतिहुणनी पांच गाथा पहलाथी और दोय गाथा छेडानी कही जय महाशय २ कहीने सक्रस्तव आदि चारे थोभ देववंदन करीनीचा वैसीने नमोछणं० कहे पछे वांदणापूर्वक श्री आचर्यमिश्र १ श्रीउपाध्यायजी मिश्र २ श्री वर्तमानभट्टारक श्री पूज्य जीनो नाम लेइ वांदीये ३ सर्व साधु साध्वी वांडुं ॥ पछे सव्वसवि राईय देवशिय० करेमि भंते० इछामि ठामि० तस्सुतरी० अन्नछू० आठ नवकारनो काउसग्गकरे मुंहडे लोगस्स कहे पछे तीजे आवश्य करी मुहपत्ती पमिले

हवी ॥ दोय वांदणा देवे देवसियं आलोएमी० पछै ठाणेकमणे० पछे चौंपुरा दिवसना लघु अतिचार ॥ अढार पापस्थानक आलोई सव्व सविदेवसिय० पछे तीन नवकार तीन करेमि० पछे वंदेतूसूत्र कहे पछे वांदणा दोय देवे ॥ पछे अब्भुठिउंमि कही फेर २ वांदणां देई ॥ आय रिउं उवझ्झाए० करेमि० तस्सुतरी० अन्नत्थू० दोय लोगस्सनो काउसग करे मुंहडे लोगस्स कहे ॥ वंदण० अन्नत्थू० पछे एक लोगस्सनो काउ सग ॥ मुंहडे पुष्करवरदी वट्ठे० वंदण० अन्न० एक लोगस्सनो काउसग्ग मुंहडे सिध्धाणं बुध्ध णं० पछे सुहदेवीयाए करेमि काउसग्गं॥अन्न० १ नवकारनो काउसग्ग करे ॥ सुवर्णसालिनीदे यात्० एक गाथा कहे पछे क्षेत्रदेवीयाए करेमि काउस्सग अन्न० १ नवकारनो काउसग करे पछे यासांषेत्रगतासंति गाथा १ कहे १ नव कारगुणी छठे आवश्य करी मुहपत्ती पडिलेहे दोय वार वांदणा देवे ॥ इच्छामो अणुसठियं नमोखमासमणाणं ॥ नमोस्तुवर्ध्दमानाय० तीन गाथा कहे ॥ नमोत्थुणं कही वमोतवन कहे,

पछे श्री आचार्यजी मिश्र, १ श्रीउपाध्यायमिश्र २ सेवसाधु साध्वी वांडं अह्वा इजो सु० कह ना फेर खमासमण देइ ॥ पछे देवसीप्रायश्चित्त विसोधवानिमित्तं करेमि काउसगं अन्न०४ लो गस्सनो काउस्सग करे पछेमुंहमे लोगस्स कहे पछे कडोपडव उड्डावनिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्न० ४ लोगस्सनो काउस्सग करे मुंहडे लो गस्स कहे ॥ पछे सिझायं संदिस्साएमि सिझाय करेमि ॥ पछे श्रीसट्ठी कहे ॥ पछे नमोत्थुणं०कही ओटो तवन कहे पछे जयवीराय कहे पछे सिरथं जणठियपाससामिणो० कहै पछे श्रीथंजना पा र्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्स ग्ग वंदण० अन्न० ४ लोगस्सनो काउसग्ग करे पछे श्रीखरतरगछशृणगारहारजंयमयुगप्र धानन्नट्टारक दादाजी श्रीजिन दत्तसूरिजी महा राज चारित्र चूडामणी आराधवानिमित्तं करेमि काउसग्गं अन्न० १ लोगस्सनो काउसग्ग करे॥ इणीहीतरे दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिनो १ लो गस्सनो काउसग्ग पारी एक नवकार गुणी चैं त्यवंदन करे चउक्कसाय० कहै ॥ नमोत्थुणं जय

वीरायसूधी पछे लघु शांति कहे पछे सामायक पारे

॥ हवे राईप्रतिक्रमण विधि ॥

॥ एक खमासमण देई ॥इछा० सं०भ०॥ चैत्यवंदन करुं (गुरुं कहे करेह) इछं ॥ कही जय उसामी १ रिसहसेत्रुंज उजिंत पहुनेमि जिण जयउ वीरसच्चउरमंमण भरुअछहिमुणिसुव्वयम हुरिपास डुहडुरियखंडण अवरविदेहिंतिछयर चिहुं दिशिविदिशि जंकेवि तीआणागयसंपयं वंडंजिणसव्वेवि कम्मनुमिहिं २ पढमसंघयण उक्कोसउ सत्तरिस उजिणवराणविहरंत लप्नई नवकोम्मिकेवलिण कोडिसहसनव साहू संपय सं पइ जिणवरवीसमुणिडयकोम्मिवरनाण समणा कोम्मिसहसडयथुणिजयणिच्च विहाण सत्ताण वइ सहस्सा लस्का बपन्न अठकोडिउ चउसय बयासिया तिल्लुके चेइये वंदे वंदेनवकोडिसयं पणवीसं कोडि लस्क तेपन्ना अठावीस सहस्सा चउसय अठासिया पम्मिमा॥जं किंचि इत्यादि जयवीरायसूधी चैत्यवंदन करे ॥ पछे खमा० देई ॥ इछाकारेण संदिस्सहे भ० कुसुमिण डु स्समिणराई प्रायछित्त विसोहणठं करेमि काउ

सग्गं ( गुरु कहें करेह ) अन्न० ॥च्यार०॥४॥ लोगस्सनो काउस्सग करी पारी प्रगट लो गस्स कहै ॥ पडिक्कमणो ठाववानो अवसर हूवां१ खमासमण देई॥ (श्री आचार्यजीमिश्र) कही वांदियेफेर खमासमण देई॥(श्रीउपाध्याय जी मिश्र )पछे वांदणा दई(जंगमयुग प्रधानभ ट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम कही वांदिये ॥ वली खमासमण देई साधूजी वांदीये ॥ इम च्यार खमासमणें पडिक्कमण ठवी॥इछकार समस्त श्रा वको वादूं(कही)गोडा लिये वेसी मस्तक नमावी दोय हाथे मुहपती मुखे देई सव्वसविराईय (इ त्यादि कहै ) पिण इछाकारेण संदिस्सह (इसो न कहै ) पछे सक्रस्तव कही ॥ ऊभो थई करे मि० इछामि ठाउं काउस्सग्गं० ( इत्यादि पाठ कही ) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० चारित्र शुद्ध नि मित्तें १ लोगस्सनो काउसग्ग करी ( पारी ) दर्शन शुद्धि निमिते लोगस्स कही सव्वलोए अ रिहंत चेइआणं ॥ करमि काउसग्गं इत्यादि कही १ लोगस्सनो काउसग्ग करी ( पारी ) ज्ञानातिचारनिमित्ते पुक्खरवरदी वड्ढे (कही)

सुयस्स जगवर्ज करेमि का० वंदणवतीयाए (इत्यादि कही ) काउस्सग्ग करे काउस्सग्गमांहे चौपुहरी रात्रि मांहै सातलाख इत्यादि आलोय णचिंतवे(अथवा) आठ नवकार चिंतवे (पवी) काउसग्ग पारी ॥ सिध्धाणं बुध्धाणं कही संडासाप्रमार्जनपूर्वक वैसी मुहपती पडिलेह पवेदो वांदणा देई अब्भुठिउंमि खामि वांदणा वेदीजै तेविधि देवसीनी परे जाणवुं पवे सव्वसवि० ॥ इछा० ज० ए पद कहवे करी आलोया अतीचारनो प्रायछित मांगे पवे इछं तस्समिछामि डुकडं ॥ पवे जीमणो गोडो उंचो करी तीन नवकार तीन करेमि० इछामि पडिक्कमिउं जोमेराईयो इत्यादि कही वंदितूसूत्र तंनिंदे तंच गरिहामि सूधी कहे ॥ पवे वांदणां देवे । पेवे अब्भुठि० कही फर वांदणां वेदेवा पवे० आयरिउंउ वजाए० करेमिजंते० इछा मिठामि काउसग्गं । तस्सुतरी० अन्नछु० ६ लोगस्सनो काउसग्ग अथवा चौवी नवकारनो काउसग्ग करे ।पवे मुंहमै लोगस्स कहे पवे मुहपत्ती पडिलहे वांदणां देवे सग

ला तीर्थनें याद करे पछे पच्चरकाण करे पछे इछामो अणुसहिं (इसोपद कहै,) पछे नमोख मा समणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः पछे संसारदावा० (अथवा) परसमय तिमिरतरणं तीनगाथा कहै नमोत्थुणं० अरिहंतचे ईयाणं करेमिकाउसग्गं वंदण० अन्नत्थू० १ नवकारनो काउसग्गकरे पछे थूईरी १ गाथा कहै पछे लोगस्स कही वंदण० अन्नत्थु १ नवकारनो काउसग्ग पछे थूईरीउजी गाथा कहै पछे पुष्करवरदी वढे०वंदण०अन्नत्थ०१ नवकारनो काउसग्ग थुईरी तीजी गाथा कहै पछे सिद्धाणं वुद्धाणं कहै पछे १ नवकारनोकाउसग्ग करी पछे थूईरी चौथी गाथा कहै पछे श्री आचार्यजी मिश्र१ श्रीउपाध्यायजी मिश्र० सर्वसाधूवांडं ॥ इतिराई प्रतिक्रमण॥पछे श्रीसीमंधर चैत्यवंदन करवो पछे सिद्धगिरीनोचैत्यवंदन करी सामायकपारवा ॥

॥ हवे पाखी पडिक्कमणो लि०॥ तिहां प्रथम वंदिउ सूत्र पर्यंत देवसी पडिक्कमी पछे इछाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोईयं पडिकंतं

पखी मुहपती पडिलेह पछे दो वांदणा देवै ॥ पाखी पडिक्कमणो हुवे तो पाखीरो नाम लेवे अथवा चोमाशी वा संवत्सरी, होय तो सोही नाम लेवे पखोवइ कंत्तो कहणो ॥ पछे वांदणा दिया पछे पुन्यवंतो बींक जयणा करज्यो मधुर श्वरे पडिक्कमज्यो ॥ खासे सुविवरा करी खासज्यो मांम्ल मांहे सावचेतसावधान रहिज्यो देवसीरे ( थानके ) पाखी चोमासी ढमढरी नणज्यो ॥ पछे इछाकारेण संदिस्सह नगवन संबुधाखाम णेणं ॥ अब्नुठिउंमि अभ्निंतर पखीयं खामेमि इछं खामेमि ॥ पखियं पन्नरसदिवसाणं पनरस राईणं (चोमासी) मांहे चउन्हं मासाणं अठन्हं पखाणं एकसोवीसरायं दियाणं (संवत्सरी) पडि क्कमणो हुवे तो डुवालसन्नमासाणं चोवीसन्ने पषाणं तीनसे साठ रायं दियाणं जंकिंचिपतियं सर्वकहणो पछे इछाकारेण संदिस्सह नगवन पखियं (३) आलोउं जोमे पखिउं अयारोकउं० सर्वकहणो पछे नाणंमिदंसणंमिअ० वृ६ अ तिचार आलोयणा कहणा सब सवि पखिय ३ सर्व कहणो पछे वांदणा वे देवे पछे इछाकारेण

संदिस्सह ज्ञगवन् देवसिय आलोइयं पमिक्कंतं पत्तेय खामणेणं अब्भुठिउमि अभ्रिंतरपखियं लारेकह्यो जिण रीतें सगलोकहणो पछे वांदणा देवे पछे (पाखी) सूत्र कहे श्रावक श्राविका वंदेतु कहे पमिक्कमे देवसियं के ठिकाणे पखीयं ३ इसो कहणो तीन नवकार तीन करेमि ज्ञंते कहीने वंदेतु कहे मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धनिमित्तं करेमि काउसगं इछामि ठामि काउसगं जोम० पछे तस्सुतरी० अन्नछ० पछे पाखी पडिक्कमणे १२ चोमासे २० संवत्सरी ४० लोगस्सनो काउसग करे पछे प्रगट लोगस्स कहे पछे मुहपत्ती पमिलेह दोय वांदणा देवे पछे इछाकारेण छंदिस्सह ज्ञगवन् समाप्त खामणेणं अब्भुठिउमि अभ्रिंतर पखीयं ३ लारे कह्यो जिणतरे कहे पछे इछा०ज्ञ०खामणाखामुं पुन्यवंतो एकखमासमण देई तीन तीन नवकार गुणी चार वार पाखीसमाप्त खामणाषामो पछे खामणा खामी पछे पुन्यवंतोपाखीने लेषे एक उपवास अथवा दोय आंबिल तीन नीवी (अथवा) चार एकासणा (अथवा) दोय हजा

र सिझाय करी पाखीनी पेठ पूरज्यो पाषीने स्थानके देवसी जणज्यो इम ङणाङण चोमासि ( अने ) त्रिगुण संवत्सरीये सर्व कहवो पठे देवसी प्रतिक्रमण ठेज्यो ज्यांथी वांदणा अप्रठिर्जमि फेर वांदणा इत्यादि सर्व करणो देवसी कीरीते समजणो ॥ इति खरतरगठसामायिक ( तथा ) पंच प्रतीक्रमण वीधी समाप्त

॥ अथ आंचलगठ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम नवकार कही एक ख० देई इछकार सुहराई सुह देवसी कही गुरुनेसुखसाता पूठी इरिया वही० तस्सोत्तरी० अन्नछ० कही एक लोगस्सनो उसग्ग करी(प्रगट)लोगस्सकहै ( पढी ) इछाका०सं०जग० गमणागमण आलोउं तेकहै छै

॥ गमणा गमण ॥

मारगनेविषे जातां आव तां पृथ्वी काय अप काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय,त्रसकाय, नील,फूलमाटी,पाणी,कण,कपाशिया,स्त्रीआदी तणो संघट्ट हुवो होय ते सविहुमन वचन कायायें करी तस्स मिछामिडुक्कडं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिकठा वा त्रण नवकार गणुजी एम कही नीचा वैसी तीन नवकार कहे पछी उभा थई इछा० भ० जीवराशी खमाउं पछे सात लाख कही अढार पाप स्थानक आलोवे पछी इछा० भ० गुरु स्थापनाक रुंजी एम कही पचेंदिय कहे इति(प्र थम)खमासमण ॥ खमासमण पूर्वक नीचे वैसी ने इछा० भ० ड्व्य, क्षेत्र काल भाव धारुंजी १

॥ अथ ड्व्य क्षेत्र काल भाव ॥

॥ ड्व्य थकी लूगमां,लत्ता, घरेणां,गांठां पा थरणुं नोकरवाली,धार्या प्रमाणें मोकलां छे. क्षेत्र थकी उपाशराना वारणानी मांहेली कोरें काल थकी समायिक,निपजे,तिहांसुधी,भावथकी यथा शक्तिने राग द्वेषें रहित व्रतीसंघातें वोलवुं गुर्वा दिक संघातें बोलवानो आगार छे. अव्रती संघातें बोलवानुं पच्चरकाण छे.ए रीतें छे कोटियें करी सामायिक करुं. सामायिक व्रत उच्चार करवा (एक)नवकारनो काउसग्गकरुंजी.एम कही उभा थइनेएक नवकार गणीयें. ॥ पछी इछाकारेण संदिसह भगवन्! सामा यिक व्रत उच्चार करावो

जी. पढी गुरु (तथा) वडेरो करेमि नंते कहे॥ पढी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह नगवन्! बीजा आवश्यक नणी इरियावहियं पमिक्कमुं जी. एम कही इरियावहि पडिक्कमी, पढी तसउत्तरी० कहेवी. पढी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, लोगस्स प्रगट कहे लोगस्स कहेतां दर्शनाचार निर्मल थाय ए बीजुं आवश्यक अने त्रीजुं खमसमण थयुं,पढी इच्छामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इच्छाकारेण संदिस्सह नगवन् ठेम्नानुं पमिलेहण करुं जी एम कही उत्तरासंगना ठेम्नानुं पडिलेहण करवुं. पढीइच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह नगवन् त्रीजा आवश्यक नणी आवश्यक वांदणां करुं जी. पढे वांदणां देवे एम गुरु समीपें वांदणां बे वार दीजें, त्यां बीजी वारने वांदणे आवस्सिआए, ए पद न कहेवुं; अने राइपडिक्कमणे; राइउं वइक्कंतो कहेवुं (परकीयें) परिकउं वइक्कंतो कहेवुं(चउमासियें) चउमासिउं वइक्कंतो कहेवुं. (संवत्सरियें) संवछरोवइक्कंतो कहेवुं ए वांदणां देतां ज्ञानादि त्रण निर्मल थाय. ए

त्रीजुं आवश्यक अनेचोथुं खमासणथयुं. इहा पोंताने मुखें, संध्या होय तो चउविहार अने सवार होय तो नवकारसी प्रमुखनुं पच्चरकाण मनने नावें धारे, तेथी तपाचार निर्मल थाय ॥ पठी एक जण उन्नोथइने इछामि खमास मण पूर्वक इछाका० सं० नगवन्! चोथा आवश्यक नणी लघु अतिचार आलोउं जी. ॥

॥ अथ लघु अतिचार ॥

॥ प्रथम नवकार कहीने, इउं अरिहंतदेव, सुसाधु गुरु, जिनप्रणीतधर्म, नावतो समकित प्रतिपालुं; उव्यतो लौकिक लोकोत्तर देवगत, गुरुगत, पर्वगत मिथ्यात्वविषे जयणा करुं. ए श्रीसमकित तणा पांच अतिचार शोधुं. शंका, कंखा, वितिगिछा, परपाखंमीपरसंसा, परपाखं डी संथुउ. ए पांच अतिचार मांहे जे कोई अतिचार हुउ होय, ते सवि हुं, मने, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कमं. ॥

१ ए बार व्रतमांहे पहेलुं प्राणातिपात विर मण व्रतस्थूल वेंड्यादिक त्रस जीव निरपराध उपेतकरण संकल्पी करी हणवा नियम, आरं

नें जयणा, ए पहेला प्राणातिपातविरमणव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं.॥ बंधे, वहे, छविछेए, अइभारे, भत्तपाणवुछे ए ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सविहुं मन, वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥१॥

२ बीजुं स्थूलमृषावादविरमणव्रत पंचविध, कन्नालीए, गोवालीए, भूमालीए, नासावहारे, कूडसरिकज्जे. ए पांच मोटकां कूडां आपणने काजें, स्वजनने काजें धर्मने काजें मूकी, परकाजें कूडुं बोलवा नियम, सूक्ष्म अलिक तणी जयणा करुं ॥ ए बीजा स्थूलमृषावादविरमण व्रततणा पांच अतिचार शोधुं. सहस्साभरकाणे, रहस्साभरकाणे, सदारामंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सविहु मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥ २ ॥

३ त्रीजुं स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत. सचित्त, अचित्त, राजनिग्रह कारीउं. पियारुं अणदीधुं लेवा नियम. सूक्ष्म तृण, इंधण, पथिपतित ववहार नियोगे, दाणचोरी जयणा ॥ ए

त्रीजा स्थूलअदत्तादान व्रत तणा पांच अति चार शोधुं. तेनाहमे, तक्करप्पउंगे, विरुध्धरजाइ क्कमे,कूम तुल्लकूडमाणे, तप्पमिरूअगववहारे॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मि छामि डुक्कडं ॥ ३ ॥

४ चोथुं शीलव्रत. यथाशक्तें स्वदारासंतोष, परदाराविवर्जनारूप. ए चोथा शीलव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ इत्तरपरिग्गहियागमणे, अपरपरिग्गहियागमणे, अनंगक्रीमा, पर विवाहकरणे, कामनोगतिव्वाभिलासे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं,मने वचने,कायायें करी मिछामि डुक्कडं.

५ पांचमुं परिग्रहपरिमाणव्रत नवविध. खित्त, घर, हट्ट, वाडिय, कुविय, धण, धन्न, हिरस्र, सुवस्र, अइपरिमाण डुप्पय, चउप्पयमिय. नवविह परिग्गह वयंतो ॥ ए पांचमा परिग्रह परिमाणव्रततणा पांच अतिचार शोधुं. खित्त वत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरस्रसुवस्रपमाणाइक्कमे, धणधन्नप्पमाणाइक्कमे, डुप्पय चउप्पयप्पमा

णाइक्कमे,कुवियप्पमाणाइक्कमे ॥ ए पांच अति चारमांहेजे कोइ अतिहार हुर्ड होय, ते सवि हुं मने, वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

६ बहुं दिशिव्रत त्रिविधें जाणवुं. उड्ढदिसिवए, अहोदिसिवए, तिरियदिसिवए ॥ ए बठा दिशिव्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढि,सयंतरका ॥ ए पांचअति चार मांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमुं जोगोपजोगव्रत द्विविध. जोजनतः कर्मतश्च. तत्र जोजनतः "सच्चित्तदव विगइ, उवाण तंबोल चीर कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंज दिसिन्हाण जत्तेसु ॥ १ ॥ ए सातमा जोगोपजोग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ सचित्त आहारे, सचित्त पडिबद्धआहारे, अप्पोसहि जरकणाया डुप्पोसहि जरकणया तुछो सहिजरकणाया ॥ ए पांच अतिचार मा

हें जे कोइ अतिचार हुउं होय, ते सवि हुं म
ने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं. ॥ ७ ॥
॥ कर्मतो पन्नरे कर्मादान. इंगालकम्मे, वण
कम्मे, साडी कम्मे, भाडी कम्मे, फोडीकम्मे, दंत
वाणिज्जे, लख्क वाणिज्जे, रस वाणिज्जे, विस वा
णिज्जे, केस वाणिज्जे, जंतपीलण, कम्मे निल्लंछ
ण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाय सो
सणया, असई पोसणया. ए पन्नर कर्मादांन
स्थूल नियम, सूक्ष्म तणी जयणा ॥ ए पन्नर क
र्मादांनमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, तेस
वि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं.
८ आठमुं अनर्थदंडविरमणव्रत, चतुर्विध.
अवझाणायरिए, प्पमायायरिए, हिंसप्पणयाणे,
पावकम्मोवएसे॥ए आठमा अनर्थ दंडविरमण
व्रततणा पांच अतिचार शोधुं ॥ कंदप्पे कुक्कुइ
ए, मुहरिए, संजुत्ताअहिगरणे, उवभोगपरिभो
ग, अइरेगे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ
अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने,
कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ८ ॥
९ नवमुं सामायिकव्रत. सामइय नाम साव

द्यजोगपरिवज्जणं,निरवज्जजोग आसेवणं च॥ए नवमा सामायिकव्रततणा पांच अतिचार शोधुं मण डुप्पणिहाणे,वयडुप्पणिहाणे कायडुप्पणिहाणे,सामाइयस्स अकरणया, सामाइयस्स अणवुठिअस्स करणया ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिठामि डुक्कडं. ॥ए॥

१०दशमुं देशावगाशिकव्रत ॥ दिसिवयगहियस्स, दिसापरिमाणस्स पइदिणं परिमाणकरणं ॥ ए दशमा देशावकाशिकव्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ आणवणप्पउगे पेसवणप्पउगे सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ वहियापुग्गलपरक्केवे ॥ ए पांच अतिचार मांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिठामि डुक्कडं. ॥ १० ॥

११ इग्यारसुं पौषधव्रत, चिहुं भेदे जाणवुं आहारपोसहे, सरीर सक्करपोसहे, बंभचेरपोसहे, अव्वार पोसहे ॥ ए इग्यारमापौषध व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पमज्जिय डुप्पम

जिय सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहि यउच्चारपासवणज्ञुमि, अप्पमज्जिअ डुप्पमज्जि अउच्चारपावसण ज्नूमि, पोसहोववासस्स सम्मं असणुपालणया ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार हुवो होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमुं अतिथिसंविजागव्रत, अतिथि संविज्ञागोनाम. नाया गयाणं, कप्पणिज्जाणं, अन्न पाणाइणं, दव्वाणं, देस, काल, सन्धास क्कार कम्मजोए पराइ ज्ञत्तीए आयाणुग्गह बु द्धिए संजयाणं दाणं ॥ए बारमा अतिथि संवि ज्ञाग व्रत तणा पांच अतिचार शोधुं ॥ स चित्त निरकेवणया, सचित्त पिहणया, काला इक्कमदाणे परोवएसे, मछरया ॥ ए पांचअ तिजारमाहे जे कोइ अतिजार हुवो होयतेसवि हुं मने वचने कायायें करी मिछामि डुक्कडं १२

॥ संलेषणा तणा पांच अतिचार शोधुं. इ ह लोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जि विअासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे कामज्ञोगा

संसप्पउंगे ॥ ए पांच अतिचारमांहे जे को इ अतिचार हुवो होय ते सवि हुं मने, वचने, कायायें करी मिछामि डुक्करं.

॥ एवंकारे श्री समकित मूल बार व्रतविषे पंच्याशी अतिचारमांहे जे कोइ अतिचार, अनाचर, अतिक्रम, व्यतिक्रम, हुउं होय तथा जाणते, अजाणते, सूक्ष्म, बादर, कानो, मात्रा, मिंमी पद, अक्षर, उंगे, अधिको, हलवो, ज्ञारी, आगल, पाछल, कह्यो कहेवाणो होय ते सविहुं मने वचने, कायायें करी मिछामि डुक्कडं॥

॥ देसावगासिअं उवन्नोग परिन्नोग पच्चरकामि अन्नछणान्नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ॥ इति लघु अतिचारःसंपूर्णम्ः ॥

॥ ए पडिक्कमणनामें चोथुं आवश्यक, अने पांचमुं खमासमण थयुं. पछी इछामि खमासमण पूर्वक हेठा बेसीने इछाकारे० संदिस्सह ज्ञगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इछं ॥ जय जय महाप्रज्ञु, देवाधिदेव, स

वंड़, श्रीवीतराग देव ॥ सुह दीठुं परमेसर, सुं
दर सोम सहाव ॥ नूरि नवंतर संचिउं,नठो
सो सवि पाव ॥ जे में पाप किया बालपणे, अ
हवा अन्नाणे ॥ अणनवंतर सो सोखंडज
यो परमेसर तुह मुंह दिठं सिरि पास जिणेसर
॥ पास पसी पसाउ करी वीनतमी अवधार ॥
संसारडो वीहामणो स्वामीआवा गमणनिवार॥
हच्चडाते सुलस्कणा जेजिनवर पूजंत॥ एके पुणे
वाहिरा सो परघर काम करंत कवणेवामीवाविया
कवणे गुंथ्यां फूल ॥ कवणे जिनवर चाढिया
नाव सरीसां मुल ॥ वामी वेलो मह़ोरीयो सोवन
कुंपलीए ॥ पास जिणेसर पूजिये पंचेअंगु
लीए ॥ दो धोला दो सामला दो रत्तोपल वन्न
मरगय वन्ना कुन्नि जिण सोलस कंचनवन्न ॥
नियनिय मान करावियां, नरहेस रनयणानंद ॥
ते में नावें वंदिया, ए चोवीसे जिणंद ॥

॥ वत्तु ॥ कम्मनूमीहिं, कम्म नुमीहिं, पढम
संघयणि, उक्कोसयसत्तरिसय, जिणवराण विह
रंत लप्नई,नवकोमीहिं केवलीण ॥ कोमीसहस्स
नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि;

विहुं कोडीहिं वरनाण, समणह कोमी सहस्स डुग्र, थुणिसुं निच्च विहाण ॥ जयउ सामीश्रि सह सिरि सित्तुंजी उजांतपहु नेमिजिण; जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ नरुग्रठेहिं मुणिसुव्वय मु हरि पास डुह डुरिय खंमण, ग्रवरविदेहिं तिड यरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि, तीग्रणागय संपइय,वंदूं जिण सव्वेवि ॥ सत्तावणइ सहस्सा, लरका ठपन्न ग्रठकोडीउं ॥ पंचसयं चउत्तीसा, तियलोए चेइए वंदे ॥ इति चैत्यवंदन ॥

इहां चार स्तवन अथवा अठोत्तरी कहेवी पठीउन्ना थइने उवसग्गहरं कहेवुं. पठी, वेसीनें जंकिंचि नाम तिठसग्गे पायालि माणुसे लोए॥ जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ पठी नमुठणं (नमो जिणाणं) सुधी कहेवुं,

(ए ठहुं खमासमण.)पठी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह नगवन्! गुरुवंदना करुं जी. एम कही गुरुवंदना कहीयें. ॥ ॥

॥ अथ गुरुवंदना ॥

॥ अह्वाजेस्सु दीव समुद्देसु, पनरससु कम्म नूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ पडि

ग्गह धारा ॥ १ ॥ पंचमहव्वय धारा, अढार स
हस्स सीलंग धारा, अखयायारचरित्ता, ते सव्वे
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥ पुज्ज सि
रिअज्जरक्खिय, गुरुणो तप्पट्टिय पुज्जजयसिंहा
॥ सूरिसिरि धम्मघोसा, महिंद सिंहा तउ गुरु
णो ॥ ३ ॥ तप्पयसिरिसिंहपहा, तेसिं पइअ
जियसिंह वरगुरुणो ॥देविंद सिंहगुरुणो तप्पय
सिरिधम्मपह सूरि ॥ ४ ॥ सिरिसिंहतिलसूरी,
तप्पइ सिरिमहिंदपह गुरुणो ॥ सिरिमेरुतुंग
गुरुणो, तप्पय जयकित्तिगुरुराउ ॥ ५ ॥ सिरि
जयकेसरिसूरी, तप्पइ सिध्धंत सायरो सुगुरु ॥
सिरिभावसायर गुरु, तप्पय सूरि गुण निहाणो
॥ ६ ॥ सिरिधम्ममुत्तिसूरी, तप्पइ कल्लाण सा
यर मुणिंदो ॥ सिरि अमर सार गुरु, कल्लाण
कुणउ संघस्स ॥ ७ ॥ तप्पट्टि पुव्व पुव्वय नाणु
विजाय सायरं सूरि ॥ सिरिउदय सायर सूरि,
तप्पय गुणमणि रुहाणं ॥ ८ ॥श्रीकीर्तिसागर
सूरि, श्री पुण्यसागरसूरि, श्रीराजेंद्रसागरसूरि
श्री मुक्तिसागर सूरियं वंदे, विहरमान श्री वि
वेकसागर सूरियं वंदे. अचल गछनायकं वंदे.

विधिपक्षगछनायकं वंदे. पहेले पाटें सुधर्मास्वामी, बीजे पाटें जंबूस्वामी, त्रीजे पाटें प्रभवस्वामी, चोथे पाटें सिज्जंभवसूरि, पांचमे पाटें यशोभद्रसुरि, छठे पाटें संभूतिविजय सुरि, सातमे पाटे भद्रबाहु स्वामी, आठमे पाटें थूलिभद्र स्वामी, एवा पाटानु पाट छेला श्री दुप्पसहनामा आचार्य थाशे, तेने महारी एकशो ने आठ वार त्रिकाल वंदना होजो ॥ इति विधिपक्षगुरु वंदन ॥ ए सातमुं ( खमासमण. )

पछी इच्छामि खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं, सज्झाय सांभलुं जी. अहीं नवकार कहीने सज्झाय कहेवी, ॥

॥ अथ सज्झाय ॥

॥ अरिहंता मंगल मुज्झ, अरिहंता मुज्झ देवाव ॥ अरिहंता कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मुज्झ सिद्धायमुज्झ देवया ॥ सिद्धाय कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मुज्झ आयरियामुज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं

मुज्क, उवजाया मुज्क देवया ॥ उवजाया
कित्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥
साहु मंगलं मुझ, साहु मुझ देवया ॥ साहु कि
त्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ एपंचे
मंगलं मुझ, ए पंचे मुझ देवया ॥ ए पंचें कि
त्तियं ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ६ ॥ एसो
पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ॥ मंगलाणं
च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥ ७ ॥ इति स
ज्झाय ॥ ए आठमुं खमासमण ॥ ॥

पढीइछामि खमा०इछाकारेण संदिसह
जगवन् पांचमा आवश्यक जणी दैवसिक प्रा
यश्चित्त विशोधनार्थ करेमि काउस्सगं.अन्नञ०
इत्यादिककहीने चंदेसुनिम्मलयरा सुधी
चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पढी
नमों अरिहंताणं, कहीने काउसग्ग पारी
पढी प्रगट लोगस्स कहीयें. ए ( नवमुं ) ख
मासमण. फरी इछामि खमासमण पूर्वक इछा
कारेण संदिसह जगवन् अनिजव काउस्सग्ग
ठाउं. ( इछं ) अनिजव अशेष डुक्खक्खय
कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्न०

इत्यादिक कहिने " सिद्धा सिद्धिं ममदिसतुं " पर्यंत ( पांच ) लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमो अरिहंताणं ए पद कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो. ए ( दशमुं ) खमासमण ( अने ) पांचमुं आवश्यक पूरुं थयुं, एणें करी पडिक्कमणामांजे अशुद्ध आचार रह्या ते आचार ए पांचे लोगस्सना कउस्सग्गथी शुद्ध थाय छे. ॥

पछी खमासमणपूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन् ! बहु आवश्यकभणीपच्चरकाण वांदणां करूं जी. एम कही बे वार वांदणां दीजे पछीगुरु मुखें पच्चरकाण करवुं. ए अगीयारसुं खमासमण अने छठ्ठुं आवश्यक पूरुं थयु

पछी खमासमणपूर्वक हेठा बेशी ने इछाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिकीपारवा त्रण नवकार मनमां गणवा. पछी नमो अरिहंताणं ए एक पद प्रगट कहीने इछाकारेण संदिसह भगवन्(सामायिक पारवा गाथा भणुंजी

॥ अथ सामायिक पारवानी ॥

॥ जं जं मणेण बद्धं, जं जं वायाय भासियं

पावं ॥ काएण वि डुठकयं, मिछामि डुकमं त
स्स ॥ १ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह रज्ज न
मंत ॥ ते मैं सव्व खमाविया, मुझवि तेह खमं
त ॥ २ ॥ खमी खमावी मेंखमी, ठव्विह जीव
निकाय ॥ शुद्ध मनें आलोवतां, मुझ मन वेरन
थाय ॥३॥ दिवसें दिवसें लरकं, देइ सुव्वन्नस्स
खंम्मियंएगो एगोपुसामाइयकरेइन पुहुप्पएत
स्स ॥४॥ कुणे पमाए बोलीउं, हुई विरुद्धबुद्धि॥
जिण सासण में बोलउं, मिछा डुक्कड सुद्धि ॥५॥
॥ सामायिक व्रत फासिअं, पालिअं, पूरिअं,
तीरिअं,कित्तिअं,आराहिअं,विधें,लीधु,विधेंकी,
धुं, विधें पाल्युं, विधें करतां कीसी अविधि,अशा
तना हुइ होय, ते सवि हूं मनें, वचनें कायाये
करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥पाटी, पोथी, कवली,
ठवणी, नोकरवली कागलें पग लगाड्यो, होय
गुरुने आसने,वेसने,उपगरनेपग लगाड्यो,होय
ज्ञान द्रव्यतणी आशातना थइ होय. ते सवि
हुं मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कडं. अ
ढी द्वीपने विषे साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,

जे कोइ प्रनु श्री वीतराग देवनी आज्ञा पाले. पलावे, नणे नणावे, अनुमोदे, तेहने महारी त्रीकाल वंदना होजो. सीमंधर प्रमुख वीश विहरमांन जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो, अतीत चोवीशी, अनागत चोवीशी, वर्त्तमान चोवीशीने महारी त्रिकाल वंदना होजो. रुष नानन, चंद्रानन, वर्द्धमान, वारीषेण, ए चार शाश्वता जिनने महारी त्रिकाल वंदना होजो, दश मनना, दश वचनना बार कायाना ए बत्री श दोषमांहेलो सामायिकव्रतमांहे जे कोइ दोष लाग्यो होय, ते सवि हुं, मनें, वचनें कायायें करी मिछामि डुक्कडं, साचानी सद्दहणा, जूठाना मिछामि डुक्कडं. पछी त्रण नवकार मनमां गणी त्रण खमासमण देइजयणावर्पूक उठवुं ए (बारमुं) खमासमण ॥ इति देवसीप्रतिक्रमणं

॥ अथ राइपडिक्कमणः ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण आपी इछाका र० कहीने इरियावही० पडिक्कमी पछी तस्स उत्तरी० कही एक लोगस्सनो काउस्सग करी

प्रगट लोगस्स कही गमणागमण आलोववुं एटले मार्गनेविषे जातां आवतां० ॥ ए कही पछी सामायिक ठावा त्रण नवकार गुणीयें. पछी जीवराशि खमावी अढार पाप स्थानक आ लोइ पछी गुरुस्थापना निमित्त पंचिंदिय कही द्रव्य, क्षेत्र,काल, ज्ञाव धारवा.पछी एक नवकार गुणी सामायिक व्रत उच्चार करीयें. पछी फरी बीजा आवश्यक ज्ञणी इरियावही० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही पछी एक लोगस्सनो काउस्स ग्ग करी लोगस्स प्रगट कही पछी त्रीजा आव श्यक ज्ञणी इडं अन्निज्ञव अशेष इरकरकय कम्मरकय निमित्त(पांच)लोगस्स नो काउस्सग्ग करवो. पछी लोगस्स एक प्रगट कही, पछी कुसुमिण डुसुमिण उहामि निमित्तं करेमि का उस्सग्गं. एम कही(४) लोगस्स नो काउस्सग्ग करवो.पछी एक लोगस्स प्रगट कही पछी उत्तरा संगनोछेहमो पडिलेहीपछीचोथा आवश्यकज्ञणी बेवार वांदणां देइने पछी एकजण उन्नोरही पां चमाआवश्यक ज्ञणी लघु अतिचार कहे. पछी चैत्यवंदन कही ( चार ) स्तवन कहेवां. पछी

उवस ग्गहरं० नमुत्थुणं०कही गुरु वंदन करी सज्झाय कहीयें, पछी छठा आवश्यक त्रणी वांदणां बे वार देइने पच्चरकाण करीये. पछी सामायिक पारवा त्रण नवकार गणीयें. पछी 'जंजं मणेण बद्धं' इत्यादिक गाथा कही प्रतिक्रमण समाप्त करीयें ॥ इति विधिपक्ष प्रतिक्रमणः स०

॥ अथ लोंकागछ प्रतिक्रमण विधिः ॥

सामायक लेवानी विधिः

प्रथम पोंछणानां सर्व वस्त्र पडिलेहवां तथा यत्नायें आसनियुं पाथरवुं, ते पछी गुरुने इच्छामि खमासमणो० ॥ इत्यादिक त्रण वांदणां देवां, पछी श्रीमंधरजीनें त्रणवांदणांदेई पछी नीचे बेसीने नवकार गणवो, पछी पचेंदिअनो पाठ कहेवो. पछी इरियावहि० तस्स उत्तरी० कही (एक) लोग्गस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो, पछी नमो अरिहं ताणं कही काउस्सग्ग पारवो प्रगट लोग्गस्स कही गुरुनी पासे सामायिकनी आज्ञा मागवी. ( कदापि ) गुरु न होय तो सीमंधर स्वामी पासेथी आज्ञा मागीने करेमी भंते

नों पाठ कहेवो. पछी डावो ढींचण उंचो राखी ने नमोत्थुणंकहेवुं. ॥ इति सामायिक विधि.

॥ अथ सामायिक पारवान विधिः ॥

प्रथम नककार गणी, इरियावहि० तस्स उत्तरी०कही, एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंता णं पूर्वक काउस्सग्ग पारी प्रगट लोग्गस्स कहीने मावो ढींचण उंचो करी नमोत्थुणंनो पाठ कहेवो. पछी सामाइय वयजुत्तो कही, दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, इत्यादि पाठ कहेवा ॥ इति सामायिक पारवाविधि॥

॥ अथ दैवसिक प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागीये छैये, तेवी रीते आज्ञा मागीने पछी नवकार गणी, लोगस्स कही, डावो ढींचण उंचो करी, नमोत्थुणंनो पाठ कही बे खामणां देवां, तिहां बीजे खामणे आवसिआए ए पाठ न कहेवो पछी पडिक्कमण ठाववुं तेमां आवस्सइछाकारेण ए पाठ जणवो.पछी उभा थइ(नवकार गणवो.) पछी करेमीभंते कहीने इछामिठामि०पछी तस्स

उत्तरी०कही आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमोअरि हंताणं कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्सकही वली बे खामणां देवां, देइने पछी अतिचारनां बे स्थुल तेमां एक तो श्री ज्ञानने विषे अने बीजो दर्शन (एटले)सम्यकत्व रत्नने विषे ए बे पाठ गुरु पासे कहेवरावदा,(अने गुरु न होय)तो पोते कहेवा, ते पछी श्रावकना अतिचार कहेवा.

अथ अतीचार लिख्यते

श्री ज्ञानने विषे जे अतिचार लगा होय ते आलोउं. जं वाइद्धं वच्चा मेलिअं, हिणक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं जोगहीणं घोसहीणं, सुठु दिन्नं ड्डु पडिछियं अकाले, कउ सज्झाउ काले न कउ सज्झाउ, असज्झाऐं सज्झायं सज्झाएन सज्झायं, जे कोइ ज्ञानना चउद अतिचारने विषे, दिवस संबंधि दोष लागो होय. तस्स मिच्छामि डुक्कडं. ॥ १ ॥

दर्शन श्री समकेत रत्नने विषे जे, अतिचार लागो होय, ते आलोऊं, श्री जिन वचन समां सर्दह्यां न होय, प्रतील्या न होय, रोचवां न

होय, परदर्शनीनी आकांक्षा कीधी होय, फल प्रत्यें संदेह आण्यो होय, पर पाखंमीनी प्रशंसा कीधी होय, परपाखंडीनो संस्तव, परिचय कीधो होय परपाखंमी संघाते आलाप संलाप कीधा होय, जे कांइ समकित रत्नने विषे आठ प्रकारें, जाणतां अजाणतां दिवस संबंधि, दोष लगाड्यो होय तस्स मिछामि डुक्कडं॥ २ ॥

पहेलुं स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं. रीशवशें गाढो घाव घाल्यो होय, गाढे बंधनें बांध्यो होय, अवयवनो छेद कीधो होय अतिभार भर्यो होय, भात पाणीनो विछेद कीधो होय, जे कांइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्स मिछामि डुक्कडं. ॥ ३ ॥

बीजुं स्थूल मृषावाद विरमण व्रतनेविषे, जे अतिचार दोष लागो होय, ते आलोउं हुं. सहसात्कारें कोइ प्रत्यें कूडां आल दीधां होय, रहस्य छानी वात प्रगट कीधी होय,स्त्रीपुरुषना मर्म प्रकाश्यां होय,कोइने अपाय पाडवा भणी मृषा उपदेश दीधो होय कूडा लेख लख्या

होयकूमी सांख पूरी होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय तस्समिछामि डुक्कडं ॥

त्रीजुं स्थूल अदत्तादान विरमणव्रतने विषे जे अतिचार ला० चोराइ वस्तु लीधी होय, चोरने सहाय दीधुं होय, राज्य विरुद्ध कीधुं होय कूडां तोला, कूडां मापकीधां होय, वस्तुमां नेल संनेल कीधा होय,सखरी देखाडी नखरी आपी होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, तस्स मिछामिडुक्कडं ॥

चोथुं स्थूल स्वदारा संतोष परदारा गमन विरमण व्रतने विषे जे अतिचार ला० इत्तर थोडा कालनी राखीशुं गमन कीधां होय अपर ग्रहीतनां गमन कीधा होय, अनंग क्रीडा कीधी होय, परायां विवाह नातरां जोड्या होय, काम नोग तीव्र अनिलाषें सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवतां प्रत्यें अनुमोद्या होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तसस्स मि०

पांचमां इछापरिग्रह परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं. धन धान्यनुं, खित्तवथ्थुनुं, रूपा सोनानुं, डुप्पद चउ

प्पदकु विधातनुं परिमाण अति क्रम्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधी दोष लागो होय तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥

बठा दिशि परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं, उंची, नीची, त्रीछी, दशे दिशिनुं परिमाण, अतिक्रम्यु होय, व्य तिक्रम्यु होय एक दिशि वधारी होय, एक दिशि घटाडी होय पंथने संदेहे मर्यादा लोपी आघो चाल्यो होय,जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समि० ॥ ८ ॥

सातमुं उपजोग परिजोग परिमाण व्रतने विषे जे अतिचार लागा होय, ते आलोउं. पच्च रकाण उपरांत सचित्तनो आहार कीधो होय, सचित्त पडिबद्धनो आहार कीधो होय, अपक्क डुपक्कनो आहार कीधो होय, तुछोषधिना ज क्षण कीधां होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागा होय, त० ॥ ९ ॥

पन्नरे कर्मादान श्रावकने जाणवां. पण स माचरवा नहीं,इंगालकम्मे वणकम्मे सकट कम्मे साडिकम्मे जामीकम्मे फोडीकम्मे, दंतवाणिज्ज

लक्कवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवा णिज्जे एवंखुजंत पिल्लणकम्मं निल्लंछण कम्मं, द वनुं देवुं सरदह तलाय सोसंच, असयंती जन नां जरण, पोषण कीधां होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय, त० ॥ १० ॥

आठमां अनर्थ दंरू विरमण व्रतने विषे जे अ तिचार लागा होय, ते आलोउं छुं. कंदर्पनी कथा कीधी होय, नांम्कुचेष्टा कीधी होय, मुखरी वचन बोल्यां होय, पापनां अधिकरण जोमी मूक्यां होय उवनोग परिन्नोग अधिकां वधार्यां होय जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ ११ ॥

नवमां श्री सामायिक व्रतनें विषे जे अति चार दोष लागा होय, ते आलोउं छुं. मन, वचन, कायाना जोग पारुवे ध्याने प्रवर्ताव्या हो य, सामायक मांहे समतान कीधी होय अणपू ग्युं पार्युं होय, पारतां वीसार्युं होय जे कोइ दि वस संबंधि दोष लागो होय, तस्स मिच्छा० १२

दसमां देसावगासिक व्रतने विषे जे अ० नीमि नुमिका बाहेरथी वस्तु अणावी होय त था मोकलावी होय, शब्द करी रूप देखामी पु

दूगल नाखी आपणपुं गतुं जणाव्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय त०॥१३॥

अगीआरसुं पोषध व्रतने विषे जे अ० ला० सज्झा संथारो अप्रति लेख्यो होय, दुःप्रति लेख्यो होय, अप्रमार्ज्यो दुःप्रमार्ज्यो होय, उच्चार पासवण भुमिका अप्रति लेखी होय, दुःप्रति लेखी होय, अप्रमार्जि होय, दुःप्रमार्जि होय, पोसह मांहें वात विकथा निद्रा प्रमादें करी काल निर्गम्यो होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लाग्यो होय त० ॥ १४ ॥

बारमां अतिथिसंविभाग व्रतने विषे जे अ० सूजती वस्तु सचित्त उपर मूकी होय, सचित्तें करी ढांकी होय, काल अतिक्रम्यो होय, आपणी वस्तु परायी कीधी होय, मत्सर सहित दान दीधुं होय, भाणे वेळां साधु, साधवीनी चिंतवणा न कीधी होय, नवकार नमोथ्थुणं भण्या गण्या विना व्रत पच्चक्खाण पार्युं होय, जे कोइ दिवस संबंधि दोष लागो होय, तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥

संलेषणा व्रतना पांच अतिचार लागा० इह

लोगा संसप्पओगे परलोगा संसप्पओगे जीवि
आ ससंप्पओगे मरणीया संसप्पओगे काम
भोगनी वांछा कीधी होय, जे कोई दिवस संबं
धि दोष लागो होय, तस्स० ॥ १६ ॥

अढारे पापस्थानक लागां होय, ते आलोउ
पहेलुं प्राणातिपात ॥ १ ॥ वीजुं मृषावाद ॥२॥
त्रीजुं अदत्ता दान ॥ ३ ॥ चोथुं मैथुन ॥ ४ ॥
पांचमुं परिग्रह ॥५॥ छठुं क्रोध ॥६॥ मान ॥७॥
माया ॥ ठ ॥ लोभ ॥ए॥ राग ॥१०॥ द्वेष ॥११॥
कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य
॥ १४ ॥ परपरिवाद ॥ १४ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥
माया मोसो॥ १७॥मिथ्या दरसण शैल्य॥१ठ॥ ए
अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय
सेवतां प्रत्ये अनुमोद्यां होय जे कोइ दिवस सं
बंधि दोष लागो होय तस्स मिछामि डु० ॥१७॥

अतिक्रम. व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार
मूलगुण उत्तर गुणने विषे जे कोइ दिवस संबं
धि दोष लागो होय, तस्स मिछा० ॥ १ठ ॥

इछं आलोएमि जोमे देवसिओ अइआरो
कओकाइओ वाइओ माणसिओ उस्सुतो उ

म्मग्गो इत्यादि यावत् जंखंम्मियं जं विराहिअं तस्स मिछामि ङुक्कडं ॥ १ए ॥

सव्वस्सवि दिवसिअ ङचिंतिअ ङप्नासिय ङच्चिठिअ तस्समि० सूत्रजणेमि सूत्र सांजलेमि सूत्रनो आदेस. ॥ इति अतिचार ॥

पठी नवकारकही करेमि जंते कहेवुं. पठी इछा मिठामि कहेवुं. पठी वंदितु सूत्र कहेवुं ते कही रह्या पठी पूर्वोक्त रीते बे खामणां देवां. पठी अप्रुठिर्जमि० कहीने खमाववुं. पठी सात लाख कहेवा. पठी आयरिय उवज्ञाए कहेवुं पठी आवस्सइछाकारेण संदिसह जगवन् देवसियं प्रायछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ए पाठ कही(१)नवकार गणीकरेमिजंते कहेवुंपठी इछामिठामि० तस्सउत्तरी० कही (चार) लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काउसग्ग करी नमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारी प्रगट लोगस्स कहीने वली पूर्वोक्त रीते बेखामणां देवा. पठी चउविहारनुं पच्चरकाण लेवुं. पठी सामायिक, चउविसछो, वांदणां पडिक्कमणुं काउस्सग्ग, अने पच्चरकाण, ए ठ आवश्य

कने विषे जे कोई दोषलागो होय ते सविमन वचनकायायें करी तस्समिछामि ङक्कमं ए पाठ कही, मावो ढींचण ऊंचो करी नमुथुणं कहेवुं, पछी नवकार गणी स्तवन कहेवुं. तेवार पछी कर्मक्षय निमित्त करेमि काउस्सग्गं अनछ एम कहीने चारलोगस्सनो काउसग्ग करवो पारी प्रगट लोगस्स कही पछी नवकार गणीने सज्झाय कहेवी. पछी नंदि कहेवी॥ इति देवसीप्र०

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागी सामायिक करवो पछी नवकार गणी राइ कर्मक्षय निमिते करेमि काउस्सग्गं कही बे लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी,प्रगट लोगस्स कही नीचे बेसी नवकार कही, चउव्वीसछो कहिये, पछी वांदणां तथा खामणां लीजे, पछी उन्ना थइने राइ पायछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं कही,एक नवकार गणी, करेमिन्नंते, इछामि ठामि. काउस्सग्गं जोमे राइउं अइआरो कउं इत्यादिक कही, तस्सउत्तरीनो पाठ कहेवो. पछी चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी

तरत उन्ना थइने आवस्स ईछाकारेण संदिस ह न्नगवन् राइ पक्किमणें ठाएमिं राईज्ञान दर्श न चारित्र तप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थं करेमि काऊस्सग्गं, एम कहि एक नवकार गणी, करेमि न्नंते० इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० कही पछी नाणंमिनो काउस्सग्ग करीये. पछी देवसिनी पेठे सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पछी वे वादणां आपीने यथाशक्ति पच्चरक्खाण लीजे. तेवार पछी स्तवन, सद्यायो, प्रन्नातनां केहेवाता होयते केहेवा. त्यार पछी नंदि कहेवी. ॥ इति ॥

अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व केहेवुं, आलोअंतो निदंतों, देवसियं आलो एमि, पक्खि न्नणेमि, ए रीते केहेवुं, पछी त्यांथी पाछुं वली वे खामणाथी मांमीने चार लोग्गस्स ना काउस्सग्ग पर्यंत केहेवुं, पण चार लोग्गस्सने ठेकाणे अहीं बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने छठो पच्चरक्खाण आवश्यक आवे

कने विषे जे कोई दोषलागो होय ते सविमन वचनकायायें करी तस्समिछामि डुक्कडं ए पाठ कही, माथो ढींचण उंचो करी नमुथुणं कहेवुं, पछी नवकार गणी स्तवन कहेवुं. तेवार पछी कर्मक्षय निमित्त करेमि काउस्सग्गं अनछ एम कहीने चारलोगस्सनो काउसग्ग करवो पारी प्रगट लोगस्स कही पछी नवकार गणीने सज्झाय कहेवी. पछी नंदि कहेवी॥ इति देवसीप्र०

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागी सामायिक करवो पछी नवकार गणी राइ कर्मक्षय निमिते करेमि काउस्सग्गं कही बे लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी,प्रगट लोगस्स कही नीचे बेसी नवकार कही, चउव्वीसछो कहिये, पछी वांदणां तथा खामणां लीजे, पछी उन्ना थइने राइ पायछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं कही,एक नवकार गणी, करेमिन्नंते, इछामि ठामि. काउस्सग्गं जोमे राइउं अइआरो कउ इत्यादिक कही, तस्सउत्तरीनो पाठ कहेवो. पछी चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी

तरत उना थइने आवस्स इछाकारेण संदिस ह भगवन् राइ पमिक्कमणें ठाएमिं राईज्ञान दर्श न चारित्र तप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थ करेमि काउस्सग्गं, एम कहि एक नवकार गणी, करेमि भंते० इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० कही पछी नाणंमिनो काउस्सग्ग करीये. पछी देवसिनी पेठे सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पछी बे वादणां आपीने यथाशक्ति पच्चख्खाण लीजे. तेवार पछी स्तवन, सद्यायो, प्रभातनां केहेवाता होयते कहेवा. त्यार पछी नंदि कहेवी. ॥ इति ॥

अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व कहेवुं, आलोअंतो निदंतों, देवसियं आलो एमि, पख्खि भणामि, ए रीते कहेवुं, पछी त्यांथी पाछुं वली बे खामणाथी मांमीने चार लोग्गस्स ना काउस्सग्ग पर्यंत कहेवुं, पण चार लोग्गस्सने ठेकाणे अहीं बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने छठो पच्चख्खाण आवश्यक आवे

कने विषे जे कोई दोषलागो होय ते सविमन वचनकायायें करी तस्समिछामि डुकडं ए पाठ कही, जावो ढींचण उंचो करी नमुथुणं कहेवुं, पछी नवकार गणी स्तवन कहेवुं. तेवार पछी कर्मक्षय निमित्त करेमि काउस्सग्गं अनछ एम कहीने चारलोगस्सनो काउसग्ग करवो पारी प्रगट लोगस्स कही पछी नवकार गणीने सज्झाय कहेवी. पछी नंदि कहेवी॥ इति देवसीप्र०

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम गुरु पासे आज्ञा मागी सामायिक करवो पछी नवकार गणी राइ कर्मक्षय निमित्ते करेमि काउस्सग्गं कही बे लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी,प्रगट लोगस्स कही नीचे बेसी नवकार कही, चउव्वीसछो कहिये, पछी वांदणां तथा खामणां लीजे, पछी उन्ना थइने राइ पायछित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं कही,एक नवकार गणी, करेमिजंते, इछामि ठामि. काउस्सग्गं जोमे राइउं अइआरो कउं इत्यादिक कही, तस्सउत्तरीनो पाठ कहेवो. पछी चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी

तरत उन्ना थइने आवस्स ईछाकारेण संदिस ह नगवन् राइ पमिक्कमणें ठाएमिं राईज्ञान दर्श न चारित्र तप, वीर्य अतिचार चिंतवनार्थं करेमि काउस्सग्गं, एम कहि एक नवकार गणी, करेमि नंते० इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी० कही पछी नाणंमिनो काउस्सग्ग करीये. पछी देवसिनी पेठे सर्व पाठ कहिये. परंतु ज्यां चार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे, ते स्थानके वरसी तपनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, पछी वे वांदणां आपीने यथाशक्ति पच्चरूखाण लीजे. तेवार पछी स्तवन, सद्यायो, प्रनातनां केहेवाता होयते कहेवा. त्यार पछी नंदि कहेवी. ॥ इति ॥

अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम तो देवसिनी पेठे वंदिता सुधी सर्व कहेवुं, आलोअंतो निदंतों, देवसियं आलो एमि, पक्खि नणेमि, ए रीते कहेवुं, पछी त्यांथी पालुं वली वे खामणाथी मांमीने चार लोग्गस्स ना काउस्सग्ग पर्यंत कहेवुं, पण चार लोग्गस्सने ठेकाणे अढीं वार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने ठठो पच्चरूखाण आवश्यक आवे

तेवारे चउविहारने स्थानके धारणा प्रमाणे पच्चख्खाण लेवुं, त्यांथी पाछो आलोअंतो निंदंतो पख्खिअं आलोएमि देवसिअं ठाणेमि कहिने तेवार पछीतो वंदिता सूत्र कही रह्या पछी जे बे खामणां आपीये छैये, त्यांथी सर्वदेवसि पडिक्कमणानी पेठे चलाववुं. ॥ इति ॥

## अथ चोमासी प्रतिक्रमण विधि.

पख्खीनी पेठे चोमासी प्रतिक्रमणनो सर्व विधि जाणवो, परंतु जे ठेकाणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके पख्खीयं पाठ आवे ते ते स्थानके चउम्मासियं पाठ कहेवो. ॥ इति ॥

## अथ संवछरी प्रतिक्रमण विधि.

पाखीनी पेठे संवत्सरी पडिक्कमणानो पण सर्व विधि जाणवो. परंतु एटलुं विशेष के जे ठेकाणे बार लोगस्सनो काउस्सग्ग आवे छे, ते ठेकाणे अहीं चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, तथा जे जे स्थानके पक्खियं पाठ आवे, ते स्थानके संवछरियं पाठ कहेवो ॥ इति॥

अथ वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ ॥

अणसण मूणोअरिया, वत्ति संखेवणं रसच्चाउ ॥ कायकिलेसो संली, ण आय बचो तवो होइ ॥ १ ॥ पायच्छित्तं विणउ, वेआवच्चं तहेव सचाउं ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अभ्भिंतरउ तवो होइ ॥ २ ॥ धन्य श्री ऋषभदेव स्वामीने जेणे वरसी तप कर्युं, धन्य श्री महावीरस्वामीने जेणे छम्मासी तप कर्युं, एमज जे पंचमासी तप करे, तेने धन्य, जे चार मासी तप करे, तेने धन्य, जे त्रीमासि तप करे, तेने धन्य, जे बे मासी तप करे, तेने धन्य, जे पच्चावन उपवास करे, तेने धन्य, जे पच्चास उपवास करे, तेने धन्य, जे पिस्तालीश आगमना पीस्तालीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चालीश उपवास करे, तेने धन्य, जे पांत्रीश वाणी रूप सत्य वचनना पांत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे चोत्रीश अतिशयना चोत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे तेत्रीश आशातना टालवा निमित्त तेत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे बत्रीश योग संग्रहना बत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे ए-

कत्रीश सिद्धना गुण पामवाने एकत्रीश उप-
वास करे, तेने धन्य, जे त्रीश प्रकारें महा मो-
हनीय कर्म टालवाना त्रीश उपवास करे, तेने
धन्य, जे उंगणत्रीश पापशास्त्र टालवाना उं-
गणत्रीश उपवास करे, तेने धन्य, जे साधुनी
अठावीस लब्धिना अठावीश उपवास करे,
तेने धन्य, जे साधुना सत्तावीश गुणना सत्ता-
वीश उपवास करे, तेने धन्य, जे छवीश दशा
कल्पना छवीश उपवास करे, तेने धन्य, जे प-
च्चीश क्रिया टालवाना पच्चीश उपवास करे तेने
धन्य, जे चोवीश तीर्थंकरना नामना चोवीश
उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडांगना
त्रेवीश अध्ययनना त्रेवीश उपवास करे, तेने
धन्य, जे बावीश परिसह जीतवाना बावीश उ-
पवास करे, तेने धन्य, जे एकवीश सबल दोष
टालवाने एकवीश उपवास करे तेने धन्य, जे
वीश असमाधिना स्थानक टालवाने वीश उ-
पवास करे तेने धन्य, जे श्री ज्ञाता सूत्रना
प्रथम श्रुतस्कंधना उंगणीश अध्ययनना उं-
गणीश उपवास करे, तेने धन्य, जे अढार पा-

पस्थानक टालवाना अढार उपवास करे, तेने धन्य, जे सत्तर प्रकारे संयम पालवाना सत्तर उपवास करे, तेने धन्य, जे श्री सूय गडांगना प्रथम श्रुतस्कंधना शोल अध्यनना शोल उपवास करे, तेने धन्य, जे पंदर परमाधामिना कर्म निवारवाना पंदर उपवास करे, तेने धन्य, जे चौद प्रकारना जीवनी दया पालवाना चौद उपवास करे, तेने धन्य, जे तेर काठीआ निवारवाना तेर उपवास करे, तेने धन्य, जे भीखुनी बार पडिमाना बार उपवास करे, तेने धन्य, जे श्रावकनी अगीआर पडिमाना अगीआर उपवास करे, तेने धन्य, जे दशविध यति धर्म पामवाना दश उपवास करे, तेने धन्य, जे नव प्रकारे ब्रह्मचर्य पालवाना नव उपवास करे, तेने धन्य, जे आठ कर्म टालवाना आठ उपवास करे, तेने धन्य, जे सात व्यसन निवारवाना सात उपवास करे तेने धन्य, जे छकायनी रक्षाना छ उपवास करे, तेने धन्य, जे पांच प्रमाद टालवाना पांच उपवास करे, तेने धन्य, जे चार कषाय टालवाना चार उप-

वास करे, तेने धन्य, जे त्रण दंरु टालवाना त्रण उपवास करे, तेने धन्य, जे राग द्वेष टालवाना बे उपवास करे, तेने धन्य, जे एक उपवास करे, तेने धन्य, आयंबिल करे, तेने धन्य, एकासणुं करे, तेने धन्य, जे एक ठाणुं करे, तेने धन्य, जे पूरिमार्ध करे, तेने धन्य, जे पोरसि करे, तेने धन्य, जे नवकारसि करे, तेने धन्य, जे गंठसीउं मुठ सीउं करे, जे कोइ श्री जिनाज्ञा प्रमाणे चाले ते जीवने धन्य छे, धन्य धन्य धन्य धन्य धन्य नमो अरिहंताणं ॥ इति वरसी तपना काउस्सग्गनो पाठ संपूर्ण ॥

अथ नंदीनो पाठ.

जयइ जगजीव जोणी, विआणउ जग गुरु जगाणंदो, जगनाहो जगबंधू, जयइ जगप्पिया महो भयवं ॥ १ ॥ जयइ सुआणं प्पभवो तित्थयराणं अपछिमो जयइ, जयइ गुरुलोगाणं जयइ महप्पा महा वीरो॥२॥भद्दं सव्व जगुज्जो, यगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स, भद्दं सुरा सुर नमं, सियस्स भद्दं धूयरयस्स ॥ ३ ॥ गुण भवण गहण सुयरयण, भरिय दंसण विसुद्ध

रुभागा, संघ नयर भदंते, अखंड चरित्त पागारा ॥ ४ ॥ संजम तवं तु वारस्स, नमो सम्मत्त पारियल्लस्स ॥ अप्पडिचक्क सजर्ड. होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥ भदं सील पडा गुसियस्स, तव नियम तुरय जुत्तस्स ॥ संघरहस्स भगवर्ड, सज्झाय सुनंदि घोसस्स ॥ ६ ॥ नंदि आनंदि सदा संघने जय जय कारणी. आनंद कारणी, कल्याण कारणी, श्री जिनेंद्र देव श्रीगुरुदेवने त्रिकाल वंदना. ॥

## सागर गछ प्रतिक्रमण विधि.

सागरगछ प्रतिक्रमण विधि तपे गछ समान जाणना परं विशेष मात्र इतनाहे की प्रतिक्रमणपारनेकी समय इर्यावही न प्रतिक्रमतेहें.

## आनंद सूरीयगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समान जाणना विशेष मात्र सागरगछ प्रमाण जाणना.

## वडगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना बिलकुल फरकनही.

राजसूरीय गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्र विधि तपेगछ समान जाणना.

वडुडी पोसाल गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछ प्रतिक्रमण समानजाणना.

कमल कलसा गछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमणके विधि समान जाणना.

कवलागछ प्रतिक्रमणविधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण विधि समान जाणना.

विजयगछ प्रतिक्रमण विधि.

समग्रविधि तपेगछके प्रतिक्रमण समान जाणना विशेषमात्र इतना हे की कर्मक्षय निमित्त काउसग्गके पश्चात् शांतिलोगस्स कहके कहते.

पायचंदगछ प्रतिक्रमण.

तमामविधि तपगछ समान जाणना परं विशेष मात्र यहहे की प्रथम देव वंदनके समय पुरकरवरदीवढ्ढे प्रमुख न कहते चारों थुइ मात्र एक साथ कहदेतेहे. और कितनीक संकलनामात्र भिन्न हे.

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदनप्रारंभः ॥

॥ विमल केवलज्ञानकमला, कलितत्रिभुवन, हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुत चरणपंकज नमो आदि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ विमलगिरिवर, शृंगमंडण, प्रवरगुण गणभूधरं ॥ सुर असुर किन्नर, कोमिसेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्झरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधि, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमलगिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्यसाधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरम् ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगें ॥ नमो० ॥५॥ पाताल नर सुर लोकमांहि, विमलगिरिवर तोपरं ॥ नहि अधिक तीर्थ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंमण, दुखविहंडण ध्याइयें ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइयें ॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरम् ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ७ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥

॥ अथ चोवीसजीननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुर किन्नरनागनरिंदनतं, प्रणमामि युगादिम जिनमजितं ॥ संभवमभिनंदनमथ सुमतिं, पद्मप्रभ-

मुज्ज्वलधीरमतिं ॥ १ ॥ वंदे च सुपार्श्व जिनेंद्र मर्हं, चंद्रप्रजमष्टकुकर्मदहं ॥ सुविधिप्रजुशीतल जिनयुगलं, श्रेयांसमसंशयमतुलबलम् ॥२॥ प्रजुमर्चय नृपवसुपूज्यसुतं, जिनविमलमनंतमजिज्ञनतम् ॥ नम धर्ममधर्मनिवारिगुणं, श्रीशांतिमनुत्तरकांतिगुणम् ॥३॥ कुंथू श्रीअर मल्लीश जिनान्,मुनिसुव्रतन मिनेमिस्तमसिदिनान् ॥ श्रीपार्श्वजिनेंद्रमिलेंद्रसमं, वंदे जिनवीरमजीरुतमं ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

॥ इति नागकिन्नर, नरपुंदर, वंदितक्रम, पंकजा ॥ निर्जितमहारिपु, मोहमत्सर, मानमदमकरध्वजाः ॥ विलसंति सततं, सकलमंगल, केलिकानन, सन्निजाः, सर्वे जिनामे, हृदयकमले, राजहंस, समप्रजाः ॥५॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथपंचतीर्थी चैत्यवंदन ॥

आजदेवअरीहंतनमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥१॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री अजित नाथ, आबू रिखज जुहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरें, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं, जरतें जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिनपाय ॥ वैजारगिरि ऊपरे, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांकवगढनो

राजीयो नामें देव सुपास ॥ रिखन्न कहे जिन सम रतों, पहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥ ० ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ डुविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अजिनंदन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रजु, नवडुःखनिकंदन ॥१॥ डुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमति जिनें, तेचविया बीज दिन॥२॥ दोय बंधन राग द्वेष,तेहनें नवि तजीयें ॥ मुजपरें शीतल जिन कहे, बीजदिन शिव नजीयें ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासु पूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीयें ॥ अर जिन बीज दिनें चवी, एम जिन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीयें, एम जिन कल्याण ॥ बीज दिनें केइ पामीया, प्रजु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें; नमता होय सुखखाण ॥ ७ ॥

॥ अथ पंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन, जाखे नविजन आगें॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १॥ आराहो नलि नातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणें, एहज तिथि निहाली॥२॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणें संसार ॥ ज्ञान

आराधनथी लह्युं, शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोश्वासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरसां लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुजदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो जावशुं, टाले जवफेरो ॥८॥ एणी पेरें पंचमी आराहीयें ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंगविजय लहो सार ॥९॥ इति पंचमीचैत्यवंदन ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माह शुदि आठमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि आठमे, संजव चवि आयो॥१॥ चइतर वदनी आठमें, जन्म्या ऋषज जिणंद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २॥ माधवशुदि आठमदिनें, आठ कर्म कस्यां डुर ॥ अजिनंदन चोथा प्रजु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहिज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणंद ॥ आठ जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ॥ नेम

आषाढ शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगनाण ॥
तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥६॥
भाद्रवा वदि आठमदिने, चविया स्वामी सुपास ॥
जिन उत्तम पदपद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेनवन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रभूतिआदें मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदीयें, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मलि जन्म अर मल्लि पास, वरचरण विलासी ॥ ऋषभ अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिववास पास, भवभवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें, एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी, मशी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत ठांमवां ए, वहो

पडिमा अगियार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीविशस्थानकनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमोथेराणं पांचमे, पाठक गुण छठे ॥ नमो लोए सव्वसाहुणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन जावो ॥ विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंज वयधारीणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तिब्रस्स जाणी ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमता होये सुखखाणी ॥ ५ ॥

॥ अथ विशस्थानकना काउस्सगनुं चैत्यवंदन ॥

॥ चोवीश पंदर पिसतालीशनो, छत्रीशनो करीयें ॥ दश पंचवीश सत्तावीशनो; काउस्सग्ग मन धरीयें ॥१॥ पंच सडसठने दश वली, सीत्तेर नव पणवीश ॥ बार अडवीश लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥२॥ विश सत्तर इगवन, द्वादश ने पंच ॥ एणी परें काउस्सग्ग जो करे, तो जाये जव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो वीश ॥ विश थानक एम जाणीयें, संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ जाव धरी मनमां घणो ए, जो एक पद

आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज का रज साधे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री रोहिणीतपचैत्यवंदन ॥

॥ रोहिणी तप आराधीये, श्रीश्री वासुपूज्य ॥ दुख दोहग दूरें टले, पूजक होये पूज्य ॥ १ ॥ पहेला कीजें वासक्षेप, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें करी धोतीयां, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ नावे नावना नावीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहुं कालें लेइ धूप दीप, प्रनु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी नक्तिशुं, अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिननो कीजे जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइये, जिम नावे संताप ॥५॥ कोड कोड गुण फल दीयें, उत्तर उत्तर नेद ॥ मान कहे ए विधि करो, ज्युं होये नवनो ठेद ॥ ६ ॥

॥ अथ तीर्थवंदननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥ रिखनादिक वली वंदीये, संपइ जिन चोवीश ॥१॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वलि सार ॥ समेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व लोके जिनहर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सहस सत्ताणुं ऊपरें, त्रेविश जिनवर नांख ॥ ३ ॥ एकशो बावन कोमि वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस

चुम्माली सातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिनजवन नमुं, सात कोमि वोहोंतेर लाख ॥ तेरशें कोमि नेव्याशी कोमी शाठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली ए, जिन जवन अपार ॥ ते जवि नित्य वंदन करो, जेम पामो जवपार ॥ ६ ॥ तिर्छा लोके शाश्वतां, श्रीजिनजवनविशाल ॥ बत्रीशशें ने उंगणशाठ, वंडुं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें विश मनोहार ॥ जिनपमिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करुं जुहार ॥८॥ त्रण जुवनमांहे वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय पद दातार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तिर्थंकरनी राशिनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष छे, कुंथु अजित वृषजाति ॥ संजव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रज नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशि वृश्चिक धन ऋषजदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने ए, बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री शुजवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो, जगवंत नमो, परमेसर जिन

राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिध्धां सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयंक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुअण नविगण जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पायनमुं हुं नावें, कर जोमीनें त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, नय नानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तूं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत नविने हितवत्सल, तूंही कृपारससिंधु नमो अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोकस्व नाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण डुरित उपद्रवनाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार नवो दधितारण, तूं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण, शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीठ अनुपम दाने सर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचोवीश जिननावर्णनु चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रन ने वासुपूज्य दोय राता कहीयें ॥
चंद्रप्रन ने सुविधिनाथ, दो उज्ज्वल लहीयें ॥१॥

मल्लिनाथ, ने पार्श्वनाथ,दो नीला निरख्या ॥ मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥२॥ शोळे जिन कंचनसमा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल पंडित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोविश जिन समकितभव गण ॥
तीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थकर तणा हुवा, भव तेर कही जे ॥ शांतितणा भव बार सार, नव भव नेम लहीजे ॥ १ ॥ दश भव पासजिणंदने, सत्तावीश श्रीवीर ॥ शेष तीर्थकर त्रिहुं भवें, पाम्या भवजल तीर ॥२॥ ज्यांथी समकित फरसीयुं, त्यांथी गणीएं तेह ॥ धीरविमल पंडित तणो,ज्ञानविमल गुण गेह॥३॥इति॥

॥ अथ चउदशें बावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं ठेक ॥ दोय अधिक इग सय गणा, शोल अधिक शत एक ॥ १ ॥ शत सुमतिने गणधरा, एक सय अधिका सात ॥ पंचाणु त्राणु तथा, अडसी इगसी भ्रात॥२॥ छोहोतेर छासठ सगवन, पंच्चास तेंतालीस ॥ छत्तिस पणतिस कुंथने, अर गणधर तेत्रीश ॥ ३ ॥ अडवीस अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिखभादिक चोविशना, एक सहस्स सय चार ॥ अधिकेरा बावन कह्या, सवे मली गणधार ॥ ५॥ अदय

पद वरिया सवे, सादि अनंत निवास ॥ करीयें शु
ज चित्त वंदना, जब लग घटमां शास ॥६॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपंच परमेष्ठि चैत्यवंदन ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें जावें ॥ सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १॥ आचारज गुण ठत्रीस, पंचवीश उवझाय ॥ सत्ता वीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टो त्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीर विमल पंडित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥ अरिहंत सकलनी, जाव धरी करुं सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर जाखित वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (ए थोय चार वखत पण कहेवाय ठे )

॥ अथ श्री सीमंधर जिन थोय ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अर जिन अंतर जनम्या तिहुअण जश परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरदीक्षा, शिक्षा जगत निरासेजी ॥ उदय पेढाल जिनांतर मां प्रजु, जाशे शिव वहु पासेंजी ॥ १ ॥ बत्रीश च उसठी चउसठी मलिया, इग सय सठि उक्किठा जी ॥ चउ अरु अरु मली मध्यम कालें, विश जि

नेश्वर जिणाजी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु, धायइ पुख्कर मोझारेंजी ॥ पूजो प्रणमो आचारां गें, प्रवचन सार उद्धारेंजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थ निदेशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतेंजी ॥ द्वादश अंग पूरवयुत रचियां, गणधर लब्धि विकसियां जी ॥ अप्पज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षरपदना रसियां जी ॥ ३ ॥ आणारंगी समकितसंगी, विविध भंग व्रतधारीजी ॥ चउव्विह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सूरि शासन देवी, देती तस जस ऋद्धिजी ॥ श्रीशुभवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धिजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजतिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह, हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं, आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन, शीतलशीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निर्वाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजें, डुविध धर्म भगवंत ॥ जेम विमल कमल दोय, विउल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहांनिश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि

कीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी का-
मिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, सर
स सुगंध शरीर ॥ कर जोमी वीजें हुं प्रणमुं तस
पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ४

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए, जन्म्या नेम
जिणंद तो ॥ श्यामवरण तन शोजतुं ए, मुख शार
दको चंद तो ॥ सहस वरस प्रजु आयुखु ए, ब्रह्म
चारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलें हणी ए, पहो
ता मुक्ति महंत तो ॥ १ ॥ अष्टापदपर आदि जिन
ए,पहोता मुक्ति मोजार तो ॥ वासुपूज्य चपापुरी ए
नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी मांहे वलि ए
श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत शिखर विश सिद्ध
हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमना
थज्ञानी हुवा ए, जांखे सार वचन्न तो॥जीवदया गु
ण वेलमी ए, कीजे तास जतन्न तो ॥ मृषा न बो
लो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत ती
र्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गो
मेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्री अंबिका नाम
तो ॥ शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां
काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्रीविज
यसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखजदास पाय सेवतां ए,
सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, नाव धरी सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगल कमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें वलीया जी ॥ आठमे आठ स्वरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गति पहोता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठशो आगम नांखी, नवि मन संशय नांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्टप्रकारें, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव नवफल लीजें जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजें जी ॥ आठमनुं तप करता लीजें, निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोडि कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रूअडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व महोटुं, कहो मुजशुं तेम ॥ जि

नवर कल्याणक अति घणां, एकशोने पंचास ॥ ते
णें कारण ए पर्व महोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥
अगियार श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर दे
व ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम
रेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरत
रु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनशुं
रंग ॥ २ ॥ अगीआर अंग लखावियें, अगीयार पा
ठां सार ॥ अगिआर कवली वींटणां, ठवणी पूंजणी
सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनु
सार ॥ एकादशी एम उजवो, जेम पामियें नवपार
॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुको
मलकाय ॥ भुजदंड चंद्र अखंड जेहने, समरतां सुख
थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित
शिस ॥ शासन देवी विघन निवारो,संघ तणांनिशदीस

॥ अथ शांतिजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिणेसर समरियें, जेहनी अचिरा माय ॥
विश्वसेन कुल उपना मृग लंछन पाय ॥ गजपुर
नयरीनो धणी, सोवन वरणी काय ॥ धनुष चालिस
जस देहनी, वरस लाखनुं आय ॥ १ ॥ शांति जिने-
सर सोलमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री
छठा, अर नाथ वखाणुं ॥ एत्रिणे चक्री सही, देखी
आणदूं ॥ संयम लइ मुगतें गया, नित्य उठीने वंदू
॥ २ ॥ शांति जिनेसर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे ॥

दान शील तय ज्ञावना, नर सोहें अज्यासे ॥ एह वचन जिनजी तणा, जेणे हियडे धरियां ॥ सुणतां शिवगती निर्मली, दिसे केवल वरियां ॥ ३ ॥ समेत शिखर गिरि ऊपरे, जइने अण सण कीधुं ॥ काउसग्ग मुद्रायें रह्या, तिणे मुक्तीज लीधुं ॥ गरुमयक्ष सेवुं सदा, देवी निरवाणी ॥ ज्ञविक जीव तुमें सांज्ञलो, रूपज्ञदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरुदेवी जस माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया, शुरू चारित्र पाया ॥ केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ सविजन सुखकारी, मोहमिथ्या निवारी ॥ डुरगति डुःख ज्ञारी, शोकसंताप वारी ॥ श्रेणि क्षपक सुधारी, केवलानंतधारी ॥ नमिये नरनारी जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीठा गुंथता टाले रीठा ॥ ज्ञविजन होय हिठा, देखी पुण्ये गरीठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता, जेहरुद्धे महंता ॥ जेह सुजन संता, टालिये मुजचिंता ॥ जिनवर सेवंतां, विघ्नवारे डुरंता ॥ जिनउत्तम थुणंतां, पद्मने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति

## अथ सिद्धचक्रजीनी स्तुति ॥

जिनशासन वंछित पुरणदेव रसाल ॥ नावे न-वि नजिये, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काले एहनी पुजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्धवंदो, आचारज उवझाय ॥ मुनिदरसण नाण चरण तप ए स मुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुख दाय॥ ए ध्याने नविनां, नव कोटी छुःखजाय ॥ २ ॥ आशो चैत्रीमां शुद सातमथी सार॥ पुनम लगी कीजे, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साढाचार ॥ एकाशी आंबिल तप आगम अ-नुसार ॥ ३ ॥ श्रीसिद्धचक्र सेवक, श्रीविमलेश्वर-देव ॥ श्रीपालतणीपरे सुख पूरे स्वयमेव ॥ छुःख दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्रीसुमती सु-गुरुनो राम कहे नितमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

## ॥ अथपर्यूषण स्तुति ॥

सत्तर नेदी जिन पूजा रचीने. स्नात्र महोत्सव कीजेजी ॥ ढोल ददामां नेरी नफेरी, कल्लरी नाद सुणीजेजी ॥ वीरजिन आगे नावना नावी, मानव नव फल लीजेंजी ॥ पर्व पजूसण पुरव पुण्ये, आ-व्यां एम जाणीजे जी ॥ १ ॥ मास पास वली द-सम छुवालस, चत्तारी अठ कीजेंजी ॥ उपर वली

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वमा कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पड- वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अठमनुं तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो शुन नावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण- क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजें, रुषन चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ बारसें सूत्रने सामाचारी, संवछरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाम्नी विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने दिन स्वामी वछल, कीजे अधिक वमाइजी ॥ मान विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी॥४॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोसण, पर्व पजूसण पा- मीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शि र नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चमावी, ढोल नि- साण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सार थी पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पा- ठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आ- ठमे स्थिविरावली संजलावी, पिउडा पूरो जगीश- जी ॥ २ ॥ ठठ अठम अठाई कीजें, जिनवर चैत्य

नमीजेंजी ॥ वरसी पम्किक्मणुं मुनिवंदन, संघसयल खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रन्नावना, दान सुपात्रें दीजेजी ॥ नद्रबाहु गुरु वयण सूणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल गिरिमां; मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहिं जिनवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी स्वामी वत्सल, वहु पकवान वमाईजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमाहें नवकारज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहे जल जाणु ॥ पंखीमांहिं जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम रूपननो वंश, नान्नि तणो जे अंस ॥ क्षमावंतमाहे जिम अरिहंता, तप सूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥१॥ रूपन्न अजितसंन्नव अन्निनंदा, सुमतीनाथ मुख पुनमचदा, पद्मप्रन्न सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रन्न सुविधि, शितल श्रेयांस सेवो वहु बुद्धि, वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ न्न-

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वऌा कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पड-वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अठमनुं तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो शुन्न नावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण-क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजें, रुपन्न चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ वारसें सूत्रने सामाचारी, संवछरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाम्नी विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने दिन स्वामी वछल, कीजे अधिक वऌाइजी ॥ मान विजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी॥४॥

॥ अथ पर्यूपण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोसण, पर्व पजूसण पामीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चढावी, ढोल नि-साण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सार थी पद, वीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पा-ठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे दीक्षा ठठे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आ-ठमे स्थिविरावली संन्नलावी, पिउडा पूरो जगीश-जी ॥ २ ॥ ठठ अठम अठाई कीजें, जिनवर चैत्य

नमीजेंजी ॥ वरसी पम्किक्कमणुं मुनिवंदन, संघसयल खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रन्नावना, दान सुपात्रें दीजेजी ॥ नद्भवाहु गुरु वयण सूणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल गिरिमां; मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहिं जिनवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी स्वामी वन्नल, वहु पकवान वम्हाईजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमाहें नवकारज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहे जल जाणु ॥ पंखीमांहें जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम रुषनजनो वंश, नान्नि तणो जे अंस ॥ क्मावंतमाहे जिम अरिहंता, तप सूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥१॥ रुषन्न अजितसंन्नव अन्निनंदा, सुमतीनाथ मुख पुनमचंदा,पद्मप्रन्न सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रन्न सुविधि,शितल श्रेयांस सेवो वहु बुद्धि, वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ न्न-

दश दोय करीने, जिन चोवीस पूजीजेंजी ॥ वमा कलपनो ठठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेजी ॥ पड-वेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारी पलावी, अठमनुं तप करियें ॥ नागकेतु नी परें केवल लहियें, जो शुन्न नावें रहियेजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याण-क गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजें, रुषन्न चरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ बारसें सूत्रने सामाचारी, संवछरी पडिक्कमियेजी ॥ चैत्य प्रवाम्ी विधिसुं कीजे, सयल जंतु खामीयेंजी ॥ पारणाने दिन स्वामी वछल, कीजे अधिक वमाइजी ॥ मान विजय कहे सकलमनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी॥४॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोसण, पर्व पजूसण पामीजी ॥ कल्प घेर पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ॥ कुंवर गयवर स्कंध चमावी, ढोल निसाण वजडावोजी ॥ सदगुरु संगे चढते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥ प्रथम वखाण धरम सारथी पद, बीजे स्वपना चार जी ॥ त्रीजे स्वपन पाठक वली चोथे, वीर जन्म अधिकारजी ॥ पांचमे दीक्षा ठहे शिवपद, सातमें जिन त्रेवीशजी ॥ आठमे स्थिविरावली संन्नलावी, पिउडा पूरो जगीशजी ॥ २ ॥ ठठ अठम अट्ठाई कीजें, जिनवर चैत्य

नमीजेंजी ॥ वरसी पडिक्कमणुं मुनिवंदन, संघसयल खामीजेजी ॥ आठ दिवस लगे अमर प्रजावना, दान सुपात्रें दीजेजी ॥ जद्रबाहु गुरु वयण सूणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाचल गिरिमां; मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवरमांहिं जिनवर मोहोटा, पर्व पजूसण तेमजी ॥ अवसर पामी स्वामी वछल, वहु पकवान वमाईजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

श्रीसिद्धाचल तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमाहें नवकारज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधरमांहे जल जाणु ॥ पंखीमांहें जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम रुषजनो वंश, नाजि तणो जे अंस ॥ क्षमावंतमाहे जिम अरिहंता, तप सूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥१॥ रुषज अजितसंजव अजिनंदा, सुमतीनाथ मुख पुनमचंदा,पद्मप्रज सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रज सुविधि,शितल श्रेयांस सेवो वहु बुद्धि, वासु पूज्य मती शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी ॥ नमी पासने वीर चोवीस, नेम विना ए जिन त्रेवीस, सिद्धगिरि आव्याईश ॥ २ ॥ ज-

रतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुंजय कुण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ ऋषभ कहे सुणो भरतराय, बहरी पालंता जे नर जाय, पातक भूको थाय॥ पशुपंखी जे इण गिरि आवे; भव त्रीजे ते सिऊज थाय, अजरामरपद पावे ॥ जिनमतमें शेत्रुंजो वखाण्यो, तेमें आगम दिलमाहें आण्यो, सुणतां सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरती ठावे॥ नाभिराया मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणु भ्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणमी पाया, ऋषभदास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंखेश्वर जिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजियें ॥ नर भवनो लाहो लीजियें ॥ मन वंछित पूरण सुरतरू ॥ जय वामासुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अतिभला ॥ दोय धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला दोय सामल कह्या ॥ शोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर भांखियो ॥ गणधरें ते हियडे राखियो॥तेहनो रस जेणेंचाखियो॥ते हुउ शिव सुख साखियो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती ॥

प्रजु पार्श्व तणा गुण गावती ॥ सहु संघना संकट चूरती ॥ नयविमलना वंछित पूरती ॥ ४ ॥ इति०॥

॥ सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

पुंमर गिरि महिमां आगममां प्रसिद्ध ॥
विमलाचल नेटी लहिये अविचल ऋद्धि ॥
पंचमी गती पोहोता मुनिवर कोडा कोड ॥
इण तीर्थे आवी कर्म विपातिक ठोड ॥ १ ॥

( आ स्तुति चार वार पण कहेवाय छे )

॥ अथ नवपद थुईलि० ॥

॥ नित प्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र सुन नाव। हिवकारज सिद्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुक नाम पसायें अरति व्याधि पुलाय। इग तुक अनुग्रहथी सुख संपति मुक थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमियै सिद्ध सूरी उवकाय। मुनिवर त्रिण करणें दंसण नांण सुहाय। डुगविधि चारित्तें बुधविध तप मन नाय। ये नवपद ध्यातां निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥ विद्या प्रवादे जाणो ए अधिकार॥श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार। प्रवचन अनुसारें नांष्यो एह विचार; नविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणनंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्के सरि सुखकार। सेवकनें आपे सुख संपति परिवार। हिव निद्धि उदयकरि चारित्र नंदी मन नाय। जिनचंद सूरीसर खरतर पति सुपसाय ॥ इति ॥ नवपदस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्व जिनस्तुतिः ॥

ऊँऊँकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकि धरधप धोरवं । दोंदोंकि दोंदों दागिडदि दागिरुदिकि ड्रमकिड्रणरण ड्रेणवं । झझिंझेंकि झेंझें झणणरणरण निजकि निज जन रंजनं । सुरशैलशिखरे नवति सुखदं पार्श्व जिनपति मज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगि थोंगिनि किटति गिगरुदां धुधुकि धुटनटपाटवं । गुणगणण गुणगण रणकि णेंणें गुणणगुण गण गौरवं । झझिंझेंकि झेंझें झणण रणरण निजकि निज जन सज्जना । कलयंति कमला कलितकलमल मुकलमीस महे जिनाः ॥ २ ॥ ठूकि ठूंकि ठेंठें ठिगठिक ठठ्ठिपट्टा ताड्यते । तललोंकि लोंलों त्रेंपित्रेंपिनि त्रेंपित्रेंपिनि वाद्यति । उँउँ किउँउँ थुंगि थुं गिनि धोंगि धों गिनि कलरवे । जिन मतमनंतं महिमतनुतानमतिसुरनर मुछवे ॥३॥ धुंदांकि धुधुदां धुधुरुदि धुंदां धुधुडदि दोंदों अंबरे, चाचपट चच पट रणकि णें णें रुणण रुंरुं रुंवरे। तिहांसरगमपधुनि निधपमगरस सस ससस सुरसेवता । जिननाटयरंगें कुशल मनिशं दिसतु शासन देवता ॥ ४ ॥ इति ॥

वलि वलिहुं ध्यावुं गाउं जिणवरवीर । जिण पर वपजूसण दाख्याधरमनी सीर । आसाढचोमासे हुंती दिनपंचास । पडिक्कमणोसंवछरी करियेंत्रिणउपवास ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार ।

करियें जलजावें जरिये पुण्यजंडार । वलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लाजअनंत । इह परवपजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तकपूजावी नव वाचनायें वचाय । श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परजावन धूपअगर उखेवो । इम जवियण प्राणी परवपजूसणसेवो ॥ ३ ॥ वलिसामी वच्छल करिये वारं वार । केइ जावनाजावे केइ तपसी सीलधार । अड दीहपजूसण इमसेवत आणंद । सुयदेवी सानिध कहे जिनलाज सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपर्जूपणा पर्व्व स्तुतिः ॥

अथ तीर्थ माला चैत्यवंदन.

सद्भक्त्यादेवलोके रविशशिजुवने व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणांनिवासे ग्रहगणपटले तार काणांविमाने, पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणेध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंमले हस्तिदंते, वक्षारे स्फूटनंदी श्वर कनक गिरे नैपधे नीलवंते, चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थंकराणा० ॥ २ ॥ श्रीशैले व्यंध्यशृंगे विमलगिरिवरे अर्बुदे पावके वा, संमेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले, सय्याद्रौ चोंजयते विपुलगिरिवरे गूर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थंकराणां० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमु

कुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटें विटपि घन तटे देवकूटे विराटे, कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकोटे च जोटे, श्रीम त्तीर्थकराणां० ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलयनि निखिले मेखले पिछले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले मेहले वा, काहाले कौशले वा विगलित सलिले जंगले वा तमाले, श्रीम त्तीर्थकराणां० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे मगधजन-पदे सप्रयागेतिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उड्डियाने च पुंड्रे, आड्रे मुंड्रे पुलिंड्रे द्रविलकुवलये कन्यकुब्जे सुराष्ट्रे श्रीम त्तीर्थकराणां० ॥ ६ ॥ चंपायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कौशलायां कनकपुरवरे देवगिर्य्याचकाश्यां, नाशक्यें राजगेहे दशपुरनगरे जद्दले तामलिप्त्यां, श्रीम त्तीर्थ-कराणां० ॥ ७ ॥ स्वर्गेमर्त्त्यैंतरिक्षे गिरिशिखरहृदि स्वर्नदीनीरतीरे शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलिने जूरुहाणां निकुंजे, ग्रामेरण्ये वने वा स्थल जल विषमे डुर्ग्गमध्ये त्रिसंध्यं, श्रीम त्तीर्थंकराणां० ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्य स्तव मिद मऽनिशं जक्तिजाजा स्त्रिसंध्यं, प्रोद्य त्कल्याणहेतुः कलिमलहरणं ये पठंती ह नित्यं, तेषां श्रीतीर्थयात्राफल मऽतिविपुलं जायते मानवानां, कार्यं सिद्ध तथो च्चैः प्रजवति सततं चित्त मानंदका-रि ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ नवपदउंली करण विधिलिख्यते ॥

(प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रसुदि ७ सें उंली सरू करैं। (कदास) तिथि घटी हुवे तो (६) से वढी होय तो आठिम सें सरू करै। (पिण) आंबिल (ए) पूनिमताई करै। (तिहां) प्रथम भूमि शुद्ध करके। मांरूणादिक सें चित्रित करै। पीठे वाजोट ऊपरि सिद्धचक्र थापे त्रिकाल पुजा करे। (सोलिखते हें) प्रजात समय राई पडिकमणो करिके। पीठै वस्त्र पडिलेहै। (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना हे (तहां) आयके पांच शक्र स्तवे देव वांदै। पीठै नव चेत्ये। (अथवा) नव प्रतिमा आगे। नव चैत्यवंदण करै। वास क्षेप पूजा करै। पीठे केसर चंदनसें पूजा करै। पीठे मध्याह्न समय पांच शक्र स्तवे देव वांदै। पीठे गुरु पास आयके। राई आलोवे। अब्भुट्ठिउंमि खमायके आंबिलनो पच्चक्कांण करै। प्रथम अरिहंत पदके वरण सपेद है। (इससें) आंबिल में चावल (और) गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं। असो आंबिल पचखके। पीठे अरिहंत पदके वारे गुण हे सो चिंतवि के वारै नमस्कार करै। सो लिखते हें (प्रथम सब ठिकाणें) इच्छामि खमासमणो। वं० इत्यादि कहि के नमस्कार करै॥

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंतायनमः।
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
४ चामरयुग प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्यसंयुताय श्री०अरि०।
६ भामंडल प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
७ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
८ छत्रत्रय प्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि०।
९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि०।
१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरि ०।
११ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि ०।
१२ अपायापगमातिशयसंयुताय श्रीअरि०।

॥ इति द्वादश अरिहंतगुणाः ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिके। अन्नत्थू ससियेणं। (कहिके) (१२) वारे लोगस्सनो काउसग्ग करै। एकलोगस्स प्रगट कहै। पीछेस्वस्थानक जाके। चैत्यवंदन करै पच्चरकाण पारिकेआंबिल करै। पहले जल पीवे (जब) चैत्यवंदन करिके पीवे।पीछेफेर चैत्यवंदन करिके तिविहार पच्चरकाण करैगुणणो(२०००)ॐ ह्रीं० णमो अरिहंताणं। इस पदको करै। श्रीपालका चरित्र नवपद महिमा सुणें। पूण पहिर दिन रहणेसें (तीसरीवेर) पांच शक्रस्तवे देव वांदै।सामायिक लेके दिन छते पडिकमणो करै। आरतीके समय दीप धूप कुसम पूजा करै।

(अथवा) पहिलें आरती प्रमुख करिके। पीठे पडिक्क मणो करे। (सोणेंके समय) इरिया वही पडिक्कमके चैत्यवंदन करिके।राईसंथारा गाथागुणके सोवै।निद्रा न आवे जहांतक नवपदका गुण स्मरण करे ॥ इति प्रथम दिवसविधिः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधिलि० ॥

॥ अब इसीतरे दूसरे दिन प्रभाति करणी सब करिके सिद्धपदको लालवर्ण हे।(इसीसें) गहुंकी रोटीको अंबिल करै ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं (इसपदको) गुणणो दो हजार करे। सिद्धपदके आठगुण। सो (८) गुणां को गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं)।

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः०।
२ अनन्तदर्शन संयुताय श्रीसि०।
३ अव्यावाध गुणसंयुताय श्रीसि०।
४ अनन्तसम्यक्त चारित्रगुण संयुताय श्रीसि०।
५ अक्षयस्थितिगुण संयुताय श्रीसि०।
६ अरूपी निरंजनगुण संयुताय श्रीसि०।
७ अगुरुलघु गुणसयुताय श्रीसि०।
८ अनन्तवीर्यगुण संयुताय श्रीसि०।

॥ इतिसिद्धोके अष्टौ गुणाः ॥

॥ यह आठे नमस्कार करिके। अन्नत्थूससि० आठलोगस्सनो काउसग्ग करे। एकलोगस्स कहिके

पारे पीछे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसें करै ॥ इति द्वितीय दिवसविधिः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवसविधि लि० ॥

॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रभातकर्त्तव्य करै आचार्यपद पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करै। (ॐह्रीं ह्रीं णमो आयरियाणं) इस पदको गुणणो दोहजार करै। आचार्य पदके (३६) गुण याद करके छत्तीस नमस्कार करै।

॥ अथ आचार्य पदके (३६) गुण लि० ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआचार्याय नमः।
४ मधुरवाक्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
५ गांभीर्य गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ०।
७ उपदेश गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
८ अपरिश्रावी गुणसंयुताय श्रीआचा०।
९ सौम्यप्रकृति गुणसंयुताय श्रीआ०।
१० शीलगुणसंयुताय श्री०।
११ अविग्रह गुणसंयुताय श्री०।
१२ अविकथक गुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः।
१३ अचपल गुणसंयुताय श्रीआ०।
१४ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ०।

१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ।
१६ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१७ मृदुगुण संयुताय श्रीआ० ।
१८ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ।
१९ द्वादश विधतपगुण संयुताय श्रीआ० ।
२० सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ।
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ।
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ।
२३ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ० ;
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ।
२५ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ।
२६ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ।
२७ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
२८ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
२९ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ।
३० अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ।
३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ।
३२ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ।
३३ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ।
३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ।
३५ बोधिदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ।
३६ धर्म्म दुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० । इति.

॥ इति षट्त्रिंशदाचार्य गुणाः ॥

यह छत्तीस नमस्कार करिके। अन्नछ्छसिएणं ( इत्यादि कहिके ) छत्तीस ( ३६ ) लोगस्सनो का उसग्ग करै। पारिके एक लोगस्स ऊंचे स्वरसें कहि यथोक्त करणी। अनुक्रमसें करै। इति तृतीय दिवस विधि ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लि० ॥

॥ ( ॐ ह्रीँणमो उवज्झायाणं ) इस पदको (२) हजार गुणणो करै। इस्था मूंगकी दाल प्रमुखनो आंबिल करै। उपाध्याय पदके ( २५ ) गुण याद करि के। नमस्कार करै ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ उपाध्याय पदके २५ गुणलि० ॥

१आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायेन्योनम

२ सुयगडांगसूत्र पठन गुणयुक्ताय श्रीउपाध्या०

३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुणयुक्ताय श्रीउ०।

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठगुण युक्ताय०।

५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय०।.

६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय०।

७ श्रीउपासकदशासूत्र पठनगुण युक्ताय०।

८ श्रीअन्तगडदशासूत्र पठनगुण युक्ताय०।

ए श्रीअणुत्तरोववाईसूत्र पठनगुण युक्ताय०।

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठन यु०।

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण यु०।

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ।
१३ आग्रायणी पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१४ वीर्यप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१५ अस्तिप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ताय० ।
१६ ज्ञानप्रवाद पूर्व पठनगुणयुक्ता० ।
१७ सत्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
१८ आत्मप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
१९ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२१ विद्याप्रवाद पूर्व पठनगुण युक्ताय० ।
२२ अविंध्यप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२३ प्राणायामप्रवाद पूर्व पठनगुण यु० ।
२४ क्रियाविसाल पूर्व पठनगुण यु० ।
२५ लोंकविंदुसार पूर्व पठनगुण यु० ।

॥ इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥

इस रीतसें पचवीस नमस्कार करे (खडाहोके) अन्नत्थूस० इत्यादि कहिके पचवीस लोगस्सका का उस्सग्ग करे। पारके एक लोगस्स कहके। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करें ॥ इति चतुर्थ दिवस विधिः ॥

अथ पंचमदिवस विधि

॥ (ॐ ह्रीं णमो लो ए सव्वसाहूणं) इस पदका (२) हजार गुणनो करे। साधुपद काले वर्णहे इस सें उडदका आंबिल करे। सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण चिंतवके नमस्कार करे ॥ ॥ ॥

॥ अथ साधुपदके (२७) गुणलि० ॥

१प्राणातिपात विरमणव्रत गुण युक्ताय श्रीसाधवेनमः

२ मृषावाद विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

३ अदत्तादान विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

४ मैथुन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

५ परिग्रह विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

६ रात्रिज्ञोजन विरमणव्रत गुण यु० श्रीसा० ।

७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ।

१३ एकेंद्री जीवरक्षकाय श्रीसा० ।

१४ वेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१६ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ।

१८ लोज्ञनिग्रहकारकाय श्रीसा० ।

१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ।

२० शुज्ञज्ञावना ज्ञावकाय श्रीसा० ।

२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ।

२२ संयम योगयुक्ताय श्रीसा० ।

२३ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२४ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२५ कायगुप्ति युक्ताय श्रीसा०।
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसहसहण तत्पराय०।
२७ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा०।

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणाः ॥ ५ ॥

इस रीतसें सतावीस नमस्कार करै। (खडा होके अन्नत्थ स० (इत्यादि कहिके) सातवीस लोगस्सकाकाउस्सग्ग करै। पारके एक लोगस्स कहके (पीछे) पूर्वोक्तकरणी करै। (यह पंच परमेष्टि पदके सब गुण मिलाणें सें (१०८) होय (इसीसें) मालाके दाणे (१०८) होते हैं। इति पंचम दिवस विधिः॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधिलि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। दर्शनपद सपेदवर्णहै (इससें) तंडुलका आंबिल करै। सम्यक्तके सरूसठिगुण चितवके नमस्कार करै॥

॥ अथ सम्यक्तके सरूसठि भेदलि० ॥

१ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नमः।
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनरूप सद्दर्शनाय नमः।
३ व्यापन्नदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः।
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद्दर्शनाय नमः।

५ शुश्रूषारूप सद्दर्शनाय नमः ।
६ धर्मरागरूप सद्दर्शनाय नमः ।
७ वैयावृत्तरूप सद्दर्शनाय नमः ।
८ अर्हद्विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
९ सिद्धविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१० चैत्यविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
११ श्रुतविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१२ धर्मविनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१३ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१४ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१५ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१६ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१७ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ।
१८ संसारे जिनमतसार मिति चिंतनरूप सद्द० ।
१९ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतन० ।
२० संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति० ।
२१ शंका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ।
२२ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ।
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय० ।
२४ कुदृष्टि प्रसंसा दूषणरहिताय० ।
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय० ।
२६ प्रवचन प्रज्ञावकरूप सद्द ।
२७ धर्मकथा प्रज्ञावकरूप स० ।

२० वादी प्रनावक० स० ।
२ए नैमित्तक प्रनावक० स० ।
३० तपस्वी प्रनावक० सद्द० ।
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्या नृत्प्रनावक० स० ।
३२ चूर्णा जनादि सिद्धप्रनावक० स० ।
३३ कविप्रनावकरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३४ जिनशासने कौसल्यता नूपण० स० ।
३५ प्रनावना नूपणरूप स० ।
३६ तीर्थसेवा नूषण० स० ।
३७ स्थैर्यता नूपणरूप सद्दर्शनाय नमः ।
३० जिनशासने नक्ति नूपण० ।
३ए उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नमः ।
४० संवेग गुणरूप श्रीस०
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः ।
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ।
४३ आस्तिक्यता गुणरूप श्रीस० ।
४४ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ।
४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जन० श्रीस०
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जन० ।
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जन० ।
४० परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन० श्रीस० ।
४ए परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जन० श्रीस०।
५० राजानियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।

५१ गणाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५२ बलाभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५३ सुराभियोगाकार युक्ताय श्रीस० ।
५४ कांतारवृत्याकार युक्ताय श्री० ।
५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय श्रीस० ।
५६ सम्यक्त चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतन० श्री०
५७ चारित्र धर्मपुरस्य द्वारमितिचिंतन० श्रीस०
५८ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंतन० श्रीस०
५९ चारित्र धर्मस्याधारमिति चिंतन श्रीस० ।
६० चारित्र धर्मस्य नाजनमिति चिंतन० श्री० ।
६१ चारित्र धर्मस्य निधिसन्निनमिति चिं० श्रीस०
६२ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान यु० श्रीस० ।
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ।
६४ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थान यु०
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्था०
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान यु० ।
६७ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धानस्थान यु० श्री०

॥ इति सप्तषष्टि दर्शनस्य गुणाः ॥

॥ इस रीतिसें सडसठ नमस्कार करै । ( खमा होके) अन्नत्थू ससि एणं० ( इत्यादि कहिके) (६७) लोगस्स ( अथवा ) ७ लोगस्स नो काउस्सग्ग करै। एक लोगस्स कहके । ( पीछे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति षष्ट दिवस विधिः ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लि० ॥

॥ ( ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ) इस पदको ( २ ) ह गुणनो करै । ज्ञानपद उज्वल वर्ण । तंडुलका आंबिल करै । इक्कावन भेद ग्यानपदके चिंतवके नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ( ५१ ) भेदलि० ॥

१ स्पर्शनेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
२ रसनेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
३ घ्राणेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
४ श्रोत्रेंद्रीय व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
५ स्पर्शनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
६ रसनेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
७ घ्राणेंद्रीय अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नम. ।
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
१० मनऽर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।
११ स्पर्शनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१२ रसनेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम. ।
१३ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१४ चक्षुरिंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१५ श्रोत्रेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नम· ।
१६ मनें करी ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
१७ स्पर्शनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।

१८ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
१९ घ्राणेंद्री ईहा मतिज्ञानाय नमः ।
२० चक्षुरिंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२१ श्रोत्रेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२२ मनेकरी अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२३ स्पर्शनेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
२४ रसनेंद्री अपाय मतिज्ञानाय नमः ।
२५ घ्राणेंद्री धारणा मतिज्ञानाय नमः ।
२६ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ।
२७ श्रोत्रेंद्रीधारणा मति० ।
२८ मनो धारणामति ज्ञानाय नमः ।
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ।
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३२ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ।
३३ सम्यक् श्रुतज्ञानाय नमः ।
३४ मिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः ।
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ।
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ।
३७ सपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।
३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः ।
३९ गमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।
४० अगमिक श्रुतज्ञानाय नमः ।

४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ।
४२ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ।
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ।
४४ अननुगामि अवधिज्ञानाय नम. ।
४५ वर्द्धमान अवधि० ।
४६ हियमान अवधि० ।
४७ प्रतिपाती अवधि० ।
४८ अप्रतिपाती अवधि० ।
४९ ऋजुमति मनः पर्यवज्ञाय नमः ।
५० विपुलमति मनः पर्यवज्ञानाय नमः ।
५१ लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नमः ।

॥ इति एकपंचासत ज्ञानभेदाः ॥

इस रीतसें (५१) नमस्कार करे। (खडा होके) अन्नत्थ उससिएण० (इत्यादि कहे) (५१) लोगस्सके काउ सग्ग करिके। प्रगट लोगस्स कहे। पीछे सब पूर्वोक्त करणी करै। इतिसप्तम दिवस विधिः ॥७॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लि० ॥

॥ (ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स) इस पदको (२) हजार गुंणनो करे। चारित्रपदका उज्वल वर्णहै। (इसीसें) तंडुलका आंबिल करै। सित्तर भेद चारित्रपदके। चिंतवके नमस्कार करे ॥

॥ अथ चारित्रपदके (७०) भेदलि० ॥

१ प्राणातिपात विरमणरूप चारित्राय नमः ।

२ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ।
३ अदत्तादान विरमणरूप चारित्राय नमः ।
४ मैथुनविरमणरूप चारित्राय० ।
५ परिग्रह विरमणरूप चारित्रा० ।
६ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
७ आर्यव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
८ मृडुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
९ मुक्ति धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
१० तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ।
११ संयमधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः ।
१२ सत्यधर्म रूप चारि० ।
१३ सौच धर्म्मरूप चारि० ।
१४ अकिंचनधर्म्मरूप चारि० ।
१५ ब्रह्मचर्यधर्म्मरूप चारि० ।
१६ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेभ्यो नमः
१७ उदग रक्षासंयम चारि० ।
१८ तेऊ रक्षा संयम चारि० ।
१९ वाऊ रक्षासंयम चारि० ।
२० वनस्पति रक्षासंयम चारि० ।
२१ वेइं द्री रक्षासंयम चारि० ।
२२ तेइं द्री रक्षासंयम चारि० ।
२३ चौरिं द्रीरक्षा संयम चारि० ।
२४ पंचेन्द्री रक्षासंयम चारि० ।

२५ अजीव रक्षासंयम चारि० ।
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ।
२७ उत्पेक्षासंयम चारि० ।
२८ अतिरिक्तवस्त्रजक्तादिपरठणत्यागरूपसंय चारि०
२ए प्रमार्जन रूप संम चारि० ।
३० मनसंयम चारि० ।
३१ वाक्संयम चारि० ।
३२ कायासंयम चारि० ।
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ।
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ।
३५ तपस्वी वैयावृत्य रूप चारि० ।
३६ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूपचारि० ।
३७ गिलाणसाधु वैयावृत्यरूप चा० ।
३८ साधु वैयावृत्यरूप चारि० ।
३ए श्रमणोपासक वैयावृत्यरूप चा० ।
४० संघ वैयावृत्यरूप चारि० ।
४१ कुल वैयावृत्यरूप चारित्रे० ।
४२ गण वैयावृत्य रूप चारि० ।
४३ पशुपंमगादि रहित वशति वसण ब्रह्मगुप्तचारि०।
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४५ स्त्रीआसन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ।
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षणवर्जन ब्रह्म० ।
४७ कुड्यंतर सहित स्त्रीहाव जावश्रवण वर्जन ब्रह्म०।

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणें कों गुरुके पास जाणेंकी विधि लि० ॥

॥ प्रथम शुभ्र दिन शुभ्र घडी देखके । अच्छा वस्त्र आभूषण पहरे । लिलाडमे तिलक करे । दोव । सरखुं । मस्तकमें धारण करे । हाथके मोली बांधके । अक्षत । सुपारी । श्रीफल । नेवेद्य । यथाशक्ति रोक नाणो लेके । नवकार गुणतो थको । गुरूके पास जावे । द्वादशावर्त्त वांदणा करके । ज्ञान पूजा करे पीछे वहुत प्रमोदवंत होके । गुरुके मुखसे तप ग्रहण करे.

॥ अथ संक्षेप ऊजमणाविधि लि० ॥

॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रका मंडल करे । सिद्धचक्रजी के चौतरफ तीन गढ चूर्णीके आकार वनावें पहिले गढमांहे । अष्टदल कमलके आकार नव पद स्थापन करे । पद पद के वर्ण गुण प्रमाणे । रक्तादिक चढावे । (ओर) पंचवर्णके धान्य । नवनालेर प्रमुखके गोटा रंगके । जिसपदके जैसे वर्णके होइ (तैसे ही) रंगका गोला चढावै । पंच वर्णी (९) धजा चढावे । दूसरै वलयमें । सोले श्री फल (अथवा) पूंगी फल चढावे । तीसरें वलयमें (४७)छुहारा खारक चढावे । नव निधानके ठिकाणें(९) नव वडा फल चढावें दश दिग्पाल । नवग्रहकों । पकान्न प्रमुख चढावै । इत्यादिक विधिसंयुक्त । सिद्ध चक्र स्थापना । घर देहरासर आगे करै । और जि

नमंदिर मांहे । वाद्य मंरूपै ५ ॥ ७ हाथ प्रमाणें मंडल रचना करै । विस्तारसें सब विधि गुरूके वचनसें करके । नव पदजी की पूजा पढायके कलस ढाले । धवल मंगल गीतगान गावे । वाजिंत्र वजावे । (इसी तरे) महामोहछव । उदारचित्तसें करे । मंगल दीप आरती प्रमुख करे । दुसरे दिन विसर्जन करे । इति संखेप सिद्धचक्र मंरूल विधिः ।

उद्यापनमें ज्ञान नक्तिके कारण । ए पूठा । ए । वीटांगणा । ए पुस्तक ए लेखण । ए ठवणी । नव तोरण । ए रुमाल । ए दोरा । ए कटासणा । ए थापना ए चंद्रूआ । ए पूठिआ । ए आरती ए । कलश ए जापमाला । ए मंदर । ए प्रतिमा । ए तिलक । ए मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज वणावे । शक्ति न होय तो यथाक्ते रोकनाणो चढावे । देव पदको देवद्रव्यमै देवे । गुरु पदको गुरु कों देवे । ग्यानपद को ग्यानखाते लगावे । इत्यादिकयथाजोग्य शुन क्षेत्रे खरच करे । इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापनविधिः ॥

॥ अथ वीस स्थानक तपकरण विधि लि० ॥

॥ तिहां प्रथम सुन्न महुर्त्तके दिन । नंदी स्थापना पूर्वक । सुविहित गुरुके समीप । वीश स्थानक तप । विधि पूर्वक उच्चरे । ठली दो माससें लेके (यावत्) ठम्मामे पूरी करे । (कदाचित्) ठम्मास मध्ये

पूरी न कर सके (तो) वा ओली गिणती में । न
हीं । और नवी करणी पडे । एक ओलीके वीस पद
हे (तिहां) कोई वीस दिनसें । वीसों पद जूदा २
गिणें । कोई वीसों दिन में एकज पद गिणें । दू-
सरे वीसों दिनमें दूसरो पद । (ऐसें) वीसों पद-
की वीस ओली करे । तिहां पदाराधनके दिन प्रबल
शक्तिवंत । अठम तप करिकैं आराधे । वीस अठ-
में एक ओली होय । ऐसें वीसओली (४००) अठमें
आराधे । और तिसमें हीनशक्ति छठ तप करके आ
राधें । तिससें हीनशक्ति चौविहार उपवास करके
आराधे । तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास क-
रके आराधे । हीन शक्ति आंबिल (तथा) त्रिवि
हार एकासण करके आराधे । तिहां शक्तिवान प्रा
णी । सब तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करे ।
(हीन शक्ति) दिन पोसह करे । वीसों पद पोसह
सेती आराधे (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो
(तो) आचार्य पदे १ उपाध्याम पदे २ थिवर पदे
३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५ गौतम पदे ६ तीर्थ
पदे ७ यह सात थानक तो पोसहज करके आरा
धे । तथापि शक्ति नही (तो) तिस दिन देसाव-
गासिक करे । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण न
होइ (तो) यथाशक्ति तप करी आराधे । अपणी
हीनताजावे (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उ

पवासादि तप गिणे न जावे । स्त्रीयां पिण ऋतु समय का तप न गिणें (तथा) तपके दिन पोसह सहित करे (तो) वहोत श्रेयकारी है । सो नही होसके (तो) तपके दिन उभय टंक पडिक्कमणा करे। तीन टंक देव वंदन करे । दो सहस्र (२००० ) एक पदका जप करे । ब्रह्मचर्य पाले । भूमि शयन करे। तपके दिन अतिसावद्य आरंभ व्यापार न करे । असत्य न बोले । सव दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहे । (तथा) तपके दिन पोसह करे । (तो) पारणें के दिन जिन भक्ति करके पारणो करे। करावे । भावना भावे । (तथा) तपके दिन पदके गुण भेद प्रमाण संख्याइं काउसग्ग करे। (तावन्मात्र) तिणकेगुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदनाकरे। उस पदका महिमा गुण याद करके उदात्त स्वरे स्तवना करे । हर्षित रहे ॥

॥ अव वीस स्थानक गुणनो और काउसग्गका प्रमाण लिखते है ॥

॥ (णमो अरिहंताणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमो सिद्धाणं) (२००० ) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) (२००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरियाणं) (२००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥ ४ ॥

( णमो थेराणं ) ( २००० ) दो हजार गुणनो । लोगस्स १५५ काउसग्ग ॥ ५॥ (णमोउवज्झायाणं) दो हजार गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ६ ॥ ( णमो लोए सव्वसाहूणं ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स २७ काउसग्ग ॥ ७ ॥ ( णमो नाणस्स ) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ ८ ॥ ( णमो दंसणस्स ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स ६७ काउसग्ग ॥ ९ ॥ ( नमो विनयसंपन्नाणं ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ( णमो चारित्रस्स ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ११ ॥ ( णमो बंभव्वयधारीणं ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स ९ काउसग्ग ॥ १२ ॥ ( णमो किरियाणं ) ( २००० ) गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ १३ ॥ ( णमो तवस्सीणं ) २००० गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १४ ॥ ( णमो गोयमस्स ) २००० गुणनो । लोगस्स २८ काउसग्ग ॥ १५ ॥ ( णमो जिणाणं ) २००० गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग॥१६॥ ( णमो चरणस्स ) दो हजार गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ १७ ॥ ( णमो नांणस्स २००० गणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ १८ ॥ ( णमो सुश्रनाणस्स ) २००० गुणनो लोगस्स १० काउसग्ग ॥१९॥ ( णमो तित्थस्स ) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग करे ॥२०॥ इतिवीस स्थानिक गुणनो संपूर्ण॥

इत्यादि विधिसंयुक्त वीसों ठंलीमें सव पदके उछव महोछव प्रजावना ऊजमणा पूर्वक करे। जिन साशनके उन्नति के कारण करे। इतनी शक्ति न हो ( तो ) एक ठंली ( तो ) विशेष उछवादि सहित करणी चाहिये ॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें वीस स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखीहै (जो) गुरुको संयोग हुय । तवतो विस्तारसें वीसों पदकी जूदी विधि । गुरुके मुखसे समझके करे जो गुरुका जोग न हो ( तो ) विवेक संयुक्त इस विधिको देखके वीस स्थानक तप सेवन करे। वीस स्थानक तवन पढे ( वा ) सुणें। वीस स्थानकजी की पूजा करावे। अपनी शक्ति माफक वीस वीस ज्ञानोपगरण करावे। देव पदको देव खाते लगावे। ज्ञान पदको ज्ञान खाते लगावे । गुरु पदको गुरु महाराजकोदेवे। सव तीर्थो की यात्रा करे। साहमी वछल करे. ॥ इति वीसस्थानक तप विधि समाप्त ॥

॥ मोक्ष करंडक तप ॥ उपवास, आयंविल, नीवी, एकाशना, पुरिमड्ढ ए एक ठंली हुइ एसें पांच वारठंली करनेसें पच्चीस दिनसे यह तप पुरा करना इस्मे नमो सिद्धाणं पदकी वीस नवकारवाली गुणनी उद्यापनमे एक रूप्येमे नैवेद्य भरके जिनमंदिरमें ढोकना पूजा पढानी. ॥

स्वर्ग करंडक तप ॥ प्रथम वारे एकाशना, नव नीवी, पांच आयंविल, एक उपवास, एसे २७ दिनसे यह तप पुरा होता है. सिद्धाणं पदका गुणणा गुनना ॥

॥ सौभाग्य सुंदर तप ॥ एक उपवास और एक आयंविलकी एक उली. एसें सोले उली करनी अर्थात् वत्तीस दिनसे यह तप पूरा करना ॥ सिद्ध पद गुणना ॥ उद्यापन उपर प्रमाणे करना.

॥ चोसठिया तप ॥ एकासना आंयंविलकी एक उली एसी वत्तीस उली करनेसे तप पूरा होय ॥ इसमे सिद्धाणं पद गुणणा ॥

॥ अष्टाह्निका तप ॥ एकेक जिनवरके पांच पांच कल्याणक के एकासने करनेसे चोवीस जिनके ६२० एकासने करने ॥ जिस तीर्थंकरका कल्याणक होवे उसी जिनके नामकी नवकारवाली वीस गुणनी । यह कल्याणक तप जेसा तप है. परं अनुक्रम भिन्न है ॥ उद्यापनमे चोवीश प्रकारके पकान्न चोवीश तिलक, प्रभुजिके सन्मुख रखना ॥ संघ पूजा करनी ॥

॥ ८४ जिन तप ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान मीलके तीन चोवीशी तथा सीमंधरादिक वीश विहरमान जिन और चार शास्वते जिन मील ८४ जिन आश्रयि एकेक उपवास करना और तिस तिस जिनके नामकी नवकार वाली गुणनी. ८४ दिनसे यह

तप पूरा होता हे उद्यापनमे ठन्नवे मोदक मंदिरमें ढोकना गुरु भक्ति करना

॥ अष्टमी तप ॥ अष्टमी अष्टमीके दिन उपवास अथवा आयंबिल करके आराधना करनी. उद्यापनमे दूधसे भरा हुवा कलसके उपर श्वेत वस्त्र ढांकके तिसके उपर सक्कर के आठ मोदक रखके और ज्ञानोपकरण सहित कर्म क्षय निमित्त प्रतिमा वा पुस्तककी पास रखनेसे उद्यापन होताहे. इस्मे तपके दिन चंद्रप्रभ जिनाय नमः ए गुणना गुणना॥

॥ अष्टापद पाहुडी तप ॥ आशोज अष्टमीसे पूर्णिमा तक आठ दिन एकाशना करना ॥ अष्टापद तीर्थायनमः ए पद गुणना उद्यायनमें जिन पूजा पढावी और नैवेद्यादिक ढोकन करना ॥

॥ अशोक वृक्ष तप ॥ आशोजके मासमें एक उपवास एक एकासणा एसे तीस दिनका यह तप हे. सिद्धपदको गुणना. उद्यापनमे अशोक वृक्ष चांदिका बनाके मंदीरमे स्थापनकर पूजा पढानी

॥ चांद्रायण तप ॥ सुदि प्रतिपदासें एक उपवास एक आयंबिल एसे पनरा दिनका यहतपहे. सिद्धपद गुणना उद्यापनमे पनरे लाडु और चांदीकी चंद्र मूर्त्ति मंदरमे रखे और पूजा पढावे ॥

॥ सूरायन तप ॥ कृस्न पक्षके प्रतिपदासे उपवास आयंबिल पनरेदिन तक करे. सिद्धाणं पद गूणे.

उद्यापनमें पनर लाडु और सोना अथवा चांदीकी सूर्य मूर्त्ति रखके पूजा पढावे ॥

॥ तीर्थंकर वर्द्धमान तप ॥ यह तप आयंबिल अथवा नीवीसे किया जाताहे. प्रथम तीर्थंकरका एक आंयंबिल, डुसरे के दो, तीसरेके तीन चोथेके चार चोवीसमे के चोवीस करने. फिर चोवीसमेका एक, तेवीसमे के दो, बाईसमें के तीन यों पहिले जगवानके चोवीस आंयंबिल करे. जो जो जगवानकी उंली होय उस्के नामकी नवकारवाली गुणे ओर पूजा करे. उद्यापनमे नैवेद्य चढावे। संघ पूजा करे देवगुरु जक्ति करे.

॥ जैन जनक तप ॥ निरंतर बत्तीस आयंबिल करनेसें यह तप पूरा होता हे । उद्यायनमे बडे गठमाठसे जिन पूजा करनी ॥

॥ निगोदायुक्दय तप ॥ एक उपवास एकासणा दो उपवास एकासना. तीनउपवास एकासना. दो उपवास एकासना० एक उववास एकासना. सिद्ध पद गुणना । उद्यानमें चोंदा मोदक बाटने ओर चौदा मोदक मंदरजीमे चढाने ओर पूजा करानी॥

॥ कमल उंलीतप ॥ एकांतर आठ उपवासकी एक उंली करनी एसी नव उंली एकहि वर्षमे करनी चहीये. सिद्धपद गुणणा ओर उद्यापनमे सोना चांदीके नव नव कमल ढोकना गुरुजक्ति करनी.

॥ मेरू कल्याणक तप ॥ एक तेला एक विआसणा एक तेला एक विआसणा एसे तीन तेले करने पीछे एकांतर छे उपवास करना. पारणेके दिन विआसना करना० जो पहिले तीन तेला न कर शके तो पहिले दों तेले करके वीचमे छ उपवास करके छेल्ला एक तेला कर देवें परं यहसव एकहिं वर्षमें करना. इसमे यह नियमहेकी मेरु त्रयोदशीके दिन छेल्ला तप होना चाहिये. इसमे श्रीऋषदेव पारंगताय नमः ए पद गुणना चहिये. यथाशक्ती उद्यापन अवश्य करना चाहिये.

॥ ठठ तप ॥ इसमे २२९ वेला करना ओंर पारणामे विआसणा करणा. सव मील इस्के ४५८ उपवास गिने जाते हे. सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे ७२० मोदक ढोकना.

॥ पद कर्म्मी तप ॥ पहिले एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा. ॥ प्रथम उंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा ॥ दुसरी उंली ॥ एक उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा ॥ तीसरी उंली ॥ एक उपवास पारणा दो उपवास पारणा तीन उपवास पारणा. चार उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास

पारणा. सिद्धपद गुणणा ॥ उद्यापनमे मोति ओर प्रवाल चढावना । पुजा पढाना गुरुभक्ति करना ॥

सिद्धि वधू कंठाभरण तप ॥ प्रथम दो उपवास (वेला) पारणा. एक उपवास पारणा. तीन उपवास पारणा. दो उपवास पारणा. एक उपवास पारणा एसे नव उपवास करनेसे तप पूरा होता हे. सि, द्धपद गुणना गुरु ज्ञान भक्ति करना ॥

॥ रत्नारोहण तप ॥ एकाशन एक, नीवी एक. आयंबिल एक उपवास एक ॥ प्रथमावली ॥ नीवी, आयंबिल, उपवास, एकासन. ॥ द्वितीयावली ॥ आ यंबिल, उपवास, एकाशन, नीवि. तृतीयावली ॥ उ, पवास, एकासण, नीवी, आयंबिल ॥ चतुर्थावली ॥ एक उपवास विगई, निविता रहित नीवी, आयंबि ल ॥ पंचमावली ॥ इसतरे पांच आवलीसे रत्नारोह ण तप होता हे. सिद्धपद गुणना. उद्यापनमें रत्नम य नवकारवाली पांच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच, रत्नमय जिन बिंब पांच, मोदक वीस, इतनी वस्तु पुस्तकके पास ढोकना. तप के दिन ब्रह्मचर्य पाल ना. ज्ञान दर्शन चारित्रका आराधन करना. पार णाके दिन गुरु भक्ति करनी. अष्ट प्रकारी पुजा क रनी. इस तपसे संतान प्राप्ती होती हे. गर्भश्राव होना बंध होता हे आशोज सुदिपंचमीसे ए तप सरु करना.

· ॥ आगमोक्त केवली तप ॥ आयंविल निरंतर दश, उपर एक उपवास, सिद्धपद गुणणा. उद्यापन में इग्यारे मोदक, इग्यारे श्रीफल, पुस्तकके पास ढोकना. अष्टप्रकारी पूजा पढानी गुरु जक्ति करनी॥

॥ अंगविशुद्धी तप ॥ आयंविल तीन, नीवी तीन, एकासणा तीन, एक उपवास अतमे करना. सिद्धपद गुणणा. उद्यापनमे तेरे तेरे वस्तु पुस्तक के आगे ढोकना पूजा पढानी गुरु जक्ति करनी

॥ पद्मोत्तरतप॥नव पांखडीके कमलको पद्मकहते हे. इस्मे नव उंली करनी चहिये एकेक उंली के निरंतर अथवा एकांतर आठ आठ उपवास करना. एसी नव उंली करनी सिद्धपदगुणणा उद्यापनमें अष्ट दल कमल सुवर्णका अथवा चांदीका नया बनाकर विचमे गौतमस्वामीकी प्रतिमाका आकार करके स्थापन करना और अष्ट प्रकारी पूजा करना श्रीसंघ औरगुरुजक्तिकरे ॥

॥ गणधरतप॥वर्धमान स्वामीके इग्यारे गणधरके इग्यारह उपवास अथवा आयंविल करना. उनके नामकी नवकार वाली गुणना उद्यापनमे गुरुको इग्यारह वेश ( चारित्रोपकरण ) वेहेराना. संघजक्ति गुरुजक्ति और पूजा पढानी.

॥ माणिक्य प्रस्तारिका तप ॥ आशोज सुदी इग्यारसको उपवास वारसकों एकासणा तेरसकी

नीवी. चौदशका आयंबिल. पुनमका उपवास करना. पाठांतरमे डुसरी रीती यहहे की आशोसुदी बारसका आयंबिल. तेरसकी नीवी. चौदशका एकासणा. पुनमका उपवास. पुनमके उपवासके दिन उद्यापन करना सो यहरीतसे की पुनमके दिन सूर्योदय पहिले पवित्रहोके अपनी पसलीमे आभूषण श्रीफल, अक्षत लेके वाजित्रादि महोत्सव पूर्वक जिनप्रसादमे जाना. प्रथम प्रदक्षिना करके उपरोक्त वस्तु ढोकना. डुसरी प्रदक्षिणामें बिजोरा ढोकनां. तीसरी प्रदक्षणामे तांबूलपत्र सहित सुपारी ढोकनी. चतुर्थ प्रदक्षिणामे ठक्को (द्रव्य) ढोकना. सात जातिके धान ढोकनां. लवण. कापड. कसुंब. कपास. पुरी १०० तांबे पीतलका बेहेडा ढोकनां एकसो सोले दीपक करने. एक दीपकमे चांदीकी दीवट सुवर्णका कोडिया ढोकना. गुरुजक्तिसंघजक्ति करना.

॥ श्रुत देवता तप ॥ सुदपक्षकी एकादशीका उपवासकरना और मौनरहना. एसी इग्यारह एकादशी करनी. श्रुतदेवताकी पूजा करनी उद्यानमे अपने घर सरस्वतीकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठाकराय के पधरावनी. और ठाठमाठसे पूजा पढानी ज्ञान ज्ञानीकी और संघकीजक्ति करनी.

॥ अंबिकातप ॥ कृष्ण पंचमीके दिन श्रीनेम

नाथजीकी पूजा पूर्वक अंबिका देवीकी स्थापना करके एकाशन तप करके पूजा करनी. नैवेद्यफल ढोकना. एसे पांचवार करना उद्यापनमें साधुजीको वस्त्र, अन्न, पान, वेहेराना. अंबिकाकी मुर्त्ति दोपुत्रसहित आम्र वृक्षकेनीचे होय एसे देखावकी करानी.

॥ मुकुट सप्तमी तप ॥ आषाढवदि सप्तमीके दिन उपवास करके श्रीविमल नाथजीकी पूजा करनी. कार्त्तिकवदि सप्तमी के दिन उपवास करके श्रीआदिनाथजी की पुजा करनी. मिगसर वदि सप्तमीके दिने उपवास करके श्रीमहावीर स्वामीकी पूजा करना. पोषवदि सप्तमीका उपवास करके श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी पूजा करनी उद्यापनमे लोकनालकी स्थापना करके मुकुट स्थानमे रहि जिनावलिको रत्न जडित मुकुट चढाना. गठसें पुजा पढाना एकेक जिनको सात सात वस्तु चढाना ज्ञान गुरु संघकी नक्ति करना.

॥ स्वर्गस्वस्तिक तप ॥ चार एकासणा निरंतर करके उपर एक उपवास करना उद्यापनमे पांच जातिके एकएकमण धानके स्वस्तिक जिन मंदिरमे करा के पूजा पढावी. ज्ञान गुरु संघनक्ति करना

॥शत्रुंजयमोदक तप ॥ पुरीमढ, एकासणा, नीवी. आयंबिल, उपवास निरंतर पांच दिन तक करना,

शत्रुंजय नाम गुणना. उद्यापनमें पांचशेरगोधुमका एक लाडु एसे पांच लाडु चढावना ज्ञानगुरु संघ ज्ञक्तिकरना.

॥ सात सौख्य तप ॥ निरंतर सात एकासणा करके उपर एक उपवासकरना. उद्यापनमें सात मोदक ढोकना. आठमा मोदक चतुर्गुण वमाकरना। सोलजातिके पकवान चढाना. ज्ञानगुरु ज्ञक्तिकरना.

॥ क्षीर समुद्र तप ॥ श्रावणमासमे करना। निरंतर आठ एकासणा करके उपर एक उपवास करना. उद्यापनमे क्षीर खांड और घृतसे जरा हुवा थाल प्रज्ञुकों ढोकना. ज्ञानगुरु संघ ज्ञक्तिकरनी.

॥ उमासी तप ॥ एकाशनांतरित यथाशक्ति१८० उपवास करना. उद्यापनमे एकसो अस्सी मोदक मंदरमे चढाना ज्ञान गुरु ज्ञक्ति करना महावीर स्वामीके नामकी नवकार वाली तपके दिन गुणनी.

॥ संवत्सरी तप ॥ एकाशनांतरीत ३६० उपवास करना ॥ ऋषज्ञ देवजीके नामकी नवकारवाली गुणनी. उद्यापनमें चांदीका घट सेलडीके रससें जरके मंदीरमे चढाना. अक्षयतृतीयाके दिनपारणा आवे तेसें तप आदरना। ज्ञानगुरु संघकी ज्ञक्ति करनी॥

॥ अष्ट मासिक तप ॥ मध्यम वावीस तिर्थंकर आश्रयिक एकांतरीत २४० उपवास करना.। जिस जिस जिन कातप आवे उन उनके नामकी नव-

कार वाली गुणना. उद्यापनमे २४० मोदक चढाना ज्ञान गुरु नक्ति करे.

॥ चतुर्विध श्री संघ तप ॥ प्रथम दो उपवास (वेला) करके एकांतरीत साठ उपवास करने। उद्यापनमे चतुर्विध श्री संघकी ओर ज्ञान गुरु नक्ति करनी.

॥ अष्ट कर्मोत्तर प्रकृति तप ॥ ज्ञानावरणीनी उत्तर प्रकृति ५, दर्शना वर्णीनी नव, वेदनीकी दो, मोहिनी कर्मकी अठाइस, आयुकर्मकी चार, नाम कर्मकी एकशोतीन, गोत्र कर्मकी दो, अंतरायकर्मकी पांच, सव मील १५८ प्रकृतिके १५८ उपवास एकाशनांत्तरित करना एसे करनेसें एक उली हुइ. एसी आठउली करनेसे यह तप पुरा होताहे सिद्ध पद गुणणा. उद्यापनमे १५८ मोदक जिनमंदिरमे चढावणा ज्ञानपूजा गुरुपूजा संघपूजा करनी पूजा पढावणी ॥

॥ हार तप ॥ प्रथम दो उपवास करके एकाशनांतरित सात उपवास करना पीछे उपवास तीन (तेला) करके एकाशनांतरित सात उपवास करना अंतमे वेला करना एवं तपो दिन एक वीस और पारणा सत्तर होय. सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमें सुवर्ण, माणक, मोति, विद्रुम, रजत, पदक काहलीका सहित हार वनाके वर्द्धमान स्वामीको

चढाना. अथवा सुवर्ण हार बनाके कंठारोपित कर-
ना । ज्ञानभक्ति गुरुभक्ति संघभक्ति करना.

॥ अहव दशमी तप ॥ प्रत्येक वर्षकी भाद्रवा सुद दशमीके दिन यथा शक्ति उपवासादि तप क-रके अंबिकादेवी के पास संगीतादिक करके रात्रि जागरण करना. मोदक फल पुष्पादिक ढोकना. धूप दीपादिक करना. अगले दिन स्वामी वत्सलकरके मुनिको दान देके पारणा करना. रेशमी चुनरी च-ढानी. एसे दशवर्ष करना. दूसरे वर्ष फलादिक दु-गुने चढाने. तीसरे वर्ष तीगुने चोथेवर्षे चोगुने च ढाने. ज्ञान गुरु संघभक्ति करना

॥ लघु संसार तारण तप ॥ निरंतर तीन आयंबिल करके एक उपवास करणा सिद्धपद गुणना. एसे तीन ओली करते बारे दिनसे तप पुराहोय.

॥ वृद्धसंसार तारण तप ॥ निरंतर तीन उपवास ( तेला ) करके एक आयंबिल करना. सिद्धपद गुणना. एसी तीन ओली करनी. इस्मे नव उपवास तीन आयंबिलसे तप पूरा होय. उद्यापनमे चांदी का जाहाज बनाके एक थालीमे दुधभरके दुधमे जहाज तिरानां. जहाजमे मोतिमुंगा रखना. स्वामीवछल ज्ञानगुरु भक्ति करना पूजा पढाना ॥

लाखी पडवा तप ॥ कार्त्तिक सुदि प्रतिपदाकेदिन गौतमस्वामीके नामका उपवास करना. गौतम स्वामी-

के नामकी नवकार वाली गुणनी ॥ एक वर्षकी वा रे सुद पडवाको इसीतरें तपकरना । द्वितीयाको दुध चावलसे पारणा करना. समाप्तीके उद्यानमे पांच पांचसेर सवजातिके धान मंदिरजीमे ढोकना पूजा पढानी. ज्ञान गुरु संघभक्ति यथा शक्ति महोत्सव करना यह तप करनेसे सौभाग्यकी प्राप्ति होय अठावीस लब्धीकी प्राप्ती होती हे ॥

॥ परतपाली तप ॥ पंचवर्ष यावत् श्रीवीर निर्वाणसे प्रारंभ कर तीन उपवास करना पीछे बत्रीस नीवी करनी समाप्तिमे तीन उपवास करना. प्रतिवर्ष पांचसेरकी लापसी सुगधीदार बनाके स्थाल मे भरके महोत्सव पूर्वक ढोकना. ज्ञान गुरु संघभक्ति प्रभावना करना. वीरनामगुणना ॥

॥ त्रिपर्यंत घन तप ॥ १ २-३. ए प्रथमउली. २. १. ३. ए द्वितीयाउली ३ २. १. ए त्रतीया उली १ ३. २ ए चतुर्था उली. २ ३ १ ए पंचमी उली. ३. १. २ ए छठी उली १. २. ३. ए सातमी उली. ३ २. १. अष्टमी उली. २. ३ १ नवमी उली. सबमील तपोदिन ५४ पारणे दिन २७ सर्व दिन ८१ उद्यापनमे ज्ञानगुरु साधर्मिक भक्ति०

॥ वर्ग तप ॥ १. २ २ १ २. १ १. २. ए उपवाससे प्रथमउली. २. १. १. २ १. २. २. १. दूसरी उली २ १. १. २ १. २. २ १. तीसरी उली. १. २.

सें छेदन करना. सिद्धपदगुणना. ज्ञान गुरु संघ नक्ति करना.

॥ अखंड दशमी तप ॥ सुक्क पक्की दशमीके दिन एकाशनादि तपकरनां सिद्धपदगुणना. एसी दश एकादशी करनी तपके दिन अखंड अन्नका नोजन करना. उद्यापनमें दश जातिके धान्य फल पकवान जिनमंदिरमें ढोकन करना. शुध्ध वस्त्र चढाना. ज्ञान गुरु नक्ति करना. यह तपके करनेसें विधवा न होय एसा महिमा हे.

॥ अमृताष्टमी तप ॥ सुक्क पक्की अष्टमीके दिन आयंबिल करनां एसी आठ अष्टमी करना. सिद्धपदगुणना.देवपूजा करनी. उद्यापनमे दूधसे नरा कलस एक, कंचुकी नवीन एक, मोदक एक, जल घट एक, जिन मंदिरमे चढाना. ज्ञान गुरु संघ नक्ति करना.

॥ सत्तरी सय जिन तप ॥ सित्तेरसय जिन आश्रयि एकसो सित्तर एकांतर उपवास वा एकासना करना। गुणणा गुरु मुखसे धारके जपना. उद्यापनमें एकसो सित्तर श्राविकाको जिमाना ज्ञान गुरु नक्ति करना.

॥ अदुःख दुःखित तप ॥ सुद पक्की प्रतिपदाको पहिला उपवास, सुद दुजका दुसरा, सुद तीजका तीसरा उपवास, यह प्रथम उली. एसी

पांच उंली करनी. सिद्धपद गुणना तपके दिन ऋषनदेवकी मूर्तिको अखंम पुष्प माला चढानी. नवीन नवीन नैवेद्य ढोकना उद्यापनमे एक चांदीका वृक्ष वनाके उस्की शाखामे सोनेका पारणा लटकावै. रेसमकी पाटसे रेसमी तलाइ रखके उसमे सुवर्ण मय पुतली रखके जिन मंदीरमे ढोकना ऋषदेवकी पूजा करना ज्ञान गुरु संघन्नक्ति करना.

॥ पंचमेरु तप ॥ एक मेरुके एकांतर पांच उपवास करना. सुदर्शन मेरुका नाम गुणणा डुसरे वखत पांच उपवासमे विजय मेरु गीणना तीसरे पांच उपवासमे अचल मेरु गिणना । चोथी वारके पांच उपवासमे मंदिर मेरु नाम गिणना पांचमी वार पांच उपवासमें विद्युन्माली मेरु नाम गिणना इसमे निरंतर करेतो २५ उपवास और २५ पारणा मिलके पचास दिनमे तप पूरा होय उद्यापनमे सुवर्ण मय मेरु वनाके मंदीरमे रखना २५. २५ वस्तु ढोकना ज्ञान गुरु संघ न्नक्ति करना

॥ वडा समवसरण तप ॥ प्रथम चार उपवास करके पारणे एकासणा न वनेतो वियासणा करणा. एसी चार उंली करते पजुपणकी पंचमीके दिन पारणा आवे तेसें तप करणा. एसे चार वर्ष करनेसे ए तप पुरा होताहे. उद्यापनमे यथा शक्ति ज्ञान गुरु संघन्नक्ति करे.

॥ मोक्ष दंडक तप ॥ गुरुके हाथमे रखनेका दंडक अपने हाथमें लेके अपनी मुठीसे नरना जितनी मुठी होय उत्तना एकांतर उपवास करना. अथवा दूसरी विधि यह है की एकासणा वार, नीवी नव, आयंबिल पांच, उपवास एक, एवं सत्तावीस दीन तप करना. सिद्ध पद गुणना. उद्यापनमें बेल्ले उपवासके दिन एक थालमे चावल नर श्रीफल रोकरु डव्य रखके वाजित्र सहित गीतगाते गुरुके पास जाके दंडकी पूजा करके थाल नेट करना. वस्त्रादिक वेराना. ज्ञानकी संघकी नक्ति करनी.

॥ दवयंती तप ॥ एकेक जिन आश्रयी वीस आयंबिल करना. एसी चोवीस उंली करना. यह वमा तप होनेसें एक पच्चीसमी उंली शासन देवीके नामकी करनी ओर गुणणा अनुक्रमसे जिस जिस जिनकी उंली होय तिस्का नाम गुणणा ओर शासना देवीकी उंलीमे शासना देवीका नाम गुणणा. इस्में पांचसें आयविल ओर चोवीस पारणा होतेहे. उद्यापनमें चोवीश जिनकी पूजापढानी. चोवीश तिलकचढाने. पांचसे मोदक चढाने. ओर यथाशक्ती ज्ञान गुरु साधर्मिकनक्ति अवश्यकरना.

॥ ऊणोदरी तप ॥ पुरुषको वत्तीस ओर स्त्रीको अठावीस कवलका आहार होताहे तिस्मेसें यथा शक्ती न्यून करना उस्कों लोक प्रवाहमें उनोदरी

तप कहते है. प्रथमदिन आठ दूसरे दिन बारे तीसरे दिन शोले, चोथे दिन चोवीस, पांचमे दिन एकत्रीस, कवलका आहार करणा और एकासणा का पचखान करना. सिद्ध पद गुणणा. सब मिलके पुरुषको ८१ स्त्रीको ७७ कवल आहार पांच दिनमें लेणा. उद्यापनमे कवलकी संख्या प्रमाण मोदक चढाना. ज्ञान गुरु संघभक्ति करना.

॥ निर्वाण तप ॥ आदि नाथजीके निर्वाणके ७ उपवास करना. वीर प्रभुके निर्वाण पर उपवास दो करने. शेष तीर्थं करके निर्वाणके एकांतर उपवास तीस तीस करने. जिन जिन तीर्थं करके निर्वाणका तप, चलता होय तब उन उन तीर्थं करके नाम की नोकार वाली गुणनी. उद्यापनमे चोवीस तीलक, चोवी पकान, चोवीस फल, चोवीस संख्यामे सर्व वस्तुयें ढोकनी. ज्ञान गुरु श्री संघकी भक्ति करनी.

॥ केवल ज्ञान तप ॥ श्रीआदिनाथजी, मल्लीनाथजी, पार्श्वनाथजी, नेमनाथजी ए चार तीर्थंकरोके केवलज्ञान कल्याणक के तीन तीन उपवास करने. वासुपूज्यज्यस्वामीका एक उपवास और सब उन्नीस तीर्थंकरोंके दोदो उपवास करने. सबमील ५१ उपवास करने उद्यापनमें ५२ मोदक फल, फूल, नैवेद्य, ढोकना गुरुभक्ति करना

॥ जिन दीक्षा तप ॥ वीस तिर्थकरोने दीक्षा समय छठ कीये तिस्के वेले करने. वासुपूज्यका एक उपवास. मल्लीनाथ पार्श्वनाथजीके तीन तिन उपवास करना. सुमतिनाथ स्वामीके नामका एकाशना करना. सबमिल ४७ उपवास एक एकाशणा होताहै. उद्यापनमे ४८ मोदकादिक चढावने अष्ट प्रकारी पूजा ज्ञान गुरु भक्तिकरना.

॥ जिन चवन जन्म कल्याणकतप ॥ एके के जिनके चवन कल्याणक के उपवास करणा. जिनजिन तीर्थरका तप होय तिसदिन तिनके नामकी नवकारवाली गुणे. उद्यापनमें चोवीस चोवीस चीजे चढावे ज्ञानगुरु भक्ति करें.

॥ गौतमपडघातप ॥ पंदरे पूर्णिमां पर्यत एकाशनादितप करना. गौतमस्वामिकी प्रतिमाके पास खीरका पात्र भरके ढोकना अष्टप्रकारी पूजा करनी. गौतमस्वामीकी प्रतिमाके अभावे महावीर स्वामीकी पूजाकरनी. उद्यापनमें चांदीका पडघा ( पात्रं ) खीरभर के गौतमस्वामी अथवा महावीरस्वामिके पास ढोकनां गुरुजीको झोली पात्रे प्रमुख देनां.

॥ लघुपंचमी तप ॥ सुदी और वदीकी पंचमीका उपवास करना नमोनाणस्स गुणणा. एक वर्षके चोवीस और एक उपर उपवास करके २५ उपवाससे यह तप पूराकरना. यथाशक्ति उद्यापन करना।

यह तप पौष अथवा चैत मासमे सरु नहि करना.

पंचमी तप ॥ पांच वर्ष और पांच मास तक सुदि पांचमीका चोवी हार उपवासकरना. नमोनाणस्स पद गुणना. यथाशक्ति उद्यापन करना. यहतप कार्त्तिक मिगसर, माघ, फागुन, वैशाख, जेष्ट, आषाढ, ए सात मासमेंसे हरेक माससें सिरु कीया जाता हे । अखंड करना उद्यापन करना

॥ पुंन्मरीक तप ॥ चैत्री पुनमके दिन उपवास करके पुन्मरीक गण धरके नामकी नवकार वाली गुणे और पुजा करें एसे सात वर्ष करे. उद्यापनमे अगणित श्रावकोंको जिमावे अथवा प्रज्ञावना करे अगणित ड्रव्यसे ज्ञान ज्नक्ति करे अगणित अन्न पान मुनिको वेरावे । जो चिज दीजावे सो गिणनानहि योंहि पसली ज्नरके वेरावे । और प्रज्ञावनाज्नि पसली ज्नरके देवेपरंगिनेनही

॥ गुणरत्न संवत्सर तप ॥ यह तप के सेवन करने वालोंको दिवसमें उकडु आसनमे रहना और रात्रिकों वीरासनसें रहना चहिये (वस्त्र रहित रहना. ) यह तपशोलेमासतक करना. तिस्मे प्रथम मासमे एकांतर उपवास करनां डुसरे मासमें दो दो उपवास पारणा करनां. तीसरे मासें तीन तीन उपवास पारणा करना. चोथा मासें चार चार उपवास उपर पारणा करना. एसें एकेक मासें एकेक

## तृतीय परिछेद प्रारंभः।

अथ श्रावकोंकी दिन चर्या कहते हैं.

॥ चिदानंद स्वरूप, रूपसे रहित, रक्षक और परम ज्योतिरूप, एसे सिद्ध परमात्माकों मेरा नमस्कार हो. मनः शुद्धिकों धरने वाले योगीश्वरों, ध्यान रूपी दृष्टि करके जिस्का स्वरूपकों देखतेहैं; एसे परमेश्वरकी में स्तवना करताहुं. प्राणिगण सुख समूहकों चाहतेंहैं. और सर्व सुख समूह मोक्षमेंहै. वो मोक्षपदकी प्राप्ति ध्यानसें होतीहै. और ध्यान मनकी शुद्धीसें होताहै मनोशुद्धी कषायोके जयसें होतीहै कषायोंका जय इंद्रियोंके विजयसें होताहै. इंद्रियोंका विजय सदाचारसें होताहै. गुणोंका निबंधन करानेवाला सदाचार सदुपदेशसें प्राप्त होताहै. सदुपदेशोंसें समृद्धिकी प्राप्ति होतीहै समृद्धि प्राप्त होनेंसे सर्वत्र गुण प्राप्त होनेका उदय होताहै. सद्गुणोके उदयकी प्राप्तिके लिए आचारोंपदेश नामक ग्रंथकी रचना करी जातिहै. सदाचारके विचारोका निरूपण करनेमें रुचिकारक, विचक्षण पुरुषोको मनन करने योग्य, देवानु प्रियोंकों अत्यानंदकारी, यह ग्रथ; पुण्यवंत प्राणियोको, विशेष श्रवण करने लायकहै.

अनंत पुद्गल परावर्तों करके पुनः दुष्प्राप्य यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके विवेकी प्राणिकों धर्म

उपर अवश्य आदरवंत होना चहिये. क्योंकी सुन-नेसे, देखनेसें, करनेसें, दूसरोंसें करानेसें, अनुमोदनेसें यह धर्म सातों कुलकों निश्चय पवित्र करताहे. धर्म, अर्थ, काम, यह तीन वर्गके साधन विना यह मनुष्य जन्म पशुवत् निष्फलहे. तीन वर्गके साधन-मेंजी धर्म वर्गको अधिक साधन करना क्योंकी धर्म-वर्ग विना अर्थ और काम न प्राप्त होशक्तेंहे मनुष्य-जव, आर्यदेश, उत्तमजाति, सर्व इंद्रियोंकी सुदृढता, परिपूर्ण दीर्घायुष, इतनी चिजें विना पुण्य प्राप्त न होशक्तीहे. कदापि पुण्ययोगसें उपरोक्त मील शक्तेहें. तथापि वीतरागके वचन पर श्रद्धा होनी दुर्लजहे कदापि श्रद्धा होतीहे तथापि सुगुरुका योग सुपुण्य विना मिल शक्ता नहीहे.

न्यायसें राजा, सुगंधसे पुष्प, उत्तम पदार्थसें, जोजन ज्यों शोजनीक होताहे त्यों उपरोक्त वस्तु जी सदाचारसेंहि शोजनीक होतीहे सदाचार तत्पर पुरुष शास्त्रोक्त विधिसें परस्पर अविरोध करके तीनों वर्गका खुसीसें साधन कर शक्ताहे.

पंमित पुरुष रात्रिके चतुर्थ प्रहरसें वा पीठली दो घमी रात्रिसें उठे. निद्राकों त्याग कर पंच-परमेष्टी मंत्र पढे. दक्षिण अथवा वाम दोनोमेंसें जो नाशिका वहती होय उस तरफका पग शय्यासें उठती वख्त प्रथम धरती पर धरे. शय्याकों और शयनके वस्त्रोंका त्याग करके दूसरे शुद्ध वस्त

पहिन सुस्थान पर बेठके पंचपरमेंष्टीका ध्यान करे. पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख बेठके शरीर और स्थानकी शुद्धि करके मन समाधिसे जाप करे.

पवित्र हो किंवा अपवित्र हो. सुस्थित हो वा दुःस्थित हो परं पंचपरमेष्टी नवकारमंत्रके जपनेसें प्राणि सर्व पापसें रहित होता हे. अंगुलीके अग्र भागसें, मेरुकों उल्लंघन करके, संख्यारहित, जो जाप करे सो प्रायः अल्प फल कारक होताहे.

उत्कृष्ट, मध्यम, अधम ए तीन प्रकारके जाप कहे जातेंहे. उसमें कमलादिक विधिसे जाप किया जायसो उत्कृष्टहे. जपमालासे जाप किया जाय सो मध्यमहे. विना मौन, विना संख्या, विना चित्त स्थिर रख्खे, विना अचल आसन, विना ध्यान जो जाप किया जाय सो अधम जाप कहा जाताहे. पीछे गुरुके पास जाके अथवा अपने घरमें अपने पापकी शुद्धीके वास्ते आवश्यक ( प्रतिक्रमण ) करे.

रात्रिके पापकी शुद्धीके वास्ते राई, दिनके पापकी शुद्धीके वास्ते देवसिक, पनरे दिनकी शुद्धीके वास्ते पाक्षीक, चारमासके पाप. शुद्धीके वास्ते चोमासी, बारमासके पापकी शुद्धीके वास्ते सांवत्सरीक; एसें पांच प्रतिक्रमण कहेहे. प्रतिक्रमण करके, कुल क्रमकों याद करके, हर्षित चित होके मंगल स्तुतिका पाठको याद करे.

## मंगलाष्टक.

मंगलं नगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रनुः ॥
मंगलं थूलिनद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ १ ॥
नानेयाद्याः जिनाः सर्वे, नरताद्या श्च चक्रिणः ॥
कुर्वंतु मंगलं सर्वे, विष्णवः प्रति विष्णवः ॥ २ ॥
नानि सिद्धार्थ नूपाद्या, जिनानां पितरः स मे ॥
पालिताखंरु साम्रज्या, जनयंतु जयं मम ॥ ३ ॥
मरुदेवी त्रिशलाद्या, विख्याता जिन मातरः ।
त्रिजगज्जनितानंदा, मङ्गलाय नवंतु मे ॥ ४ ॥
श्रीपुंरुरीकेंद्रनूति, प्रमुखा गण धारिणः ।
श्रुत केवलिनो पीछ, मंगलानि दिशंतु मे ॥ ५ ॥
ब्राह्मी चंदन बालाद्या, महासत्यो महत्तरा ।
अखंरु शील लीलाद्या, यछंतु मम मंगलं ॥ ६ ॥
चक्रेश्वरी सिद्धायिका, मुख्य शासन देवताः ।
सम्यग्दृशां विघ्नहरा, रचयंतु जयश्रियं ॥ ७ ॥
कपर्दी मातंग मुख्या, यक्षा विख्यात विक्रमाः ।
जैन विघ्नहरा नित्यं, दिशंतु मंगलानि मे ॥ ८ ॥
यो मंगलाष्टक मिदं पटुधी रधीते,
प्रातर्नरः सुकृत नावित चित्त वृत्तिः ॥
सौनाग्य नाग्य कलिता धुत सर्वविघ्नो,
नित्यं स मंगल मलं लनते जगत्याम् ॥ ए ॥

पीछें मंदिरजीमे जाके निःसही कहके सर्व आशातनाका त्याग करके तीन प्रदक्षिणा देवे. विलाश,

हास्य, थुंक (बलगम) का गिराना, निद्रा, कलह, विकथा, चार प्रकारका आहार, जिनमंदिरमे नहि करना. "हे जगन्नाथ तुमकों नमस्कार हो" इत्यादि स्तुतिका पाठ बोलके फल, अक्षत, सुपारी, जिन. राजके सन्मुख रक्खे. राजा, देव, गुरु, निमित्त शास्त्र वेत्ता इनके पास खाली हाथसें नहि जाना क्योंकी फलसें फल मीलताहे. जगवंतके दक्षिण जागमे पुरुष, दहिने जागमे स्त्री नव अथवा साठ हाथ दूर रहकर वंदना करे. पीछे उत्तरासण लगाके, योगमुद्रासें बेठके, मधुर ध्वनीसे चैत्य वंदन करे. पेटके उपर दो हाथकी कोणी रखकर, कमल डोडाके आकार दोहाथकी दश अंगुलीयों संयोजित करे उनको योगमुद्रा कहतेहे. पीछे अपने घर जाके प्रातः क्रिया करे ( जोजन, वस्त्र, घरके परिवारकी यथायोग्य व्यवस्था करे. ) बांधव, नोकरों प्रमुखोंकों अपने अपने कार्योंमें नियोजित करके बुद्धिके आठ गुण धारक पौषध शालामें जावें. शुश्रुषा ( गुरुकी सेवा ) श्रवण ( उपदेशका सुनना) ग्रहण ( स्वीकार करना ) धारणा ( याद रखना ) उहा ( तर्क करना ) अपोह ( शमाधान करना ) अर्थ (अजिप्राय समजना) तत्वज्ञान (तत्वसमजना) यह बुद्धीके आठ गुण हे धर्मका जाणकार होना, दुर्बुद्धिका त्याग करना, ज्ञानको प्राप्त होना और

वैराग आना ए सब सुननेसे प्राप्त होतेंहे आचार्य और साधुओंकों पंचांग नमस्कार करके आशातना त्याग करके गुरुके सन्मुख बेठना. दों ढीचण, और दो हाथ लगाया हुवा मस्तक, धरतीपर टिकायके नमस्कार करनेकों पंचांग नमस्कार कहतेंहें.

पलांठी बांधके, लंबे पग पसारके, पग उपर पग चढाके, दो कांख दिखाते, अगाम्डी, पीछाडी, बरोबर दोनुं तर्फ, गुरुके पास बेठना नहीं. अपनेंसे पूर्व आए हुवेकी वातें पूर्ण हुवे विना गुरुको बुलाना नही. आशयका समजदार गुरुके मुख सामने दृष्टि रखकर चित्तकी एकाग्रतासें धर्म शास्त्र सुने. वाख्यान पूर्ण हुवे पीछे अपनी शंकाका समाधान करे ( पुछे ) और देव गुरुके गुण गाने वाले ( भाट भोजक ) को यथोचित दान देवे. जिस्ने प्रातः प्रतिक्रमण न किया होय सो वांदणा देके गुरुको वांदे। धर्मप्रिय श्रावक नवकारसहीत प्रमुख यथाशक्ती पच्चरकाण करे. दान देनेवालेभी जोव्रत पच्चख्काण न करेतो तिर्यंच योनीमें उत्पन्न होतेहे हाथी घोडा प्रमुखमे उत्पन्न होकेभी बंधनमे पकतेंहे. जो दाताहे सो नरकमें न जाय. जो व्रत पच्चख्काण करता हे सो तिर्यंच न होय जो दयावंत होय सो हीन आयुष्य न होय. सत्यवादी होय सो डुस्वर ( दुष्ट अवाजवाला )

न होय. तपश्चर्या हे सो सर्व इंद्रियों रुप मृगको वश्यकरनेमे जाल ( फांसा ) समान हे और कषाय रुप तापको मिटानेके लिऐ द्राक्षासमान ह फिर कर्म रूप अजीर्णकों मिटानेके लिए जातिवंत उत्तम हरडे समान हे. जो दूरहे, दुराराध्य ( दुःखसें मिलने लायक ) हे, देवताओंकोंभी जो दुर्लभहे, सो सव तपसें मिल शक्ताहे. क्यो कि तपकों कोई उल्लंघन करने समर्थ नही. पीछे. बजारमें जाके अपने अपने कुलके उचित द्रव्यो पार्जनका उद्यम करे. मित्रोंके उपकारके वास्ते, बांधवोके उदयके वास्ते, न्यायवंत न्याय लक्ष्मीका उपार्जन करे. क्योंकी केवल अपना पेट कोन नही भर शक्ता हे?

नीच जनोचित व्यापार करना नही और दूसरोंसें भी कराना नही. क्योंकि संपदा पुण्यकर्मसे बढतीहे परं पापसे बढती नहि. कदापि पाप व्यापारसे लक्ष्मी बढे परं उसका परिणाम अछा नहीहे. जिस व्यापारमे बहुत आरंभहोय, महापापहोय, लोकमे निंद्याहोवे एसा होय, इह लोक परलोकसे विरुद्ध होय एसे व्यापार ( काम ) नही करने. लोहार, चमार, मदिराकार, तेली, प्रमुख नीच जनो से अधिक लाभ होय तोभी व्यवहार नही रखना.

एवं चरन् प्रथम याम विधि समग्रं ।
श्राद्धो विशुद्ध विनयो नय राजमानः ॥

विज्ञान मान जन रंजन सावधानो ।
जन्म द्वयं विरचये त्सकलं स्वकीयम् ॥ १ ॥

इति दिनचर्यायां प्रथम वर्गः समाप्तः ॥

॥ अथद्वितीय वर्गः । प्रारभ्यते ॥

दूसरा प्रहरदिन चढते अपने घर आयके विचक्षण जन जहां जीवाकुल भूमी नहोय एसे स्थान पर पूर्वदिशा सन्मुख बेठके स्नान करे स्नान करनेके लिए चार पगवाला, जिस्मे नल लगाया होय एसा, एक बाजोट ( पट्टा ) बनावे जिस्का पाणी दुसरे वासणमे लेके निर्जीव स्थानमे डाला जाता होय तो जीवकी ठीक यत्ना होशकतीहे. रजस्वला अथवा नीच जातिका स्पर्श हुवा होय, अथवा सूतक आया होय, घरमे कोइका मरण हुवा होय तो मस्तकसे सर्वांग स्नान करना उपरोक्त कारण सीवाय देव पूजाके वास्ते बुद्धिवंत मस्तक वर्जित उष्ण जलसें स्नान करे योगी पुरुष कहतेंहें की चंद्र, सूर्यके किरणोके स्पर्शसे समग्र जगत शुद्ध होजाताहे तों मस्तकभी उनके किरणोसें स्पर्शित होनेसें सदा पवित्र गिना जाताहे

हर रोज शिर भीजोनेसें जीवघात होताहे. इसलिए नहीं भिजोना. दया एहि हे सार जिस्मे एसे

सदाचार हैं सो सब धर्मके हेतुहे. अर्थात् कृपा धर्मका परिपालनके लिए सदाचार पालाजाताहे. निर्मल तेजका धारण करने वाला आत्मा सदा मस्तकमे रहताहे इस लिए और सदा वस्त्रसें वेष्टित रहनेसे मस्तक कभी अपवित्र होता नही. अज्ञ जन स्नानके लिए जास्ति पाणी ढोलतेहे और उससे बहुत जीवकी विराधना करतेंहें; एसा स्नान करके शरीरकों पवित्र और आत्माकों मलीन करतेंहें. स्नान करनेंमें भीजोया वस्त्र दूरकरके दूसरा वस्त्र पहिनके जहां तक पेर भीने रहे तहां तक अर्हत्का स्मरण करता उहांहि खमा रहे. जो खमा न रहेतो पगमें मेल लगेगा और पग अपवित्र होवेंगें. फिर कितनेक जीवोके घातकाभी संभव होवेगा.इससे पापका भागीभी होवेगा. गृहमंदिर (घरदेरासर) में जाके प्रथमसे प्रमार्जना करके पूजा करने लायक वस्त्र पहिनके अष्टपट मुखकोश बांधे. मन, वचन, काया, वस्त्र, भूमि. पूजाके उपकरण, स्थिति (स्थिरता) यह सात प्रकारकी शुद्धी पूजाके समय करनी. स्त्रीका पहिना हुवा वस्त्र पुरुष पूजा समय नहि पहिरे और पुरुषका पहिना हुवा वस्त्र स्त्री नहि पहिरे क्योंकी उससें कामरागकी वृद्धि होतीहै. उत्तम कलसमे भरा जलसें भगतकों जलका अभिषेक करे और पीछे उत्तम वस्त्रसे अंग लुंछन करके चंदना-

दिकसें पूजा करे. केशर चंदन चढाते नीचे लिखित काव्य उच्चार करके चढावे

सच्चंदनेन घनसार विमिश्रितेन,
कस्तूरिका द्र्व युतेन मनोहरेण ।
रागादि दोष रहितं महितं सुरेंद्रे,
श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पति मर्चयामि ॥

पुष्प चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

जाति जपा बकुल चंपक पाटलाद्यै,
मंदार कुंद शत पत्र वरारविंदैः ।
संसार नाश करणं करुणा प्रधानं,
पुष्पैः परैरपि जिनेंद्र महं यजामि ॥

धूप करने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

कृष्णागुरु प्रचुरिता सितया समेतं,
कर्पूर पूरमहितं विहितं सुयत्नात् ।
धूपं जिनेंद्र पुरतो गुरुतोष पोषं,
नक्त्योत्क्षिपामि निज दुष्कृत नाशनाय ॥

अक्षत चढानेके समय नीचे लिखित श्लोक बोले.

ज्ञानंच दर्शन मथो चरणं विचिंत्य,
पुंज त्रयंच पुरतः प्रविधाय नक्त्या ।
चोक्षाक्षतैः कणगणैः रपरै रपीह,
श्रीमंतमादि पुरुषं जिन मर्चयामि ॥

फल चढाने समय नीचे लिखित काव्य बोले.

सन्नालिकेर पनसामल बीजपूर,

जंबीर पूग सहकार मुखैः फलैस्तैः ।
स्वर्गाद्यनल्प फलदं प्रमदा प्रमोदं,
देवाधिदेव मधुना प्रशमं महामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके नैवेद्य चढावे.

सन्मोदकै र्वैटक मंम्रक शालि दालि,
मुख्यै रसंख्यरस शालिभि रन्नभोज्यैः ।
क्षुत्त्रट्व्यथाविरहितं स्वहिताय नित्यं,
तीर्थाधिराज महमादरतो यजामि ॥

नीचे लिखा काव्य बोलके दीपक चढावे.

विध्वस्त पाप पटलस्य सदोदितस्य,
विश्वावलोकन कला कलितस्य भक्त्या ।
उद्योतयामि पुरतो जिननायकस्य,
दीपंतमः प्रशमनाय शमांबुराशेः ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके जल चढावे.

तीर्थोदकै र्धुतमलै रमलस्वभावं,
शश्वन्नदी ह्रदसरोवर सागरोद्भैः ।
दुर्वार मार मद मोह महाहितार्घ्यं,
संसार ताप शमनं जिनमर्चयामि ॥

नीचे लिखित काव्य बोलके हाथ जोड नमस्कार करे.

पूजाष्टक स्तुति मिमा मसमा मधीत्य,
योनेन चारु विधिना वितनोति पूजां ।
भुक्त्वा नरामरसुखान्यविखंडितानि,
धन्यः सुवास मचिराल्लभते शिवेपि ॥

नया मंदिर बनाना चाहे तो अपने घरमें प्रवेश करते मायें हाथपर जमीनसे देढ हाथ उंचे शल्य रहित पवित्र स्थानपर मंदिर बनावे. पूजा करनेवाला पूर्व अथवा उत्तर दिशाके सन्मुख बेठे परं विदिशामें न बेठे और दक्षिण दिशातो सर्व कार्यमें वर्जितहे

पूर्व दिशा सामने बेठके पुजा करनेसें लक्ष्मीका लाभ होय. अग्नि दिशामे बेठेतो संताप उपजावे दक्षिण दिशामे मृत्यु कारक नैरुतमें बेठेतो उपद्रव करे. पश्चिम और वायव्य दिशामें बेठेतो संतानकी हानी करे. दो पांव, दो ढीचण, दोहाथ, दो स्कंध ( खभा ) एक मस्तक यह नव स्थान पर अनुक्रमसें भगवंतकी प्रथम पूजा करे उत्तम चंदन और केशर विना पूजा न करनी ललाट, मस्तक कंठ, हृदय, पेट, इतने स्थानपर अपने तिलक करना.

प्रभातें शुध्ध वाससें,मध्यान्हें पुष्पादिकसे संध्या समय धूप दीपसें भगवंतकी पूजा करनी एक पुष्पके दो विभाग नहि करना कलिको छेदनानहि पत्र,पांखमि, कलिकों छेदन करनेसें हिंसा जेसा पाप लगताहे हस्तसें गिरा,पेरकोलगा, जमीन पर पमा, शीर पर धरा एसे पुष्पोंसें कहि पूजा न करनी. गंध रहित, तीव्र सुगंध वाला, नीच जातिजन फर्शित, कीटक दंशित, मलीन वस्त्रसे वेष्टित, एसे पुष्पसें पूजा कर-

नी नही. नगवंतके वामांगमें धूप रखना. जल पात्र सन्मुख रखना. पान अथवा फल हस्तमे रखना. उपरोक्त अष्ट प्रकारी पूजा हररोज करनी और नीचे लिखि एक वीस प्रकारी कोइ पर्व तिथीमे अथवा तीर्थ स्थानोंपर अवश्य करनी

एकीस प्रकारी पूजाके नाम.

स्नात्र, चंदन, दीप, धूप, पुष्प, नैवेद्य, जल, ध्वजा, वासक्षेप, अक्षत, सुपारी, तांबुल, नंमारशुध्धि, फल, वाजित्र, गीत, नाटक, स्तुति, छत्र, चामर, आनूषण.

विशेष लानार्थी श्रावक शुध्ध वस्त्रसे सुशोनित होके अशुचि मार्गको ठोडके अच्छे मार्गसे ग्रामचैत्य ( पंचायतीमंदिर ) दर्शनके लिए जाय.

पूजाका फल विषे

मंदिरमे दर्शनके लिए जाउंगा एसा विचार करनेसें एक उपवासका, जानेंकों उठेंतो दो उपवासका, मंदिरके मार्गमे चलेतो तीन उपवासका, मंदिरको देखनेसे चार उपवासका, मंदिरके दरवजेपर आनेसे ठउपवासका, मंदिरके अंदर जाके दर्शन करनेसे पंदरे उपवासका, जिन पूजा करनेसें एक मासके उपवासका फल मीले तीन वार "निःसीही" शब्दकों उच्चारके मंदिरमें प्रवेश करना. मंदिरकी प्रथम सारसंनाल (देखरेख )करके पीठे पूजा करना.

मूलनायककी प्रथम पूजा करके पीछे अंदर वाहार सव जिनविंवकी पूजा करना. अवग्रहसें वाहिर नीकलके पीछें नक्ति सहित वंदना करे. फिर साम- ने वेठके चैत्य वंदना करे. एक नमुथ्थुणंका पाठसें जघन्य, दो नमुथ्थुणंसे मध्यम, पांच नमुथ्थुणंसे उत्तम चैत्य वंदना जाणनी. फिरन्नी डुसरी प्रकार- सेंन्नी तीन प्रकारकी चैत्य वंदना होतीहे. स्तुति पाठ वोलते योग मुद्रा, वंदना करते जिनमुद्रा, प्रणिधानके समय मुक्ताशुक्ति मुद्रा, करनी. (नमु- थ्थुणंका पाठ उच्चरते योग मुद्रा, जावंति चेइयाइं यहपाठ वखत जिनमुद्रा, जयवियराय उच्चरते मु- क्ताशुक्ति मुद्रा करी जातीहे ) ( यह परंपरागत आम्नायहे ) पेटके उपर दो हाथकी कुणी स्थापन करके, कमल डोडाके अकार दोहाथकों एकिठे सं योजित करके परस्पर अंगुलियोकों योजित करने कों "योग मुद्रा" कहते हे. ( यह चैत्यवंदन करने के वख्त होती हे ) चार आंगुली आगे, ओर तीन आंगुली पीछे, पिछुडि (पोहोली) रखे, फिर दोहाथ अपने घुटणके पास टटार रखके, नीची द्दष्टीसे खडा रहनेको "जिनमुद्रा" कहतें हें. ( यह कायोत्सर्ग समय होतीहे ) दो घोटणके विचमें रहे हुवे, मो ति पकनेकी दो ठीपके समान दोनुं हाथ परस्पर जुडे हुवे होय, एसे आकारवाले दो हाथोंकों अप

नी ललाट ( कपाल ) पर लगाना उस्कों "मुक्ता शुक्ती" मुद्रा कहतें हे ( यह मुद्रा जय वीयराय कहती वख्त करी जाती हे )

जगवंतकों नमस्कार करके मंदिजीसे वहार निकल ती वख्त "आवस्सही" एशा उच्चार करके निकले. फिर घर जायके अपने जाइ मित्रोको साथ लेके जक्ष्य अजक्ष्यका (विचारवाला) जोजन करे. (२१

पग धोया सिवाय, क्रोधांध होके, डुर्वचन वोल ता दक्षीण दिशाके सन्मुख वेठके जोजन करेसो राक्षस जोजन कहा जाताहे.

पवित्र वस्त्र और शरीरसें अछे स्थानपर वेठके स्थिरतासें देव गुरुको याद करके, जोजन किया जाय सो मानुष्य जोजन गिना जाताहे. स्नानादिकसें शरीर शुद्ध करके, जिनपूजाकरके पूज्य जनो ( माता पिता) कों प्रसन्न करके, मुनिजनोकों और सत्पात्रों कों दानादिक देके पीछे जोजन किया जाय. सो उत्तम जोजन गिना जाताहे.

जोजन, मैथुन, वमन( कय उलटी) दातण, लघु नीति, वडीनीति ( काडा पेसाब ) करनेके समय बुद्धिमानोंको मौन रहना चहिये. क्यों की ज्ञान आशातना होतीहे. अग्नि कोंन, नैरुत कोन,और दक्षिण दिशि यह तीन दिशा जोजनके वास्ते वर्जित हे सूर्यके उदय और अस्त समय, चंद्रसूर्यके ग्रहण

मय अपने विरादरोंका शव ( मुरदा ) पडा होय,, तहां तक, जोजन नही करना.

संपदा ठते जोजन में लोज रखे सो वमा मूर्ख हें. मानों वो पुरुष अन्य जनोके लिए धन कमाताहे

अशुद्ध और अज्ञात जाजनमें, जाति वाहिरके घरका वा उनके हाथका, अज्ञात और निषिद्ध अन्न पान फलादिक खाना नही

वाल, स्त्री, गर्जपात, गो, ए चार हत्याके करने वालेकी, आचार ज्रष्टो की, कुलमर्यादाका उलंघन करनेवालोकी पंक्ति मे वेठ के जाणकार होके जोजन करना नही.

मदिरा, मांस, सेहेत, म्रक्षण ( लुंणी मसका ) वड पीपल उवर वृक्षादि पांच जाति के फल, अनंतकाय, अज्ञात फल, फूल, साक, पत्र, रात्रि जोजन, कच्चे गोरससें मीला हुवा विदल, फूग लगाहुवा अन्न, दोदिन उपरांत का दहि, विगमा हुवा अन्न, जिस्में जीव पडे होय एसे फल, पत्र, पुष्प, औरजी जिस्मे जीव उत्पन्न होनेका संजव होय एसे अचारादिक सव अजक्ष्यों कों धर्मवंत प्राणी वर्जित करे. जोजन ठर वडीनीतिमे विशेष देरलगाना नहि. पाणी पीनेमें और स्नान करनेमें उतावल करना नहि.

पानी पीना जोजनकी आदिमे विष समान अंतमें शिल्लासमान और मध्यमे अमृत समान जाणना

अजीर्ण हुवा होय तहां तक जोजन नही करना. पूर्ण क्षुधाकालमे अपने कों रूचे सो जोजन करना जोजन किये पीछे मुख शुद्धि जल सुपारी तांबूलादिकसे करनी.

विवेकी जन रस्तेमें चलते तांबूल न खाय. सुपारी प्रमुख अक्षत फल दांतोंसें जांगना नही. क्यों की उससें जीव घात होता हे.

जोजन कीये पीछे उष्णकाल सिवाय सोना नही क्यों की सोनेसे शरीरमें व्याधिका संजव होता हे. इति दिनचर्यायां द्वितीयः वर्गः समाप्तः

॥ अथ तृतीय वर्ग प्रारंजः ॥

जोजन किये पीछे अपने घरकी शोजा देखता, विचक्षणोंसें वार्त्तालाप करता, पुत्रादिकोंकों शिखावन देता थका सुखसें दो घडी वार विवेकी जन अपने घरमें ठहरे.

गुणकी प्राप्तिकरनी यह अपने स्वाधीन हे. धनादिकका सुख दैवाधीन हे. एसे तत्ववेत्तोओंको कजी गुणकी हानी नहि होती हे.

कुल हीन पुरुषजी अपने गुणसें उच्च दशाको प्राप्त कर शक्ताहे देखिये किचकसें उत्पन्न होने वाला पंकज (कमल) कों सव अपने शिरपर धारण करतेंहे और पंक (कादा किचम) पेरसें घिसा जाता हे

गुण उत्पन्न होनेके लिए कोइ कुल वा खांण नही हे परं उत्तम प्राणि अपने गुण करके प्रख्यात और उच्चदशा प्राप्त होता हे. जेसें सत्वादि गुण युक्त प्राणी राज्य योग्य हो जातेंहें तेसें एक विंशति गुण युक्त होनेंसें प्राणिगण धर्म योग्यहो शक्ते हे.

(१) जिस्का हृदय क्षुद्र (तुछ) नहो, (२) सौम्य होय, (३) रूपवंत हो (४) जन वल्लभ हो (५) क्रुर न हो, (६) भवभीरु (संसारसे जन्म जरामरणादिकसे डरताहो)(७) मूर्ख न हो (८) दाक्षिणतावाला हो (९) लज्जावंत हो (१०) दया सहित हो (११) मध्यस्थ हो (१२) सौम्यदृष्टि हो (१३) गुणरागी हो (१४) सद्धक्ता हो (१५) सुपरिवारयुक्त हो (१६) दीर्घदृष्टी हो (१७) कुल परंपराकों माननेवाला हो (१८) विनीत हों. (१९) गुणको भूलनेवाला न हो- (२०) परहित हितार्थी हो (२१) सव वातोका समजदार हो यह इक्किस गुण युक्त प्राणी धर्म रत्नके योग्य हो शक्ताहे.

पंडित पुरुषोने वहुत करके राज कथा, देशकथा, स्त्री कथा, भक्त कथा नही करनी क्यों की एसी विकथा करनेसें कुछ लाभ तो होता नही परं अनर्थका तो वरोवर सभव हे

धर्म कथाभी अपने सुमित्रो और वंधवोसें कर.

नी. धर्मशास्त्रके रहस्य के जाणकारोंके साथ धर्म (तात्वीक) विचार जरूर करना चाहये.

जिससें पाप (अधर्म) बुद्धिकी वृद्धि होय एसें लोगोंमें मित्रता और सहवासभी नहि रखना. को इका कोप, वचन सहन करना परं अपने न्याय. को न छोरुना.

अवर्णवाद तो कोइकाभी विचक्षणने बोलना नही. और पिता गुरु, स्वामी, राजादिकका तो अ-वर्णवाद जरूर बोलनाहि नही.

मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीनजातिवाला, धर्म-निंदक, कुशीलिया, लोभि, चोर, इतनेकी संगती कभी नहि करनी.

"अज्ञात जनकी प्रसंशा करनी,अज्ञातको अपने घरमें स्थान (उतारा) देना, अज्ञात कुलसे सादी करना, अज्ञातकों नोकर रखना, अपनेंसे बडे लो-गोंसें कोप वा विरोध करना, गुणिजनसें तकरार क रनी, अपनेसे अधिक दरज्जेवालेंकों नोंकर रखना, करजा करके धर्ममे धन लगाना, अपनी दुःखी अ वस्थामेंभी अपना धन पराये हाथमें होयसों नही याचना, अपने बिरादरोमें विरोध करना, स्वजनों को छोडकर अन्यजनोंसें मैत्री करना, शक्ति छते ध र्ममे उद्यम नही करना, नोकरोका दंड करके उस धनसे अपनें मजा उडानी, दुःखी अवस्थामें अप-

ने बांधवोंका साहाय याचना, अपने मुखसें अपने गुणका वर्णन करना, अपने बोलते बोलते हंसना, जिस तिसका खाना," यह सब कार्य लोक विरूद्धहे और मुर्खताके चिन्हहें सो त्याग करना. न्यायसे धन उपार्जन करना. अपनी रीत रीवाजोंमें देश, कालके विरुद्धका त्याग करना राज विरोधियोका संग और महाजनसे विरोध न करना.कुल,शील,आचारमे अपने समान जनसे और भिन्न गोत्रवालेसें व्यावसादी करना. अपनी जातिवालोंके पडोसमें अपना निवास रखना. जहां उपद्रव होवे एसें स्थानका त्याग करना. अपनी पेदासीके प्रमाणमे खर्चरखना लोकमे निंदा न होय एसा अपनी संपदानुसार वेष रखना अपने देशका आचारको और अपने धर्मको न छोरूना.

जो अपना आश्रय चाहे उनकें हितमें रहना. अपना बलाबलका विचार रखना. अपने हित अहितका विशेष विचार रखके कार्यमे प्रवर्त्तना. अपनी इंद्रियोंकों वश्य रखना देव व गुरुमें बडा भक्तिभाव रखना. स्वजन, दीन हीन दुःखी, अतिथी की यथायोग्य आगता स्वागता करनी यह विचार चातुर्यताकों अपनें चित्तमें रखना. विचक्षणोसें शास्त्रसुनता, वा सीखता थका विचक्षण कितनाक समयको व्यतीत करे. नसीब पर विश्वास रखकर निरू

द्यम बेठा न रहे परं धन उपार्जनका उपाय करे क्यो की उद्यम विना नसीब कभी फल देता नही है. कूमा तोल, कूडा माप, कूमालेख प्रमुख अनर्थ कार्योंको त्याग करके शुद्ध व्यवहारसे व्यापारमे सदा प्रवर्त्ते. अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, नाटक कर्म, स्फोटककर्म, दंतवाणिज्य, लाक्षावाणिज्य, रस वाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, यंत्रपीमन, निर्लाछन, ( बेलके कर्ण नाक अंड नख रोम छेदना ) असतीजन पोष ( कुत्ते बिल्ले तोते प्रमुख जानवरोसे आजीविका करनी ) दवदान ( दव लगाना) सर द्रह तलाव शोषण करना. यह पंदरे कर्मादानका व्यापार श्रावक न करे.

लोखंम, महुडाके पुष्प, मदिरा, सेहेत ( मधु ) कंद, मूल, पान, फल, प्रमुख वस्तुका आजीविका निमित्त श्रावक व्यापार न करे.

उष्ण कालमें बहुत जीव विराधना होनेके नय सें विचक्षण श्रावक फाल्गुण माससें उपरांत तिल, गुड, टोपरा, द्राक्षा प्रमुख मेवा प्रमुखका व्यापार न करे.

चातुर्मासमें श्रावक गामीमे घोडे बेलोंको जोमे नही. बहुत आरंन प्रवर्त्तक कृषि कर्म श्रावक करे करावे नही

योग्य मोल मिलता होय तो लेण देण करना. बहु-

त लाभके लिए अधिक लोभ न करना क्यों की अधिक लाभके लोभसें कोइ समय मूल धनकाभी नाश हो जाता हे. विशेष लाभ होता होय तथापि उधार कोइको न देना. दगिने रखे सिवाय धनके लोभसें कोइकों व्याजसे धन न देना.

चौरीका माल निश्चय हुवे पीछे थोडे मोलसे मिलता होय तो भी न लेना. सरस निरस वस्तुका भेल सेल न करना चोर, चंडाल, मलीन परिणाम वाला, धर्मभ्रष्ट, इनोंके साथ इह लोक परलोकके सुख वांछकोंने व्यवहार न करना

विवेकी जन विक्रय समय असत्य न बोले. और लेनेके समय अपने वचनकीकबुलातको लोपनही करे

अदृष्ट वस्तुका सट्टा नहि करना सोना, चांदी हीरा मणि प्रमुख पदार्थोंकी सत्यसत्य परिक्षा कीये विना लेना नही.

राज बल सिवाय अनर्थ और विपत्तीका निवारण होशक्ता नही इस्के लिए राज्यमें मैत्रता, परिचय, रखनी चाहिये परं राज्यमे पराधीन न होना (स्वाधीन रहना योग्य हे.)

तपस्वी, कवि, वैद्य, मर्मका जानकार, रसोइ करनेवाला, मंत्रवादी, अपने पूज्य (माता पिता धर्म गुरु विद्यागुरु) इनपर क्रोध न करना.द्रव्यार्थी पुरु

षकों अतिक्लेश, धर्मका उल्लंघन, नीचकी नोकरी, विश्वास घात, न करना.

लेण देणके कार्यमें अपने वचनका लोप करना नहि क्यों की अपने वचन पालनेवालोकी बमी प्रतिष्ठा होती हे.

विचक्षणोंकों अपना धन मालका नुखसान होते ठते नी अपने वचन पालनेकी बमि जरूरत हे. स्वल्प लाजके वास्ते अपने वचनका लोप करनेवाले वसुराजाके न्याय फुःखी होतें हे.

एसे एसे व्यवहारमे तत्पर पुरुषो तीसरा और चोथा प्रहर दिन बितावे. और संध्या समय व्यालु करनेकों अपनें घरजावे. एकाशनादिक तप जिसनें किया होय उनोने संध्या समय प्रतिक्रमणके वास्ते अपने गुरुके पास जाना.

दिवसके अष्टम नागमे ( चार घमी दिन ठते ) व्यालु करना. सूर्यास्त समय और रात्रिकों विवेकीने नोजन करना नही. आहार, मैथुन, निद्रा, स्वाध्याय ( पठन पाठन ) यह चार कृत्य संध्या समय प्राणिगणको विशेषकरके त्यागने चाहिये.

क्यों की सूर्यास्त समय नोजन करनेसें व्याधि होती हे. मैथुन करे तो फुष्ट गर्न होता हे. निद्रा करे तो नूतादिकोंका उपद्रव होता हे. पठन पाठनसे निर्बुद्धी होता हे.

व्यालु किये पश्चात् अवश्य दिवस छते चोवीहारका पच्चरकाण करना कदापि नही वन शके तो दुविहार तेविहार तो अवश्यमेव करनाहि चाहियें क्यों की रात्रिभोजन त्यागनें से दररोज एकाशन करने जितना लाभ मिल शक्ता हे

जो प्राणी रात्रि भोजनमें दोष जाणके सवेर और सांझकों दो दो घडी आहारको आगेसें त्याग करतेंहे सो प्राणी पुण्यशाली जाणना जो प्राणी यावज्जीव रात्रि भोजनकों त्याग करतेंहे सो अवश्य अपने समग्र आयुष्यका अर्धभाग के उपवासका फलको सहज मात्रमें प्राप्त कर शक्ता हे और वो धन्य वादके योग्य होता हे दिवस, रात्रिकों जो प्राणि मरजीमें आवे तव खाया करे और व्रत पच्चरकाणसे विमुख हे सो प्राणि अवश्य शृंग पुछ विनाका पशु समजनां

रात्रिभोजन करनेवाले पुरुष घूअडे, काक, विल्ल मांजार, गीध, सांवर, सूअर, सर्प, विछु, घीरोली, के अवतार प्राप्त करते हें रात्रिको हवन, श्राद्ध देवपूजा, दान, स्नान, और भोजन तो विशेष कर के नहीज करना एसा अन्य शास्त्रोमेंभि लिखाहे

इति दिनचर्यायां तृतीय वर्ग. समाप्तः ॥

स्वल्प जलसें हाथ पग और मुखको प्रक्षालित करके धन्य धन्य मानता वडे हर्षसे संध्या समय धूप दीपादिकसें पुनः जिनपूजा करे

एक दिन मात्रभी शील पालनेको समर्थ नहो शक्के हे. हे संसार समुद्र. मदिराजेसेमदयुक्त नेत्रोंवाली स्त्रीरूप दुस्तर पहाड विचमें न होते तो तेरा पार कों प्राप्त करना कुछ दूर नथा. मुक्ति पदकों अंतराय करनेवाली स्त्रीये प्राणिगणको अवश्यमेव एक शिल्लारूपहि गिणनी चहिये.असत्य, साहस (उतावल) माया (कपट)मूर्खता,लोभकी अधिकता,अपवित्रता, दया रहितता,इतने दोष स्त्रीयोंमे स्वभावसेंहि होतें हे.

जो स्त्री ( मुक्ति ) रागी उपरभी वैरागी होती हे एसी स्त्रीकों कोन भोगवेगा ? जो पंडित होगा सोहि भोगवेगा. क्यों कि मुक्ति रूपिणी स्त्री वैरागी उपर बरोबर रागी हे परं रागी उपर रागी नहीहे.

एसा स्त्रीयोंके विषयमे असारता विचारता थका समाधिमे कितनाक काल निद्रा करे. परंतु पर्वतिथी प्रमुख उत्तम दिनोमे उत्तम श्रावक स्त्रीयोंसे विपय भोग करे नही

विवेकीगण बहुत काल निद्रामें व्यतीत न करे. क्यों की विशेप निद्रा करनेसें धर्म अर्थ और सुख ए तीनोंका नाश होता हे

जो प्राणी स्वल्प ( थोडी ) निद्रा करे, स्वल्प आहार लेवे, स्वल्प आरंभ करे, स्वल्प परिग्रही, स्वल्प क्रोध करनेवाला होय एसे लक्षणवालोंको अवश्यमेव स्वल्प संसार होता हे.

निद्रा, आहार, भय, स्नेह, लज्जा, काम, कलि (लडाइ) क्रोध. यह चिजें ज्यों ज्यो अधिक कीये जांय त्यो त्यो अधिक वढती जाती हे

विघ्न रूप वल्लिका समुदायकों छेदनेंमें साक्षात् कुहाडा समान श्री नेमिनाथ भगवंतकों याद कर के सयन करें तिनको अवश्यमेव दुष्ट स्वप्नोंका परा भव न हो शक्ता हे.

अश्वसेन राजा और वामादेवी राणीकें पुत्र, श्रीपार्श्वनाथजीका नाम स्मर्ण करके सोवे तो अवश्य मेव अनर्थ कारक दुष्ट स्पप्न न देखें महसेन राजा और लक्ष्मणा नाम राणीके पुत्र श्री चंद्रप्रभ स्वामीका स्मरण करनेंसे सुखसें निद्रा आती हे सर्व विघ्नरूपी सर्पके दूर करनेंमे साक्षात् गरुड समान, परम सर्व सिद्धिके प्रदायक, श्री शांतिनाथ स्वामीका जो ध्यान करताहे उनको विलकुल भय न हो शक्ता हे

॥ इति दिनचर्यायां चतुर्थ वर्गः ॥

सर्व भवोमें उत्तममें उत्तम यह मनुष्य जन्मको प्राप्त होके प्राणि गणने उसे सुकृत करके सकल सफल करना निरंतर धर्मके सेवनसे सुखभी तदनु सार अचल मिल शक्ता हे वास्ते दान, विद्याध्ययन, शुभध्यान जप तपादिक सुकृत्योमें अपने दिन अवंध्य (अखंड) करना

आयुषके तीसरे भागमे अथवा अंत्य समयमे

जीव आगंतुक नवका शुनाशुन आयुष्य बांधताहे· आयुष्य बंधका तीसरा नाग वहुत करके पंच पर्वी की तिथीयोके दिन आताहे इसलिए पंच पर्वणीमे आरंन त्यागादिक सुकृत्यों कीये जांय तो अवश्य शुन आयुष्य बंध होय वास्ते पंच पर्वणीमे अवश्य विशेष धर्म कृत्य करना उचित हे.

प्राणी द्वितीया तिथीके आराधनसें रागद्वेषकों जय करके आगंतुक नवमें साधु श्रावक यह दो प्रकारके धर्मकी प्राप्ति कर शक्ताहे.

पंचमीके आराधनसे पंच ज्ञानकों प्राप्त करके फिर पंच विध प्रमादका त्याग होनेसें शुद्ध चारित्र धर्मकों प्राप्त हो शक्ता हे.

दुष्ट अष्ट कर्मोके नाश करनेके लिए और अष्ट मदका जय करनेके लिए पुनः अष्ट प्रवचन माता का परिपालनके लिए अष्टमी तिथीकी आराधना करना ठीक हे

एकादशीके आराधनसे ग्यारह अंगके ज्ञानकी प्राप्ति होतीहे और ग्यारह श्रावककी प्रतिमाकों वहनेकी योग्यता प्राप्त होती हे

चतुर्दशीके आराधनसें प्राणी चउद पूर्वके ज्ञान योग्य होके चउदे राजके उपर सिद्धत्वावस्थाकों प्राप्त होता हे.

यह पंच पर्वणीका महिमां याद करके पंच पर्व

णीमे जो धर्माराधन करेतो अवश्य शुभ फलकों प्रात कर शक्ता हे.

अतएव पंच पर्वणीमे विशेष धर्माराधन तप जपादिक करना और उत्तर गुणकी वृद्धिके लिए स्नान, मैथुनादिकका अवश्य त्याग करना पर्वणीमे अवश्य पौषध करना न वन शके तोभी प्रतिक्रमण सामायक जप तपादि अवश्य करना

पर्वणीमे कल्याणकादि तप करना उपवास एकाशणा, आयंबिल, बियाशणा, नीवी प्रमुख तपसे विंशति स्थानक तप आराधना

जो विधि पूर्वक यह तप आराधन किया जाय तो परम सुखके प्रदायक, सर्वोत्कष्ट तीर्थंकर गोत्र उपार्जन हो शक्ता हे

पंचम्यादि तपका उद्यापन करनेसे प्रणिधानकी पूर्णाहुती होतीहे और विशिष्ट फलकी प्राप्ति हो शक्ती है वास्ते उद्यापन अवश्य सब तपके करना उपवास करके जो प्राणी पाक्षिक प्रतिक्रमण करताहे सो अवश्य पंदरे दिनके पापकी शुद्धी करता हे और उनके उभय पक्ष शुद्ध होशक्ते हें तीन चोमासीमें (आषाढ, फाल्गुण, कार्तिक की चउदसीमे ) अवश्य पष्ट (बेला) करना चहिये

आठम चउदश पंचमीकेदिन उपवास, प्रतिक्रमण, आरंभवर्जन, अवश्य करना भादोंकी श्रीपर्यू

षणपर्वणीमें अवश्य कल्पसूत्र सुनना. और यथा शक्ती विशेष धर्म कर्म करना. श्रावक धर्म कर्ममे संतोष न करे परं आरंजादिकमे संतोप करके अवश्यत्याग करे. उत्तम श्रावक एकवीस वार जो कल्प सूत्रकों सुनेतो अवश्य आठजवमें सिद्धि पदको प्राप्त हो शक्ता हे. निरंतर सम्यक्तके और ब्रह्मचर्यके पालनेसें जो लाज होताहे उससें अधिक कल्प सूत्र सुननेंसें होशक्ता हे. दान देनेसें विचित्र तप करनेसें, सत्तीर्थके सेवन करनेसें, जो प्राणिगणके पाप क्षय होते हे सो सब शास्त्र श्रवण का महिमा हे. मुक्तिसे कोई अधिक तप, शत्रुंजय से अधिक कोई तीर्थ, सम्यक्तसे कोई तत्व, कल्प सूत्रसें अधिक महिमावंत कोइ सूत्र नही हे. दीवालीकी अमावास्याकी रात्रिको जगवंत महावीर स्वामी मोक्ष गए और उसी प्रतिपदाके प्रातः काल श्री गौतम स्वामीजी केवल ज्ञान पाये हे इसलिए यह दोदीन अतीव पवित्र हे वास्ते उपरोक्त महा पुरुषोंका उसदिन ध्यान स्मर्ण करना दीवालीमे दोउपवास, करके धूप, दीप, करके अखंड चावलसे गौतम स्वामीके नामका वा मंत्रका जाप करे तो इह लोक परलोकमे महोदय सुख पामें. अपने घरमे वा ग्राम चैत्यमें विधि पूर्वक पूजा करके आरती मंगल दीपक करके अपने घर जायके अपने जाइ मित्र

पुत्रादिक कों साथ लेके भोजन करनां. भगवंतके पंचकल्याणकों के दिनमे यथाशक्ती सत्पात्रोको और याचकों को दानदेना

॥ इति दिन चर्यायां पंचम वर्गः ॥

उत्तम श्रावक धर्म कर्ममे प्रवृत्ति रखता थका पूर्ण निवृत्तिको प्राप्त कर शक्ताहे इसलिए अतृप्त मनसे निरंतर धर्म कर्म अवश्यमेव करना

जिस धर्मसें यह संपदाको प्राप्त हुवा हे तो अवश्य उस अपने उपकारीकों सेवन किये विना कोन रहेगा. एसा कोन मूर्ख होय की जिससें आगामी कालमे लाभ होने वालाहे एसे स्वामी ( धर्म ) को सेवन करनेमें प्रमाद रखके आप स्वामी द्रोहीका पातकी बने?

दान, शील, तप, भाव यह चतुर्विध धर्मकों धीर पुरुप आराधके (पुण्यानुंबधिपुण्य) और मोक्ष सुखक्यो प्राप्त करलेता हे थोडामेसेंभी थोडा दानदेना परं बहुत मिलनेकी अपेक्षा न रखनी,क्योंकी इछानुसारी लक्ष्मी क्या मालम कब मिलेगी?

ज्ञानदानसे ज्ञानवान् होता हे. अभयदानसें निर्भय होता हे. अन्नदानसें सुखी होता हे. औषध दानसें प्राणि अवश्य निरोगी होता हे.

पुण्यकर्मसे कीर्त्ति होतीहे दान हे सो मात्र कीर्त्तिके लिए नही हे परं मोक्ष सुखके वास्ते दिया

जाताहे. मात्र कीर्त्तिके लिए जो प्राणी दान देते हें सो दान धर्म नही हे परंतु वो व्यसन हे. (विनोद मात्र हे एसा जाणना. ) व्याजमे धन डुगुणा होता हे व्यापारसें चोगुणा लाभ होता हे. क्षेत्रसे सो गुणा लाभ होता हे. परं पात्रदानमें अनंतगुण लाभ हो शक्ता हे.

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, प्रतिमाजी, मंदिरजी, ज्ञान यह सात क्षेत्रमे धनका बोना बीजके न्याय विशेष लाभ दायक होता हे. जो प्राणि भक्ति भावसे जिन मंदिर नया बनाताहे उस्मे बहुत लाभहे. क्यो की नये बनाये मंदिरके जितने परमाणु ( रजकण ) की संख्या होती हे तितने पल्योपम प्रमाण देव सुख भोगता हें.

औरभी यह हे कि जितने दिन नया मंदिर रहता हे तितने हजार वर्ष मंदिर बनानेवाला देवायु भोक्ता होसक्ता हे

सोना, चांदी, पाषाण, रत्न, मृत्तिका प्रमुखकी यथाशक्ति जो प्राणी नयी प्रतिमां भरावे तो भरानेवाला प्राणी तीर्थंकर पद पामताहे कममे कम एक अंगुष्टमात्रकीभी जो प्राणी नयी प्रतिमा भरावे सो प्राणी अवश्य देवादि सुख भोगके परमानंद पद प्राप्त होता हे. मोक्षफलका देनेवाला धर्मरूप वृक्षका मूल समान यह जैनागमको जो प्राणी लिखा

ताहे वांचताहे और नावसे सुनताहे तो उनको अ त्यंत नावकी ( सम्यक्तकी ) विशुद्धी होती हे

जो प्राणि जैनागम लिखाके गुणिजनोंको वांचने के लिए समर्पण कताहे उनकों उस शास्त्रके वर्ण मात्र अक्षरकी संख्या जितने वर्ष देवलोक गति प्राप्त होती हे ।

जो ज्ञानकी नक्ति करी जातीहे वो ज्ञान विज्ञा नसे शोननीक होताहे ज्ञान विज्ञानकी प्राप्तिकरने वाला अन्नदानहे इसलिए उत्तमजन हर वर्ष यथा शक्ती एकैक स्वामीवछल करे बांधव कुटुवको जि माना यह संसार हेतुहे परं उस्मेनी साधर्मीक वछ ल किया जायतो अवश्यमेव विशेप लान प्रद होता हे अर्थात् नवसंसारसे तारकता गुणनिष्पादक हो सक्ता हे

हर वर्प सर्व प्राणीने अपने अपने तरफसे अव श्यमेव एक वार तो स्वामी वछल करना हि चहि ये विवेक वान् श्रावक हर वर्प एक वार तो अव श्यमेव श्रीसंघपूजा ( प्रनावना ) यथाशक्ति करे. योग्य आहार वस्त्र प्रमुख श्रीगुरुको नलीनक्ति ना वसें देवे यद्यपि अपनी विशेप शक्ति न होय तथा पि यथाशक्ती सत्पात्रोंको असन, पान, खादिम स्वादिम, वस्त्र, पात्र, औपध प्रमुख अवश्य मेव देवे.

कूवा, आराम, वगीचा, वृक्ष, तलाव, गौ प्रमुख जो दान करते हे तथापि उनका जल प्रमुखको हानी नही आती हे प्रत्युत उनकी वृद्धि होतीहे तेसें सत्पात्रमें दान देनेसें धन जाता नही हें परं प्रत्युत उनकी वृद्धि करता हे एसा समजना चहिये.

प्रत्यक्ष देखियें की दान देने मे और भुक्तभो गी होनेमे कितना वडा अंतर(फरक) देखाजाताहे. भुक्त भोग ( खायापीया ) दुसरे दिनहि विष्टारूप होजाता हे. और दान दिया अक्षत होता हे (वृद्धि पामताहे) वास्तव में विचार किजीयें की देनेमें अधिक लाभ हुवा कीखाय खरचाय वेठनेमें अधिक लाभ होता हे?सो विचारवंत आपहि समज सक्ते हे.

शतसः प्रयाश करके प्राप्त किया और प्राणसेंभी अधिक वल्लभ, यह धन हे. उनकी गती (कार्य)मात्र एकदानहि हे.अन्य गतिजो देखिजाती हे सो मात्र विपत्ती समजीजाती हे न्यायमार्गसे उपार्जित किये धनको जो विवेकी जन सप्त क्षेत्रमे नियोजित करते हे सो श्रावक अपने धन और जीवितकों सफल कर सक्तें हे.

॥ इति दिनचर्यायां षष्ठः वर्गः समाप्तः॥

इति चारित्रसुंदर गणि विरचितः आचार ग्रंथः समाप्तः

अथ वार्षिकचर्या माह

जैनोंको वर्षदिनमे अवश्य ग्यारह कृत्य करने चहिये सो वताते हे प्रथम संघपूजा करनी सो यथाशक्ती नवकारवालीसें लेके सोंनामोहोर प्रमुख सब श्रावकोंमे अथवा अपने अपने गछमे वाटनी. अन्नी वर्त्तमानकालमे जिस्कों (पहिरावनी) कहते हें सो यथाशक्ती वर्षमे एक दो चार वार अवश्य करना चाहिये (इससें महालान्न होता हे)

दूसरा कृत्य साधर्मीक वात्सल्य हरवर्षमे एकवारतो अवश्यमेव करना. दुःखी जैनोंका यथायोग्य यथाशक्ती समुऊरण करना गुप्त दान करना श्रावकोंको आमंत्रण करके अंतरंग न्नक्तिन्नावसे जिमाना. और तांबुल पुष्पादिक देके प्रणाम करके सबका सत्कार करना इससें तीर्थंकर गोत्र बंध होता हे.

तीसरा कृत्यमे अष्टाहिक यात्रा सो अष्टान्हिका महोत्सव मंदरजीमें करना. नही वनेतो एक वर्षमे एक वार पूजा तो अवश्य पढानी ॥ चोथा कृत्यमें रथयात्रा सो एक वर्षमे एक वार अवश्य रथ निकालना एकिलेसे नवनेतो कितनेक समुदाय मिलकेन्नी अवश्य करना. ॥ पांचमां कृत्यमे तीर्थयात्रा सो पंचतीर्थी वा हर कोइन्नी तीर्थकी समुदायसहित यथाशक्ती हरएकवर्ष एक यात्रा तो अवश्यकरनी.

छठे कृत्यमें देवद्रव्य वृद्धि करना. यथाशक्ती यथायोग्य एकवार तो भंडार ढोकना.चमावा बोलना.

सातमे कृत्यमे स्नात्रादि पूजा पढाना. पुण्यवान प्राणी नित्य स्नात्र पढातेहे यदि न वनेतोभी पर्वणी प्रमुखमे पढानी और एकवर्षमे जघन्यसे एकवारता अवश्यमेव स्नात्रपूजा पढानीइससेंभी अधिक लाभहे.

आठमें कृत्यमे हरवर्ष एकवारतो अवश्य विशेष विधिसे श्रुत ज्ञान पूजा करना. यद्यपि ज्ञान पूजा हरहमेशका कर्तव्य हे तथापि ज्ञान पंचमी प्रमुख सव पंचमीके दिन यथाशक्ती वासक्षेप धूप दीप नैवेद्य रोकनाणा वस्त्रादिकसे ज्ञानपूजा अवश्य करनी.

॥ नवमें कृत्यमे हरवर्ष एक उद्यापन करना.इसमें यह विचारहे की हरेक प्राणीकों हरवर्ष एकेक तपतो नया जघन्यसें करनाहि चहिये.जो तप करना उस्का उद्यापन अवश्य करना. यद्यपि सव तपके उद्यापन नहि वन शके तो एक तपका तो जरूर करना.

॥ दशमे कृत्यमे तीर्थ प्रभावना करना. इस्मे रथ नीकालना. गुर्वादीकोका नगर प्रवेश मोछव करना ग्यारमें कृत्यमे हरवर्ष पापकी शुद्धीकेलिए गुरुके पास वार्षिक पापकी आलोयणा लेणी. वर्ष दिवसमे अपने जाणतां अणजाता जो कुछ पाप हुवे होय सो गुरुको कहना और उन पापकी शुद्धीकेवास्ते जो

प्रायश्चित (तप) करना कहेसो स्विकार करना ॥
इति दिनचर्यायां वार्षिक कृत्यानि ॥
॥ अथ आजन्म कृत्यान्याह ॥

त्रिवर्ग सिद्धिकेलिए सर्व प्राणिमात्रनें अपने जन्मसें जीवित पर्यंत अठारह कृत्य करना सो कहते हैं.

प्रथम कृत्य यहहे की जैनोने धर्म, अर्थ, काम यह तीन वर्ग यथायोग्य साधन हो शके एसे स्थान पर निवास करना क्योंकी जहां जिनमंदिर, अपने स्वजातीयजन, अपने गुरुकी जोगवाई, खान पान शुद्धी न होय एसे स्थानपर रहनेंसें सुख न हो सकेगा.

डुसरा कृत्य यहहे की त्रिवर्गसिद्धिके लिए यथायोग्य विद्याभ्यास करणा क्यों की संपूर्ण विद्या न होय तो सर्व प्रकारसे हानी प्राप्त होवेगी त्रिवर्ग संसिद्धि न हो शकेगी

तीसरा कृत्य उत्तम स्त्रीसे लग्न करना क्यों की स्त्री विना त्रिवर्गका सुख साधन न हो सक्ता हे

चोथा कृत्यमे सन्मित्रोंसें मित्रता रखणी क्यों की सन्मित्रोंके सहवाससे कइकड वातोका लाभ मिल शक्ता हे नहिंवणे तोभी एक दो धर्ममित्रतो अवश्य रखना चाहिये

पंचम कृत्य यहहे की उत्तम प्राणीने यथाशक्ती एक जिन मंदिर अवश्य करना क्यो की इससे लक्ष्मी की साफल्यता और जन्म सफल होता हे.

छठे कृत्यमें अपने न्यायो पार्जित वित्तसें बहुत नहितो एक दो चारजी प्रतिमा जरावणी.

सातमे कृत्यमें यथाशक्ती प्रतिष्टा अंजन शला काके महोत्सव करने.

आठमे कृत्यमें पुत्रादिकोंकों धर्मयोग्य करने.

नवमें पदस्थोके पद महोत्सव यथाशक्ती करना.

दशमें कृत्यमे नीति, व्यवहारीक, धार्मीक शास्त्र वांचनेका, संग्रह करनेका सोख रखणा.

ग्यारहमें कृत्यमें पौषधशाला, विद्याशाला, धर्म शाला, औषधशाला, पांगुलाशाला यथाशक्ती करना.

बारहमें कृत्यमे धर्मशुद्धिके लिए प्रतिमा वहना.

तेरहमे कृत्यमें जीवित पर्यंत सम्यक्त पालना.

चवदमे कृत्यमें जीवित पर्यंत यथाशक्ती व्रत पच्च रकाणकों निरतिचार परिपालन करना.

पंदरेमे कृत्यमें शक्ती होय तो दीक्षा लेना.

सोलहमे कृत्यमें वृद्धावस्थामें आरंज परिग्रह और अधिक खटपटोंका त्याग करना.

सत्तरामे कृत्यमे वृद्धावस्थामे शीलपरिपालना

अगारहमें कृत्यमें अपना

॥ अथ चतुर्थ परिछेद प्रारंजः ॥

॥ अथश्री सीमंधरजिन स्तवन ॥ रासडाना राग मां ॥ रुपैयो ते आलुं रोकमो. महारा वालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनडुं ते महारुं मोकले, महारावालाजीरे ॥ ससिहर साथें संदेश ॥ जइने कहेजो महरावाला जी रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना जक्तने तारवा ॥ मा० ॥ एक वार आवोने आदेश ॥ जइ० ॥ १ ॥ प्रजुजी वसो पुष्करावती ॥ मा० महाविदेह खेत्र मकार ॥ जइ० ॥ पुरी राजें पुंडरिगिणी ॥ मा० ॥ जिहां प्रजुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्री सीमंधर साहेवा ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पमिवोहो बहु प्राणीने ॥ मा० ॥ तेहनो पामे कुए ताग ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाणे ऊमी मलुं ॥ मा० ॥ पण पोतें नही पांख ॥ जइ० ॥ जगवंत तुम जोवा जणी ॥ मा० ॥ अलजो धरे ठे ए आंख ॥ जइ० ॥ ४ ॥ डुर्गम महोटा डुंगरा ॥ मा० ॥ नदी नालानो नहिं पार ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥ मा० ॥ अटवीपंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोमी सोनैये कासीदी ॥ करनारो नही कोय ॥ जइ० ॥ कागलीयो केम मोकलुं ॥ मा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ० ॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ मा० ॥ लाख गमे अजिलाप ॥ जइ० ॥

तमें लेजामां ते लह्यो ॥ मा० ॥ मुज मन पूरे सांव ॥ ज३० ॥ ७ ॥ लोका लोक सरूपना ॥ म ॥ जगमां तुमें गे जाण ॥ ज३० ॥ जाण आगें जणावीयें ॥ मा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ ज३० ॥ ० ॥ वाचक उदयनी विनति ॥ मा० ॥ सत्तिद कह्या संदेश ॥ ज३० ॥ मानी लेजो मद्दारी ॥ मा० वम्ति दूर विदेश ॥ ज३० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥

मधकरनी देशीमां ॥

केवल नाण जुगल पावे, तो सविवात वनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुताराये जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पण्डित जिनविजये गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ इति ॥

॥अथ बीजनुं स्तवन ॥ फतमल पाणीमाने जाय, ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहं करूं जी ॥ बीज तिथि गुणगेह, आदरो भवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी ॥ माहा शुदि बीजे जाण, जन्म अभिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण भवोदधि तेह, तस पद सेवे सुरथोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुभठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥४॥ फाल्गुन पासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनोजी ॥ एहिज दिन केवल नाण ॥ शरण करो जीनराजनोजी ॥६॥ करणी रूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरियाहो

जाण, खेड शमता करी जिहांजी ॥ ७ ॥ उपशम तछुप नीर, समकित ठोरू प्रगट होवे जी ॥ संतोप केरी हो वारू, पच्चरकाण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां-जी ॥ मांजर अनुनव रूप, उतरे चारित्र फल जि-हां जी ॥ ए ॥ शांति सुधारस वारी, पान करी सुख लीजीयें जी ॥ तंबोल सम ल्या स्वाद, जीवने संतो प रस किजीयें जी ॥ १० ॥ वीज करो वावीश उत्कृष्टी वावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास पालियें शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दो य वार, पडिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायायें कीजीयें जी ॥ १२ ॥ ऊजमणु शुद्ध चित्त, करी धरीयें संयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो वीज, रागने द्वेप दूरें करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरु नक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, नक्ति पामे सुख संपदा जी ॥१५॥ इति श्री वीज तिथिनुं स्तवन ॥

॥ अथ श्री पंचमीनुं लघुस्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पठी क्रिया, नहिं को इ ज्ञानसमान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञा

न वखाएयुं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदह विह, अवधि असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदें मनः पर्यव दाख्यु, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, जेहवो तेज आकाश ॥ केवलज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकालो प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, ह्मारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ज्ञानपंचमी स्तवनं

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ एदे शी ॥ सुत सिद्धारथ भूपनोरे ॥ सिद्धारथ भगवान ॥ बारह परषदा आगलें रे ॥ भापें श्रीवर्द्धमानोरे ॥ १ ॥ भवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे ॥ ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम तणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडुरे ॥ जिणथी दंसण होयरे ॥ २ ॥ भ० ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधेरे, ज्ञान उद्योत सहाय ॥ ज्ञानें स्थिविरपणुं लहेरे, आचारज उवझायरे ॥ ३ ॥ भ० ॥ ज्ञानी श्वासो श्वासमांरे, कठिण करम करे नाश ॥ वन्हि जिम इंधण दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ४ ॥ भ० ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया

रे, संवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणंग पग थालीयें रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ मइ सुअ ओहि मणपज्जवा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥६॥ ज० ॥ तेहनां साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आ· दि ॥ लखे लखावे सांचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज णतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुला थायरे ॥ ८ ॥ ज० ॥ जणतां गुणतां न आ वडे रे, न मले वल्लज चीज ॥ गुण मंजरी वरदत्त परेंरे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ए॥ ज० ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जग गुरु पाय ॥ गुणमंजरी वर दत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलोरे ए देशी ॥

॥ जंबुद्धीपना जरतमां रे, नयर पदम पुरखास॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति नि दान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर ते हनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरे जणवा मूकि उरे, आठ वरस जव हुंत रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पण्कि त यत्न करे घणो रे छात्र जणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवडे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥प्रा०॥

कोढें व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी
तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥प्रा०॥
कपूरतिलका गेहिनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुण
मंजरी तस बेटडी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ ५ ॥
प्रा० ॥ शोल वरषनी सा थइ रे, पामी यौवन वेश॥
दुर्जग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे
॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणें अवसरे उद्यानमां रे, विजयसे
न गणधार ॥ ज्ञान रयण रयणायरू रे, चरण करण
व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक जूपालने रे,
दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन
जावे ताम रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांजले रे,
पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयन वदन मुदा
रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ ९ ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन
परजवे रे, मूरख परआधीन ॥ रोगे पीड्या टलवले
रे, दीसे दुःखीया दीन रे, ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान
सार संसारमां रे, ज्ञान परमसुखहेत ॥ ज्ञान विना
जग जीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ ११ ॥प्रा०॥
श्रेष्ठी पूछे मुणींदने रे, जांखो करुणावंत ॥ गुण
मंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥
१२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंडना जरतमां, खेटक नयर सुगाम॥
व्यवहारी जिन देव छे, घरणी सुदरी नाम ॥ १ ॥

अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासें शीखवा, तातें मुक्या कुमार ॥ २ ॥ बालस्वजा वें रामत, करतां दहाका जाय ॥ पंमित मारे त्यारें, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी शीखवे, जणवानुं नहीं काम ॥ पंड्यो आवे तेकवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखण, बाली कीधां राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहानें द्राख ॥ ५ ॥ पाकापरें महोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी जांखे जामिनी ॥ बेटा बाप ना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे ठे सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ᴗ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ए ॥ मूठांगत गुणमंजरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिरनामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंठित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ "नमो नाणस्स" गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मुख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादिकदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, सा

थियो मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके, तेणवि धि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौनाग्य पंचमी, ज ज्वल कार्त्तिकमास ॥ जावज्जीव लगें सेवीयें, जजम णा विधि खास ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चाबखी दोरा रे, पाटी पाटला वतरणां ॥ म सी कागल रें, कांबी खमीआ लेखणी ॥ कवली डा बली रे, चंडआ जरमर पुंजणी ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ प्रा साद प्रतिमा तास जुपण, केसर चंदन जावली ॥ वासकूंपि वालाकूंची, अग लूहणां ठावमी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरतीने धूपणां ॥ चरवला मुह पत्ती साहमीवब्लल, नोकरवाली थापना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणनां साधन जे कह्यां ॥ तप संयुत रे, गुणमंजरीये सद्दह्यां ॥ नृप पूढे रे, वरदत्त कुंवरनें अंग रे ॥ रोग जपनो रे, क वण करमना नंग रे ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ मुनिराज नासे जंबु द्वीपें, नरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नंदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु मल्या ॥ वेराग्य पामी नोग वामी, धर्मधामी संवर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे ॥ प णसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिए ॥ कर्म

योगे रे, अशुन्न उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे पोरिसी न्नणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ त्रूटक ॥ सर्वघा निंद व्यापी, साधु मागे वायणां ॥ जंघमां अंतराय थातां, सूरि हुआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या न्नूतमो ॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्युं, नस्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चिंतवे रे, कां मुज लाग्युं पाप रे ॥ श्रुत अन्यास्यो रे, तो एवडो संताप रे ॥ मुजबांध वरे न्नोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ वार वासर कोइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥ अशुन्न ध्यानें आयु पूरी, न्नूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञानविराधन मूढ जरूपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धबांधव मान सरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरदत्तने रे, जातिस्मरण उपनुं ॥ न्नव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुन्नमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय दीवडो ॥ गुण अवगुण रे, न्नासन जे जग परवडो ॥ ए ॥ त्रू० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, दाढ जेम घन तावडे ॥ न्नूप पन्नणें पुत्रने प्रन्नु, तपनी शक्ति न एवडी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो वेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सजुरुवयण सुधारसें रे, नेदी साते धात ॥ तपशुं रंग नागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोगमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसस्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कन्यासहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नूपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि नूप ॥ त० ॥ नीम कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, नोगवे नोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें वरसें उजवे रे, पंचमी तेज प्रचंम ॥ त० ॥ ४ ॥ नुक्तनोगी थयो संयमी रे, पाले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रनेरे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी रे, वैजयंतें दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो नेट ॥ त० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, शो कन्या नरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ तिहां पण ते तप आदस्युं रे, लोक सहित, नूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चोंपशुं रे श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो

रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी वि जय शुनापुरी रे, जंबु विदेह मझार ॥ त० ॥ अम रसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंतथकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥ त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धर्खुं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशे वरसें राजवि रे, सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पुरव समता धरे रे, केवल ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमाविषे रे, नांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी सुख लह्युं रे, तेहने तस उपकार ॥१४॥ त० ॥ इति ॥

॥ढाल ठठी ॥ करकंमुने करुं वंदना ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीश दंमक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चोवीशमो जिनचंदरे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणत स्वर्गथी ॥ हुं० ॥ त्रिशला उर सुखकंदरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ महावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥ हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हुं० ॥ चंम कोशियो साप रे ॥ हुं० ॥ यज्ञ करता ब्रामणो ॥ हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं० ॥ रिखनदत्त वली विप्ररे ॥ हुं० ॥ व्याशी दिवस संबंधथी ॥ हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने

टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हुं० ॥ आदर्यो मे आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुज उपर हित आणिरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरीशनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हुं० ॥ शिष्यकपूरविजय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज ह जो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इय वीर नायक, विश्वनायक, सिद्धि दायक, संस्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोडर, गुंथी निज कंठें ठव्यो ॥ पुण्य पाटण, क्षेत्रमांहे, सत्तर त्राणुं संवत्सरें ॥ श्रीपार्श्व जन्म, कल्याण दिवसे, सकल नवि, मंगल करे ॥८॥ इति श्रीपंचमीस्तवनम् ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनु स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो ॥ दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरें रेलो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो ॥ राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परें रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विचरंतां तिहां आवी वीर समोसस्या रे लो ॥हां०॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप संयम शियले अलंकस्यारे लो ॥ २ ॥ हां० ॥ फूल्या रस नर फूल्या अंब कदंब जो ॥ जाणुं रे गुणशील

वन हसि रोमंचीयो रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय सुवाय तिहा अविलंब जो ॥ वासें रे परि मल चिहुं पासें संचियो रे लो ॥३॥ हां० ॥ देव चतुर्विध आवे कोमा कोड जो ॥ त्रिगडुंरे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो ॥ हां० ॥ चोशठ सुरपति सेवे होमाहोम जो ॥ आगें रे रस लागे, इंद्राणी नचे रे लो ॥४॥ हां० ॥ मणिमय हेम सिंहासन बेठा आप जो ॥ ढाले रे सुर चामर मणि रत्ने जड्यां रे लो ॥ हां० ॥ सुणतां डुंडुन्नि नाद टले सवि ताप जो ॥ वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्यां रे लो ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गाजें घन जेम लुंब जो ॥ राजे रे जिन राज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जनमन लुंब जो ॥ पोपे रे रस न पडे धोंखे न्नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणि जिननों श्रेणिक रायजो ॥ आठ्योरे परवरियो हय गय रथ पायगें रें लो ॥ हां० ॥ दइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे न्नायगें रे लो ॥७॥हां०॥ त्रिभुवन नायक लायक तव न्नगवंत जो ॥ आणीरे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंत जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालम वहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांभलो चतुर सुजाण रे ॥ मोहनी निंदमां कां पडो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे, बापडा पंच परमादथी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥२॥ करी सको धर्मकरणी सदा, तो करो ए उपदेश रे॥ सर्वकाले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेषरे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व षट्नां कह्यां, फल घणां आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारें आराधतां, सर्वथा सिद्धिफल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवनें आयु परभव तणुं, तिथिदिने बंध होय प्रायरे ॥ तेह भणि एह आराधतां, प्राणिउं सद्गति जाय रे ॥ वि०॥५॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतम स्वामरे ॥ भविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रभु तामरे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाभ होय आठ पडिहारनो, अठ पवयण फल होयरे ॥ नाश अड कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संभव तणो एह

तिथें, अभिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ए॥ सुमति सु
व्रत नमि जनमीया, नेमनों मुक्तिदिन जाणरे ॥
पास जिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिनच्यवन
माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ,
दंडवीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी,
कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ ११ ॥ अतीत अनागत का
लना, जिन तणां केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें
वली घणा संयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि०
॥ १ ॥ धर्मवासित पशु पंखिआ, एह तिथे करे
उपवास रे ॥ व्रत धारि जीव पोसों करे, जेहने धर्म
अभ्यास रे वि० ॥ १३ ॥ जांखियो वीरे आठम
तणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें
उच्चरी प्राणिया, पामशे जव तणो पार रे ॥ वि० ॥
॥ १४ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोम
रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति करजोम
रे ॥ वि० ॥ १५ कलश ॥ एम त्रिजग जासन, अ
चल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेमगुरु,
सुपसाय पामी, संथूण्यो अल वेसरू ॥ जिन गुण
प्रसंगें, जण्यो रंगे, स्तवन ए, आठमी तणो ॥ जे ज
विक जावे, सुणे गावे, कांति सुख, पावे घणो ॥१॥
इति अष्टमी स्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसस्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोमशुं परिवस्या ॥ १ ॥ जगपति द्वीगुण फूल अमूल, ज्ञक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताव, जेमकरे शिववधू कंतलो ॥४॥ नरपति उज्ज्वलमागशिर मास आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनेपचाश,कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां कल्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्लिजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशी, मांहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जप माला गणो ॥ नरपति मन वच कायपवित्र, चरित्र सूणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाक्षिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अजिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नर

पति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नूषण ची वर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोपे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध वरे ॥ नरपति देववंदन आवश्य क, काल वेलायें अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ, मुनिवर करी करुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोमो पुण्य कीयो री ॥ वाधे जिम वम बीज, शुन अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि नासे महानाग्य, पावन पर्व घणां री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगें री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तपशुं वगे री ॥ ४ ॥ सांनलि सद्गुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजविय, आरण स्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकविश सागर आय, पाली पुण्य वसें री ॥ सांनल केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां शेठ, समुद्रदत्त वडो री ॥ प्रीतिमति प्रिया तास, पुण्ये जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूंखें अवतार, सूचित शुन स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्नदोहद अनुनाव, सुव्रत नाम

ठ्यो री ॥ ९ ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक जण्यो री ॥ यौवनवय अगीयार, रूपवती स्त्री परण्यो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण धरे री ॥ अगीयार कंचन कोम, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रत शेठ, जाति स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ निजप्रत्यय मुनि शाख, जक्तें तप उच्चरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रत शेठें अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लुंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन जक्तें देवि शक्तें, थंजाणा ते वापमा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगल धस्या रांकडा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ जेटणो जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधो पारणों जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस बेठा, लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, उगरी सहु प्रशंसा करे जी ॥ हरखें शेठजी तपउजमणुं, प्रेमदा साथें आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो जार जलावी, संवेगी शिर सेहरोजी ॥ चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासें तपव्रत आदरे जी

॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय ठठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगें वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्मे नडीयो पापें जडीयो, सुर कहे जाउ औषध जणीजी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ए ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जिन पद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धन्य धन्य यादव वंश ॥ जिहां प्रज्ञु अवतस्या ए ॥ मुज मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवा देवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात ॥ सुजात जगतगुरु ए, रत्नत्रयी अवदात ॥ जयो० ॥ २ ॥ चरण विराधीउपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ जयो० ॥ तो पण हुं न करी शकुं ए डुष्ट कर्मना जेय ॥ जयो० ॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो ए, कीजें सीजे काज ॥ जयो० ॥ एहवा वचनने सांजली ए ॥ बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आरा

ध ॥ जयो०॥ आइश जिनवर बारमो ए, नावि चो वीशियें लाध ॥ जयो० ॥ ६ ॥ कलश ॥ इय नेमि जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल, मंडणो ॥ बाण नंदमुनि, चंद वरसें राजनगरें, संथुण्यो ॥ संवेग रंग, तरंग जलनिधि, सत्यविजय, गुरु, अनुसरी ॥ कपूरविजय कवि, क्षमा विजय गणि, जिन विजय जय, सिरि वरी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंनीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वम्वी र ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि पर- णाम ॥ नविक जीवना हित नणी, पूछे गौतम स्वा मि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अ रिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, नांखे श्री नग वंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत धरीये गुरु शा ख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिराविये, पाप स्थान अढा र ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो दुरित आ- चार ॥ ६ ॥ शुनकरणी अनुमोदियें, नाव नलो मन आण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सु- जाण ॥ ७ ॥ शुनगति आराधन तणा, ए छे दश

अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जेम पामो
वन्न पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसन चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा इह नव परन्नवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान न्नणो गुणखाणी ॥ वीरवदे एम वाणी रे प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी गुरु उंलवियें नहिं गुरु विनयें, कालें धरी बहुमान॥ सूत्र अर्थ तडुन्नय करी सूधां, न्नणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान न्नक्ति न संन्नाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ न्नव परन्नव वलिय न्नवोन्नवे, मिह्वाडुक्कड तेह रे ॥ ॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो शुरू जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजे, नवि पर मत अन्निलाख ॥ साधुतणी निंदा परिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणुं छंमो परसंसा गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्म करी थिरता, न्नक्ति प्रन्नावना करीयें रे ॥६॥ प्रा० ॥ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ डव्य देवको जेविणसाड्यो, विणसंतां

ऊवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खंड्युं जेह ॥ आस्रव० ॥ मिछा० ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्रल्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्मे परमादें, अशुद्ध वचनमन काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणा पूर्वक जे आवे, प्रवचन माय न पाली रे ॥१०॥ प्रा० ॥ चा०॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोड्युं जेह ॥ आस्रव० ॥ मिछा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वारें भेदें तप नवि कीधुं, छते योगें निज शक्ते ॥ धर्मे मनवचन काया वीरज, नवि फेरवियो भगतें रे ॥ ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परें विविध विराध्या जेह ॥ आस्रव० ॥ मिछा० ॥ १३॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वलीय विशेपे चारित्र केरा, अतिचार आलोइयें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरुपसाय रे ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ रे, वाउ वनस्पति ॥ एपांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण आरंभ, खेत्र जे खेडीयां ॥ कूवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टांकां भोंयरां ॥ मेडी माल चणावी याए ॥ लिपण गूपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथि

वी काय विराधीया ए ॥२॥ धोयण नाहण पाणी, जील ण अपकाय ॥ ठोतीधोती करी दूहव्यां ए ॥ नाठी गर कुंनार, लोह सोवनगरा ॥ नाकनुंजा लिहाला गरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काजें, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवतीए ॥ एणी परे कर्मादान, परे परिं केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥४॥ वाडीवन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चुंटीयां ए ॥ पोंहक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ छुंद्यां ठेद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ आलसीनें एरंड, घांणी घालीने ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुं मांहि, पीली सेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंड्रिय जीव, हण्या हणाविया ॥ हणतां जें अनु मोदीया ए ॥ आ नव परनव जेह, वलिय, नवोनवें ॥ ते मुऊ मिह्नामि डुक्कडं ॥ ७ ॥ कमी सरमीयां कीडा, गाडर गंडोला ॥इयल पूरा अ लसीयां ए ॥ वाला जलो चुडेल, विचलित रसत णा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ७ ॥ एम बे इं ड्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ उदेही जूं लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कुंथुआ ए ॥ए॥ गद्दहीयां घीमेल, कान खजूरडा ॥ गींगोडा धनेडी यां ए ॥ एम तेइंड्रिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मु ऊ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर डांस; मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलियावडाए ॥ ढींकणवीछु तीड, नमरा

नमरीयो ॥ कोंता बग खरूमांकरूी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंडिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुरू० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमा मृग संतापी था ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पारूी पासमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मुरू० ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे नवे जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोन नय हास्यथी जी, बोल्यां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अ दत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिछाडुक्कड आज, तुज साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूंकाज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयरस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, नव नव मेली आ थ ॥ जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी नोजन जे कस्यां जी, कीधा नक्ष्य अनक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कस्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥४॥मि०॥ व्रत लेई विसारीयां जी, वली नांग्यां पच्चरकाण ॥ कपटहेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया

अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संभारीयें ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजें जन्म पवित्रतो ॥ ४ ॥ साहम्मी संघ खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें ने खमावियें ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्नतो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां न दीजें आल तो ॥ रति अरतिमिथ्या तजो ॥ सा० ॥ माया मोह जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वो-

सिराविये ॥ सा० ॥ पापस्थान आढार तो ॥ शिव गति आराधन तणो॥सा०॥ए चोथो अधिकार तो ॥ए॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए एदेशी ॥ जनम जरा मरणें करीए, ए संसार असार तो ॥ कस्यां कर्म सहु अनुनवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध न गवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गु णवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ नव परनव जे कस्यां ए, पापकर्म केई लाख तो ॥ आत्मसाखें ते निंदीये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मि थ्यामति वर्त्तावियां ए, जे नांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कु मति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथी यार तो ॥ नव नव मेली मूकीयां ए, करता जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषिया ए, जनम ज नम परिवार तो ॥ जनमांतर पहोता पठी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ नव परनव जे कस्यां ए, एम अधिकरण अनेकतो ॥ त्रिविध त्रिविध वो सिरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्कृ त निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार ॥ शिवग ति आराधन तणो ए, ए ठठो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल ठही ॥ आदर तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म॥ दान शीयल तप आचरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध०॥१॥ शत्रुंजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन वर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवज्झायनें दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ नाव नलो मन आणीयें, चित्तआणी ठाम ॥ समता नावें नावीयें, ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, नोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठारउपर ते लीपणुं, ऊांखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ नाव नली परें नावीयें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संलेषण सार ॥ अणसण आदरीयें, पच्चरकी चार आहार ॥ ललुता सवि मूकी, ठांडी ममता संग ॥ ए आतम खेले, स-

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लाल चीयो रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो प रिणाम ॥ एथी पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥२॥ धनधन्नाशालिजद्द, खंधोमेघकुमार ॥ अणसण आ राधी, पाम्या जवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जा ये, डुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न को संसार॥इह जवने पर जवे, सु ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुठ जीलने जीलडी रा जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म हाराय ॥ राणी रत्नवती बेहु, पाम्या डे सुरजोग ॥ एक जवथी लेशे, सिद्धि वधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीम ती ने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फी टीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सि द्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर जाख्यो॥ आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे

॥ ढाल ठठी ॥ आदर तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म॥ दान शीयल तप आचरी, टाल्यां डुष्कर्म ॥ ध०॥१॥ शत्रुंजयादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगतें जिन वर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विं ध सांचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पमिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवझायनें दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदि यें, एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सा तमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ नाव नलो मन आ णीयें, चित्तआणी ठाम ॥ समता नावें नावीयें, ए आतमराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख डुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, नो गवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम ॥ ठारउपर ते लीपणुं, झांखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ नाव नली परें नावीयें, ए ध र्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संलेषण सार ॥ अ णसण आदरीयें, पच्चरकी चार आहार ॥ ललुता स वि मूकी, ठांडी ममता संग ॥ ए आतम खेले, स·

मता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लाल चीयो रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो प रिणाम ॥ एथी पामीजे, शिवपद सुरपद गम ॥२॥ धनधन्नाशालिजद्र, खंधोंमेघकुमार ॥ अणसण आ राधी, पाम्या ज्ञवनोपार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जा ये, डुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चउद पू रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जातां, जो पामे नवका र ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न को संसार॥इह ज्ञवने परज्ञवे, सु ख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुउं जीलने जीलडी रा जा राणी थाय ॥ नव पद महिमाथी, राजसिंह म हाराय ॥ राणी रत्नवती बेहु, पाम्या वे सुरज्ञोग ॥ एक ज्ञवथी लेशे, सिद्धि वधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीम ती ने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फी टीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी, सोव नपुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सि द्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर जांख्यो॥ आराधन केरो, विधि जे चित्तमां राख्यो ॥ तेणे

पाप पखाली, नव नय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो नवि नावशु ए ॥ ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशलामात मल्हार तो ॥ अवनीतले तुमे अवतस्या ए करवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहेतां न लहुं पार तो॥ तुम चरणे आव्या नणी ए, जो तारे तो तार ॥२॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे माहाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज ॥ कर्म अलुजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाल तो ॥ हुं बुं एहथी उन्नग्यो ए, बोडावो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठां डुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्या पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नव नव विनय तुमारडो ए, नाव नक्ति तुम पाय तो॥ देव दया करी दीजिये ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, डुःखनिवारण, जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थुणतां, अधिक मन, उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव, सुरींद पटधर, तीरथ जंगम, इणि जगे ॥ तप गछपति श्रीविजयप्रन सूरि. सूरितेजे. ऊगमगे ॥२॥

श्रीहीरविजय सूरि, शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय, सुरगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक, विनयविजये, थुएयो, जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ इस सत्तर संवत्, ठंगए त्रीशे, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी, विजय कारण, किर्ज गुण अन्यास ए ॥ ४ ॥ नरज व आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील, विलास ए ॥ निर्जरा हेतें स्तवन रचियुं, नामे पुएय, प्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्रीपुण्यप्रकाशस्तवनं समाप्तं ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरुपाय ॥ आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्धचक्र आधार, नवि उतरे नवपार ॥ आ० ॥ ते नणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्ध चक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अठेह ॥ आ० ॥ समर्यां संकट उपशमेजी ॥ लहियें वंछित नोग, पामी सवि संजोग ॥ ॥ आ० ॥ सुरनर आवी बहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुंदरी श्रीपालनेजी ॥ ए सिद्ध चक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालने जी ॥ ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करीजी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणु दोय वार ॥ आ० ॥ देव

वंदन त्रण टंकना जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रणवार, ग णणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल पणेंजी ॥ आराधे सिद्ध चक्र, सान्निध्य करें तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें नणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निशिदीस, कहीयें वीशवा वीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणी रत्न, एहना कीजें यत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्रीविमलेसर यक्ष, हो जो मुऊ परतक्ष ॥ आ० ॥ हुं किंकर बुं ताहरो जी ॥ पाम्यो तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरोजी ॥ ७ ॥ विनति करुं हुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मी विजय गुरुराय, शिष्य केसर गुण गाय ॥आ०॥ अमर नमे तुऊ लली ललीजी ॥८

॥ नवपदजीनुं स्तवन ॥

नवपद ध्यान सदाजयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नवपद० ॥ १॥ दरशन ज्ञान चारित्रहे उत्तम, तप दोअन्नेदे हृदयविचारी ॥ नवपद० ॥ २ ॥ मंत्रजडी उर तंत्र घणेरा, उन सवकुं हमदूर विसारी ॥ नवपद०॥३॥ बहुत जीव नवजलसे तारे, गुण गावत हे बहु नरना री ॥ नवपद० ॥४॥ श्रीजीन नक्त मोहन मुनी वंदत, दिनदिन चकते हरख अपारी ॥ नव० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ मङ्गल ॥

राग्गिणी कालेंगरा

मङ्गल मूरत पाशकी या ॥ मङ्ग० ॥ दारुण पङ्क सकल दुखहारी, दायकहै सुखरासकी या ॥ मङ्ग० १॥ सेवन ईन्द्र चन्द्र रवी सुरगुरु, चाहत हैं नित जासकी या ॥ मङ्ग० २ ॥ निरखत नैन सफल जई आस्या, करण चरणके दासकी या ॥ मङ्ग० ३ ॥ इति ॥

राग्गिणी वाहार

आज महोछव रंग रलीरी, जायो सुत त्रिसलादे राणी, कामित पूरण काम कलिरी ॥ आ० ॥ सजि सिनगार सकल सूर वनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥ आवत सिद्धारथके आङ्गण, पूरत मोतीयन चोक मीलिरी ॥ आ० १ ॥ ईन्द्र हुकुम करी धनद पठायो सब वसुधा धन धान्य जरिरी ॥ कनक रत्नमणि पंच वरणके, कुंसुम विखेरत गलीय गलीरी ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी मिल मङ्गलगावे, नाचत नाटक सूर कुमरीरी ॥ वाजत गहर शवद कर दुन्दुभी, वीणा वेणु मृदङ्ग जलीरी ॥ आ० ३ ॥ जय जय कार जयो तिहुं जगमे, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥ हरखचंद जनमें प्रभु मेरे, मनकी आस्या सफल फलिरी आ० ४ ॥ इति ॥

चेतावरकी चाल

मङ्गल राजे गिरनार, नेमपट मङ्गल है ॥ देवा० ॥

राजमती पद पङ्कज, मंगल रहै नेमी राय ॥ ने० १॥ मंगल धन धन्या मुनिनायक, सव तपसि विच सार ने० २ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक मंगल सव अनगार ॥ ने० ३ ॥ जयजय २ खेम कुशल गुरू, आनन्द घन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

### रागिणी काफि

गावो मङ्गलचार, सखीरी वीर प्रभुको जन्म भयो है । अवधी ज्ञान कर ईन्द्र हूकमदीयो, करहुं महोत्सव सार ॥ स०॥ १॥ मेरुशिखर पर देव सकल मिल, करत सुभक्ति अपार ॥ स० २ ॥ वसु विधि पूज रचत प्रभुजीकि, सफल करत अवतार ॥स०३॥ जय जय शब्द करत सूर नर वर, जय जय जगदाधार ॥ स० ४ ॥ अजर अमर पद दायक प्रभुजी, सेवो शिव सुखकार ॥ स० ५ इति ॥

### रागिणी ईमन कल्यान

कीजे मङ्गलचार, आज घर नाथ पधारे ॥ की० ॥ पहले मङ्गल जीनजीकी पूजा, घस केशर घनसार॥ आ० १ ॥ डुजे मङ्गल धुप जो खेऊं, और चढाऊ पुष्प हार ॥ आ० २ ॥ तिजे मङ्गल घण्टा बजाउं, झांझनकी झङ्कार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मङ्गल आरती उतारूं, नांचुं थेई थेई तार ॥आ०४॥ रूप चन्द कहे कहां लग वरणुं, शिव लहिये भव पार ॥ आ० की० ५ ॥ इति ॥

रागिणी सोहिनी–ताल यत

आज की रेण सोहाई, दरस मोहनकी में पाई॥ आ० ॥ पद पङ्कज तेरो मन मधुकर मेरो, सदा रहत लपटाई ॥ द० १ ॥ नवपद ध्यान सदा में चाहुं, अवर नही दील चाई द० ॥ २ ॥ अजर अमर पद चाहत तुमसे, आनन्द मङ्गल वधाई ॥ द०॥३॥इति

रागिणी काफी

पोढो पोढोजी कृपन्न पीयारे, निद्रा वस नयन तिहारे ॥ पोढो० ॥ प्रभु आलस अती ललसानी, पुठे मरुदेव्या माई॥ पोढो० ॥ १ ॥ प्रभु सुनन्द सुमङ्गला राणी, जिनरुच रुच सेज सवारी॥ पोढो० ॥ २ प्रभु नवल साजन्य सनेही, तुंतो मन वंछित फल देही ॥ पोढो ॥ ३ ॥ इति ॥

रागिणी भैरवी

राखो नाथ वडाई, हमारी ॥ रा० सेवा चोर सदा मोहे जानो, दरसन देवोनें गुसांई हमारे ॥ रा० १ ॥ अनाथनके नाथ जगत जन वछल, सुन्दर वदन सुहाई हमारे ॥ रा० २ ॥ भानु चन्द प्रभु जल थल अम्बर, जहां देखो तहां सहाई हमारे॥३॥इति

रागिणी कालेंगरा ॥

आवो गावो वधाई मोरी साथनीयां॥ आवो० ॥ नृप सुमित्रके पदमा देवी, सुत जायो सुखदाईरी ॥ आवो० १ ॥ जन्म कल्याणक करीये जाको, मुनि

सुव्रत जिन राईरी ॥ आवो० २ ॥ तीन लोकके हित कर प्रगट्यो, नाना रूपि हरपाईरी ॥ आवो० ३॥इति॥

## रागिणी भैरवी—ताल धिमे तेताला

आजतो वधाई राजा नाभिके दरवाररे ॥ आ० ॥ मरु देवाजीने बेटो जायो, नाम ऋषभ कुमाररे ॥ आ० १ अयोध्यामे उत्सव होवे, मुख बोले जयजयकाररे ॥ घनन २ घण्टा बाजे, देव करे थैथै काररे ॥ आ० २ ॥ इन्द्राणी सब मङ्गल गावै, लावै मोती मालरे । चन्दन चरची पाये लागे, प्रभु जीवो चिरकालरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नाभि राजा दानदेवे, वरसे अखण्डित धाररे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे, देवे मणि भंडाररे आ० ४ ॥ हाथी देवे साथी देवे, रथ देवे तुखारे । हीर चीर पिताम्बर देवे, देवे सब सिनगाररे ॥ आ० ५ ॥ तिन लोक को दिनकर प्रगट्यो, घर घर मङ्गल-चाररे । केवल कमला रूप निरञ्जन, आवागमन निवाररे ॥ आ० ६ ॥ इति ॥

## रागिणी भैरवी—ताल धिमे तेताला

मङ्गलरे गावत सकल सुरनार ॥ टेर ॥ मोती-यन थाल भरी जाय वधावत, गावत गीत रसाल ॥ मं० १ केशर चन्दन भावन भरीयारे, कर लीय कंचन थाल ॥ मं० २ ॥ चंद कुशलकी यही अरज है रे, भवोदधि पार उतार ॥ मं० ३ ॥इति ।

चैताचरकी चाल

आजकी रेण सोहानि, देखो आजकी रतियां ॥ आ० ॥ पारस प्रभुजीको जनम जयो है, हरष जई देवा हरष जई वामा राणी ॥ देखो० १ ॥ अश्वसेन घर वटत वधाई, घर २ अरी देवा घर २ मङ्गल मांनी ॥ दे० आ० २ ॥ द्वार २ सव तोरण थंज है, चोखे मुख सेज सेठानी ॥ दे० आ० ३ ॥ रतन थाल मुगताफल जरके, चोक पुरे इन्द्रानी ॥ दे० आ० ४ ॥ सुमन अधमको निज पद दीजे, सुध समकित सहनानी ॥ देखो० आ० ॥ ५ ॥ इति

॥ जैरवीका दूहा ॥

प्रजुको नाम अमोल है, जामे लगत न मोल ।
नफा वहोत तोटा नही, जर जरके मन तोल ॥
ए जीव जूला फीरत है, ममताके कल्लोल ।
अश्वसेनके लाडले, श्रीपारस मुख बोल ॥

रागिणी जैरवी—ताल यत्

वलिहारीमरु देवी नन्दकी, जज नाजिके नन्दन अवध विहारी ॥ वलि ० १ ॥ तिन लोक तिन पावन कीन्हें, आनन्द लहर सुनन्दकी ॥ वलि० २ ॥ कोशलपुर निकट सरजु तट, पूरण कला सो चन्दकी ॥ वलि० ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, जयजय रूपज जिनन्दकी ॥ वलि० ४ ॥ इति ॥

पुनः—ताल तेताल

जगदीश तुं मेरा प्रभु प्यारावे, तेरी आंखियांदी मानुं अजब बनी है, सुन्दर श्याम दीदारावे॥ जग० १ ॥ घडि २ पल २ सुमरण तेरो, कबहुं न दीलसें न्यारावे ॥ जग० २ ॥ जो तुझ ध्याया तिन सुख पावा, दरशन ज्ञान आधारावे ॥ जग०३॥इति॥

पुनः—ताल तेताला

आज प्रभु तेरे चरण लाग, मिथ्यातनींद मैं खोईरे। दर्शन कर परशन मन मेरे, आनन्द चित अब होइरे ॥ आज० १ ॥ तुम बिन देव अवर नही डुजो, देखा त्रिभुवन जोइरे ॥ आज० २ ॥ दास तुमारो करत विनती, तुम बिन मेरो न कोइरे॥ आज० ३ ॥ इति ॥

पुनःताल कवाली

नेम जिनन्दजीसैं आंखरुली; मोरी रैंन दिवस नीत लग रहीरे ॥ने० ॥१॥ पहले आय उन दोस्ती कीन्ही, ले पीछे बिटकाय दईरे ॥ ने० ॥ १ ॥ पसु यन पर प्रभु दया करीने, शिव रमणीनें वर लईरे ॥ ने० ३ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्न विम ल पद पाय लई रे ॥ ने० ४ ॥ इति ॥

पनः

ऋगन भरी देखन दे मुखन चन्द, मोरा देवी माता श्रीधन धन, जायोछे ऋषभ जिनन्द ॥ ऋ० १

याकुं पूजत अती सुख उपजत, सब जीवन सुख कंद ॥ ऊ० २ ॥ यातें हीतकर अरज करत है, ची रंजी रहो तेरानंद ॥ ऊ० ३ ॥ इति

पुनः

मेरी लागी लगन, नेम प्यारेसे ॥ मे० ॥ सुनरी सखीएक वात हमारी, कहीयो कन्त हमारे से ॥ मे० १ ॥ जोगन होकर सङ्ग चलुङ्गी, प्रीत त जुं जग सारेसे ॥ मे० २ ॥ नाम लीयासें आनन्द उपजे, कीरत होत उर धारेसे ॥ मे० ३ ॥ इति

पुनः

रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोवे जिया जागरे रा० ॥ दोय घमी तडको अब रहियो, ऊठ धरममें लागरे ॥ रा० १ ॥ जिन वानी ऊर वीच धारले, और जरम सब त्यागरे ॥ रा० २ ॥ आन न्द सुगुरु वचन हित मानो, ए सुधा शिव मार्गरे॥ रा० ४ ॥ इति ॥

रागिणी जैरवी

आदि जिनन्द, मेरो आदि जिनन्द । दरसन तेरो है सुखकन्द ॥ मे० १ ॥ तुम दरशन विन क ल न पमत है, छिन मे तो दीन हीन पकड्यो स रण ॥ मे० २ ॥ दास तिहारो अरज करत है जि नजी अबतो छुमावो जवफन्द ॥ मे० ३ ॥

पुनः

नवरिया मोरा कोन उतारे वेमा पार। इह संसार समुद्र गंजीरा, किसविध उतरुंगा पार ॥ न० ॥ १ ॥ राग द्वेष दोनुं नदियां वहत है। जमर परुत गति च्यार ॥ न० ॥ २ ॥ ऋषज दासको दरसन चहिये। ए वीनती अवधार ॥ न० ३

रागिणी जैरवी–ताल दादरा

जरलावोरे कटोरा केशरका, में नव अंग पूजुं परमेश्वरका ॥ ज० ॥ मरुदेवी कुंखें जन्म लियो है। कुमर नाजि रत्नेसरका ॥ ज० १ ॥ केशर चन्दन पुष्प चढाउं ॥ मुख निरखु ऋषजेसरका ॥ ज० २ ॥ रत्न जड़ितकी आरती उतारुं। नृत्य करुं परमेश्वरका ॥ ज० ३॥ मोती चंदकी एहिज वीनती, चरणन ठोकुं परमेश्वरका ॥ ज० ४ ॥ इति

पुनः

म्हारो मुंनें कब मिलस्यै मन मेलू ॥ मन मेलू विन केलि न कलिए। वालै कवल कोई वेलुं ॥ म० १ ॥ आप मिलाथी अंतर राखै ॥ सुमनुष ते नहि लेलू ॥म०॥२॥ आनन्द घन प्रजु मन मिलियाविन ॥ कौ नवि विलगैंचेलू ॥ म० ३ ॥

जैरवी–ताल दादरा

ईन्द्राणी प्रजुके वेगी आंज्यो कजरा। मे तो नवन करि कर लेही, तुं करले इयाकी जाप जीरा

॥ १ ॥ ई ॥ में पहिराती भुज भुजबंध, पहरा देतुं वाली कपरा॥ई०॥२॥ में तो मुगट धरुं सीर ऊपर तुं पहरा दे फूलुंके गजरा ॥ ई० ॥ ३ ॥ नयनानन्द सुर ईन्द्र जगति लख, भविजन सम्यक दृष्टि खरा ॥ ई० ॥ ४ ॥

ताल दादरा ।

नयना पीहर वा गये नयना वदल॥नयना वदल गये वनकुं निकल गये, वृत लीना सुधर॥नय१॥ व्याह नकुं, आये मेरे डुला कहांए ॥ दे दरस गये तोरणसे फिर ॥नय० ॥१॥ जोफारथ परमारथ कारण, कंकणको तोड लीया संजमको धर ॥ न० ॥२॥ पशु पुकारे प्रभुजी नीहारे । दुखिया विचार ठोडे वन्धन कतर ॥नय०॥३॥ देलो प्यारी ठीमा हमारि।मुंके वेगी वता दो गिरनार कीफगर ॥ने० ॥४॥ करुंगी नयन सुखकारी तपस्या मे तो लौंगी प्रभुके पद पंकज पकर ॥ न० ॥

पुनः

सखीरी म्हारो, नेम गयो गिरनार । तारि है राजुलनार सखिरी० ॥ तोरनसे रथ पीठो फेरयो, पशुवारी सुनिठे पुकार सखिरी० ॥ १ ॥ सहसा व-लकी कुंज गलिनमें, पंच महाव्रतधार सखिरी० ॥२॥ राजुल उभी अर्ज करत है, आवागमन निवार स खिरी० ॥ ३ ॥ चंद कपुरा कहे कर जोडी, चरण सरण आधार सखिरी० ॥ इति ॥

पुनः

मैंतो दासी 'तुमारी विना दामकि। निजरमें जो ठहरुं किसी कामकि ॥ १ ॥ और देवसे काम नही मेरे। दिलमें वसि हे सूरत स्यामकी ॥ २ ॥ मे० ॥ घडि घडि पल पल छिन छिन निस दिन । रटन लगी है तेरे नामकी ॥ ३ ॥ मे० ॥ राखूंगी आखुंमें सुरमें से चढके, जो पांउगी रजमें तेरे धामकी ४ मे ॥ ४ ॥ तप जप संजममें चित लावो, जेसे मिले राज शिववामकी ॥ ५ ॥ जैन धरम मानव नव पाके। करले न लाई आतम रामकी ॥ ६ ॥ मे० ॥ दास गुलावकी एहि अरज हे। सार करो मुऊ नामकी ॥ मे० ७ ॥ इति ॥

रागिणी गारा नैरवी

वस्तुगतेवस्तुनोलक्षण, गुरुगम विनानहीपावेरे। गुरुगमविन नहीपावेकोऊ, नटकत नरमावेरे॥ नवन आरिशे श्वानकुकस्या निजप्रतिबिंबनिहालेरे ॥ इतर रूपमनमाहि विचारी, महाशुध विस्तारेरे ॥ व० १ ॥ निरमलफिटक शिलाअंतरगत, करिवर लक्षपर ठाहिरे॥ दशनडुराय अधिक डुखपावे, द्वेषधरत दिलमांहिरे व० ॥ २ ॥ सश लेजाय सिंघकुं पकडे। कुवोदिठ दिखाईरे ॥ निरख हरितेजांणडुसरो। पड्यो कंप तिहां खाईरे ॥ व० ॥ ३ ॥ निजछायावेताल नरमधर ॥ नर तवाल चित मांहिरे ॥ रजु सर्प करि कोउ मानत॥ ज्योंलोंसमक्षत नांहिरे ॥ व० ॥ ४ ॥ नलनी न्रम

मर्कट मुठीजिम ॥ भ्रमवशअतिदुखपावेरे ॥ चिदा नंद चेतनगुरुगमविना, मृग त्रष्णाधरीधावेरे॥५॥इति

रागिणी भैरवी–ताल मध्यमान

वसोजी मेरे नेननमें महाराज, सामलि सूरत मोह नि मूरत ॥ तारण तरण जिहाज ॥व०॥ वानी सुधारस दरस ऊपन्यो ॥ करतां अगम अपार ॥व०॥ चेन विजय करजोडी वीनवे, चरण कमल सिरताज ॥व०॥इति॥

रागिणी गारा भैरवी

दीनके नाथ दयाल सवन की । तें काहेकु कृपा विसारीरे दीन० ॥ मे हुं दीन अनाथ जगत में, तूं साहिव उपकारीरे । दीन० । पण अपनेकी रीत निच हिये । दो संपद सुखकारीरे दी० ॥ दास चुनी सेव ककी अरजी । सुनिये प्रभु जसधारीरे ॥ दी०॥ इति

पुनः

प्रभु मोसे कवन वहाने वोलो, रैंन दिहा मानुं ध्यान तुमारा, अंतर दी पट खोलो ॥ प्र० ॥ हाल असांका तुजनु मालुम, जो खामि टुक जोलो ॥प्र०॥ आस पुरावो दासको स्वामी, झटपट सङ्ग मिला लो ॥ दास चुनी पायो रत्न अमोलक, वेर २ क्युं तोलो ॥

रागिणी भैरवी–ताल तेताल

भविकनरसेवोशांतिजिनन्द ॥ कञ्चन वरन मनो हरमुरती, दीपत तेजदिनन्द । १भ० ॥ पञ्चम चक्रध र सोलमजिनवर, विश्वसेननृपकुलचंद ॥ २ भ० ॥

जवडुख भंजन जन मनरंजन, लंछन मृग सुखक न्द ॥ ३ ज० ॥ गुनविलासपदपङ्कजभेटत ॥ पायोप रमानंद ॥ ४ ज० ॥ इति

राग़िणी भैरवीमे होली—ताल कवाली

मेरे जाई जुई गुलावरी ॥ आज प्रभु पूजनको हरख भयो ॥ एटेक ॥ केतकीचंपक मरुर्ड मोघरा ॥ फूलकी पगर भरावरी ॥ आज प्रभु० ॥ १ ॥ मुकट कुंरूल शिरछत्रविराजे ॥ आंगीशोहे जभावरे ॥ आ ज० २ ॥ संत सवे मिली भावना भावो ॥ मादल ताल मिलावरी ॥ आज ३ ॥ अनन्तनाथ जीके गुणगांउ ॥ लालगुलाल उमावरी । आज० ४ ॥ कर जोरी प्रभुआगे अरजी ॥ भवडुखसे छोमावरी ॥ आ० ५ आछोपोहोरहे नांम तुह्मारा ॥ ध्यानधरुं शुभभावरी ॥ आ० ६ आनन्द हरष वधाई उनको ॥ विनय सहित गुणगावरी ॥ आज० ७ ॥ इति

राग़िणी सिन्धभैरवी

कुण वन वीर समोसस्था मैतोसुणिहे श्रवनधुनि आजरी कुण ॥ जंगम तीरथ सुरतरु,जगनायक, श्री जिनराजरी ॥ १ कुण० ॥ गोतमगधर सारिषा, साथै एकादश गणधारी ॥ मुनिचक्रदसहसस्राथेभला,गुरु तारणतरणजिहाजरी ॥ २ कुण० ॥ शमव सरण रच ना रची, मिलचउसठसुरराजरी ॥ सूर नर विद्याधर मिली ॥ मिलचउविहसंघ समाजरी ॥ ३ कुण०॥ घ

णारे दीवशनी चावना ह्मारी, सफल फली सब आज री । चलो सखी विलॅवनकीजीये, वंदीजेश्रीजिनराज री ॥ ४ कुण० । जावजगति दिलमें घणी, सजि सा थै सामग्रीसाजरी ॥ हरखचंद रांणी चेलना ॥ साख्या निज आतमकाजरी ॥ ५ कूण० ॥ इति

रागिणी सिन्धु

आदिनाथ जिन प्यारा हो, तेरो दरशन आनन्दकारा १ ॥ नाजि राय मारुदेविके नंदा । तुम तारण संसारा ॥हो ते०॥ तुमरे गुणको पार न पावे, च जन करे जगसारा ॥हो ते०३॥ वरस दिवसने पारणे, स्वामी पीयोरस अपारा हो ते० ॥ ४ ईन्द्रचन्द्रनी आस्या पुरो । मेटो कष्ट हमारा, होते० ५ ॥ इति

रागिणी जैरवी

समक परी मोहे समक परी जगमाया सब कुंठी ज० ॥ १ ॥ आजकाल तुं कहा करै मूख, नांहि जरोसा दिन एक घरी ज० ॥ २ ॥ गाफिल छिन जर नांहि रहो तुम, सिर पर घुमें तेरे काल अरी ज० ॥ ३ ॥ चिदानंद ये वात हमारी प्यारे, जाणो हो नित्त दिल मांहि खरी ज० ॥ ४ ईति

पुन.

चितमें धरो प्यारे चितमें धरो ये सीख हमारी अव चितमे धरो, थोमासा जीवनां काज अरे नर, काहेकु छलपर पंच करो ये० ॥ १ ॥ कूम कपट पर

डोह करण तुम, अरे मन पर जव थाह जरो ॥ए०॥ ॥ २ ॥ चिदानंद जोए नहीं मानौ तो, जनम मरन जव डुखमें परो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति

## ताल दादरा

दोनुं दसतो में अगीया रचावो सखी, नयना हमारी प्रजुसेलगी ॥दोनु०॥ जालीकी अंगीया प्रजुकी रचावो ॥ मस्तक मुगट पहनावो सखी ॥ नय० १॥ चलो सखी वागोंमें जईये ॥ चुन २ कलियां चढावो सखी ॥ नय० २ ॥ चलो सखीजिनवंदन जईयें ॥ नृत्य करो सब मिलके सखी नय० ॥ ३ ॥ सांवरी मूरत खूब रची है, देखतही मन नीहारो सखी ॥ नय० ४ ॥ संवत उनीसे चऊदेकी साले, माघ वदि तीथ नवमी सखी ॥ नय० ॥ सुन्दर विजयजीकी एहिअरज है ॥ नित उठ चरण पखालो सखी ॥ नय० ६ ॥ इति

## रागिणी जैरवी

मेरो मन लागी रह्यो महावीर चरणमें जाय ॥ सिद्धारथके नन्दन एसे ॥ मातात्रिसला देवीमाय ॥ मे० १ ॥ जनमतही स्वामी मेरुकंपायो, संसयदीया है मिटाय ॥ मे० ॥ क्षत्रीकुंम स्वामि जनम लिया है, मुगत पावा पुरी जाय । मे० जो कोई ध्यावे स्वामी सो फल पावे, चंद किरत गुण गाय मे० ॥ इति

पुनः

प्रभु मेरी विनतभीअर धारो। तुम तारण तिहुं लोकके स्वामी। मोहे जरोसो तीहारो ॥ १ ॥ मोसे पतीत न श्रा जगमें कोई। मैं हेख्यो जग सारो ॥२॥ तुम प्रभु तारण पतीत ऊधारण । जवसागरथी तारो ॥ ३ ॥ जुल सेवककी चित्त न दींजे, अपनी और नीहारो ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

नाथ जये वैरागी हमारे ॥ कासे जाय कहुं मेरी सजनी । वीन अवगुन मोहे त्यागी ॥ हमा० ॥ परवस तुती जांय पमी है तुंहिं तुहि रटणा लागी॥ ह० ना० लाल विनोदी ईह रुपको नीरखत । वीर ह व्यथा तन जागी॥ ह० ना ॥ इति

पुन

सीतलनाथनुं स्तवन

तारिये मोहे शीतल स्वांमी ॥ शीतल स्वांमी अन्तर जांमी ॥ आंकडी ॥ काल अनादि पुदगलके संग, जटकत जयो हुं निकामी ॥ तारि० ॥ १ ॥ एसो न रहियो कोई थानक, मरण विनाको अंतरजामी ॥ २ ॥ ओर फीर सुक्षम वादर पुदगल ॥ परावरत कीयो सीरनामी ॥ ३ ॥ तारी० अधम उधारण विरुद तिहांरो, कृपा करी तारो जव्यजानी । जानुं

चंद कहे प्रभुजीकी सेवा, सिवसुख की है यही निशानी ॥ ४ ॥ तारी० इति

पुन

अध्यातम स्तवन.

क्योंकर भक्ति करुं प्रभु तेरी ॥ क्यों० ॥ काम क्रोध मद मान विषय रस, छोडत गेल न मेरी प्र० ॥ करम नचावत तिमहि नाचत, माया वस नट चेरी प्र० ॥ दृष्टि राग दृढबंधन बांध्यो, निकसत न लहे सेरी ॥ प्र० ॥ करत प्रसंशा सब मिल अपणी ॥ परनिंदा अधिकेरी ॥ कहत मान जिन भाव भगत विन, शिव गत होत न नेरी ॥ प्र० ॥ इति

पुनः

संसार नाम जिसका, जो सारा असार हैं, इस जगमें न कोई मेरा ॥ तेरा नांम सार है ॥ भवजल अगम अथाहरे इसका न पार है ॥ चारो गतिकी भवरां, पडती अपार है ॥ से० ॥ १ ॥ जिया देख डरा मेरारे, तुमसे नहीं छिपा ॥ तेरे हाथ मेरारे अवतो उधार है ॥ सं० ॥ तुम सिवाय देव मै, ध्याउं न दूसरा, मैंनेतो अपने दिलमें किया करार हैं ॥ स० ॥ ३ ॥ अव छोड सकल बातकुं तेरी शरन गही, जिनदास हाथ जोडके करता पुकार हे ॥ सं० ॥ ४ ॥

पुनः ( थियेटर )

मै अरज करुं, सूनो महाराज । पायो में चरण सरण राखोने प्रभुजी लाज ॥ सु० १ ॥ सुमति जिनन्दा मेरें । सुरत सुहानी तेरे । कुमति न आवे नेडे, महिमां कहांलौं देखो, सफल घमीहे आज ॥ सु० २ ॥ वैशाख मास जो आया । सहु लोग हरप पाया । रोग शोग डुख पुलाया । शुक्ल पक्ष देखो सोहे । पंचमी तिथि है आज ॥ सु० ३ ॥ नविन मंदिर ठाजे । जहां प्रभुजी विराजे । मानुं शशि सूरज लाजे । चलो सखी सब मिलि । प्रभुजीकुं पुजु आज ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिनन्दा प्रभु आज जुहारो । अष्टद्रव्य लेके आय ॥ पुजुं प्रभुजीके पाय । मनहिमे हरप अति नयोही मेरो ॥ सु० १ ॥ आयो में तुमारे पास । पुरो मेरी अभिलाप । दीन वन्धु दिनानाथ जगत उजियारो । नामिलेगो एसो टाव काज सुधारो ॥ सु० ॥ २ ॥ इति

पुन. ( ठुमरि )

नेमि जिन तुमरो दरस लागे प्यारोरे । दरस देख मन आनन्द आवे । पातिक हर गयो सारोरे ॥ ने० १ ॥ मे हुं दीन अनाथ प्रभुजी । नाथ गरिब नेवाज हो तुमहि । कृपा करी मोहे तारोरे ॥ने०२॥

सेवककी प्रभु एहि अरज है। भव सङ्कटसे निवारोरें ॥ ने० ३ ॥ इति

पुनः

सूरत एसी सांवरी। में जांउ वारि २। प्रभुजी एक अरज सुनो मोरी ॥ टेर० ॥ समुद्र विजेजीके नन्दन प्रभुजी, सेवा देवी माता जिके नयननको भये गुलजारी ॥ सु० १ ॥ राजुलको परनीजन आये। पशुयनको निरख रथ फेरके चले गये गिरनारी ॥ सु० २ ॥ नव भव प्रीत छिनमें तोरी। नेम राजुल मिल हुवे जब मुगतिके अधिकारी ॥ सु० ३ ॥ दास आस कर अरज करतु है, मेहर मोहे कीजे दरस मोहे दीजे। चरणणकी में जांउ वलिहारी ॥ सु० ४ ॥ इति

पुनः

सुमति जिन मुजरो हमारो प्रभु लीजेजी ॥ मेघ नृपति जीके नन्दन स्वामी मात सुमङ्गलाके प्यारो जी ॥ सु० १ ॥ औसो नर भव पायके प्राणि। नित नित वन्दन किजेजी ॥ सु० २ ॥ औसे जिनजीको पूजत प्राणी। भव भव पातिक छिजेजी ॥ सु० ३ ॥ दास तूमारो करत वीनति अजर अमर पद दीजे जी ॥ सु० ४ इति

पुनः

हजूर तुमसें कहुं मैं दिलकी वेजार पनमें जो

वीती वतियां । ह० टेर । न धीर तनमें खुसी न दिलमें वेहाल पनमें जराई ठतियां ॥ ह० १ ॥ सिद्धार्थ तिसला के नन्द सुनिये कृपाके सिंधु हेवी रस्वामी, संसार वनमें कीयो भ्रमन मे, चोरासि दलकी यह च्यार गतियां ॥ ह० २ ॥ कषाय कुमति कुकर्म मिलके दे मार च्यारु तरफसे घेरयो । सदासे इनकी वेजासही है मैं मेरे दमसे उपाधि अतियां॥ ॥ ह० ३ ॥ रही न वाकी विपतकी वातें न जानुं तुम क्या विशाल ज्ञानी, रहुं सरणमें निहाल कीजे अजैकी लागी चरनसै मतियां ॥ ह० ४ ॥

पुनः

साहिव तेरी वंदगी मैं त्रुलता नही, त्रुलता नही साहव विसरता नही ॥ सा० टेर ॥ अष्टादश दोष रहित देव है सहि औरदेव अन्यदेव मानता नही ॥ मा० सा० १ ॥ मुनि है निग्रथ सो तौ गुरु है सहि और गुरु जैसधारी मानता नही ॥सा०२॥ जीव दया सुरू सो तो शास्त्र है सहि और शास्त्र आस्या रुपी मानता नही ॥ सा० ॥ ३ दान शियल तप जप धर्म है सहि और धर्म विषय मानता नही । सा० ४ ॥ मुक्ति रुपी सिद्ध शिला वांठता सहि संसार डुखजाल रूपी मेटीए सहि ॥ सा० ५ ॥ कहत मुनि खेत माल तारिये मोहि आवाग मन मोरी मेटिये सहि ॥ सा० ६ इति

पुनः

दीले नादानकुं समझाया चायगें। हालमें हमकुं जगति जली हुवे। सुज शीयल संजमकुं सजवाय लायेगें॥ दी०॥ अष्टकर्मोंकी प्रकृतिका सञ्चय होए जाहिल। वंध वा उदय उदीरण सत्तामें तूं गाफिल। महाराजा मोहकी गति जानि सें उलझा सामिल। सागर कोमा कोमी सतरे काठीया जव सामिल। चउनाणी अनगार जिनोके हीये इस धाईल। असे कर्म मोह मदन्नकुं जीतावी चायेगे॥ दिल० २॥ इति

पुनः

आवो नेम रह जावो सदन, हमको न सतावोरे। आ० (टेर॥ व्याहन आए सजके सजान, पशुवनकी सुन देख रुदन। गिरनारी चले निज छांड वतन् तकसीर वतावोरे॥ ये० १॥ पूनम जैसें चंद वदन, मोहन मुरति श्याम वरण, मेरी निकी लागी नव जवकी लगन, मत छेह दिखावोरे॥ २॥ ये रिहम्० ॥ संजम दूती लागि श्रवन्, प्रजुको सिखाए नीके फिरन्। प्रजु तारण नाम तुह्मारो तरण। रथ फेरिन जावोरे येरिर० ३॥ कपूर कहे प्रजुजीके चरन् राजुल मन वेराग धरण लेउ दोम नेमि जिनजीकी सरण, शिवपूरतो दिखावोरे॥ येरिशि० ४॥ इति

पुन. ( पहाडी )

कधी प्रभु पदमे मन लाया तो होता, अरे निरगुनका गुण गाया तो होता। पडां है बेखवर मायाके फंदमें, जगतजंजालसुं बजाया तो होता॥ जक० १॥ अब अवसर आमिला, टुक सोच प्यारे, आतम हितकार प्रभु ध्याया तो होता॥क०२॥ तुं है मनमोहनके त्रिशलानंद प्यारा। जिन सेवामें सुख पाया तो होता, पुरायो आश चुनीकी प्रभुजी, दिल भर दरस दिखलाया तो होता॥ क० ३॥ इति

पुनः

शांति वदनकज देख नैन मधुकर मन लीनोरे॥ भलाम० टेर॥ श्रीजिनके मकरंद वैन। विरमी भव दुरगन्ध रैंण शिवपुरके सदासुख कंद दैन। समकितरस भीनोरे॥ भ० १ कामित पूरण काम धैंन। मद मोहके चूरण ठांम फेन, लहे मनको अली आराम चैंन, गुंजै अति झीनोरे॥ भ० २॥ कपूर कहे जिनपदका अैन। उरधारो भवि तारलेंन। होय मुक्ति सेझ पर सार सैंन। आगम कह दीनोरे॥ भला॥ इति

पुनः

दिवाना तेरे दरसका यार मै हुं। जो रखता हुं तुझसे सरोकार मे हुं॥ दि०॥ तेरा ध्यान रहता हे हरदम् मुझको। टुक एक महर कीजो लाचार

में हुं ॥ दि० ॥ दया नाव धारो प्रजु चरणसे लगा लो खवर लोगे मेरा गुणेगार में हुं । दि० ॥ दरसवे गी दिजीये दया कर चुन्नीको, जगन्नाथ तुम हो, तावेदार में हुं ॥ दि० ॥ इति ॥

पुनः

ध्यानमें जिनके सदा लयलीन होना चाहिये, ज्ञान गुरु ज्ञानीसे ले परवीन होना चाहिये ॥ राह सञमका पकम कल्यानकी सूरत मिले, काल गफलतमे सजन्, नाहक नखोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ धर्मकी खेती किया चाहे जमींकुं साफ रख वीज समकितको हृदयमें सच्चेसे वोना चाहिये ॥ ध्या० ॥ कामना मनकी सफल आनन्दसे पूरन नई, अवतो समता सेजऊपर सुखसे सोना चाहिये । दास चुन्नी अपने घर आंगनमे फूलेगा कलप । नव थिति पकनेसें मुक्ति फल सलोना चाहिये ॥ ध्या० ॥इति॥

पुनः ( ठुमरि )

श्रीआदिनाथजीका देख दरश डुविधा मोरी मिट गईरे ॥ आज डुवि ॥ आनंद आज नयो मेरो मन ॥ सिव सुख चाहतहुं प्रजु हाथन ॥ जिन की मुरत चंदनसे तनमनसे लपट गइरे ॥ आज डुवि० ॥ १ ॥ अष्टद्रव्य ले पूजन आये वीतराग के दरशन पाए जिनवांनी कांनोंसे सुनी डुरगत मोरी कट गइरे ॥ आ० ॥ २ ॥ काल अनादि मै प्रजु फिरी

यो, कारजएक मेरोनासरीयो, अव में तेरो दरशन पायो कुमति मोरी हटगईरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जवलग मुक्तन आवैं नेडे, तवग जक्तिवसौ उर मेरे, आतम सुरू समकित धरकेशिव रमणी वर लइरे॥आ०४॥इति

पुनः ( खाम्वाज )

जिनंदकी मैं वारी ठवि प्यारी, वारी जाउं वार हजारी ॥ जि० ॥ वदन ठवि मांनुचंद शरदसी, मेटो अशुज अंधियारी ॥ जि० ॥ १ ॥ निरख चकोरी हरप जरानी, नैनन मङ्गल कारी ॥ जि० ॥ २ ॥ चुन्नी तृप्त होत दरसनसे, आसा पूरो हमारी ॥

पुनः

एहाल अपना कहूं मैं कासे, सजन विना जर जर आवे ठतिया ॥ ए० ॥ न ताव तनमें न चयन दिलको विरहका मारा वेहाल मतिया ॥ एं० ॥ न कोई ऐसा हकीम देखूं जो मेरे दिलको करार आवै, सखी खजनका खवर जो पाउं, तो लिख लिख पठाउं पतिया ॥ ए० ॥ २॥ जल विन मीन क्योंकर जीवे, अरज इतना विचार देखो, एजीव जीवन पिया दरश विन, कटैगा कैसे अन्धेरी रतियां ॥ ए० ॥ कपटके पट खोल आए सजन सखी गये डुख जनम जनम कें। चुन्नी निरुपम दरसकै आगे कहूं मैं अव क्याअनुठी वतियां ॥ ए० ॥ इति ॥

## श्री पंच तीर्थ जिन स्तुति.

नृपतनयेवर हे मन माऊे. ए राह.

श्री जिनराज सदा सुखकारी,दास नमे शिर न मनकरी
तुम शरणांगत आव्यां वालक, तारो हे प्रभु मेहर करी,
आदि जिनवरा, अजित प्रभु खरा,
शांतिनाथजी, शांति करो त्वरा,
पार्श्वनाथने, वीर जीनवरा,
वालमित्रनें, साह्य करो त्वरा,
जिनवरजी, करुं अरजी—श्री जीनराज. १
तुमे दया करी, अम पाप परहरी,
शिववधु प्रभू, आपजो खरी,
तुम विना विजो, देवठे वृथा,
जाणी एम अमे, ठोडीये मिथ्या.
शिवरमणी, मनहरणी—श्री जिनराज० २
नगरमां रही, अर्ज करे सही,
तारक तुमविना, वीजो कोई नही,
सकल संघना, कष्ट कापजो,
मनसुखलालने, मग्न राखजो,
सुख करजी दुःख हरजी—श्री जिनराज.३

## श्री आदिनाथनुं स्तवन.

आदिजिनेश्वर—अर्ज स्विकारो, कर ग्रही सेवकने प्रभु तारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥१॥ प्रथम नरेश्वर,— प्रथम जिनेश्वर, प्रथम युगल तुमे धर्मनिवार्यो ॥

आदिजिनेश्वर० ॥ २ ॥ आजनी आंगी—अजब बनी छे ॥ सुंदर मुख शोभे प्रभु सारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ३ ॥ रोहिणी पतिथी—क्रोटी गुणो प्रभु वदन आनंदी दिसेछे तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ४ ॥ मृगपतिथी पण अधिक गुणोछे, लंक कटीनो प्रभुजी तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ५ ॥ नाथ निरंजन— भव दुःखभंजन, भवो भव होजो शरण तुमारो ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ६ ॥ युगम् भाव स्तवनावली करवा, बालमित्रनी बुद्धिवधारां ॥ आदिजिनेश्वर० ॥ ७ ॥

श्रीसंभवनाथजिनुं स्तवन ।

त्रिताल चोपाइ—प्रभु पासनुं मुखडुं ॥

संभवजिनजीनु मुखडुं शोहे, नयणा देखी जग सहु मोहे रोहिणीपतिसम वदन विशाल, तस अरूाकारे दीसे भाल, कांति कनकसरीखी सारी, इंद्र चंद्ररूप जायहारी,

सावथ्थीमां हतो दूकाल, प्रभू जनमतां थयो सुगाल, धान्यनां तिहां संभव थाय, द्रव्य संभवथी नयरी साहाय. फल फूल संभवथया सार, तेथी वरत्यो त्यां जयजयकार, राय जितारी वीचारी आम, संभवथी पाड्युं संभव नाम, एवा संभव करजो अमने, बालमित्र अरज करे तुमने; अहमदनगरमां रहेतां उल्हास, मुनि मनसुखनी पूरोआस ।

श्री अभिनन्दन जिन स्तवन ।

गजल, आज आवी राज हजुरमां ए राह ।

अभिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शनें थइ सु
ज मती; एक दुष्ट कुलटा छे सही, पूर्व भवनु वेर
काढ्युं अही; अहोनिश मारे पाछलपडी, मतीभ्रष्ट
कीधी मारी अति ॥१॥ एवी दुष्ट छे जे कुमती,जस
सोवते होय दुर्गति । ते दुष्टा दुर निवारिनें, आपो
अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमां मन मगन
थइ, बालमित्र अति आनन्दथी, मांगे मुखें थी एम
कही, आपो अमोने शिवगती । ३

श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलवेलो—ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो भवाब्धिथी सुमति जिने
श्वर तारो । नयरी कोशल्या धन तुज धरणी, जन्म्यो
सुमति जिन प्यारो । भवा० १ कुल दीपक मेघरथ
राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥२॥ मङ्गला माता मङ्ग
ल उदरी,प्रसवे सुमति जिन सारो । भवा ॥३॥शशी
सम सोहे वदन प्रभुनुं, क्रौंच लंछन हितकारो । भ.
॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवा
रो ॥भ.५॥ आप हजूरे लेजो अमने, छुटे आजनमा
रो । भ.६॥ बालमित्रना प्यारा प्रभुजी, मनसुखदास
तुमारो । भ ॥ ७ ॥

### श्रीपद्म प्रभु स्तवन

होरीनी राह सांवरेसे कहियो–ए राह ॥

प्रभु पद्म प्रभ जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा माता उदरे आव्या, चउद सूपन गुणसारा; लंछन शोहे रक्त कमलनुं, नयरी कोसंबी वशनारा, प्रभु जीतो मोहन गारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥१॥ द्वादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी ग्रह सारा, कुल इक्ष्वाकु दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शणगारा, प्रभु सब जन हितकारा॥प्रभु पद्मप्रभ जिन प्यारा ॥२॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण तुम सारा; वालमित्र करजोड़ी विनवे, पावे भवोदधि पारा; भव भव शरण तुमारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥ ३ ॥

### श्रीसुपार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

वनझारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रभु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगारा, ए टेक॥वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथवीमन उल्हाशीजि; रायप्रतिष्ठित कुल श्रगारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लद्वादशी सार, जन्म्या त्रीजगदाधारजी, तुलराशीनां धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ २ ॥ मध्यम ग्रैवेयकथी आव्या, वान कचनसम सोहाव्याजी ॥ उंचा द्विशतधनुष छे सारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ३ ॥ त्रि

## श्री अभिनन्दन जिन स्तवन ।

गजल, आज आवी राज हजुरमां ए राह ।

अभिनन्दन आज आनन्दमां, तुम दर्शनें थइ सुभ मती; एक डुष्ट कुलटा छे सही, पूर्व भवनु वेर काढ्युं अही; अहोनिश मारे पाछलपडी, मतीभ्रष्ट कीधी मारी अति ॥१॥ एवी डुष्ट छे जे कुमती,जस सोबते होय डुर्गति । ते डुष्टा डुर निवारिनें, आपो अमोने सुमती । अ ॥२॥ रही नगरमां मन मगन थइ, बालमित्र अति आनन्दथी, मांगे मुखें थी एम कही, आपो अमोने शिवगती । ३

## श्रीसुमतिनाथजिनु स्तवन ।

अवर मदन अलबेलो—ए राहमां ।

सुमति जिनेश्वर तारो भवाब्धिथी सुमति जिनेश्वर तारो । नयरी कोशल्या धन तुज धरणी, जन्म्यो सुमति जिन प्यारो । भवा० १ कुल दीपक मेघरथ राजाना, त्रण जगत्रने तारो ॥२॥ मङ्गला माता मङ्गल उदरी,प्रसवे सुमति जिन सारो । भवा ॥३॥शशी सम सोहे वदन प्रभुनुं, क्रौच लंछन हितकारो । भ. ॥४॥ सुमती दाता समकित आपो, कुमती दूर निवारो ॥भ.५॥ आप हजूरे लेजो अमने, छुटे आजनमारो । भ.६॥ बालमित्रना प्यारा प्रभुजी, मनसुखदास तुमारो । भ. ॥ ७ ॥

### श्रीपदम प्रभु स्तवन

होरीनी राह सांवरेसे कहियो—ए राह ॥

प्रभु पद्म प्रभ जिन प्यारा ॥ ए टेक ॥ सुशिमा माता उदरे आव्या, चउद सूपन गुणसारा; लंछन शोहे रक्त कमलनुं, नयरी कोसंबी वशनारा, प्रभु जीतो मोहन गारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥१॥ द्वादशी कार्तिक वदनी सोहे, जनम तिथी ग्रह सारा; कुल इक्ष्वाकुं दिणयर प्रगट्या, श्रीधरकुल शणगारा, प्रभु सब जन हितकारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिन प्यारा ॥ २ ॥ अहमदनगरे आज आनन्दे, गावे गुण तुम सारा; बालमित्र करजोड़ी विनवे, पावे भवोदधि पारा; भव भव शरण तुमारा ॥ प्रभु पद्म प्रभ जिनप्यारा ॥ ३ ॥

### श्रीसुपार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

वनजारानी राह ।

सुपार्श्वजिनन्दप्रभु प्यारा, मुज स्वामी मोहनगारा, ए टेक ॥ वणारशीनां तुमे वाशी, माता पृथवीमन उल्हाशीजि; रायप्रतिष्ठित कुल श्रगारा, मुज स्वामी मोहनगरा ॥ १ ॥ जेष्ठ शुक्लद्वादशी सार, जन्म्या त्रीजगदाधारजी, तुलराशींनां धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ २ ॥ मध्यम ग्रैवेयकथी आव्या, वान कंचनसम सोहाव्याजी ॥ उंचा द्विशतधनुष छे सारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ३ ॥ त्रि

शलाख पुरवनु आयु, दिनकरथी तेज सवायुंजी, छो स्वस्तिकलंछन धरनारा, मुज स्वामी मोहनगारा ॥ ४ ॥ प्रज्ञु तुम दरशन मनच्चावे, मुनिमनसुख तुम गुणगावेजी ॥ छोवालमित्रना प्यारा ॥ मुज स्वामी मोहन गारा ॥ ५ ॥

श्रीचन्द्रप्रज्ञुजीनुं स्तवन ॥

राग माढ—मेवाडो मली—ए राह ॥

चंद प्रज्ञु चित चोरी लीधुं,देखाडी दीदार ॥मन मोहाव्युं मांहरु. मने देखाकी दीदार॥ चन्द्रपूरी न यरी विषे, महासेन राजान ॥ लक्ष्मणा माता उदरे, प्रज्ञु आव्या पुरुष प्रधानरे म० ॥ १ ॥ लंछन शोजे चन्द्रनुं कांई गुण अनन्त प्रधान ॥ दर्शन करतां आपजो, कांई शिवरमणीनुं दानरे म० ॥ २ ॥ नयणा कमल कचोलडा कांई, नाशा शुक समसार ॥ सम्य क्त दृष्टि जीवने प्रज्ञु, ताहरो छे आधाररे॥म०॥३॥चि तमां लागी चटपटी प्रज्ञु, लटपट मन लोजाय ॥ खट पट शिव वधुने माटे, आवे छै मुजदायरे॥म० ॥ ४ ॥ एकला आप वरीने वेगा, करीये सेवक सार ॥ वाल मित्र शुज्ञ वन्दन करतां, विनवे वारंवाररे म० ॥५॥

श्रीसुविधिनाथ स्तवन ॥

छे अधर सुधारस पान चतुर नर प्रेम थकी करीये॥

ए राह ॥

नवरंगी आंगी आज दीलमां धरीये, रस अमृ

त नक्ती पान चतुर नर प्रेम थकी करिये ॥ जइ जिन मंदिरमां आंगी नव नव रचिये,पल पल वारे जिन नाम हृदयमां धरीये, तो मोक्षालयनु द्वार सत्वरे वरीये ॥ रस अ० ॥ १ ॥ रुम ऋुम ठुम ठू म पग थकीनृत्यने करीये, त्यां चैत्यालयमां गीत ज्ञान आदरीये, तो नव सागरनो पार शीघ्रथी त रीये ॥ रस अ० ॥ रही अहमदनगरे वालमित्र गुण गाइयें, प्रनु नक्ती करतां अनन्त सुखने पाइये, तो सुविधि जिनेश्वर नजतां सुखीया थईये रस० ॥ ३

शीतल नाथ स्तवन ।

शीतलनाथनी शीतलता नारी, दरशन करतां जाय कषायहारी॥कमल सम नेत्र तेज नारी । शीतलना नी ॥ १ ॥ शशिसम वदन शीतल कारी, कटी केश री लंकारी, रुपे इन्द्र चन्द्र जाये वारी । शीतल नाथनी ॥२॥ कांतिकेवि दिशे कामणगारी ॥ मुरती प्रनुजीनी मनोहारी ॥ जगतवत्सल प्रनु जयकारी॥ शीतलनाथनी ॥ ३ ॥ नवी जीवने शीतलकारी, अ रजी मनसुखनी स्वीकारी ॥ वालमित्रने लेजो तारी॥ शीतलनाथनी ॥ ४ ॥

श्रेयांसजिनस्तवन ।

माहुं लगाडो तो मारा सम छे सहुंनीरे—ए राग। श्रेयांस प्रनुजी तुमें सहाय करोमारीरे, आपणों किं कर जाणी उतारो नवपारीरे, श्रे० ॥१॥ विष्णु पि

ता कुलें आव्या विष्णु माता तारीरे ॥ जगतवच्छल प्रज्ञु तुं बे आनन्दकारीरे ॥ श्रे० ॥ २ ॥ खग्गीलंबन प्रज्ञु सोहे सुखकारीरे, करुं एक अरजी स्वीकारो प्रज्ञु मारीरे, ॥ श्रे०॥३॥ डुष्ट एक रामा मारी, पाबल पमी जारीरे ॥ लीधुं लुंटी द्रव्य मने वहु मार मारीरे; ॥श्रे० ४॥ लोकोमां लज्जावी मने कस्यो बे खुवारीरे, नामे बे कुमती तेने काढो प्रज्ञु न्यारीरे; श्रे०॥ ५ ॥ अहमद नगरे रही करे अर्ज सारीरे; वालमित्र गाय बे आनन्द हितकारीरे । श्रे० ॥ ६ ॥

श्रीवासुपुज्य स्वामीनुं स्तवन ।

गमका तराना ए राह ।

वासुपुज्य विलाशी, चंपाना वाशी, पुरो अमारि आश ॥ करुं पुजाहुं खाशी ॥ केशरघासी, पुष्प सुवासी, पुरो । ए टेक. ॥

चैत्यवदंन करुं चित्तथी प्रज्ञुजी, गावुं गीतारसाल ॥ एम पूजा करी विनती करुं हुं, आपो मोक्ष दयाल । दियो कर्मने फांसी, काढो कुवाशी, जेम जाय नाशी । पू ॥१॥ संसार घोर महो दधिथी, काढो अमने वहार ॥ स्वारथनां सहु कोइ सगा बे, मात पिता परिवार, वालमित्र उल्लाशी, विनय विलाशी अर्जि खाशी. पुरो० ॥ २ ॥

विमल नाथ स्तवन ।

पूजो देव करो तुम सेव कुकर्मो तन न न न न त्रुटे।

जगतमां सार रुप एक जैन धरम, ऐसा जाण मि थ्यात्वकुं छोडेगें हम, तनका क्या नरोसा निकल जावैगा दम। पूजो० ॥ १ ॥ नजो नजो प्रनुकुं क्या लगता हे दाम॥सबसे आगे प्रनुका हम लेवेगें नाम सेवे जो विमल नाथ होवेगा काम। पूजो देव०२ बालमित्र पूजे चन्दन केशरचंग, चालोश्पूजो प्रनुजी के नव अंग, कहे करजोडी मनसुख मनरङ्ग। पूजो देव० ॥ ३ ॥

वैरागीपद

छवि छवि वदन निहार निहार ॥ छ० ॥ प्रोखि तपति अगमा गम कीनो विसरी विगत विहार ॥ छ० ॥ १ ॥ गये अनादि कालमे ऐसे दीठी न हिय दिदार, निरुपम निजर निहार निहारत, रंजिय रूप रिऊ वार ॥ छ० ॥ २ ॥ अंतर एक महूरत अंतर प्यार करी अणगार, लीने ज्ञान सारपद नीतर, चे तनता नरतार ॥ छ० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीअनन्तनाथजिनुं स्तवन।

नेखरे उतारो राजा नरथरी॥ ए राह। अनन्त प्र नु मुज तारजो० ए टेक। अवगुण मुजमां अनन्त छे, तुम गुण अनंत अनंतजी; मोहराय वश हुं पक्यो तुमें तो कीधो तस अंतजी॥१॥अनंत॥ हुं रागी घणो लालची, तुमें तो थया वीत रागजी। राग द्वेष मु ज टालीये, चार कषायनो त्यागजी। अनंत॥२॥ पाप

अनन्ता में कर्या, कुम कपटनो हुं गेहजी॥ आ पापी नै उद्धारशो॥ छो तारक निसंदेहजी। अनंत ॥३॥ तुम सम तारक कोई नही, मुज सम पापी न अन्यजी॥ करुणा नजर हवे कीजीये, तो थाउं धन्य धन्यजी॥अ.॥ ४॥ नवनव नटक्यो तुम विना, मलीया हवे नगवंतजी, वालमित्रने दीजिये, अक्षय ज्ञान अनंतजी। अ.॥ ५॥

श्रीधर्मनाथनुं स्तवन।

प्रभु धर्म नाथ (२) तुमें धर्मतणा छो दाता, तुम विना अनंत नव रखम्यो पण मली नहीं कांई शाता प्र०॥ १॥ हवे तुम छेडो (२) पकड्योछे करो एक काम, मम घरमां जे तस्वर छे ते काढो तमे तमाम प्र.॥ २॥ महा मेहेनतथी (२) हुं मेलवुं द्रव्य अपार॥ चार चोर लुटी करी मारे छे मने वहुं मार, प्र.॥ ३॥ तेनि पांच नम्नी (२) छे दुष्ट कृत्य करनारी, ते तस नातनी साथे मली वहु पाप करावे नारी प्र॥ ४॥ मम मित्र आवे (२) मुज घर मांहे कोई वार, नात नम्नी नेगा थई काढे छे तेने वाहार प्र.॥ ५॥मुज घर केरो (२) में अश्व महामद मातो ते पण तेणें कबजकर्यो छे कहुं केटली वातो प्र.॥ ६॥ दरशन करतां (२) में ओलखीया नगवांन, वालमित्रनी अरज स्वीकारो देजो अक्षय ज्ञान प्र.॥ ६॥

### शांतिनाथ जिन स्तवन ।

प्यारी वेनी शोक तमें समावजो–ए राह ॥ प्रभु शांतिनाथने समरजो, जिनराज प्रभुनुं ध्यान सदा तुमें मनथी, धारजो ॥ शांतिनाथ ध्यावो, सुखी थावो, ल्यो लावो, श्रावक कुलमांआवी रुडा गुणथी गाज जो ॥ प्र. ॥ १ ॥ पाप त्यजजो प्रभु भजजो अरिदम जो॥कर्म रिपुने मारी जलदी शिवमां जावजो प्र. २ गुण गावे, भगति भावें वहु ध्यावे, अहमदनगरना वालमित्रने प्रेमे पालजो प्र ॥ ३ ॥

### श्रीकुंथुनाथ जिन स्तवन ।

मुखथीरे मांगु प्रभु तुम पाशे, आपो मोक्ष रतन, शिवरमणी नहीं छोरु प्रभुजी नीश्चे एह वचन; मोक्ष वधु नहि मुकुं प्रभुजी निश्चे एह वचन शिव वधु वरवा, भोजने करवा, मनमां राखुं मान, भव स्थिति पाके, समकित सांखे, आवीस करतो गमन। शिव० ॥ १ ॥ क्रोध तजवजो, मान हरवजो मायाने मारजो मार; लोभ न छारो भव भव टालो; मुज पर राखी मन। शिव० ॥ २ ॥ सुखने करजो दुखने हरजो लेजो आप हजूर; कुन्थु जिनवरजी वालमित्र अरजी, स्वीकारो थाउं मगन। शिव० ३

### श्रीअरनाथजीनुं स्तवन ।

जैन धर्म हृदय धरो छे चिंतामणी, मारो कर्म करो छार वरो शिवरमणी, ए टेक। दुर देशांतर थी तुमें

आव्या ॥ सोदागर गुणवंत; जावुं छे हजी दुर तुमारे पकमो कोईक सन्त । वरो ॥१॥ जनम जरा मृत्यु तणा, जय ते अपरम्पार; नरक निगोद थी नमतां २ पाम्यो मनुष्यअवतार । वरो. ॥२॥ धर्मरुपी द्रव्य मे लवी, पहोंचो शिवपूर वास; मनुष्य जव पामी करी, तुमें एवा करीने प्रयास. ॥३॥वरो॥पांचे इंद्री वश करो, मारो चार कषाय; त्रण दलालनी सङ्गत थी, व्यापार ते वहु थाय ॥वरो॥४॥ श्रीअरनाथ कृपा करी, देजो मोक्ष आवास ॥ वालमित्रनी वीनती, प्रजु पुरो म ननी आश।वरो ॥ ५ ॥ इति ॥

मल्लीनाथजीनुं स्तवन ।

रागपरज ॥ पानीने गमका मचाया॥एराह॥मल्ली जिनेश्वरवन्दिये।ए टेक॥ मिथुला नयरी अति शोनती, कुम्न नरेश्वर राय २ ।राणी प्रजावती उदरे, मल्लीनाथ प्रजु आय । म. ॥ १ ॥ पूर्व जवे माया करी तेथी लाग्या वहु पाप २ ; स्त्रीपणे आवीने ऊपना एवो मायानो छे व्याप । म. २ छमित्रने प्रतिवोध दों, कीधो वहु उपकार २ । तेम मने प्रतिवोधजो, मारी अरज स्वीकार । म. ३ एवुं जाणीने अमे त्यागशुं, माया कपट विकार २ । वालमित्रनी विनती अवधारो ते श्रीकार । म. ४

श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

कुंवरीकुंवर मारा लाकर्का ए राह मुनिसुव्रत

जिन सांभलो, शी कहुं डुःखनीरे वात, पापना पिंम समान हुं, तुमें छो जग तात । मुनी. ॥ १ ॥ बादर सुक्ष्म नीगोदमां, भम्यो अनंतो काल, । छेदन भेदना वेदना॥ थकी काढो दयाल । मुनी. २ बीती चउरिंद्री जीवमां, भम्यो काल असंख्य, जलचर थलचर खेचरे, भम्यो संख्यासंख्य। मुनी. ॥ ३ ॥ तेम पंचेंद्रि तीर्यन्चमा। कीधा पाप अपार । तेथी वली २ नरक मां । उपज्यो बहु वार । मुनी ॥ ४ ॥ साते नरक मां वली २, ऊपनो वार अनंत, परमां धामीनी वेदना, पापी जीव सहंत । मुनी. ॥ ५ ॥ पकमी २ पछाफता, देतां उपर मार, करवत थी शीर वेरता, मारे वली तरवार । मुनी ॥६॥ एम अनंती, वेदना,सही मे वार अनन्त; पण आ पापी जीवना, डुखनो आव्यो न अन्त । मुनी ॥ ७ ॥जगवछल जिनराजजी, हवे आव्यो तुम पास, छोडुं नही हवे छेमलो, तुजमां छे मुज आश । मुनी. ॥ ८ ॥ जीव अनन्ता ऊधर्या, देइ अक्षय ज्ञान, बालमित्रनी विनती, चित धरजो भगवान । मुनी. ॥ ए ॥

श्रीनमिनाथजिनुं स्तवन ।

दशा आ शी थइ मारी–ए राह । मोहनगारी, मनोहारी, शोभा नमीनाथनी भारी॥ मस्तक मुकुट मणीं तणी, कांति अतिचलकंत॥भाल स्थल पण ऊलकतुं, कुंमल थी उल्लसंत, सकल अंगे शोभाकारी,

ठवि देखी जाउ वारी । मो. ॥ १ ॥ आङ्गी चकी ज कावनी ॥ हीरामणि झलकंत, मुख ठवि कोटि चन्द्र मां॥ नयणा अति विकसंत, जगत शोजानी हरनारी, देखी वंदे ठे नरनारी । मो. २ समकीत दे दातार तुं, देतुं अक्षय ज्ञान, पद २ ताहरी वंदना, श्रीपति श्रीजगवान; वालमित्र जक्ति तारी, सकल सुखनीठे देनारी । मो. ॥ ३ ॥

श्रीनेमनाथजी स्तवन ।

प्यारा नेम मानो, नहीं पाठा आवो, दीन दयाल कृपा करी आवो; लियो २ संसारनो, लाब्हो, नहीं पाठा आवो । टेक ॥ (राजुल)—तुम विन आ संसा रमां॥ अवर न को आधार, आमी आवी उजी रहुं, क्यां जाशो आवार । (नेमनाथ)—सारथी चाल नहीं ऊजुं रहेवायठे, (राजुल)—परणया विना जोऊं केम जवाय ठे । प्यारा ॥ १ ॥

कर ग्रहीने जले पठी जाजो, मानो मानो जादव पति जासो। नहीं० (नेमनाथ)—अष्ट जवांतर हुं रह्यो, तुज साथे सुण नार; नवमे जव तुमे हवे, आवो अ मारी लार; (राजुल)—मुजथी साथे पण हवे अवाय ठे, वाल मित्र मन राजी बहु थाय ठे । प्यारा. ॥२॥

श्रीपार्श्वनाथजी स्तवन,

प्रञ्जु पुरो मारी आस. ॥ एटेक ॥ वसों नयरी वनार सी वास॥ त्रेवीसमा जिनश्री पास॥ अहि लंठन धरी

उल्लासरे. प्रभु० ॥१॥ वाह्यः वदन तुमारुं पास ॥ करे दिनकर सम उजास॥तुम दर्शनथी पापनो नासरे॥प्रभु० २ कर्यां चोरांसी प्रवास ॥ नमी आव्यो हवे तुम पास॥ हुं आप चरणनो दासरे. प्रभु० ॥३॥ क्रोध मान मोहनो त्रास ॥ वली लोभे कीधो वास॥ कर जोमी करुं अरदासरे प्रभु० ॥४॥ सह्यां नर्क निगोदनां त्रास, करोक्रूर कर्मनो नास, हवे आपो मोक्ष आवासरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ वालमित्रनी अरजी खास, कहे मनसुख मन उल्लास.हुं पास प्रभुनो दासरे.प्रभु०६

श्रीमहावीर स्वामीनो स्तवन ।

जपती प्रीतमनी जपमाल ए राह करतां जिनवरना गुणग्राम पूजा करूं बहुसारी । पूजा करतां वहु प्यारी ॥भक्ती भाव थकी मेंधारी॥वरसूं प्रेमथी शिवसुन्दरी नारी । करतां ॥ टेक ॥ चार अने चोराशीना, चक्रे चढयो बहूवार । कूप अरट सम भ्रमणनो ॥ कदीयें न पाम्योपार । मलिया महावीर उपगारी,तसआण शिरधारी॥वरसूं ॥१॥ मनमहारूं लागी रह्युं॥ सुंदरी तारी पास । तुज रूप नयणें निरखवा ॥ मनमां बहू उल्लास । भवोभव सेवना सारी भेटवाभक्ति ठे भारी । वरसुं ॥२॥ नार कुमती यें भोलव्यों॥ प्रीत थी पारावर । ये नारीना सङ्गमा ॥ कांइये नदीगेसार । कुमती न ठारी नारी॥ तेथी गयोहुं हारी । वरसुं ॥३॥ तुज सम प्रियआजगतमां ॥ अव

र न को देखाय । जिन दरशन करतां अहीं मनरु
बहु हरषाय । देखतां तुज देदारी॥धनीश हुं गेहलो
चारी । वरसुं ॥ ४ ॥ गुण गातां महावीरना ॥ टलशे
कुमती कुनार । मनसुख अने बालमित्रने ॥ मलशे
शिवपूरी सार । नंदन वन मोझारी ॥ विनती करे क
रारी । वरसुं ॥ ५ ॥

॥ मुंछाला महावीर स्तवन ॥

॥ रागणी केरवा ॥

मारो मुंछालो महावीर ॥ मा ॥ वीरसर्वमां धीर
वीर तुं ॥ मुं ॥ देरामा राजायें आवी, मुंछे नाख्यो
हाथ ॥ अभिमानी राजाने शिक्षा, दिधि तें जगना
थ ॥ १ ॥ मुं० ॥ हाथ नाखतां मुंछो तुटी ॥ पडी
देरासर मांय ॥ अभिमानी राजा त्यां नमीयो,
ए अचरिज मनमाय ॥ २ ॥ मुं०॥ ते दिनथी जग
मां विख्यातो, मूंछालो महावीर ॥ घाणेरावनां डूंग
रमाहें, वेठो साहस धीर ॥३॥ मुं ॥ एकलडुं देहेरुं
देखिने, मुगले कीधी रीस ॥ देरुं पाडवा सुभट सी
पाई आव्या ते दस वीस ॥४॥ मुं ॥ तुज आणा
धारी योगणीयो, करवा लागी युध्ध ॥ त्रसुल तणा
प्रहारें मार्या, नाठा तेह अबुध्ध ॥ ५ ॥ मुं ॥ मुंछ
त्रूटतां पाणी राख्युं, देख्याड्या जो हाथ ॥ तारण
तरण छे विरुद तुम्हारुं, शिवपुरनो छे साथ ॥ ६ ॥
मुं ॥ घाणेराव स्वामीने भेट्या, मुंछालो महावीर ॥

अक्षयज्ञान सेवक इम जंपे, जयजय श्री महावीर ॥ ७ ॥ मुं ॥ इति ॥

रागणी पीलु

तोविना और न जाचुं जिनंद राय ॥ ए टेक ॥ और देवशिव देवे ए मत, सांभली किम करी राचुं॥ एमत जे धारे ते जननुं, समकित किम रहे साचुं ॥ जि ॥१॥ जवहिं तवहि तुम देवोगे, एह वचन नही काचुं ॥ समकित रत्न देखाव्वो तेथी, मानुं हुं सहु साचुं ॥ जि ॥ २ ॥ आगे अनेक उद्धारे सुनकर, चरनकमलपर माचुं ॥ अक्षय ज्ञान दायक देखिने, हरषित थइ थइ नाचुं ॥ जि ॥ ३ ॥ इति

रागणी झींझोटी

साचुं छे जिनंद नाम अवरने न राचुं ॥ मुकुट कुंडल चलक झलक, भाल तिलक जाचु ॥ रत्न जडित कुंभलेथी ॥ तरणी तेज काचुं ॥ १ ॥ मोतिहार झग झगाट, देखतांज माचुं ॥ वाजुबंध ज्ञानचंद्र, गीत गाइ नाचु ॥ साचुं ॥ २ ॥ इति

रागणी पीलु-

धन युवती पर मन ललचाणुं एथी अधिक वीजुं कांइ नजाणुं ॥ एटेक ॥ दान शियलमां चित्त नव लागे, जप तप सुणतां मन गभराणुं ॥ धन ॥ ॥ १ ॥ सप्त व्यसन सेवनमां रसियो, करवा कपट कालजुं कोतराणुं ॥ धन ॥ २॥ इर्षा द्वेष मत्सर पर

निंदा, छल प्रपंचथी हृदय जराणुं ॥ धन ॥ ३ ॥ जव जव एवा पाप करंता, पापनां जारथी पिंम जराणुं ॥ धन ॥ ४ ॥ तुं तारक पण हुं वहु पापी, मारो उध्धार करोतो हुं जाणुं ॥५॥धन॥ श्रीशंखेश्वर ताहरी कृपा थी, अक्षय ज्ञाननुं पेहेरुं घराणुं ॥ धन ॥६॥ इति ॥

मराठी चालनी साखी

अकल स्वरुपी घट घट व्यापी, अनंत गुणी जग वान. लोका लोक प्रकाशक जास्कर, केवल ज्ञान निधान ॥ जग हितवछल करुणासागर, गुण रत्नाकर स्वामी शिव सुख पामी बहु डुःख वामी, त्रिजुवन जन विश्रामी. ॥ १ ॥ अशरण शरणा जव जय हरणा. तुं प्रजुतारण तरणा ॥ अजर अमरणा, शिवसुख करणा, प्रजु वंदुं तुज चरणा. तुंजगत्राता तुं पितु माता, दे सुख शाता दाता, तुंजगत्राता विश्व विख्याता, अक्षय ज्ञान प्रदाता ॥ २ ॥

थियेटर

दीलधर मनकर जिनवर पूजन करवा जइयें आ ज ॥ एटेक ॥ जाव धरीने पूजे जिनने तेहने धन्य धन्य॥ पूजा करतां शिवपूरजावा प्राणी बांधे पुण्य, साची जक्ति रीजी स्वामी देजो दरिसन॥

रागणी गुजराती गरबी

प्रजुतार हवे मारुं अहि शुं थसेरे ॥ कर्यां पाप ते अनंत मारां क्यम जसेरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ ताहरुं

शरण मारे हवे अहीं एक ठेरे, ताहरा ध्यानथी अनंत पाप क्षय जसेरे ॥ २ ॥ प्र ॥ जैन गायन मंडली नित्य गाय ठेरे ॥ तेथी अक्षय ज्ञान मने आप सेरे ॥ ३ ॥ प्रभु ॥ इति ॥

रागणी दक्षणी थीयेटर

श्री चराचर विश्ववरा, शिवसौख्यकरा, नयत्नीक हरा, सुरासुरेश्वर वंद्य तरा ॥ शि ॥ एटेक ॥ नव तारक तु जगनो त्राता, नय वारक विभुविश्व विख्याता, तुं सुखशाता, देपितुमाता, अनंतगुणो तुजमां प्रवरा, जय धैर्य धरा ॥ १ ॥ शि ॥ अखूट खजानो ठे प्रभु ताहरो, हुंदुं सेवक प्रभुजी ताहरो, नवसागरथी पार उतारो, कांइक मुजपर करुण करा नय शोक हरा, ॥२॥ शि ॥ ताहरुं ध्यान धरुं नित्य रंगे, हुं पण थाइस प्रभु तुज सगे, अक्षय ज्ञान दे दान उमंगे, नाभिनंदन नाम धरा, जयविजय करा ॥३॥

गजल.

उंचा निसा सा नाखती रे दीकरी डुखी ॥ एराह ॥ निहार यार तार तुं विचार दारहे ॥ गुनेगारकुं उतार पार तुहि दिलदार है ॥१॥ नि ॥ अन्यक्तमे अजाणते यह कर्ममे करे, कृपाकरे प्रभु अहो कृपावतारहें ॥ २ ॥ नि ॥ शरण्यहे प्रभुजी तुं शरण दीजीये मुजे, अक्षय ज्ञान दानदे त्रैलोक्य सार हे ॥ ३ ॥ निहार इति ॥

### राजुलगीत.

देखा नही कछु सार जगतमे देखा नही कछु सार, आसंसार असार ॥ज॥ तुं तारे तो तार ॥ ज ॥ माहारे तुं अधार ॥ ज ॥ दे । एटेक ॥ मेंणा दश दश हवेहुं थाकी ॥ संदेसानो नही पार ॥ हाय हाय हायरे हवे ॥ छेक बनी लाचार ॥ छे ॥ ज ॥ दे ॥१॥ रम्भिरडिहुं आसुंडे नीनी ॥ गमे नही श्रृंगार ॥ हाय हाय हायरे हवे॥अंगवले अंगार॥ अं । ज । दे ॥२॥ झुरी झुरी पिंजर थयुं अंग ॥ वियोगदुः खअपार ॥ हाय हाय हायरे हवे ॥ दीक्षालउं आवार । दी॥ज॥दे ॥ ३ ॥ जैन गायक मंडली गावे ॥ राजुलगीत उचार ॥ जाय जाय जायरे एतो । मोक्ष मंदिरमां पधार ॥ मो ॥ ज ॥ दे ॥ ४ ॥

### रागणी खमाच ठुमरी ॥

दरीसन बिन अखियां तरस रही ॥ ए राह ॥ नव पदसें मेरे विघन कटे । ज्यौं श्री पालके अघ विघटे ॥ एटेक ॥ ध्यान स्मरण जो करते तिनके॥ स्पष्ट अस्पष्ट सब कष्ट कटे ॥ १ ॥ न ॥ नट विट लंपट सबहि सुधारे, मोह सुभटका जोर हटे ॥२॥ न ॥ दान शियल तप भाव प्रमुख गुण ॥ विनय नयादिक गुण प्रगटे ॥ ३ ॥ न । अघट विघट घटना इह जगकी ॥ नव पद ध्यानसें सच सुलटे ॥४॥ न ॥ पुना जैन गायक मंडलीकु ॥ अक्षय ज्ञान दशा प्रगटे ॥ ५ ॥

धनासिरी.

जबलग विषय घटा न घटी ॥ एटेक ॥ तबलग तप जप संयम क्रिया ॥ कहा करत कपटी ॥ लोक दिखावन करत हे क्रिया ॥ पहिरत पीत पटी ॥ १ ॥ ज ॥ ध्यान धरी योगी होय बेठत ॥ बक वृत्ति कपटी ॥ बेठ तखत ज्ञानी होय बेठत ॥ करे उपदेश अती ॥ २ ॥ ज ॥ उग्रविहार धरत आम्बर ॥ मुख सें कहत यति ॥ वनवासी तनजस्म लगावत ॥ शिर पर धरत जटी ॥ ३ ॥ ज ॥ नग्न रहत पंचाग्नी सेवत, साधत योगहठी ॥ शठ हठ कष्ट करे पण मनतो, नाचत नृत्यनटी ॥४॥ जबगल विषय घटा न घटी तबलग तुं क्या फलपावेगो, विषयवल्लीनकटी ॥ जैन गायन मंरूल ताकुं वंदत ॥ जाकी अक्षयज्ञान दशा प्रगटी ॥ ५ ॥ जबलग ॥ इति ॥

राग कल्याण

जय जय नव पदा आप संपदा ॥ काप आपदा ते शुज ध्यानथी सदा ॥ एटेक ॥ श्वेतरंग अरिहंता वंदो, रातासिद्धमहंत ॥ आचारजपीला ने लीला, उवझायाजगवंत ॥१॥ज॥ सुंदरश्याम सलूंणा साधु॥ धवलाठे पद चार ॥ दंशणनाण चरण तपवंदो, सिद्धचक्र एसार ॥ २ ॥ ज ॥ पांच गुणी चउ गुण ठे एमां, आधारा आधेय ॥ गुणसेव्याथी गुणीयल थाये, जाणोनिः सदेह ॥ ३ ॥ज॥ शांतिसारे विघन

निवारे, उतारे जवपार ॥ अक्षय ज्ञान प्रचारक मंडल ॥ वंदेवारंवार ॥ ४ ॥

रागणी वरवा

॥ अरे दहि माहरी तुरकवाने घेर लई ॥ एराह ॥ प्रजुदीजें दरस वमी देर जई ॥ टेक ॥ लखचोरासी फेराफिरतां ॥ दुःखसहन करे मेनें केइ केई ॥ १ ॥ प्र ॥ जवजव जटकत सरणेंहुं आयो ॥ अव तो राखो समकित दान दई ॥ २ ॥ प्र ॥ पुना जैन गायक मंमली तो ॥ अक्षय ज्ञान पद चाहाय रही ॥ ३ ॥ प्र ॥

ठुमरी

॥ हजारों मेरे कानके मोती ॥ एराह ॥ प्रजु मेरो ज्ञानकी ज्योती ॥ मानों सुर्यकिरण कोटी ॥ टेक ॥ घटघट व्यापक ज्ञान कला छे, निजगुणता मोटी ॥ १ ॥ प्र ॥ अनंत गुणीनां गुणनी गणना ॥ करवी ते खोटी ॥ २ ॥प्र॥ ए प्रजुने तो रूप न रेखा, वर्णादिक नोती ॥ २ ॥ प्र ॥ गुणीयनकों जजते गुणी होवे ॥ केवलता मोटी ॥ ४ ॥प्र॥ अक्षयज्ञान दशा प्रगटावे ॥ कर्ममलीन धोती ॥ ५ ॥ इति ॥

राग गोमी

गोडी गाइयें मनरंग ॥ एटेक ॥ एक ध्याने एक ताने ॥ कर केदारो संग ॥१॥ गोमी ॥ यात्रा कीजे अमृत पीजे ॥ नीर वहे जिम गग ॥ रोग शोक जय

क्लेस नासे ॥ आलस नावे अंग ॥ २ ॥ गोमी ॥ पोढंता प्रजुनाम लीजें ॥ आणी मन उछरंग ॥ अ जय तेहने नींद माहे ॥ कदिय न होवे चित्त जंग ॥ ३ ॥ गोमी ॥ इति ॥

## वुमरी

सकल मर्म मल क्षय करके मुगत पुर गए गए रे ॥ मु ॥ एटेक ॥ अविनाशी अविकारहे ॥ परमातम शिव धामरे ॥ समाधान सर्वांग अरुपी ॥ मेरेमन रहेरहे रे ॥ १ ॥ स ॥ शुरू बुरू अविरुहे ॥ रहे अनादि अनंतरे ॥ वीरप्रजुके आगे गौतम ॥ अमृ त पद लहे लहेरे ॥ २ ॥ स ॥ इति ॥

## वैरागी पद

कहा कीनो नर जव पाके ॥ रहा मोहमद छाके ॥ टेक ॥ वृरू अवस्था आयलगी तव ॥ वेठो बुद्धि गुमाके ॥ क ॥ जुठ वोल धन जोरु लीयो हे ॥ जो ले जीवनकों समजाके ॥ कुमतीनार संग राच रह्यो हे ॥ सुमती गुनकों नसाके ॥ २ ॥ क ॥ मात तात सुता सुत नारी ॥ इनसे नेह लगाके ॥ ए सब अ पने घरकों आवे ॥ तेरी देह जलाके ॥ ३ ॥ क ॥ सतगुरु कहे पर जव सुख करले॥चरनन चित्त लगा के ॥ अव सुनले फिर कोन सुनावे ॥ श्रवनन सुरू कराके ॥ ४ ॥ क ॥ इति ॥

राग माढ ताल पंजाबी

अजिहो कहो ज्ञानी, कोठे थांको देश ॥ साची तो कहोने ॥ कोठे ॥ एटेक ॥ जन्म लियो तबहो ज्ञानी, जुरा होता केस ॥ स्याइकी सपेदी आई ॥ अज हुं क्युं नहिचेत ॥ १ ॥ कोठे ॥
कोठेका संगाती तुम ॥ इठे आया एक ॥ कठिने जावोला हो ज्ञानी ॥ जमता एका एक ॥२॥ कोठे॥ सुखमे संगाती घणा ॥ जुखमे न एक ॥ त्रथाहिपचो ठो ज्ञानी ॥ नीका कर देख ॥ ३ ॥ को ॥ धर्म तो संगातीसाचो ॥ जुठातो अनेक ॥ अमीचंद साहेब ने समरो ॥ राखे थांकीटेक ॥ ४ ॥ को ॥ इति ॥

जजनी पद

जिन रायानां दरिसन पायारे ॥ जलेजले जिनंद गुण गाया ॥ तने वंदेठे सुरनररायारे ॥ज॥ तुने बंध्यार्थी गुणीमां गणायारे ॥ ज ॥ एटेक ॥ अश्वसेन नृपनंदन राया ॥ वामाराणीनां ठो जाया ॥ चिंतामणीजी प्रजु चिता चूरोने ॥ जवजवनी जावठहरायारे ॥ ज ॥ १ ॥ स्वप्नाना सुखने अज्रनी ठाया ॥ एवी संसारनी ठे माया ॥ एवो उपदेश ठे साचो तुमारो पण ॥ ठासे जगत जरमाया रे ॥ २ ॥ जले ॥ जिणंद वाणी अमीय समाणी ॥ साची जाणे ठे जवि प्राणी ॥ ठास ठासतो जवि ठांडी देजो ने तुमे ॥ माखण लेजो तांणीरे ॥ ३ ॥ जले ॥ धन्य

सफल दिन आज घडिपल ॥ आजनी सुकृत कमा णी ॥ वीर्य उल्लास विनानी जे करणी ते ॥ पाणी मां जेम लींटी तांणीरे ॥ ४ ॥ चले ॥ साचीतो वा णी तेणेज जाणी ॥ जेणें करी ते प्रमाणी ॥ अक्षय ज्ञान मुनी स्पर्श ज्ञानविण ॥ वीजु वधुं धुल धाणी रे ॥ ५ ॥ चले ॥ इति ॥

॥ श्रीशांति नाथजी स्तवनं ॥

तुभ्यं नमस्ते स्वामी ॥ शांति जिनंदाजी ॥ दृग देखे परमानंदा, ॥ मुख पुनमचंदाजी ॥ शां ॥ एटे क ॥ जन्मे प्रभु शांति सुधारी ॥ जग मरी निवारी जी ॥ प्रभु शांति नाम हितकारी ॥ मेने सेवा धारी जी ॥ १ ॥ तुभ्यं ॥ तुमविना कोन हे मेरा ॥ तुं साहव हेराजी ॥ हरो मिथ्या रोग अंधेरा ॥ हठो भव फेराजी ॥२॥ तुभ्यं ॥ तुम दीन दयालाजी ॥ शासनके लालाजी ॥ मे सदा जपुं जप माला ॥ घर खेम खयालाजी॥३॥तुभ्यं ॥ तुम कल्पवृक्ष हित कारी ॥ चिंतामन धारीजी ॥ प्रभु आतम शरण तु मारी॥ वो हमे सुधारीजी ॥ अव खुसी तुमारीजी ॥ ॥ ४ ॥ तुभ्यं ॥ इति ॥

ठुमरी

वीर प्रभुजी तेरी दोस्तिमे ॥ मेरी समता सखी मे रवान भइरे ॥ एटेक ॥ आप न आए वोध पढाए ॥ तेरी सुरतपर कुरवान भइरे ॥ १ ॥ वीर ॥ शासन

नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस वकी वेर नइ रे ॥ २ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजें ॥ चरण शरण लपटाय रहरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो नले विराजोजी ॥ सांवरिया महाराज शिखरपर नले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे॥ यात्री जाण न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर ॥ वांह पकमलेजावे ॥१॥ तु ॥ उंचा नीचा पर्वतसो हे ॥ तले नीलका वासा ॥ पेरूपेरू पर सिंह धरुके ॥ जिहां लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुंक टुंक पर धजाविराजे ॥ जालरका जणकारा ॥ जालरका जण कारासेती ॥ गुंजे परवत सारा ॥ तुम ॥३॥ दूरदेस के जात्री आवे ॥ पुजा आन रचावे ॥ अष्ट द्रव्य पूजामे लावे॥मन वंछित फलपावे ॥तु॥४॥ सुरनरमुनि जनवंदन आवे ॥ महा परम सुखपावे ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥५॥ इति॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ कैसें जंबुको मेरु कंपायो ॥ ना ॥ सिद्धा रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥ छप्पन दिशि कुमरी मील आई ॥ सुची कर्म करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जबतिहां प्रग टयो ॥ मेरु शिखरले आयो ॥ इंद्र सिहासन पर ले वेठो ॥ मनसदेह नरायो ॥ २ ॥ ना ॥ अव

धि ज्ञानसे तवतिहा देख्यो ॥ अंगुठे मेरु चंपायो ॥ संशय हरण चरण प्रभुजीके, कलस हजारु ढ रायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे,मन वंछित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसें बने तेसें तारो ॥ मेरी करणी कछु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनुं ॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनकों राजदियो सुर पुरकों ॥ मुजकों क्योंन उधारो ॥ १ ॥ सां ॥ अश्व सेनके नंदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥ बाल आवस्थामें जोग लियो हे ॥ चार महाव्रत धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसलख श्रावक ॥ अष्ट करमकों पछारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों ॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सां ॥ धन्यघरी धन्य जाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनवचका नमत बुध गंगा ॥ चरण कमल वलि हारो ॥

रागणी माढ.

मेवाडोरे मली ॥ एराह ॥ प्रभु जीव जीवन आधाररे, तुमने खमारे खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धाचल मंरुन साहेब, तुं प्रभु आनंद कंद ॥ नव्य कमल प्रति बोधन दिनमणि, मुखडुं पुनम चंदरे ॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत झरेरे, सागर जेम

नायक एहि अरज हे ॥ दीजे दरस वमी वेर नइ रे ॥ २ ॥ वीर ॥ आशा दासकी पुरन कीजें ॥ चरण शरण लपटाय रहरे ॥ ३ ॥ वीर ॥

॥ समेत शिखरथी स्तवन ॥

तुमतो नले विराजोजी ॥ सांवरिया महाराज शिखरपर नले विराजोजी ॥ तेरे घाटे चोकी लागे॥ यात्री जाण न पावे ॥ हुकुम कियो श्रीपार्श्वजिनेश्वर ॥ वांह पकमलेजावे ॥१॥ तु ॥ उंचा नीचा पर्वतसो हे ॥ तले नीलका वासा ॥ पेमपेम पर सिंह धमुके ॥ जिहां लिया तुम वासा ॥ २ ॥ तु ॥ टुंक टुंक पर धजाविराजे ॥ जालरका जणकारा ॥ जालरका जण कारासेती ॥ गुंजे परवत सारा ॥ तुम ॥३॥ दूरदेस के जात्री आवे ॥ पूजा आन रचावे ॥ अष्ट डव्य पूजामे लावे॥मन वंठित फलपावे ॥तु॥४॥ सुरनरमुनि जनवंदन आवे ॥ महा परम सुखपावे ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक हरख हरख गुणगावे ॥ तुम ॥५॥ इति॥

॥ विरजिनस्तवन ॥

नाथ कैसें जंबुको मेरुं कंपायो ॥ ना ॥ सिद्धा रथ सुत नाम धराया ॥ त्रिसला राणीनो जायो ॥ ठप्पन दिशि कुमरी मील आई ॥ सुची कर्म करायो ॥ १ ॥ ना ॥ इंद्र महोत्सव जवतिहां प्रग टयो ॥ मेरु शिखरले आयो ॥ इंद्र सिहांसन पर ले वेठो ॥ मनसदेह नरायो ॥ २ ॥ ना ॥ अव

धि ज्ञानसे तवतिहा देख्यो ॥ अंगुठे मेरु चंपायो ॥ संशय हरण चरण प्रभुजीके, कलस हजारु ढरायो ॥ ना ॥ ३ ॥ सिद्धारथ घर आयकेरे ॥ मंगल चार गवायो ॥ सुमन अधमकों निजपद दीजे, मन वंछित फल पायो ॥ ४ ॥ इति ॥

समेत शिखर ॥

सांवरिया जैसें बने तेसें तारो ॥ मेरी करणी कछु न विचारो ॥ सा ॥ नागनागनी व्याकुल दोनुं ॥ जरत अगनीसे उवारो ॥ उनकों राजदियो सुर पुरकों ॥ मुजकों क्योंन उधारो ॥ १ ॥ सां ॥ अश्व सेनके नंदन कहिये ॥ माता वामा देवी प्यारो ॥ वाल आवस्थामें जोग लियो हे ॥ चार महाव्रत धारो ॥ २ ॥ सां ॥ योग निरोधी दसलख श्रावक ॥ अष्ट करमकों पछारो ॥ काया गाल गए सिवपुरकों ॥ लोका लोकनिहारो ॥ ३ ॥ सां ॥ धन्यघरी धन्य जाग हमारो ॥ शिखर समेत जुहारो ॥ मनवचका नमत बुध गंगा ॥ चरण कमल वलि हारो ॥

रागणी माढ.

मेवाडोरे मली ॥ एराह ॥ प्रभु जीव जीवन आधाररे, तुमने खमारे खमा ॥ एटेक ॥ श्रीसिद्धाचल मंडन साहेब, तुं प्रभु आनंद कंद ॥ भव्य कमल प्रति वोधन दिनमणि, मुखडुं पुनम चंदरे ॥ १ ॥ तु ॥ तुज वाणी अमृत झरेरे, सागर जेम

गंजीर ॥ दीन दयाल कृपाकर मुजपर, तारक जव जल तीररे ॥२॥ तुं ॥ जवजव जटकत शरणेहुं श्राव्यो, जांगो जवनी जीर ॥ मारां तारां सुं करो प्रजु, तारक ठो वडवीररे ॥ ३ ॥ तुं ॥ मरुदेवीने तारियां प्रजु, तार्या सोये पुत्र ॥ तार्या विना केम चालसे प्रजु, हुं पणतुं घर सूत्ररे ॥ ४ ॥ तुं ॥ दीना नाथ दयाल दयाकरी, राखो मुजने पास ॥ पुना जैन गायक मंमलीने ॥ अक्षय ज्ञाननी आशरे ॥ ५ ॥

पद.

जगतनी घटना ठे अतिन्यारी ॥ एराह ॥ आंगीनी रचना ठे बहुसारी ॥ करतां अनुमोदन पुण्यथाय जारी ॥ एटेक ॥ हीरामणि माणक जडेलां, मुखबी तेज देखी जाय चन्द्रहारी ॥ १ ॥ आं ॥ मस्तक मुकुट कानेठे कुंमल, झलक झलक तेज पुंज बलिहारी ॥ २ ॥ आं ॥ बांहे बाजुबंध हार गलामा, मुक्ताफलना वंदेठे नरनारी ॥ ३ ॥ आं ॥ सर्वांगे प्रजुतेज अनंतु, चंद्रसूर्य कोटी तेज जायहारी ॥४॥ आं ॥ पुना जैनगायन मंडलीने दीजे ॥ अक्षय ज्ञानदशा विस्तारी ॥ ५ ॥ आं इति ॥

होरी

॥ सामरो सुख दाई, जाकी ठबी वरनी नजाई ॥ सा ॥ एटेक ॥ श्रीअश्वसेन वामा नंदनकी, कीर्ति त्रिजुवन गाई ॥ समेत शिखर गिरि मंमन प्र-

जुको, देख दरस हरखाई ॥ हृदय मेरो अति उल साई ॥ १ ॥ सा ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगटे, आज आनंद वधाई ॥ तिन लोकको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुण्याई, सफल मेरो जन्म कहाई ॥ २ ॥ सा ॥प्रजुके सरस दरस बिनुपाए,जव जव जटक्योंमें जाई ॥ अवतो प्रजुके चरण चित्तलाग्यो, वाल कहे गुणगाई; प्रजु संग लगन लगाई ॥३॥ सा ॥ इति ॥

होरी.

राग उपर प्रमाणे ॥ सामपे कहियो वीनती मोरी ॥ एटेक ॥ राजुल चंडानकों वोले, आइ वसंत रीतु होरी, वागुंमें फाग केसीमे खेलुं ॥ सव सखियनकी टोरी ॥ प्रिया गए हमको ठोरी ॥ १ ॥ सा॥ सज सिनगार संग लइ सिखरे, अवीर गुलालकी जोरी, अपने पिया संग खेलखेलत हे, केशरको रस घोरी, वाजे रूफ ताल टकोरी ॥ २ ॥ ॥ सा ॥ एते कारन वालम घर आवो, खेलुमें रंगजर होरी॥ ए वीनती सुन प्रजुने राजुलकी ॥ दीने सव डुखतोरी ॥ रत्नकहे जइ वरजोरी ॥ ३ ॥ सा ॥ इति ॥

॥ पावा पुर जिन गीतं ॥

अखियां मेरी प्रजुजीसें आज लगी ॥ टेर ॥ पावा पुर श्रीवीरजिनेश्वर ॥ देखत डुरगति डुरटली॥ अ ॥ १ ॥ मस्तक मुकुटसोहे मनमोहन ॥ विचविच हीरा मोतिलालजमि ॥ २ ॥ अ ॥ रत्नजमि-

त दोयकुंफलसोहे ॥ ॥ गले विच मोतियन माल-
पफी ॥ ३ ॥ अ ॥ हरखचंद के तुम प्रभुसाहेब ॥
चरण न ठोडुं पल एक घरी अ ॥ इति ॥

॥ पद ॥

जिन राज नाम तेरा ॥ हो राखुंरे हमारा घटमे ॥ टेक ॥ जाके प्रभाव मेरा॥अज्ञानका अंधेरा ॥ भागा भया उजेरा ॥ १ ॥ रा ॥ सुरत तेरी रागें ॥ देख्या विभाव त्यागे ॥ अध्यात्म रूप जागे ॥२॥ रा ॥ मुद्रा प्रमोद कारी ॥ रूपभेस ज्युं तिहारी ॥ लागत मोहे प्यारी ॥३॥ रा ॥ त्रैलोकनाथ तुमही ॥ हमहें अनाथ गुनही ॥ करियें सनाथ अबहि ॥४॥ रा ॥ प्रभुजी तिहारी सांखे ॥ जिन हर्ष सुरी भाषे ॥ दिल माहिं येहिं राखेहो ॥ ५ ॥ इति ॥

पीलु बरवा.

अबतो उंधार्यो मोहे चहिये ॥ जिनंदराय, राखुं भरोंसो मे प्रभुके चरणको ॥ एटेक ॥ सुनो श्रीश्रेयां सनाथ ॥ साचो शिव पुर साथ ॥ बिरुद तुमारो प्रभु तारन तरनको ॥ १ ॥ अ॥ सिंह पुरी जन्म गाम ॥ पिता विष्णुसेन नाम ॥ विष्णुराणी कुंखें जायो ॥ कंचन वरनको ॥ २ ॥ अ ॥ वरस चोरासी लाख ॥ आयुष्य परम भाख ॥ लंछन चरन खग सुखके करनको ॥ ३ ॥ अ ॥ हुंतोहुं अनाथ तुम नाथनके नाथ प्रभु ॥ तुमविना और मेरे दुसरो सरनको

॥ ४ ॥ रा ॥ प्रजुके चरणारविंद पुजत हरषचंद ॥ काटिये करम ऊुःखमेटिये मरनको ॥ ५ ॥ श्र ॥ इति

पद.

गुण अनंत अपार प्रजुतेरे ॥ गु ॥ टेक ॥ सहस रसना करत सुरगुरु ॥ तोज न पायोपार ॥ १ ॥ प्र ॥ कोन अंवर गिने तारा ॥ मेरु गिरको जार ॥ चरम सागर लहर माला ॥ करत कोन विचार ॥ २ ॥ प्र ॥ जक्ति गुण लवलेस जाखें ॥ सुविधिजिन सुखकार ॥ समय सुंदर कहत हमको॥स्वामी तुम आधार ॥प्र०॥

राग कव्याण.

माइ मेरो मन तेरो नंद हरें ॥ एटेक ॥ कंचन वरण कमल दल लोचन ॥ निरखत नयन ठरे ॥१॥ पंचवरण मनहरण धरनपर, ठम ठम पांव धरे ॥रतन जमित कंचन घुघरियां ॥रुण ऊणकार करे ॥ २ ॥ मा ॥ हलत लसत मुगता फल माला ॥ पीत वसन उपरे ॥ मानु चलिहे मान शिखरते ॥ गंगप्रवाह खिरे ॥ ३ ॥ मा ॥ धन त्रिसलादे जाग्य तिहारो ॥ तुंतिहुं जवन शिरे ॥ तीन जवनको नायक तेरे ॥ आंगनमे विचरे ॥ ४ ॥ मा ॥ श्रीवर्द्धमान जिनंकी मूरत ॥ विनु देखे न सरे ॥ हरखचंद प्रजु वदन विलोकत ॥ सवहि काजसरे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी

इंद्रानी सब ठमक ठमक जन्म महोत्सव आवे ॥

घननननन धननननन, घंटा सुघोखा वाजे ॥एटेक॥ ॥गान तान नाच रंग॥इंद्रासन थाय ॥ धन्य धन्य आजको दिवस, प्रभुजीको दरिसन पाय॥ इं ॥१॥ वीर काया लघु देखी ॥ इंद्र मन अकलाय ॥ अवधि देखी वीर मेरु अंगुठे दबाय ॥२॥ इं ॥ जन्म महोत्सव जिनको करी, इंद्र देव लोक जाय ॥ दास नर प्रभु तणा, हरसेन गुन गाय ॥३॥ इंद्र॥ इति

॥ राग सोरठ ॥

॥ कहुं कहांलोंवारुं नणदलवीर ॥ क० ॥ मिथ्या गणकि पूंजीषाइ, वनगए जनम फकीर ॥ क० ॥१॥ गइय गइ सो भलीय रहीसो, धर धर मनको धीर॥ कहांलों धीर धरुं धीरज धर,विरह जनमवहीर॥क० ॥२॥ भालपाल बिंदी नही भावै,आभुषण नही वीर ॥ ग्यानसार वालो आयमिलै घर,तोन रहै कोई पीर॥

॥ राग पुनः ॥

॥ होजी आली जाने माने थारी चाहि घणीछै, वहिला वेग पधारो ॥ हो० ॥ आयुकरम विन सातुं किस्थिति, कोमफ सागर इककोम गुणीछै ॥ हो० ॥ १ ॥ के ते दिन चिंतवतां अबके, ज्युं त्युं प्रीतवणी छै ॥ २ ॥ भलो बुरो तोही चलि आयो, अंत तो घरको धणी छै, ग्यानसार कहै ढीलन कीजे, प्रीत अंतरको भणीछै ॥ हो० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग भैरुं ॥

॥ रुषभ जिणंद आणंद कंद कंदा, याहीते चरण सेवे कोट सुर इंदा ॥ रु० ॥१॥ मरुदेवा नाभि नंद, अनुभवचकोर चंद ॥ आपरूपकोस्वरूप, कोटज्युं दिणंदा ॥ रु० ॥ २ ॥ शिवशक्ती न चाहुं चाहुं न गोविंदा ॥ ग्यानसार भक्तिचाहुं, मे हुं तेरा बंदा ॥

आयो हलकारो गोपी मदको अे राह

प्रभु नेम कुमरजी आप बीराजो गीरनारमे एटेक। गीरनारी गीरवररे उपर उंची टुंका शात ॥ शातों टुंके चरण पाडुका. में वंडु दिनरातरे. प्रभु नेमकुम रजी ॥ १ ॥ शंख लंछन दश धनुषरीकाया. आयु वर स हजार॥ श्याम वरण शीवादेवी नंदन, वंदो वार हजाररे॥प्रभु नेमकुरजी ॥ २ ॥ काती वद बारश चवी आयो. सौरी नयरी मजार ॥ श्रावण सुद पंच मि दिन जनम्या वरत्यो जयजय कार रे॥प्रभु नेमकु ॥ ३ ॥ शहशावन जइ शंयम लीनो. छांडी राजुल नार ॥ श्रावणवद षष्टी दीन दीक्षा. प्रभुजी बाल कुमाररे. प्रभु नेमकुमरजी ॥ ४ ॥ चोपन दीन छदम स्थ रहीने. आशो वद्य अमाश ॥ वेरूश वृक्ष तले प्रभु पायो केवल ज्ञान प्रकाशरे ॥ प्रभु नेमकुमरजी ॥ ५ ॥ सुदी आषाढ अष्टमी रुडी, शंलेखन एकमा स ॥ पदमाशन प्रभु मोक्ष पधारें. अविनाशी आवा सरे ॥ प्रभु नेमकुरजी ॥ ६ ॥ कल्याणक पांचो इम

शुणतां. पामो अक्षय ज्ञान ॥ वालमित्रकी अरजी इणवीध. प्रज्ञुको शरण प्रधांनरे॥ प्रज्ञु नेमकुमरजी उ

पद.

किसविध किये कर्म चकचूर ॥ उतम क्षमापे अचंन्नो मने आवे ॥कि॥ एक तो प्रज्ञु तुम परम दयालु रोसन तिलतुष मात्र हजूर ॥ डुजे जीव दयाके सागर॥ तीजे संतोषी ज्ञरपुर ॥ उ ॥ १ ॥ चोथे प्रज्ञुतुमही तउपदेशी ॥तारन तरन जगत मसहुर ॥ कोमल वचन सरन सत वक्ता ॥ निर्लोन्नी संजम तपसूर॥२॥ केसे मोह मल्लतुमजीत्यो ॥ अंतराय केसेकियो निरमूल ॥ केसेज्ञाना वरण निवार्यो ॥ केसे कियेचा रोघातिया दूर ॥३ ॥ त्यागी वैरागी हो तुमसाहेव ॥ अकिं चनव्रत धारकन्नूर ॥ सुरनर मुनी सेवेचर्नतुमारे तोन्नीनहि प्रज्ञुजीकेगरुर ॥ ४ ॥ करत आसअरदास नेनसुख ॥ दीजेअव मोहेदान जरुर ॥ जन्मजन्म पद पंकज सेवुं ॥ ओरन कबुचित चाहेहजूर ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्थ परिछेदः समाप्तः ॥



## ॥ अथ पंचम परिछेद प्रारभ्यते ॥

## ॥ अथ श्री सीताजीनी सद्याय प्रारंभ ॥

॥ जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतरजामी ॥ पालव मारो मेलने पापी, कुलने लागे छे खामी ॥ अरुशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ० ॥ म्हारो नाहलीउं दुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ० ॥ माहारुं मन मांहेथी अकुलाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पत्थर पंकज ऊगे ॥ जो जलधि मर्यादा मूके, पांगलो अंबर पूगे ॥ अ० ॥ २ ॥ तो पण तुं सांभल रेरावण, निश्चय शील न खंडुं ॥ प्राण अमारो परलोक जाये, तो पण सत्य न छंडु ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणि लेवाने, हैडे घाले हाम ॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारानो संग करीने, आखर कोण उगरियो ॥ ऊंडुं तो तुं जोवे आलोची, सही तुज दाहाडो फरियो ॥ अ० ॥ ५ ॥ जनकसुता हुं जग सहु जाणे, भामंडल छे भाई ॥ दशरथ नंदन शिर छे स्वामी, लखमण करशे लडाई ॥ अ० ॥ ६॥ हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ छे म्हारे हाती ॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये छे काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन कहे धन्य ए अब

ला, सीता जेहनुं नाम ॥ सतीयो मांहे शिरोमणि कहीये, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ वणजारानी सद्धाय ॥

॥ नरभव नयर सोहामणुं ॥ वणजारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायक रे ॥ सत्तावन संवर तणी ॥ व० ॥ पोठी भरजे उदार ॥ १ ॥ ॥ अ० ॥ शुभ परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा भणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥२॥ क्रोध दावानल उलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलंघजे हलवे करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंश जाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाडी मनोरथ भट तणी ॥ व० ॥ पूरणनुं नही काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ०॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजे शिरठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ इम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे भावना ॥ व० ॥ पोठी भरया गुण राश ॥ अ० ॥६॥ खायिकभावे ते थशे ॥ व० ॥ लाभ होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥अ०॥७॥ इति ॥ वणजारानी सद्धाय॥

॥ अथ सोदागरनी सवाय ॥
॥ लावो लोवोने राज, मोघां मुलनां मोती ॥
॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर वे, दिलकी बात हमेरी ॥ तें सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोसम आये माल सवाया, रतनपुरीमां ठाया ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ तिनुं दलालकु हर समजाया, जिनसें वहोत न फाया ॥ पांचुं दीवानुं पाऊं जमाया. एककुं चोकी विठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥ दोनुं दगावाजी दुर करनां, दीपकी ज्योंतसें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ औरदिन वली मेहेलमे रहनां, वंदरकुं न हलानां ॥ दश सेरसें दोस्तिहि करनां, उनसें चित्त मिलानां ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ जनहर तजनां, जिनवर जजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसरहार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुकुट चमर ढोलाइ, अस घर रंग वधाई ॥ श्रीशुजवीर विजय घर जाइ, होत सतावी सगाइ ॥सु० ॥इति॥

॥ अथ श्री आपस्वजावनी सवाय ॥

॥ आप स्वजावमां रे, अवधु सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा है सो तेरी पासे,

अवर सवे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अव हे इनकुं विलासी ॥ वपु संग जव दूर निकासी, तव तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रागने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ ॥ जव तुम उनकुं दूर करीसा, तव तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अच्यासा, ल हो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कवहींक काजी कवहींक पाजी, कवहींक हुआ अपभ्राजी ॥ कवहींक जगमें कीर्त्ति गाजी, सव पुजलकी वाजी ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ध्यान ज्ञान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥७॥ इति आपस्वन्नाव सद्याय ॥

॥ अथ श्री सहजानंदीनी सज्झाय ॥

वीजी अशरण नावना ॥ ए देशी ॥

॥ सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चिंत रे ॥ मोह तणा रणीया नमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूटे जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरका वास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति नजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुसुम परें जीवको, फोगट जनम गमाय रे, माथे नय जम राय रे, श्योमन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥

॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरीखा रे राजवी, नागा चा
ल्या विण धाग रे ॥ दश माथां रण रूवड्यां, चांच
दीए शिर काग रे, देव गया सवि नागरे, न रह्यो
माननो ठागरे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो नाइर्ड
ना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे,
केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्यें,
जोतां लक्ष हजार रे, देश विदेश साधार रे, ते नर
इणें संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार
कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिकां, व
लती मेली निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, ना
ठा देव आकाश रे, किहां तरु छाया आवास रे, ज
ल जल करी गयो सास रे, वल नड सरोवर पास
रे, सुणी पांडव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ गाजी
गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या
अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त
नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवुं
पीपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ स० ॥ ६ ॥
वालेसर विना एक घडी, नवि सहातुं लगार रे ॥
ते विना जनमारो वही गयो, नहीं कागल समाचार
रे, नही कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार
रे, माता मरुदेवी सार रे, पहोतां मोक्ष मोझार रे
॥ स०॥ ७ ॥ माता पिता सुत बांधवा, अधिको राग
विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंछे विष

य गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विष देती भरतार रे, नृप जिनधर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ हसी हसी देती रे तालीयो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंते माटी थया, लोक चणें घर वाररें, घरुता पात्र कुंभार रे, एहवुं जाणी असार रे, छोडे विषय विकार रे, धन्य तेहतो अवतार रे ॥ स० ॥ ए ॥ थावच्चासुत शिव वस्या, वली एलाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जंजाल रे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकंडु भूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्म रयण धरी ठेक रे ॥ वीर वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर भेक रे. धारता धर्म नी टेक रे, भवजल तरिया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥ इति सहजानंदी सद्याय ॥

॥ अथ सांभल सयणानी सद्याय ॥

॥ सांभल सयणा साची सुणावुं, पूरवपूण्यें तुं पाम्यो रे भाइ ॥ नरक निगोदमां भमतां नरभव, तें निःफल केम वाम्यो रे भाइ ॥ सां० ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे भाइ ॥ मेघघटा सरिखा गज साटे, गर्दभ घरमां बांध्यो रे भाइ ॥ सा० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कूहाडे कापी, धंतुरो घेर धारे रे भाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, का

ग उमाडण डारें रे नाइ ॥ सां ॥ ३ ॥ इम जाणी जावा नवि दीजें, नर नारी नरनवनें रे नाइ ॥ उं लखी शुरू धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मनने रे नाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विनाव परनावमा नजीयें, रमण स्वनावमां करीयें रे नाइ ॥ उत्तम पदपद्मने अवलंबी, नवियण नवजल तरीयें रे नाइ ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीआतम हित सद्याय ॥

॥ अथ रात्रिनोजननी सद्याय प्रारंन ॥

॥ पुण्य संजोगें नरनव लाधो, साधो आतम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, इम नांखे जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिनोजन वारो ॥ १ ॥ आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सद्दी नाणी रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ए आंकणी ॥ अनक्ष्य बावीशमां रयणीनोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें कारण रातें मत जमजो, जो हुवे हइडे शान रे ॥ ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधने नोजन, एटला रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नितिवच न समजीजें रे ॥प्रा०॥३॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें, टाले नोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी नाम धरावो, केम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीमी कोली आवमो, नोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उन्नुं नव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपा

युं ॥ एक तलाव फोमतां तेटलुं, दूषण सुगुरु बतायुं रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर जव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर जव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ ॥ एक शो ने चुम्मालीश जव लगें, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक शो एकावन जव लगें दीधां, कूमां कलंक अपार ॥ एक वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एकशो नवाणुं जव लगें खंड्यां, शीयल विषय संबंध ॥ एकें रात्रि जोजनें तेहवो, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १० ॥ रात्रिजोजनमां दोष घणा ढे, श्यो कहियें विस्तार ॥ केवली केंहतां पार न पावे, पूरव कोडी मजार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार करीने, शुज परिणाम धरीजें ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाज इणे विध लीजें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीने होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिजोजननी सद्याय ॥

॥ अथ जोवन अस्थिरनी सद्याय ॥

॥ राग प्रजाति ॥

जोवनीयानी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घमि घमि घमियालां वाजे, तोय न जागे तेथी

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधें उशंके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ मालें वेठा मोज करे छे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने शरणें जाउं, जोरालो को न जेथी रे ॥ डुनीयामा दूजो दीसे नही, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ॥ ४ ॥ दंत पछ्याने कोसो थयो, काज सर्चु नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सद्याय ॥

॥ निंदा म करजो कोइ पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निंदा ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती जुवो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु जस्या रे, केहनां नलियां चुए केहेनां नेव रे ॥ निं०॥३॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

युं ॥ एक तलाव फोमंतां तेटलुं, दूषण सुगुरु बतायुं रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर नव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर नव दव दीधा जिस, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ ॥ एक शो ने चुम्मालीश नव लगें, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोप रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक शो एकावन नव लगें दीधां, कूमां कलंक अपार ॥ एक वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ एकशो नवाणुं नव लगें खंड्यां, शीयल विषय संबंध ॥ एकें रात्रि नोजनें तेहवो, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १० ॥ रात्रिनोजनमां दोष घणा ठे, श्यो कहियें विस्तार ॥ केवली केंहतां पार न पावे, पूरव कोडी मजार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार करीने, शुन परिणाम धरीजें ॥ मासें मासें पासखमणनो, लान इणे विध लीजें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीने होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिनोजननी सद्याय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सद्याय ॥

॥ राग प्रनाति ॥

जोबनीयानी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घमि घमि घमियालां वाजे, तोय न जागे तेथी

रे ॥ १ ॥ जो ॥ जरा राक्सी जोर करे ठे, फेलावे फजेत्ती रे ॥ आवी अवधें उशंके नही, लखपतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ मालें वेग मोज करे ठे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेंती रे ॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने शरणें जाउ, जोरालो को न जेथी रे ॥ डुनीयामा दूजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ॥ ४ ॥ दंत पड्याने सोसो थयो, काज सख्युं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥ ५ ॥

॥ अथ निंदावारक सद्याय ॥

॥ निंदा म करजो कोइ पारकी रे, निंदानां वोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय वाप रे ॥ निंदा ॥ १ ॥ दूर वलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती जुवो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पमी टेव रे ॥ थो डे घणे अवगुणें सहु जस्या रे, केहनां नलियां चुए केहेनां नेव रे ॥ नि०॥३॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो क रजो आपणी रे, जेम छुटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो

एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुं दर सुखकार रे निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहा मणी ॥ प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी साथे प्रीत पिउमा, कहो किण परें कीजीयें ॥ उंघ वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥ कावडीटुटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीये ॥ कुल विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पहेलां वीहीजीयें ॥ रखे कोइ जाणे रे मनशुं धुजीयें ॥ उ० ॥ धुजीयें मनशुं फुरीयें पण, जोग मलवो बे नहीं ॥ रात दिन विल पंत जाये, अवटाइ मरवुं सही, ॥ निज नारीथी संतोष न वल्यो, परनारीथी कहो शुं हशे ॥ जो न यें जाणे तृप्ति न वली तो, एठ चाटे शुं हशे॥ २ ॥ मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश मांखणनो वली ॥ बुझतां बाचक जर्या पाणी ते, तस्या वात नसांजली ॥ तेम नार रमतां पर तणी संतोष न वल्यो एक घडी ॥ चित्त चट पटी उच्चाट लागे, नयणें नावे निद्रडी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्रीसंग नो ॥ उ० ॥ परनारी सायें प्रेम पिउ

रुा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रू
डो, पठी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह
मांडे ठांम तेहशुं प्रीतमी ॥ एम जाणी म म कर
नाहला, परनारि साथें प्रीतमी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे
पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमेंरे राचे
सापिणी ॥ ज० ॥ सापिणी सरखी वयण निरखी,
रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके,
देव दानवने ठले ॥ ए मांहे काली अति रसाली,
वाणी मीठी शेलमी ॥ सांजली रे जोला रखे जूले
जाणजे विष वेलमी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे,
पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवा तणो
॥ ज० ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहि
लुं ॥ रुण मेमियें रुण सेरीयें, जमतां न लागे सो
हिलुं ॥ उश्वासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन
जमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाफे, अन्न दीठुं
नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये फलाले रे, मनशु
कल मले ॥ उन्मत्त थइने रे, अलल पलल लवे ॥
॥ ज० ॥ लवे अलल पलल जाणे, मोहगहिला मन
रडे ॥ महा मदन कठिन कारी, मरण वारु ग्रेवडे ॥
ए दश आवस्था काम केरी, कंत कायानेदहे ॥ एम
चित्त जाणी तजेराणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥
चाल ॥ परनारीनां रे, परीजव सांजलो ॥ कंता की
जें रे, जाव ते निर्मलो ॥ ज० ॥ निर्मलें जावे नाह

समजो, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीउं कीचक नी मसेनें, शिला हेठल सांजलो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक. रू वड्यां ग्रंथे कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःखपुंज पाम्यो, अपजश जग मांहे लह्यां ॥ ८ ॥ ॥ चाल ॥ शीयल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आजरणें रे, जग मन मोहीये ॥ उ० ॥ मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमिय थई संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाये, अनल तिम शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लछी घरे पाणी जरे ॥ परनारी परिहरी, शीयल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम विनवुं ॥ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे स्तवुं ॥ उ० ॥वयण महारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइयें दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे दृढ, शीयल पाले कुल तिलो, ते पामशे यश जगतमांहि, कुमुद चंद सम ऊजलो ॥ १ ॥

॥ अथ नारी शिखामणनी सचाय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ समजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उ० ॥ सुंदरी सहेजें हृदह हेजें, पर सेजें नवि वेसीयें ॥ चित्तथकी चूकी लाज मूकी, परमंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींमी, नार निर्लज, शास्त्रे पण, तजवी कही ॥ जेम

प्रेत दृष्टें, पड्युं जोजन, जमवुं ते, जुग तुं नही ॥ १ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ ज० ॥ गुह्य घरनुं, परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे, विपरीत जांखे तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा, अने अगोचर, एकलां नवि, जाइयें ॥ सहसात्कारें, काम करतां, सहेजें शील गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट नरशुं रे नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे, आघुं ढंढीयें ॥ ज० ॥ आघु ते ढंढी, वात करतां, घणुंज रूडां, शोजीयें ॥ सासू अने, माता जएया विण, पलक पास न, थोजीये ॥ सुख डुःख सरज्युं, पामीयें पण, कुलाचार, न मूकीये ॥ परवश वसंतां, प्राण तजतां, शीयलथी, नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥परनर हाथेरे, ताली न लीजीयें॥ज॥ ताली न लीजे, नजर न दीजे चंचल चाल न चालिये ॥एक विपयबुद्धें, वस्तु केहनी हाथे पण नवि झालियें॥ कोटी कंदर्प,रूप सुंदर,पुरुष पेखीन मोहिये ॥ तणखला तोले गणिय तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥४॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे, वलि न वखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ ज०॥ जाणीयें पीयु विण, पुरुष सघला, सहोदर, समो वडे ॥ पतिव्रतानो, धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडें॥कुरूप कुष्टी कूबडोने डुष्ट डुर्वल निर्गुणो ॥ जरतार पामी,

स्वामिनी ते इंद्रथी अधिको गणो ॥ चाल ॥ अमर कुमारें रे,तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजयें रे, अंजनापरि हरी ॥उ०॥ परिहरी रामेवनमां सीता, नले दमयंति वली ॥ महा सती माथे, कष्ट पड्यां पण शीयलथी ते, नवि चली ॥ कसोटीनी परें,कसीअ जोतां कंतशुं विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें, शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुल थइने रे मन न वगाडीयें ॥ ॥ उ० ॥ मन न वगाडीयें, पर पुरुषनुं, जोग जोतां, नवि मले ॥ कलंक माथे, चढे कूडां सगा सहु, दूरें टले ॥ अणसरज्यो, उच्चाट, थाये, प्राण तिहां, ला गी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ ॥ उ० ॥ इजत खोइ देख अजया, शेठ सुदर्शन, नवि च ल्यो ॥ जरतार आगल, पडी जोंठी, अपवाद सघ ले, उछल्यो ॥ कामिनी देखी, कामनी बुद्धें, वंकचूल, वाह्यो घणुं ॥ पणशीयलथी, चुकी नही, दृष्टांत एम, केतां जणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रजावें रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिज़ुवनमांहे रे, जेह थई बती ॥ उ०॥ सती थईने, शीयल राख्युं, कल्पना, कीधी नही ॥ नाम तेहना, जगत् जाणे विश्वमां ऊगी रही ॥ वि विध रत्ने, जडित जूपण, रूपसंदरि, किन्नरी ॥ एक

शियल विण शोभे नही ते सत्य गणजो सुंदरी ॥ए॥ चाल ॥ शीयल प्रभावे रे, सुर सेवा करे ॥ नव वाडेरें जेह निर्मल धरे ॥ धरें निर्मल, शीयल उज्वल, तास कीर्त्ति फलहले ॥ मनकामना, सवि सिद्धि पामे, अष्ट भय, डुरे टले ॥ धन्य धन्य ते, जाणो धरा, जे शीयल चोखुं, आदरे, ॥ आनंदना ते, उंघ पामे उदय महा जस, विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने

॥ अथ धोबीडानी सञय ॥

॥ धोबीडा तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राख तो मेल लगार रे ॥ एणेंमेले जग मेलो कस्यो रे, विण धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥१॥ जिनशासन सरोवर सोहामणुं रे, सम कित तणी रूडी पाल रे ॥ दानादिक चार बारणां रे, मांहि नव तत्त्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥२॥ तिहां झीले मुनीवर हंसला रे, पी ये छे तप जप नीर रे॥शम दम आदि जे शील रे, तिहां खाले आपणुं चीर रे॥धो०॥३॥तपवजे तप तडके करी रे,जालवजे नव तत्त्व वाड रे॥ छांटा उडाडे रखे पाप अढारना रे,एम उजलुं होशे ततकाल रे॥ धो० ॥४॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे,रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चे प वित्रपणुं राखजे रे, पछे आपण नीमी संभाल रे ॥ धो०॥५॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे॥चल मेलीनें संकेल रे॥ समयसुंदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृत वेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जरतचक्रीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमे वैरागी जरतजी, मनहीमें वैरागी ॥ सहस्स बत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वडवागी ॥ चोशठ सहस्स अतेउरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ ज० ॥ १ लाख चोराशी तुरंगम जाके, उन्नुं कोम हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सो हिये, सुरता धर्मशुं लागी ॥ ज० ॥ २ ॥ चार करो ड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥ तीन कोम गोकुल डुजे,एक कोम हल सागी ॥ज०॥ ॥ ३ ॥ सहस्स बत्रीश देश वमजागी, जये सरवके सागी ॥ उन्नुं कोम गामके अधिपति ॥ तोहे न हुआ सरागी ॥ ज० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा वा जे, मन चिंता सब जांगी ॥ कनक कीरत मुनिवर वंदत हे, देजो मुक्ति में मागी ॥ ज० ॥

चेत चतुरनर निज मनमाहिं॥क्षण क्षण आयुष जायजी कांइ निचिंत थइने सुतो,नरजव ए ले जाय जी॥१॥चे॥काम क्रोध तृष्णारसें रातो,तेणें न जाएयुं, कांय जी॥लागे घरे किम कूप खणासेसांके न बांधि पालजी॥२॥चे॥आयु अ स्थिर जिम जल पंपोटो मर ण ते आवे निदानजी ॥ राय रंक केहने नवि बोडे, पंडित जाण अजाणजी ॥३॥चे॥पुण्य पाप दोय साथें आवे, अवर न आवे कोयजी ॥ कहे नारायण धर्म करो जिम,आवागमण न होयजी ॥४॥ चे ॥ इति ॥

॥ अथ श्री बाहुबलजीनी सद्याय ॥

॥ बहेनी बोले हो बाहुबल सांजलो जी ॥ रूडा रूमा रंगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केवल केम हुवे जी ॥ जाएयुं जाएयुं पुरुष प्रधान ॥ ब० ॥ १ ॥ तुज सम उपशम जगमां कुण गणेजी, अकल निरंजन देव ॥ जाइ जरतेसर वाहाला विनवे जी, तुऊ करे सुर नर सेव ॥ ब० ॥ २ ॥ जर वरसालो हो वनमां बेठीउं जी, जिहां घणां पाणीनां पूर ॥ ऊरमर वरसे हो, मेहुलो घणुं जी, प्रगट्या पुण्य अंकूर ॥ ब० ॥ ३ ॥ चिहुं दिशि वीट्यो हो वेलमीये घणुं जी, जेम बादल गयो सूर ॥ श्री आदिनाथे हो, अमने मोकल्यां जी ॥ तुम प्रतिबोधन नूर ॥ ब० ॥ ॥ ४ ॥ वर संवेगरसे हो, मुनि जस्या जी ॥ पाम्युं पाम्युं केवल नाण ॥ माणकमुनि जस नामे हो, हरख्यो घणुं जी ॥ दिन दिन चढते रे, वान ॥ ब० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री ढंढण ऋषिजीनी सद्याय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदणा ॥ हुं वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अजिग्रह लीधो आकरो ॥ हुं वारी० ॥ लब्धे लेशुं आहार रे ॥ हुं वारी लाल ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मले शुद्ध आहार रे हुं० ॥ न लीये मूल असूऊतो ॥ हुं० ॥ पींजर हुवो गात रे ॥ हुं ॥

ढं० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस्स अढार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखीयो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जिणंद रे ॥ हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन्य जादवकुल चंद रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलीआरे मुनिवर मल्या हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं०॥ किणही मीथ्यात्वी देखिने ॥ हुं० ॥ आव्यो भाव विशेष रे ॥ हुं ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ल्यो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ रिषीजी लइ आवीया ॥ हुं० ॥ प्रभुजी पास विशुद्ध रे ॥ ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुज लब्धे मोदक मिल्या ॥ ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥ लब्धि नहिं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्धि निहाल रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हुं० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंभाडे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ८॥ आवी सूधी भावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं० ॥ कहे जिन हर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ९ ॥ इति ढंढण ऋषिनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री अइमंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमंता मुनिवरजूके, करणीकी बलि-हा

री वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्रीदेवी नंदन, कोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ ॥ २ ॥ तपगुण रयण संवत्सर आदिक, करकें काय उद्धारीवे ॥ प्रभु आदेशे विपुलाचल परि, करी अणसण अति जारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवारी वे ॥ अढार अमृताले तिहिं गिरि उपर, कीनी थापना सारी वे ॥श्री०॥४॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसाये, सुवि चारी वे ॥ शिष्य क्षमाकल्याण हरख धर,गावे अति जयकारी वे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सद्याय ॥

॥ अथ श्री करकंडू प्रत्येक बुधजीनी सद्या ॥

॥ चंपा नगरी अति जली ॥ हुं वारी लाल ॥ दधिवाहन नूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूखें उपनो ॥ हुं० ॥ कर्मे कीधो चंमाल रे ॥ हुं०॥ ॥१॥ करकंडुने करु वंदणा ॥ हुं० ॥ पहिलो प्रत्येक बुध रे ॥ हुं० ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं० ॥ समकित थाये शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ लाधी वांशनी लाकमी ॥ हुं० ॥ थयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं० ॥ बापसुं संग्राम मांमीउं ॥ हुं० ॥ साधवी लीउं समजाय रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वृषन्न रूप देखी करी ॥ हुं० ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे ॥ हुं० ॥ उत्तम संजम

आदस्यो ॥ हुं० ॥ देवतादीधो वेश रे ॥ हुं० ॥ ४॥ कर्म खपाय मुगतें गया ॥ हुं० ॥ करकंडू रुषि राय रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मनोरमा सतीनी सद्याय ॥

॥ मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नरीरे ॥ शील प्रजावें शासनसुरी, थइ जस सान्निध्यकारी रे ॥ मो०॥१॥ दधिवाहन नृपनी प्रिया अजया दीए कलंक रे कोप्यो चंपापति कहे, शूली रोपण वंक रे ॥ मो० ॥ २ ॥ ते निसुणीने मनोरमा, करे काउस्सग्ग धरी ध्यान रे ॥ दंपती शील जो निरमलुं, तो वधो शासन मामरे ॥मो०॥३॥ शूली सिंहासन थयुं शासन देवी हजूर रे ॥ संजम ग्रही थया केवली, दंपती दोय सनूर रे ॥ मो० ॥ ४॥ ज्ञानविमल गुण शीलथी, शासन शोज चढावे रें सुर नर सवि तस किंकरा, शिव सुंदरी ते पावे रे ॥ मो० ॥५॥ इति॥

॥ अथ क्रोधनी सद्याय ॥

॥ कडवां फल बे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीशतणो रस जाणीयें, हलाहल तोलें ॥ क० ॥ ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोम पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥क०॥२॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धर तो मन वेराग ॥ शिष्य ते क्रोधथकी थयो, चंमकोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥

आग उठे जे घरथकी, ते पहेलुं घर बाले ॥ जल नो जोग जो नवि मले, ते पासेंनुं परजाले ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाही ॥ क० ॥ ६ इति क्रोधनी सद्याय ॥

॥ अथ माननी सद्याय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, माने विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नही, चारित्र विण नही मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख छे शाश्वतां, ते केम लहियें जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वको संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ मानें गुण जाये गली, प्राणी, जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कस्युं जो रावणे, तेतो रामे मास्यो रे ॥ दुर्योधन गरवे करी, ते अंते सवि हास्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥ शूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे॥उदयरत्न कहे मानने, देजो तमे देशवटो रे॥रे०॥५॥इति

॥ अथ मायानी सद्याय ॥

॥ समकितनुं मुल जाणीयें जी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥

ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी, कूम कपट नो रे कोट ॥ जीजें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्री तमी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठंडे मन तणोजी, ए माया नु मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं राखे रे नेद ॥ मल्लि जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजलो जी, मेलो मायानी बुद्धि ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारग बे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ आचारांग सूत्रनी थाय ॥

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रेलो ॥ ए देशी ॥

आचारांग पहेलुं कह्युं रेलो अंग इग्यार मकार रे ॥ चतुरनर ॥ अढार हजार पदें जिहां रेलो, दाख्यो मुनि आचार रे ॥ च० ॥ १ ॥ नावधरीने सांजलोरेलो जिम नाजे नव नीति रे ॥ च० ॥ पूजा नक्ति प्रनावना रेलो, साचविये सवि रीति रे ॥ च० ॥ नाव० ॥ ए आंकणी ॥ दो सुअवंध सुहामणां रेलो, अज्जयणां पणवीस रे ॥ च० ॥ शाश्वता अर्थे इहां कहे रेलो, युक्ति श्रीजगदीश रे ॥ च०॥ ना० ॥ २ ॥ सीठडेवयणें गुरु कह्युं रेलो, मीठडुं अं

गज एह रे ॥ च० ॥ मीठडीरीते सांजले रेलो, सु
ख लहे मीठडां तेह रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ३ ॥ सुर
तरु सुरमणि सुरगवी रेलो, सुरघट पूरे काम रे
॥ च० ॥ सांजलवुं सिद्धांतनुं रेलो, तेहथी अति अ
जिराम रे ॥ च० ॥ जा० ॥ ४ ॥ श्रीनयविजयविबु
धतणो रेलो, वाचक जस कहे शीश रे ॥ च० तुम
ने पहिला अंगनो रेलो, शरण होयो निशदीश रे
॥ च० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥

॥ अथ कलियुगनी सद्याय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमां
हे आयो ॥ तीरथ नहीं कोइ इण संसारे, तेणे ए
कलियुग आयो ॥ देखो वे यारो कूम्रो कलियुग
आयो ॥ एआंकणी ॥ बावो कहे मारी नानकी
बेटी, दिन दिन मूल्य सवायो ॥ यारो कूम्रो कलियु
ग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम
जलायो ॥ बोल बंध नहि मंत्रीने, गोचर खेत्र खे
ड्रायो ॥ वे यारो ॥२॥ गुरुने गाल दिये नित चेलो,
वेद पुराण पढायो ॥ सासु चूले ने वहु खाटलडे,
फुके शरीर जलायो ॥ वे यारो ॥ ३ ॥ एशी वरस
नो हींडे होंशे, मूठे हाथ घलाये ॥ पंच तणी साखे
परणीने, अबला अर्थ गमायो ॥ वे यारो ॥४॥जोगी
जंगम ने संन्यासी जांग जखे मदवाहो ॥चोर चाड
परधनने खाये, साधु जन सीदायो ॥ वे यारो ॥५॥

निर्धनने बहु बेटा बेटी धनवंत एक न पायो ॥ नीच तणे घर अति वणी लखमी उत्तम जन सीदायो ॥ बे यारो ॥ ६ ॥ न मले बाप संगाते बेटो, घणेरे मनोर्थे जायो ॥ हाथऊपाडे मायने मारे, परणी शुं उमाह्यो ॥ बे यारो ॥ ७ ॥ घरझाने घेलो कहे बेटो, आद तणो मद वाह्यो ॥ बहु सूतीने वर हींझोले, सासरे सूवाने धायो ॥ बे यारो ॥ ८ ॥ हलखेडे ब्राह्मण गौ जोत्ति, निर्दय नाक फझायो ॥ मा बापे बेटी वेचीने, बेटाने परणायो ॥ बे यारो ॥ ए ॥ राग तणे वश गुरुने गुरुणी, काम करे परा यो ॥ कांगानी पेरे कलहो मांझी, कुल गुरु नाम धरायो ॥ बे यारो ॥ १० ॥ वैयर वार वरसनीने बेटो, दीठो गोद खेलायो ॥ माग्यां मेह न वरसे महीयल, लाजें धर्व्यो सवायो ॥ बे यारो ॥ ११ ॥ कूझा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥ पन्नणे प्रीति विमल परमारथ, जीन वचनें सुख पायो ॥ बे यारो कूझो ॥ १२ ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

धन्य धन्य ते दीन माहारो ॥ ए देशी ॥ शियल समुंव्रत को नहि, श्री जीनवर जाखे रे ॥ सुख आपे जे शाश्वतां, डुर्गति पझता राखेरे ॥शि०॥१॥ व्रत पचरकाण विना जुओ, नव नारद जेहरे ॥ एक ज शियल तणें बले, गया मुकतें तेहरे ॥ शि० ॥

॥ २ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत छे सुखदायीरे शियल विना व्रत जाणजो, कुशका सम जाइरे ॥ ॥ शि० ॥ ३ ॥ तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कमानरे ॥ शियल विना व्रत एहवुं, कहे वीर जगवानरे ॥ शि० ॥ ४ ॥ नव वाडें करी निर्मलुं, प हेलुं शीलज धरजोरे ॥ उदय रत्न कहे ते पछी, व्रतनो खप करजोरे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ निद्रानी सद्याय ॥

निद्रा वेरण हुइ रही, कीम कीजें हो सा पुरु श निदानके; चोर फरे चिहुं पासथी, किम सूता हो कांइ दिनने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे सूणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमादके ॥ जरा आवे यौवन गले, किम सूता हो कांइ कव ण सवादके ॥ नि० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा निद्रा करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो अनंत काल तिहांरहे, इम वगडे हो, कांइ धरमनो मोदके ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यम राजा हो कांइ सवल करुरके ॥ नीज सेन्या लइ चिहुं दिशे, किम जागता हो नर कहिये शूर के ॥ नि० ॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नहि, छेतराये हो नर सूतो नेटके ॥ सूतारीणी पाछा जण्या, किम कीजें हो शा पुरुषनी जेटके ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्री वीरे इम जाखीयुं, पंखी जारंड हो न करे परमाद के; तेह

तार रे ॥ श्री मह्रा० ॥ १ ॥ दानें दोलत पामीयें सखी दाने क्रोड कल्याणरे ॥ दान सुपात्र प्रन्नाव थी, सखी कयवन्नो शालिन्नद्र जाणरे ॥ श्री मह्रा० ॥ २ ॥ शियले संकट सवि टले, सखी शिलें वंदित सिद्धरे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखी सोल सति परसिद्धरे ॥ श्री मह्रा० ॥ ३ ॥ तप तपो न्नवि न्नाव शुं, तपें निर्मल तन्नरे ॥ वर्षोपवासी रुषन्नजी, सखी धन्नादिक धन्य धन्यरे ॥ श्री मह्रा० ॥ ४ ॥ न्नरतादिक शुन्न न्नावथी, सखी पाम्यो पंचम ठाम रे ॥ उदयरत्न मुनि तेह्नने, सखी नित्य किरे प्रणामरे ॥ श्री मह्रावीरे ॥ ५ ॥

॥ सामायिक लान्न सचाय ॥

॥ कर पक्किमणुं न्नावशुं, दोय घमी शुन्न ध्यान ॥ लालरे ॥ परन्नव जातां जीवने, संवल साचूं जाण ॥ लालरे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्री वीर मुख इम उचरे, श्रेणिक राय प्रत्यें जाण ॥ लालरे ॥ लाख खांमी सोना तणी, दिये दिन प्रत्यें दान ॥ लालरे ॥क०॥ ॥ २ ॥ लाख वरस लगें ते वली, एम दीये अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोलें, लगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ यिक त्यो, देव वंदन व न्नत सं आपणां, ते न्नव कर्म । कर० कर काउस्सग्ग शुन्न

चार ॥ ला० ॥ दोय सद्यायें ते वदी, टालो टालो अतिचार ॥ ला० ॥ कर ॥ ५ ॥ श्री सामायिक प्रतापथी, लहियें अमर विमान ॥ लालरे ॥ धर्म सिंह मुनि एम जणे, ए ठे मुकित निदान ॥ लालरे ॥ कर० ॥ ६ ॥

॥ अथ ठींक विचार सद्याय ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ ठींक शुकननो कहुं विचार, सुगुरु समीप सूणयो में सार॥ आगलमां जो ठींकज होय, अशुभ तणी जाणे जे, कोय ॥१॥ पहेला शुकन हुवां शुभ घणां ॥ ठींकज हुआ निष्फल तेतणां पठी कज हुआ पठी जे जाण, शुकन हुआं ते करो प्रमाण ॥ २ ॥ डावी ठींक होय अर्ध फली कहे, जमणी ठींक वुरी सज कहे ॥ पूठे ठींक सुखदायक सही, घणी ठीक ते निःफल कही ॥ ३ ॥ हांसे जय उपाधीयें करी, हठ घणो मनमांहे धरी ॥ एक ठींक ते निःफल जाण, कुतर ठींक तो निःखर आण ॥ ४ ॥ मंजार ठींक ते मरणज करे, इसी ठींक कष्टकारी सरे, ॥ वस्तु वेचतां ठींकज होय, आएयुं करीयाणुं मोघु होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां ठींकज होय, वमणो लाभ सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु जो जोवा जाय, ठींक होय तो लाभ न थाय ॥ ६ ॥ नवां वस्त्र वली पेहेरतां, ठींक होये आगल अण ठतां ॥ भोजन होम पूजानुं काम, मंगलीक जेधर्म सुठाम ॥ ७ ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनो सद्याय ॥

॥ श्रीसीमंध साहेब आगें ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहेले थानक गणीयें, वीजे पद सिद्धाणं ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथें, पांचमे पद थे राणं रे ॥ नविया ॥ वीश थानक तप कीजें ॥ ओली वीश करीजें रे ॥ ज० ॥ गणणुं एह गणीजें रे ॥ ज० ॥ जिम जिनपद पामीजें रे ॥ ज० ॥ नर जव लाहो लीजें रे ॥ज०॥वी०॥१॥ ए आंकणी ॥ उवद्याए उठे सव्वसाहूणं, सातमे आठमे नाण नवमे दंसण दसमे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ ज० ॥ ॥ वा० ॥ २ ॥ वारमे वंजवय धारीणं, तेरस मे किरियाणं ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमें नमो जीणाणं रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीगें, अढारसमे नाणस्स ॥ उंगणीशमे नमो सुयस्स संजारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे ॥ ज० ॥ ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वंदन, गणणुं दोय हजार ॥ संध विनय वुध शिष्य सुदर्शन, जंपे एह विचारो रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयल विषे शीखामणनो सद्याय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, वारी छे दुर्गति तणी॥ ठांम संगत रे मूरख तुं परस्त्री तणी ॥ जीव जोला रे, जोला तेहशुं मंम करे ॥ शीख मानी रे, ठानी वात तुं परिहरे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जो वात करीश

परनारी साथें, लोक सहु हेरे अठे ॥ राय रांक थ
इ ने रह्या रानें, सुखें नहीं बेसे पठे ॥ ए मदनमा
ती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलुं तो
वली सुख देखाडे पठे, पठाडे नामिनी ॥१॥ ढाल कर
पगना रे, नयण वयण चाला करी ॥ बोलावी रे, नर
लेइ धाइ सुंदरी ॥ नोलावी रे,हाव नाव देखाडशे ॥
पगे लागी रे, मरकलडे पठे पाडशे ॥३॥ त्रुटक ॥ ए
पास पाडे धन गमाडे, मान खंडे ले लठी ॥ बोलं
ती रुडी चित्त कूडी, कूम कपटनी कोथली ॥ ए नर
अमूलक वस्य पडिर्ज, पठे नपोसायें पायको दीवा
नरूंडे मानखंमे मारसहे पठे रायको॥ ४ ॥ ढाल ॥
ढांरूी लेशे रे, वेश्याना लंपट नरा ॥ सहु सधवा
रे, विधवा दासी दूरे करा जा नाशी रे, रुप देखी
जीव एह तणुं ॥ ऊनो रही रे, एह साइामुं, मम
जो घणुं ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ घणुं म जोइश एह साहा
मुं, कुलस्त्री दीठे नवि गमे ॥ जीम शूनी पूठें श्वान
हींडे, तिम परनारि पूठे कां नमे ॥ जिम बिलाम्रो
दूध देखे, मोलें डांग न देख ए, परनारि वेधो पुरुष
पापी किसो नय नवि, लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फू
ल वेणी रे, शिर सिंदूर सेंथोन्नस्यो ॥ ते देखी रे,
फट मूरख मन कां कस्यो ॥ देखी टीलां रे, ढीलां
इंद्रिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखमी रे, आंखें दे
इ तुं कां रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कां रह्यो मूरख आं·

खें देह, शणगार न्नार एणें धस्या ॥ ए जली जीहा आखें पीहा, कान कूपा मल नस्या ॥ नारी अग्नि पुरुष माखण, वोलतां वीगरे ॥ स्त्री देहमां शुं सार दीठो, मूढ महिआंकां करे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इंद्रिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिठ ॥ माने नरगइ रे, सरग करी विष व्यापीठ ॥ कां ऊलो रे, शणगार देखी एहना ॥ जाणी प्राणी रे, ए ठे डुःखनी अंगना ॥९॥त्रुटक॥ अंगना तुं ठोरूी जो करे,तो जश कीर्ति सघले लहे ॥ कुशीलनुं जो नाम लियेको, परलोक डुरगति डुखसहे, विजय न्नद्र बोले जे न रूोले, शीयल थकीजे नरवरा॥तस पायें लागुं सेवा मागुं, जे जगमांहे जयकरा॥१०॥इति॥शील सद्याय॥

॥ अथ प्रन्नातें वाहाणलां गावानो सद्याय ॥

॥ मिथ्यामति रे रजनी असरालके ॥ वाहाणलां न्नलें वायांरे ॥ जीहां उंघे रे प्राणी वहुकाल के ॥ वहाणां० ॥ नवि जाणे रे जीहां यमनी फाल के ॥ ॥ वा० ॥ तिहां पामे रे पग पग जंजाल के ॥ वा० ॥ १ ॥ जीहां रूरूपे रे क्रोध दवनी झाल के ॥वा०॥ मानरुपी रे अजगर विकराल के ॥ वा० ॥ डंसे माया रे सापणी रोपाल के ॥ वा० ॥ जीहां चावो रे लोन्न रुप चमाल के ॥ वा० ॥२॥ रागादिक रे राक्षस महावृंद के ॥ वा० आठ कर्मना रे जीहां मांड्या फंद के ॥वा०॥ जीहां देखे रे डुर्गति डुःख दंद के

॥ वा० ॥ नवी दीसे रे जीहां ज्ञान दिणंद के ॥
॥ वा० ॥ ३ ॥ धसमसतां रे जीहां विषयनी जाल
के ॥ वा० ॥ लीये लूटी रे नगणे पलिवाल के ॥
॥ वा० ॥ अटवी अनंती रे जीहां विकट उजाड के
॥ वा० ॥ चाले नही रे जीहां व्रतनी वाड के ॥
॥ वा० ॥ ४ ॥ निरखंतारे श्रीजिनमुख नूर के ॥
॥ वा० ॥ हवे उग्यो रे महासमकेत सूर के ॥वा०॥
डुखदायी रे दोषि गया दूर के ॥वा०॥ वली प्रगट्या
रे पुण्यतणा अंकूर के ॥ वा० ॥ ५ ॥ सुता जागो रे
देसविरतिना कंत के ॥ वा० ॥ वली जागो रे सर्व
विरति गुणवंत के ॥वा०॥ तमे नेटो रे जावे जगवंत
के ॥वा०॥ पडिक्कमणां रे करो पुण्यवंत के ॥वा०॥६॥
तमे लेजो रें देवगुरुनु नाम के ॥वा०॥ वली करजो
रे तमे धर्मनां काम के ॥ वा० ॥ गुरुजन नारे गावो
गुण ग्रामको ॥वा०॥ प्रेम धरीनें रे करो पूज्य प्रणा
म के ॥वा०॥७॥ तमे करजो रे दशविध पच्चखाण के
॥ वा० ॥ तुमे सुणजो रे श्रीसूत्रवखाण के ॥ वा०॥
आराधो रे श्री जिननी आण के ॥ वा० ॥ जिम
पामो रे शिवपुर संठाणके ॥ वा० ॥ ७ ॥ सांजलीने
रे श्रीमुखनी वाण के ॥ वा० ॥ तमे करजो रे सही
सफल विहाण के ॥ वा० ॥ वदे वाचक रे उदयर
ल सुजाण के ॥ वा० ॥ एह जणतां रे लहीये कोड
कल्याण के ॥ वा० ॥ ए ॥ इति ॥ वाहला ॥

॥ अथ वैराग्य सवाय ॥

कोउ काज न आवे रे डुनियांके लोको, कोउ काज न आवे ॥ जूठी वातका आनि जरोंसा, पीठे सें पस्तावे रे ॥ डु० ॥ १ ॥ मतलवकी सव म लि लोकाइ, वहोतहिं रंग वानावे रे ॥ डु० ॥ २ ॥ अपना अर्थ न देखे सो तो, पलकमे पीठ देखावे रे ॥ डु० ॥ ३ ॥ वाजीगरकी वाजी जेसा, अजव दिमाक देखावे रे ॥डु०॥ ४ ॥ देखो डुनियां सकल खीली है, युंहीं मन ललचावे रे ॥ डु० ॥ ५ ॥ जि नें जान्या तिने आप पिठान्या, वे खवरी डुःख पा वे रे ॥ डु० ॥ ६ ॥ हंस सयाने एक सांइशुं ठर, काहेकुं चित्त न लावे रे ॥ डु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चैतन्य शिक्षाजास प्रारंज ॥

॥ आप विचारजो आतमा, ज्रांतें शुं जूले; अ थिर पदारथ उपरें, फोगट शुं फूले ॥ आ० ॥ १ ॥ घटमांहे ठे घरधणी, मेलो मननो जामो ॥ वोले ते वीजो नथी, जोने धरी तामो ॥ आ० ॥ २ ॥ पा मीश तुं पासेंथकी, वाहेर शुं खोले ॥ वेसे कां तुं जूरवा, मायानी ठेलें ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रीठा विण केम पामीये, सुण मूरख प्राणी ॥ पीवाये किम पश लीयें, कांकवानां पाणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ आप स्वरुप न उलखे, मायामांहे जूले ॥ गरथ पोतानी गांठनो, व्याजमां जिम डूले ॥ आ० ॥ ५ ॥ जोतां नाम न

जाणिये, नहिं रुप न रेख ॥ जगमांहे ते केम जडे, अरुपी अलेख ॥ आ० ॥ ६ ॥ अंध तणी पेरे आ फले, सघला, संसारी ॥ अंतरपट आमो रहे, कोण जूवे विचारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पहेले पाछुं करी, पठी जोने निहाली ॥ नजरें देखीश नाथने, तेहशुं ले ताली ॥आ०॥८॥ बधण हारो को नथी, नथी ठोमा वण हारो ॥ प्रवृत्ते बांधियें पोतें, निवृत्तें निस्तारो ॥ आ०॥९॥ भेदाभेद बुद्ध करी, भासे ठे अनेक॥ भेद तजीने जो भजे, तो दीसे एक ॥ आ० ॥१०॥ काले धोळुं भेलीये,तो ते थाये बेरंगू बेरंगें बुडे सहि,मन न रहे चंगु ॥ आ०॥११॥ मन मरें नहिं जिहां लगें, घूमे मद घेर्यो ॥ तव लगें जग भूल्युंभमे, न मटे भव फेरो ॥ आ० १२ ॥ उघ तणे जोरे करी, शुं मो-ह्यो सुहणे ॥ अलगी मेली उंघने, खोली जोने खूणे ॥ आ० ॥ १३ ॥ त्यारे जगमां तुज विना, बी जो नवी दीसे ॥ भिन्न भाव मटशे तदा, सेहेजे सुजगीशें ॥ आ० ॥ १४ ॥ मारुं तारुं नवि करे, स हुथी रहे न्यारो ॥ इणेएहिनाणे ढंलीख्यो, प्रभु तेहने प्यारो ॥ आ० ॥ १५ ॥ सिद्धदिशायें सिद्धने, मलीयें एकांति ॥ उदयरत्न कहे आतमा, तो भांगे भ्रांति ॥आ०॥१६॥ इति चैतन्यशिक्षाभास संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥ राग आशावरी ॥

॥ किसीकुं सब दिन सरखे न होय ॥ प्रहऊग

त अस्तंगत दिनकर, दिनमें अवस्था दोय ॥ कि० ॥ १ ॥ हरि बलिजद्र पांमव नल राजा, रहे खट खंट रिद्धि खोय ॥ चंमाल के घर पाणी आएयुं, राजा हरिचंद जोय ॥ कि० ॥ २ ॥ गर्व म कर तुं मूढ गमारा, चमत पमत सब कोय ॥ समय सुंदर कहे इतर परत सुख, साचो जिनधर्म सोय ॥ कि० ॥ ३ ॥ इति वैराग्य सद्याय ॥

॥ अथ निद्रानी सद्याय ॥

॥ बेटी मोह नरिंदकी, निद्रा नामें विख्यात बे ॥ धर्म द्रेषणि पापणी, न गमे धर्मनी वात बे ॥ निंद न लहे जे सज्जनां, सज्जनां बे दुःखनंजना बे ॥ टेक ॥ नि० ॥ १ ॥ घेरे सघला जीवने, जिहां जमनो पास बे ॥ जा घमि निंद न पाइयें, ता घमि प्रज्ञुको वास बे ॥ निं० ॥ २ ॥ आलस उमराव एहनो, जालिम जोरू जुवान बे ॥ दूत बगासूं जाणजो, चाले आगेतान बे ॥ निं० ॥ ३ ॥ जाति पांच ठे जेहनी पसरी विश्व ॥ केवली विना एक जेहनी,कोइ न
ढूकडी धर्म प
तिहां होय
उंघने,
जीतिये,

॥ अथ वैराग्य सघाय ॥

॥ प्राणी काया माया कारमी, कूडो छे कुटुंब परिवाररे ॥ जीवऋला ॥ समरण कीजें सिऊनुं ॥ माहरुं माहरुं म कर रे मानवी, पंथ वहेवुं परले पार रे जीवऋला ॥ सम० ॥ १ ॥ प्राणी सहुने वलावे सांकल्या. मलिया छे मोहने संबंध रे जीवऋला ॥ प्राणी आयु क्षयें अलगां थयां, धीठो एवो संसारी धंध रे जी० ॥ सम० ॥ २ ॥ प्राणी काष्ठ परें रे काया वले, वली केश वले जेम घास रे ॥ जी० ॥ प्राणी मानवी मर्कट वैरागीया, वली पडे माया विश्वास रे जी० ॥ ३ ॥ प्राणी पऋाइ उडे जीव उपरें, दोरी पवन वले लेइ जाय रे जी० ॥ प्राणी त्रुटी दोरी संधाय छे, आउखु त्रुटुं न संधाय रे जी० ॥ सम०॥ ॥ ४०॥ प्राणी काचे कुंजे पाणी केम रहे, हंस उऋी जाय काय रे जी० ॥ प्राणी आशा अतिघणी आद रे, थावा वालो तेहिज थायरे जी० ॥ सम० ॥ ५ ॥ प्राणी जेने घरे नोवत गऋगडे, गावे वली खट राग रे जी० ॥ प्राणी गोखें तेहने धूमता, शून्यथये० वली उडे काग रे जी० ॥ सम० ॥ ६ ॥ प्राणी एम संसार असार छे, सारमां श्रीजिनधर्म सार रे जी प्राणी शांति समर समता घरी, चार त्यजी वली आदरो चाररे जी० ॥ सम० ॥ ७ ॥ प्राणी पांचे तजो रे पांचे नजो, त्रण्य जीपो त्रण गुणधार जीरे ॥

अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उद्वे
ग वंछे यश घणो, न करे विनय वडेरातणो ॥ २ ॥
जय आणे चिंते व्यापार, फल संशयनी आणुं सार
॥ हवे वचनना दोष विचार, कुवचन बोले करे
हुंकार ॥ ३ ॥ ले कुंची जा घर उघारु, मुख लवरी
करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह
करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अ
पार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण
वार, चपलासन जोवे दिश चार ॥ ५ ॥ सावद्य
काम करे संघात, आलस मोडे ऊंचे हाथ ॥ पग
लंबे बेसे अवनीत, उठिंगन ल्ये थांभो भींत ॥ ६ ॥
मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥
अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग
॥ ७ ॥ निद्रायें रस फल निर्गमें, करहा कंटक तरु
ए जमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक कर
जो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली,
केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुभवीर वचन पा
लती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ अइमंताजीनी सद्याय ॥

॥ श्री अइमंता मुनिवरजूकी, करणी की बलि
हारी बे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन
चित धारी बे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपत्ति श्री
देवी नंदन, पोलासपुर अवतारी बे ॥ अंग अग्यार

पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥
॥ श्री० ॥ २ ॥ तप गुण रयण संवत्सर आदिक,
करकें काय उझारी वे ॥ प्रभु आदेशें विपुलाचल
पर, करी अणसण अति त्नारी वे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर कर्म कलंक
निवारी वे ॥ अढारसें अमृतालें तिहि गि
रि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक
अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य
क्षमा कल्याण हरख धर, गुण गावे जयकारी ते ॥
॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति अइमंता मुनिनो सद्याय ॥

॥ अथ समकेतनी चोपाइ ॥

॥ धुर प्रणमुं जिनवर चोवीश, सविगणधरने
नामुं शीश ॥ तेहनां वयण सुणे जे कान, मन रा
खे समकितने ध्यान ॥ १ ॥ साचो देव एक वीतरा
ग, धर्म तणो जेणें दाख्यो माग ॥ ते जिनवरनी
पालुं आण, जे होये साचा सुगुरु सुजाण ॥ २ ॥
पंच महाव्रत मनमां धरे, राग द्वेष पेहेलुं परिहरे ॥
चारित्र पालेटाले दोष,लीये आहार थोडे संतोष॥३॥
दोषमांहे जे आधाकर्म, टाले ते त्रोडे आठ कर्म ॥
आधाकर्म करे नर नार, ते पण घणुंए रुले संसार
॥ ४ ॥ मूकी देह तणा सुखवास, सहे परीसह बा
रे मास ॥ तपे करिने जेणें जस लाध, वंदनिक ते
त्रिभुवन साध ॥ ५ ॥ एक संयमने बीजी क्षमा,

शत्रु मित्र जेहने बेहु समा ॥ दृष्टिराग तरी उतरी ते जाशे नव सायर तरी ॥ ६ ॥ एकआपणुं करी मन गाम, जणेगुणे सिद्धांत तमाम॥सद्गुरुनो उपदेश आचार, जोइ समजो हैये विचार ॥ ७ ॥ एकपहेरे मुनिवरनो वेश, पण साचो न दीये उपदेश ॥ जेह उत्थापे जिनवर वयण, तेहने किहां हियानां नयण ॥ ८ ॥ घर मूकीने थया माहातमा, ममता जइ लागा आतमा ॥ मारुं मारुं एम कहे घणुं, तेह मूरख वदनता पणुं ॥ ९ ॥ एक त्यागी दीसे छे इस्या, लोभें शिष्य करे अण कश्या ॥ पंच महाव्रत कहे,उचरे, उपशम रस ते कहो किम गरे ॥ १० ॥ आधाकर्मी वहोरे घणो धरम विगोवे जिन वरतणो यंत्र तंत्र मूली करी करी, चूरण आपे घर घर फरी ॥ ११ ॥ कुगुरु तणा जाणी अहि नाण, सेवा न करे जे होये जाण ॥ जिनवाणी सांजलीयें इसी, सोनुं गुरु बे लीजें कसी ॥ १२ ॥ सोनाथी होय एकज वहाण कुगुरुकरे नव नवनीहाण, सोने घाठा पण ते मले, कुगुरु पसायें नव नव रुले ॥ १३ ॥ सर्पे कसे हुए नवनो अंत, कुरुगु करे संसार अनंत ॥ एम जाणी वली लीजे साप, कुगुरु नमि नवि बोलियें आप ॥ १४ ॥ एक वहे जिनवरनी आण, वैर वहे तिहां एक अजाण ॥ एह आपणा नहीं गुरु एम, बोली लीये वदंतुं तेम ॥ १५ ॥ एक जणे

मारा गुरु देव, में करवी एहि जनी सेव ॥ पक्
तणा स्वामीने मान, अवर पक्षने दे अपमान ॥१६॥
एक सगा जाणी माहातमा, गुणपाखें तारे आतमा॥
पात्र जणी पूजे तेहने, समकित केम ठे तेहने ॥
॥ १७ ॥ देखी परखी गुरु गुणवंत, श्रावकने मनसं
यमवंत ॥ एह आपणा नही इम जणे, दान मान
सघले अवगणे ॥ १८ ॥ एका ने गठनो अनुराग,
पण न लहे साचो जिनमाग ॥ वीर वचन लेइने
पाधरुं, कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने
आगमनुं बहु मान, तेहना उघडे एणे कान ॥
ए साधारण गुरुनी वात, जइने जोस्ये मुक्ति मात ॥
॥ २० ॥ हृयय नयन तम जुउ सुजाण, ठंको कुगुरु
ए जिन आण ॥ सद्गुरु तणा चरण आचरो, जेम
जवसायर लीलायें तरो ॥ २१ ॥ जे जिन आण व
हे निशदीश, ते उपर जे नाणे रीश ॥ नवे तत्त्व
निरता सद्दहे, सूधूं समकित तेते कहे ॥२२॥ एहवुसम
कित सूधु जाण, धर्मकाजनु म करीश काण ॥
जिनवर पूजासद्गुरु जक्ति, जावें करवी आतम
सक्ति ॥ २३ ॥ पडिक्कमणुंने फासुं नीर, कीजें
धर्म कह्युं जे वीर ॥ धर्में ऋद्धि सिद्धि घर हूत,
धर्में संकट सवि जाजंत ॥२४॥ धर्में सूर्य निरतो तपे,
धर्में पाप करम सवि खपे ॥ धर्में होये रुपनो योग,
धर्मपसायें संपत्ति जोग ॥२५॥ जणे गुणे ने बहु तप

करे, पण समकित सूधुंनादरे ॥ समकित विण ते सहुए फोक, समकित आदर करवुं रोक ॥ २५ ॥ समकित माय बाप संसार, समकित सुख संपत्तिनो सार ॥ समकित एह धर्मनु मूल, समकितथी सहु ए अनुकूल ॥ २६ ॥ समकित रुद्धि सिद्धि घर घणी समकित लगें होये सुर धणी ॥ समकित सीजे सघ लां काज, समकित लगें त्रिजुवननुं राज ॥ २७ ॥ समकित सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनुं जुउ मंफाण ॥ तपविण श्रेणिक राजह धणी, लेशे पदवी अरिहंत तणी ॥ २९ ॥ सुमकित पालेजे नर नार, वली नआवे ते संसार ॥ एम जाणी समकित आ दरो, सिद्धि रमणी जेम लीला वरो ॥ ३० ॥ इति॥

॥ अथ आत्मशिक्षा सद्याय ॥ राग रामग्रीमा सहेजानंदी देशी ॥

॥ आतमरामेंरे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय रे ॥ ताहारुं दीसे न कोय रे, सहु स्वारथी मल्युं तोय रे, जन्म मरण करे लोयरे, पूठें सवि मली मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि का रिमुं, कूमो कुटुंब परि वार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विण नही कोइ आधार रे, जिणें पा मे जव पार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनंत कलेवर मूकी यां, तें कीयां सगपण अनंत रे ॥ जव ज्रढेगें रे तुं

जम्यो तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो हृदय मां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ जोग अनंता तें जोग व्या, देव मणुए गतिमांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवमो, हजी तुज वांछा छे त्यांहिरे, आण संतोष चित्तमांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतम तणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध तुज को नहीं, शुद्ध निश्चें इम धारी रे इणविध निज चित्त ठारी रे, मणिचंद्र आतम तारी रे॥आ०५

॥ अथ समय सुंदरजीकृत मायानी स्वाध्याय ॥

॥ माया कारमी रे, माया म करो चतुर सुजाण ॥ जा० ॥ ए आंकणी ॥ मायायें वाह्या जगत विलुद्धा, डुखीया थाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हाना महोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी ॥ वली विशेषें अतिघणी व्यापे, घरमाने ऊजेरी ॥ मा० ॥२॥ योगी जंगम यती संन्यासी नग्नथइ परवर्या ॥ ऊंधे मस्तक अग्नि धखंती, मायाथी नवि मरिया ॥मा०॥ ॥ ३ ॥ माया मेली करी बहु नेली लोनें लक्षण जाय ॥ चोर मरें धरतीमां घाले, ऊपर विसहर थाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ माया कारण डुरदेशांतर, अटवी वनमां जाय,प्रवहण वेसीद्वी पदि पोतर सायरमा जंपाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ शिवभूति सरिखा सत्यवादी, सत्यगोप कहावे ॥ रतन देखी मन तेहनुं चलीउं, मरीने डुर्गति जावे ॥ मा० ॥ ६ ॥ लब्धिदत्त मा

थायें नमीयो, पमीयो समुद्र मजार ॥ मुख माख
णीठं थइने मरीयो, पमीयो नरक डु वार ॥ मा० ॥
७ ॥ इंद्रे तो सिंहासनथापी, संजूयें माया राखी ॥
नेमीसर तो माया मेली, मुगतीमां थया साखी ॥
मा०॥८॥ मन वचन कायायें माया, महेली वनमा
जाय ॥ धन्य धन्य तेह मुनि सर जेहना तीन
नवन गुणगाय ॥ मा० ॥ ए ॥ एवुं जाणीने नविप्रा
णी, माया मूको अलगी॥ सम थसुंदर कहे सार छे
जगमां, धर्म रंगशुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीलविषे सद्याय ॥

॥ रखेकोइ रमणी रागमां, प्राणी मुंजाउ ॥ अ
थिर ए वाला उपरे, थिरशाने थाउ ॥ १ ॥ एतो
अनरथनुं आश्रम छे; कलेशनो छे कंदो ॥ वैरोदधी
पूर वधारवा, आवो पूनमचंदो ॥ र० ॥ २ ॥ कुलटा
नारीने कारणें, केइ कुलवंता ॥ आचरण हीणा आ
चरे, वहालाशुं वेढंता ॥ र० ॥ ३ ॥ डुखनी दरी
ए सुंदरी, डुरगतीनी दाता ॥ आगमथी द्यो उल
खी, गुण एहना ज्ञाता ॥ र० ॥ ४ ॥ खांम मीठी
करी लेखवे, मलतां मूढप्राणी ॥ उदेवदे कहीयें पठे,
जिनमतीयें जाणी ॥ र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मुनि दान विजयजी कृत कर्म उपर सज्झाय ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥
सुख डुःख सरज्या पामीयें रे, आपद संप्रद होय ॥

लीला देखी परतणी रे, रोष म धरजो कोय रे, ॥ प्राणी मन नाणो विष वाद ॥ एतो कर्मतणा पर साद रे ॥ प्रा० म० ॥ १ ॥ फलने आहारे जीवीआ रे, बार वसर वन राम ॥ सीता रावण लइ गयो रे. कर्म तणां ए काम रे ॥प्रा०॥२॥ नीर पाखें वन एकलो रे मरणपाम्यो मुकुंद॥नीच तणे घर जल वह्यो रे,शीसधरी हरिचंद रे॥प्रा०॥३॥नले दमयंति परिहरी रे, रात्रि समय वन बाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निर वाह्यो काल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ रुप अधिक जग जाणीयें रे, चक्री सनत कुमार ॥ वरस सातसें भोग, वी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ रुपें वली सुर सारिखा रे, पांडव पांच विचार ॥ ते वन वासें रझवड्या रे, पाम्या दुःख संसार रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रीभुवनपति विख्यात ॥ ते पण कर्मविटंबीया रे, तो माणस केइ मात रे, ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ दोष न दीजें केहने रे, कर्मविटंबण हार ॥ दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे ॥प्रा०॥८॥ इति कर्मनी स्वाध्याय॥

॥ अथ सुमति विलाप सद्याय प्रारंभ ॥

॥ पझजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो मोहमहे राण ॥ वाह्यो महरो निजघरें नावीयो, एणे परघर कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ इम कहे सुमती सुजाण ॥

वा० ॥ १ ॥ दांतपाडुरें डुती तणा, पाम्रोसणना लर्ज प्राण ॥ जेंणें मह्वारो जीवन ञोलव्यो ॥ लइ ना ख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥ माययें मद पाइ रे, वास्यो पोताने वास ॥ माह्वारोने वासो एणें टा लीयो, इणे मुज कीधी निरास ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुण वंतना गुण गोपवी, निगुणाशुं मांडे गोठ ॥ आप स्वरुप न ओलखे, एतो पापनी चलवे पोठ ॥ वा०॥ ॥ ४ ॥ अपूज्य साथें धरे आसकी, एतो पूज्यना पूजे पाय ॥ परम महोदय पामशे ज्यारें आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ श्रीदादापास पसाउलें, मेंतों कुमतीनो पाम्यो कोट ॥ घरें आण्यो निज घरधणी, मेंतो शोकनी चूकवी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ उदयरतन वाचकवदे, पूजशे जे प्रञुना पाय ॥ ते परमपदें पधारशे, वली संपद लेशे सवाय ॥वा०॥७॥

॥ अथ श्री शांतिनाथनो दशमो ञव मेधरथ राजानी सद्याय प्रारंञः ॥

॥ दशमें ञवेंश्रीशांतिजी, मेघरथ जीवडा राय रूमाराजा ॥ पोसह्व शालामां एकला, पोसह लीयो मन ञाय ॥ रूमा राजा ॥ धन्य धन्य मेघरथ राय जी, जीवदया गुण खाण ॥ धर्मी राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इशानाधिप इंद्रजी, वखाण्यो मेघरथ राय ॥ रुमा राजा ॥ धर्मे चलाव्यो नवि च ले, महासुर देवता आय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य०॥२॥

पारेखुंसींचाणा मुखें अवतरी, पंखीयुं पारेवुं खोला मांय ॥ रुडा राजा ॥ राख राख मुज राजवी, मुज ने सींचाणो खाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ सींचाणो कहे सुणो राजीया, ए ठे महारो आहार ॥ रुडा राजा ॥ मेघरथ कहे सुण पखीया, हिंसाथी नरक अवतार ॥ रुडा पंखी ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ शरणे आव्युं रे पारेवडुं, नहीं आपुं निरधार ॥ रुडा पंखी ॥ माटी मगावी तुजने देउं, तेहनुं तुं कर आहार ॥ रुडा पंखी ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ माटी खपे मुज एह नी, कां वली ताहरी देह ॥ रुडा राजा ॥ जीवदया मेघरथ वसी, सत्य न मेले धर्मी तेह ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ काती लेइ पिंम कापीनें, ले मांस तुं सीचाण ॥ रुडा पंखी ॥ त्राजुए तोलावी मुजने दीउं, ए पारेवा प्रमाण ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥७॥ त्राजुउं मगावी मेघरथ रायजी, कापी कापी मुके ठे मंस रुडा राजा ॥ देवमाया धारण समी, नावे एकण अंश ॥ रुडा राजा ॥ धन० ॥ ८ ॥ माइ सुत राणी वलवले, हाथ जाली कहे तेह ॥ घेला राजा ॥ एक पारेवाने कारणें, शुं कापोठो देह ॥ घेला राजा ॥ धन्य० ॥ ए ॥ महाजन लोक वारे सहु, म करो एवडी वात ॥ रुडा राजा मेघरथ कहे धर्म फल नलां, जीवदया मुजधात ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ ॥ १० ॥ त्राजुयें बेठा राजवी, जे नावे ते खाय ॥

रुमा पंखी ॥ जीवथी पारेवो अधिको गएयो, धन्य पिता तुज माय ॥ रुमा राजा धन्य० ॥ ११ ॥ चड ते परिणामे राजवी, सुर प्रगट्यो तिहां आय ॥ रुमा राजा ॥ खमावे वहुविधें करी, लली लली लागे ठे पाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ इंद्र प्रशंसा ताहारी करी, तेहवो तुं ठो राय ॥ रु डा राजा ॥ मेघरढ काया साजी करी, सुर पोहोतो निज ठाय ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ संयम लीयो मेघरथ रायजी, लाख पूरवनुं आय ॥ रुमा राजा ॥ वीशस्थानक विधें सेवियां, तीर्थंकर गोत्र वंधाय ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ इग्यारमे न वें श्रीशांतिजी, पोहोता सर्वार्थसिद्ध ॥ रुमा राजा ॥ तेत्रीस सागर आजखुं, सुख विलसे सुर रिद्ध ॥ रुडा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ एक पारेवा दयाथकी, वे पदवी पाम्या नरिंद ॥ रुडा राजा ॥ पांचमा च क्रवर्त्ति जाणियें, शोलमा शांतिजिणंद ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १५ ॥ वारमे नवें श्रीशांतिजी, अचिरा कूखेंअवतार ॥ रुडा राजा ॥ दीक्षालेइने केवल व स्या, पहोता मुगति मोझार ॥ रुडा राजा ॥ १७ ॥ त्रीजेनवें शिवसुख लह्यो, पाम्या अनंतु ज्ञान ॥ रु मा राजा ॥ तीर्थंकरपदवी लही, लाखवर्ष आयु जाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १७ ॥ दयाथकी नव निधि होवे, दया ये सुखनी खाण ॥ रुडा राजा ॥

भव अनंतनी ए सगी, दया ते माता जाण ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ १९ ॥ गजभवें शशलो राखियो, मेघकुमार गुंण जाण रुडां राजा ॥ श्रेणिकराय सुत सुख लह्यां, पोहोता अनुत्तर विमान ॥ रुमा राजा ॥ धन्य० ॥ २० ॥ एम जाणी दया पालजो, मनमांहे करुणा आण ॥ रुमा राजा समयसुंदर एम वीनवे, दयाथी सुख निरवाण ॥ रुम राजा ॥ धन्य० ॥२१॥

॥ अथ श्री लब्धिविजयजी कृत पंदर तिथिनी पंदर ॥ सद्याय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमद्गोडी जगधणी, दायक शिवग ति जेह ॥ अलिय विघन दूरें हरे, टाले दुरित अ छेह ॥ १ ॥ सुधादृष्टि होवे सदा, एहवी जेहनी दृ ष्टि ॥ उरग तजी सुरपति कस्यो, गिरुर्ड गुणें गरिष्ट ॥ २ ॥ भाविघपद पंकज सदा, हुं नित्य प्रणमुं तास ॥ सकल मनोरथ पूरवे, ते वीशमो जिनपाश ॥ ३ ॥ भावे प्रणमू भारती पूरे पूरण आश ॥ मूरखनें पंडि त करे, आपे वचन विलास ॥ ४ ॥ ( पांठांतरें ) मूरखने पंडित करे, जेवी तुज आख्यात ॥ वचन सुधारस पोषवा, वर दे शारद मातु ॥ ४ ॥ शक्ति नहिं सिद्धांतनी, बुद्धि नही लवलेश ॥ वचन विला स करी कहुं, ते पण नहिं सुविशेष ॥ ५ ॥ पण मु ज एक आधार छे, सगुरु तणो पसाय ॥ तस अनु भावें उपजे, वचन सदा सुखदाय ॥ ६ ॥ आगमना

अनुसारथी, आणी मन पवित्र ॥ पंदर तिथि सात वारनां, पन्नणुं तेह चरित्र ॥ ७ ॥ जिम मृग नाद लीनो थको, निसुणे थइ एक रंग ॥ तिम सुणजो नविया तुमें, आणी चित्त अन्नंग ॥ ८ ॥

॥ अथ प्रतिपदानी सञ्चाय प्रारंनः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ पहेली तिथि एणीपरें वदे रे, सांनलो प्राणी सार ॥ एक धर्म जग आदरो रे, जाणी अथिर संसार रे प्राणी ॥ धरजो धर्मशुं राग, जिम पामो नवतागो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दश दृष्टांतें दोहिलो रे, मानवनव अवतार ॥ पामी धर्मने सद्दहो रे, पामो जिम जयकारो रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ध० ॥ २ ॥ धर्म वडो संसारमां रे, नांखे श्रीकीरतार ॥ सुरमणिसम ए धर्म छे रे, अरूवन्नियां आधारो रे ॥ प्र० ॥ ध० ॥ ३ ॥ धर्मथकी संपद मले रे, धर्मथकी नवनिधि धर्मथकी संकट टले रे, धर्मथकी ऋद्धि वृद्धि रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ४ ॥ जुर्ज धर्मप्रन्नावथी रे, चक्री नरत नरेंड ॥ अजरामर पद शाश्वतां रे, पाम्यो परमाणंदो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ॥ ५ ॥ जे नर जिनधर्म पामीने रे, करशे प्रमाद लगार ॥ तो पडवे कहे जीवडो रे, पडशे नरक मकारो रे ॥ प्रा० ॥ ध० ॥ ६ ॥ एम जाणी नवि ना

वशुं रे, कीजे अनुत्तर धर्म ॥ विजय लब्धि सदा लहो रे, छंमी मिथ्या जरमो रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वितीयानीसजऊाय प्रारंजः ॥

॥ कोइलो वर्वत धुंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

बीज कहे जव्य जीवने रे लो, निसुणो आणी रीऊ रे ॥ सुगुणनर ॥ सुकृतकरणी खेतमें रे लो, वावो समकित बीज रे ॥ सु० ॥ धरजो धर्मशुं प्रीतमी रे लो, करि निश्चय व्यवहार रे ॥ सु० ॥ इह जवें परजवे जवोजवें रे लो, होवे जयुं जग जयकार रे ॥ सु० ॥ धर० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ किरिया ते खातर नाखियें रे लो, समता दिजें खेम रे ॥ सु० ॥ उपशम नीरे सींचीयें रे लो, उगें जयुं समकित छोम रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ २ ॥ वाम करो संतोषनी रे लो, तस पांखमी चिहु छोर रे ॥ सु० ॥ व्रत पच्चरकाण चोकी ठवो रे लो, वारे युं कर्मना चोर रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ अनुजव केरे फूलडे रे लो, महोरे समकित वृक्ष रे ॥ सु० ॥ श्रुतिचरित्र फल उतरे रे लो, ते फल चाखो शिक्षरे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ४ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीयें रे लो, स्वाद ल्यो साम्य तांबूल रे ॥ सु० ॥ इण रसें संतोष पामशो रे लो, लेहशो जवनिधि फूल रे ॥ सु० ॥ ध० ॥५॥ इण विध बीज तमे सद्दहो रे लो, छांडी राग ने द्वेष रे ॥ सु० ॥ केवल कमला पामीयें रे लो, वरि

यें मुक्तिविवेक रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ समकित बी
ज ते सद्दहे रे लो, ते टाले नरक निगोद रे ॥सु०॥
विजय लब्धि सदा लहे रे लो, नित नित विविध
विनोद रे ॥ सु० ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयानी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ इडर आंबा आंवली रे ॥ ए देशी ॥

त्रीज कहे मुजउलखी रे, आदरो देवगुरु धर्म ॥
जनम जरा मृत्यु वुटस्यो रे, टालो नवनय कर्म ॥
नविकजन, धरजो धर्मशुं राग ॥ जिम पामो न
वनिधि ताग ॥ न० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
मोहिनी त्रणे परिहरो रे, राखो मन निःशल्य ॥ गा
रव त्रणे मत करो रे, ठंडो त्रएये शल्य ॥ न० ॥
ध० ॥ २ ॥ मानव नवमां मोटकां रें, कहियां तीने
रत्न ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र अछे रे, तेहनुं करियें य
त्न ॥ न० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ए त्रएये रत्नयोगथी रे, पा
मियें त्रीजुवन राज ॥ श्रीजगवंत शकारशे रे, सर
शे वंछित काज ॥ न० ॥ ध० ॥ ४ ॥ त्रिवर्गनां सुख
मेलवो रे, आणी त्रएये योग ॥ मन वचन काया
योगथी रे, टालो कर्मना रोग ॥ न० ॥ ध० ॥ ५ ॥
त्रण गुप्ति सूधी धरे रे, जे नर त्रीज आराधि ॥ वि
जयलब्धि ते पामशे रे, दिन दिन सुख समाधि ॥

॥ अथ चतुर्थीनी सद्याय प्रारंभः ॥

॥ कपूर हुवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

चोथ कहे नवि सांनलो रे, माहरा गुण अ निराम ॥ माहरी शीखें चालशो रे, तो लेशो मु क्तिनु ठाम रे ॥ प्राणी, जिनवाणी धरो चित्त ॥ ए तो आणी मन शुन्न रीत रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विकथा चारे परिहरो रे, परिहरो चार कषाय ॥ क्षमा रुपी धन संचियें रे नवोनव पातक जाय रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रिगडे वेसी जिनवरें रे, नांख्यो चउविह धर्म ॥ दान शियल तप नावना रे, ए चारे सुखनां हर्म्य रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ दानें ते दोलत पामीयें रे, शीलें जस सौन्नाग्य ॥ तप करी कर्म विनाशियें रे, नावें नाव ठ नाग रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ नवनिधि पार उ तारवा रे, ए चारे नाव समान ॥ सकल पदारथ आपवा रे, ॥ ए चारे प्रगट निधान रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ इम जाणी पुण्य कीजीयें रे, सांनली सदगुरु वाणी ॥ चिहुं गतिनां डुःख टालीयें रे, हो वे कोमी कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ चोथ तणा गुण जाणिने रे, जे धरे चउ धर्मद्वार ॥ विज य लब्धि सदा लहे रे, साधि पदारथ चार रे ॥

॥ अथ पंचमीनी सद्याय प्रारन्यते ॥

॥ जय जगनायक जगगुरु रे ॥ ए देशी ॥

पुनरपि पांचम एम वदे रे, सांनलो प्राणी सु जाण ॥ श्रीजिन अनुमतें चालीयें रे, जिम ल

हियें सुखनी खाण ॥ १ ॥ नविक जन, धरजो धर्म शुं प्रिति ॥ ए तो आणी मन शुन्न रीत ॥ न० ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ आश्रव पंच दूरें करी रे, कीजें संवर पंच, सुमिति सखी शुन्न पालीनें रे, तुमें मेंलो शिव वधूसंच ॥ न० ॥ ध० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत अनुसरी रे, पालों पंच आचार ॥ त्रिकरण शुद्धियें ध्यावजो, रे पंचपरमेष्टी नवकार ॥ न० ॥ ध० ॥३॥ समकित पंच आजुवालजो रे, धरजों चारित्र पंच ॥ पंच नूषणनें पडिवजी रे, टालो डुषण पंच ॥ न० ॥ ध० ॥ ४ ॥ मत करो पंच प्रमादनें रे, मत करो पंच अंतराय ॥ पंचमी तप शुन्न आदरो रे, जिम दिन दिन दोलत थाय ॥ न० ॥ ध० ॥ ५ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, कहेतां नावे पार ॥ वरदत्तनें गुणमंजरी रे, जुउ पाम्या नवनो पार ॥न०॥ ध० ॥ ६ ॥ पांचमी एम आराधीयें रे, लहियें पंचम नाण ॥ चउद रज्जावात्मक लोकना रे, एतो मनप ज्ञाव शुन्न जाण ॥ न० ॥ ध० ॥ ७ ॥ घनधाति कर्म खपावतां रे, वाजे हो मंगल शब्द ॥ पंचमी गति अविचल लहे रे, तिहां सुख अनंत सुलब्द ॥ न० ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठीनी सद्याय प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥ इण विध पांचे तिथि नलि वोली शुन्न परिणाम ॥ एक एकथी चढते गुणें, मनोहर

हे अन्निराम ॥ १ ॥ ठठी तणा गुण वर्णवुं, मूकी मन अन्निमान ॥ हवे न्नवियण न्नावें करी, निसुणो थइ सावधान ॥ २ ॥ ढाल ॥ फुवखफानी देशी ॥ ठठी कहे मुज उलखी रे, ठटको पापथी दूर सनेहा सांन्नलो ठकाय रक्षा कीजीयें रे, होवे ज युं सुखसनूर ॥ स० ॥ १ ॥ चार कषाय राग द्वेषने रे, नाखजो दूर विफारि ॥ स० ॥ ठए द्रव्यने उल खी रे, पालो निरतिचार ॥ स० ॥ २ ॥ समकित शुरू जगावियें रे, न्नांगियें डुःखनी वेफि ॥ स० ॥ मग्न रहो जिनधर्ममे रे, नाखो कुगति उखेफि ॥ ॥ स० ॥ ३ ॥ ठठ आराधो न्नावशुं रे न्नवियण थइ उजमाल ॥ स० ॥ न्नकित मुकित सदा लहो रे, होवे युं मंगल माल ॥ स० ॥ ४ ॥ लब्धि कहे सा जन तुमें रे, म करो प्रमाद लगार ॥ स० ॥ दिन दिन संपदा अन्निनवी रेहोवे श्री श्रीकार॥स०॥५॥

॥ अथ सप्तमीनी सप्ताय प्रारंन्नः ॥

॥ लुहारणे जायो दीकरो सो नारी हे ॥ ए देशी ॥ सातम कहे सात आतमा ॥ सुखकारी हे ॥ प्राणी राखीये सोय ॥ सदा सुखकारी हे ॥ सुख आवे गर्व न कीजीयें ॥ सु० ॥ डुःख आवे दीन न होय ॥ स० ॥ १ ॥ सात न्नय निवा रियें ॥ सु० ॥ ठफियें मिथ्या शंस ॥ स० ॥ सात अमीरस कुंफमां ॥ सु० ॥ फलीयें थइनें हंस ॥

॥ स० ॥ २ ॥ सातम दिन साखे तमें ॥ सु० ॥ वा वीयें द्रव्य विशेष ॥ स० ॥ सुकृतकर्पण उगीनें ॥ ॥ सु० ॥ उपजे धान्य विवेक ॥ स० ॥ ३ ॥ वाम करो तुमें शीलनी ॥ सु० ॥ तस पांखमी चिहुं ढोर ॥ स० ॥ चोकी ठवो सही धर्मनी ॥ सु० ॥ अध को न करे जोर ॥ स० ॥४॥ मनरुपी माल वनावियें ॥सु०॥ बेसी यें तिहां सावधान ॥स०॥ विरतिरुपी गोफ णे करी ॥ सु० ॥ नाखियें गोला शान ॥ स० ॥ ५॥ डुष्कृत पंखी उमाडीयें ॥ सु० ॥ करी निश्चयव्यव हारे ॥स०॥ पोंक आरोगियें पुण्यना ॥ सु० जवियण थइ हुशियार ॥ स० ॥ ६ ॥ सात नय जाणी तुमें ॥ सु० ॥ तद्रूपी खलां बनाव ॥ स० ॥ करुणारस जल आणीने ॥ सु० ॥ सात नय खलां पिवराव ॥ ॥ स० ॥ ७ ॥ जीवदया सकटे जरी ॥ सु० ॥ सुकृत कर्पण सार ॥ स० ॥ संवर बलदनें जोतरी ॥ सु० ॥ आणियें खला मजार ॥ स० ॥ ८ ॥ ध्यानरुपी थंज रोपीने ॥ सु० ॥ लणियें रूपक संयोग ॥ स० ॥ जि नआण सही जावीयें ॥ सु० ॥ हालरुआं अशोक ॥ स० ॥ ९ ॥ डुःखरुपी बूरां झाटकी ॥ सु० ॥ ना खियें दूर सुजाण ॥ स० ॥ आतमबल जंमारमें ॥ ॥ सु० ॥ जरजो सुकृत ध्यान ॥१०॥ स० ॥ इह जव परजव जवो जवें ॥सु०॥ पामियें सुख विचित्र ॥स०॥ संतोष राखी आतमा ॥ सु० ॥कीजें पुण्य पवित्र ॥

॥ स० ॥ ११ ॥ लब्धि कहे नविइण विधें ॥ सु० ॥ आदरे प्राणी जेह ॥ स० ॥ सात रज्जुातम नेदीनें ॥ सु० ॥ सवि सुख लेहेशे तेह ॥ स० ॥१२॥इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी सद्याय प्रारंनः ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ आठम कहे आठ मदनो, प्राणी मूको ते ठाम रे नवियण हित धरी ॥ आठ प्रकारे आतमा, उलखो तुमें अनिराम रे ॥ न० ॥ १ ॥ पडिक्कमणां पोषा करी, तोमो दुःखना वर्ग रे ॥ न० ॥ सुमिति गुप्ति सूधां धरी, मेलो सुख अपवर्ग रे ॥ न० ॥ २ ॥ अष्ट महागुण सिद्धना, ध्यावो ते निश दीस रे ॥ न० ॥ अष्ट महासिद्ध संपजे, पहोचे मनह जगीश रे ॥ न० ॥ ॥ ३ ॥ जिनदेवनी करो हाजरी, दिल पाक करी मन कोड रे ॥ न० ॥ मनरुपी घोडो वनावियें, गुरु ज्ञान लगाम जोम रे ॥ न० ॥ ४ ॥ शीलनी पाखर नाखीयें, तपरुपी खम्ग लेड हाथ रे ॥ न० ॥ क्षमा वक्तर पेहेरीनें, ध्यान कवाण सलोथ रे ॥ न० ॥ ॥ ५ ॥ विरति तीर चलाविनें, अष्ट करम मद मोडि रे ॥ न० ॥ विषय कषाय जे आकरा, तेहनां ते मस्तक तोमि रे ॥ न० ॥ ६ ॥ श्रीजिन आगल आवीनें, मजरो करो कर जोडि रे ॥ न० ॥ श्रीजिन केरा पसायथी, मोक्ष शहेरें जाउं दोमी रे ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ आठम दिन शुन जाणिनें, धर्मनां करियें

वखाण रे ॥ न० ॥ कपटनो कोट जफाफियें, वाजे युं जीत निशान रे ॥ न० ॥८॥ इणि परें अष्टमी ना वशुं, आदरे प्राणी जेह रे ॥ न० ॥ लब्धि कहे न वि तस घरे, प्रगटी पुण्यनी रेह रे ॥ न० ॥ए॥इति

॥ अथ नवमीनी सवाय प्रारंन ॥

॥ वन्यो रे विद्याजीनो कलपफो ॥ ए देशी ॥ जीरे नवमी कहे नमीयें सदा, एतो श्रीजनकेरां विंव हो विशेष ॥ नव अंगें पूजा वनावीयें, ए तो मूकी मननो दंन हो ॥ विशे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नवियण शुननावें करी ॥ ठंमो विषयकषाय अतीव हो ॥ वि० ॥ स्नात्र महोत्सव कीजीयें, एतो दीजें दान सदीव हो ॥ वि० ॥ न० ॥ २ ॥ जीरे पूजा न क्ति प्रनावना, करि रोपे जे कीर्त्ति थंन हो ॥ वि० ॥ सुख अनंतां ते वरे, तस जस नणेसुर रंग हो ॥ ॥ वि० ॥ न० ॥ ३ ॥ जिरे जिन आगें स्तवना ना वशुं, एतो जे करे नाटारंन हो ॥ वि० ॥ लान अ नंतो जिन नणे, जुर्ज महिमा नाव अचंन हो ॥ ॥ वि० ॥ न० ॥ ४ ॥ जिरे जिन स्तवना गुण गाव तां, एतो समकित होये उद्योत हो ॥ लंकापति रा वण परें, एतो वांधि तीर्थंकर गोत हो ॥ वि० ॥ ॥ न० ॥ ५ ॥ जिरे अरिहंत नक्ति प्रनावथी, ए तो जाये नवनां पाप हो ॥ वि० ॥ जिरे नव निधा न सुख संपजे, वली होवे युं अधिक प्रताप हो ॥

॥ वि० ॥ ज० ॥ ६ ॥ जिरे नवपद ध्यान सदा ध री, ए तो पालीयें नव विध शील हो ॥ वि० नव नोकषायने परहरी, एतो लहीयें सुखनी लील हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ ७ ॥ जिरे नवेतत्त्वने ओलखी, ए तो पामी मनुष्य अवतार हो ॥ वि० ॥ शत्रुमित्र स रिखा गणो, एतो सकल जंतु निर्धार हो ॥वि०॥ज०॥ ॥ ८ ॥ जिरे उपकार ते कीजीयें, ए तो टालीयें प रनी पीम हो ॥ वि० ॥ नवमीयें नवपुण्य अनुसरी, ए तो जांगीयें जवनी जीम हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ए॥ जिरे इणविध नवमी प्रमोदशुं, एतो आदरे प्राणी जेह हो ॥ वि० ॥ लब्धिविजय रंगें करी, एतो शि वसुख लेहशे तेह हो ॥ वि० ॥ ज० ॥ १० ॥ इति॥

॥ अथ दशमीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ दशमीयें डुपमन वारियें काम क्रोध मद जोर रे ॥ दशविध यति धर्म आचरी, कापीयें डुःख तणी दोर रे, लाल सुरंगारे अत्तमा वहिये धर्मनी होररे प्रग टे पुण्यनो तोर रे, लहियें मुक्तिनुं ठोर रे, वाधे जस चिहुं उंर रे ॥ ला० ॥ १ ॥ दशविध विनय अज्यासथी, तोमीयें मोहजजाल रे ॥ दशविध मिथ्या त्व परहरी, ठंमीयें आल पपाल रे ॥ ला० ॥ मेली यें सुकृतमाल रे, प्रगटे जाग्य विशाल रे, होवे मंग लमाल रे, लहियें सुख ततकाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥

त्रस थावर सर्व जीवने, संज्ञा कही तस रंग रे ॥
संज्ञा प्रत्यें उलखी, कीजें गुरुनो प्रसंग रे ॥ ला० ॥
संज्ञा धर्म न चंग रे, राखीयें चित्त अजंग रे, सुख
तटिनी वहे अंग रे, उलटे ज्युं गंगरंग रे ॥ ला० ॥
॥ ३ ॥ दशविध प्राण त्रस जीवनें, जांखे जिनवर
वीर रे ॥ ते दश प्राण तुं पामीनें, धरियें, मन दया
धीर रे ॥ ला० ॥ दशविध सुख शरीर रे. हरियें द
श विध पीर रे, तोडीयें डुःखजंजीर रे, पामीयें ज
वोदधि तीर रे ॥ ला० ॥४॥ दश पच्चरकाण सिद्धांत
मे, पाख्यां बे सहि बोल रे ॥ तेहमां नित्य एक जा
वशुं, करे पच्चरकाण अमोल रे ॥ ला० ॥ जाए ला
ज अतोल रे, मुक्तिशुं करि बंध कोल रे, लब्धि
जणे दिल खोल रे, वाजे जीतना ढोल रे ॥ला०॥५॥

॥ अथ एकादशीनी सद्याय ॥

॥ दोहाः एम दशतिथि अधिकार अथ, किंचित्
कह्यो चरित्र ॥ शास्त्र तणा अनुसारथी, वर्णन करी
विचित्र ॥ १ ॥ हवे एकादशितिथि तणा, कहे सूरि
जन माहाराज ॥ त्रिकरण करीनें आतमा, निसुणो
थइ मृगरज ॥२॥ ढाल ॥ नथरो नगीनो माहरो ॥
ए देशी ॥ हवे एकादशी इम वदे, जवि, जन बंडी
यें विषयासक्त हो ॥ वसन उढो निर्विकारनां ॥
॥ ज० ॥ जेहनी बे सबल प्रतीत हो ॥ १ ॥ गुणना
रागी जवी, अवगुण त्यागी सही होइ ये ॥ ज० ॥

पामी अनुनव संतहो ॥ एआंकणी ॥ ध्यान तणी अं गीठिका ॥न०॥ नोजन तिम संतोप हो ॥ आस व समता पीवतां ॥ न० ॥ करजो काया पोप हो ॥ गुण० ॥ अ० ॥ २ ॥ मायानिशादूरें कीजीयें ॥ न० ॥ शुद्ध स्वनावें क्षीण हो ॥ तैलान्यंग तिम उदासीनता ॥ न० ॥ श्रुत तंबोल प्रवीण हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ उंचा महेल विवेकना ॥न०॥ वास करो तेह मांहे हो ॥ अग्यार बोल ते धारियें ॥ न० ॥ रसपोपण ठे जेह हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अग्यार अंगरस सांनली ॥ न० ॥ प्रतिमा वहो अ ग्यार हो ॥ कर्म कठिन दूरें करी ॥ न० ॥ लहियें यु मुक्ति डुवार हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ एकाद शी तप कीजियें ॥ न० ॥ एम एकादश वर्प हो ॥ अग्यार अंग वाचक होवे ॥ न० ॥ पामियें सुजस हर्प हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ इणविध नवियण आदरो ॥ न०॥ जाणो एकादशी सार हो ॥ लब्धि कहे नवि सांनलो ॥न०॥ होवे ज्युं नवनिस्तार हो ॥ गु० ॥७॥

॥ अथ द्वादशीनी सद्याय प्रारंनः ॥

॥ रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥ द्वादशी कहे नविन्नावशुं, कीजें धर्मनी गोठ लाल रे ॥ विण दा में रस लीजीये, जिम साकरनी नरी पोठ ॥ लाल रे ॥ १ ॥ नावे नवियण सांनलो ॥ ए आंकणी ॥ वा रसें बार उपांगना. निसुणो जे कह्या बोल लाल रे

॥ स्वाद ल्यो अमृत तेहना, टालीजमतानिटोल लाल रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ बारे व्रत नवि उच्चरी, मेली यें सुकृत माल लाल रे ॥ कर्म मलीन दूरें करी, श्रावक कुल अजुवाल लाल रे ॥ ना० ॥ बारे नेदें तप जे अबे, आदरो बंडी क्रोध लाल रे ॥ बारे नावना नावियें ममता वारियें विरोध लाल रे ॥ ना० ॥४॥ कुरस वचन कहेतां थकां, दिवस तणुं तप जाय लाल रे ॥ अधिक खीजंतां मासनुं, तप तप्युं निष्फ ल थाय लाल रे ॥ ना० ॥ ५ शाप दियंतां वर्षनुं, तप जाये सुणो धीर लाल रे ॥ हणतां श्रमणपणुं हणे, एणी परें बोले वीर लाल रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्रीजिनवरें हो वर्णवी, निरकुप्रतिमा बार लाल रे ॥ ते तुमें नवियण पडिवजी, पालीयें शुरू आचार लाल रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ इणविध जे नर द्वादशी, आदरे शुन्न परिणाम लाल रे ॥ ते नर वंछित पाम शे, शाश्वतां सुख अन्निराम लाल रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ द्वादशी जेह आराधशे, धरशे जिनशुं राग लाल रे ॥ लब्धिविजय कहे ते नरा, पामशे नवनो त्याग लाल रे ॥ ना० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशीनी सद्याय प्रारंन्नः ॥

॥ रंगरो रे रसीया रे फुला गुलाबरो ॥ ए दे शी ॥ ते रस श्रोता आगले, नाखे मन आल्हाद हे ॥ श्रीजिनवाणी सांनाली, ते रस चाखो स्वाद

हे ॥ १ ॥ रसिया रे सूरिजन जावें हे सांजलो ॥ श्रीजिन बिंब जरावियें, कीजें जिन प्रासाद हे ॥ ज्ञानजक्ति सवि साचवो, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ २ ॥ काठीया तेरे परहरी, कीजें नव पद याद हे ॥ समकित वास सदा लही, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ३ ॥ श्रीजिन अनुमति चालियें, तजीयें मिथ्यावाद हे ॥ अनुजवरुपी शेल डी, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ४ ॥ तेरमे गुण ठाणे संचरी, शुक्लिध्यान प्रसाद हे ॥ केवलकमला पामीने, ते रस चाखो स्वाद हे ॥ र० ॥ ५ ॥ ते रसना गुण जाणीनें, जे नर तजशे प्रमाद हे ॥ ते नरना गुण बोलशे, सुर नर अमृत वाद हे ॥ र० ॥ ६ ॥ शुजजावे सुकृतपणे, तेरशगुण आराधी हे ॥ लब्धि विजय कहे नेहशुं, लहियें सुख समाधि हे ॥ र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ प्यारी ते पीयुने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥

हवे चउदशतिथि इम वदे रे हां,एतो सांजलो चतुर सुजाण ॥ जवियां जावशुं ॥ श्रुत सिद्धांतना बोलजे रे हां, एतो ते करो वचन प्रमाण ॥ ज० ॥ १ ॥ व डना कुसुम तणी परें रे हां, एतो दोहिलो मनु अवतार ॥ ज० ॥ आर्यदेश पण दोहिलो रे हां, एतो दोहिलुं श्रावक कुल सार ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रद्धा

ते पण दोहिलुं रे हां, एतो दोहिलो ज्ञानसंयोग ॥ ज० ॥ दोहिली जिननी सेवना रे हां, एतो दोहिलो मननो योग ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए सविडुर्लज पामवां रे हां, जिम रयणतणे दृष्टांत ॥ ज० ॥ ते तुम पुएयप्रजावथी रे हां, एतो पाम्यो मनुजव संत ॥ ज ॥ ४ ॥ पामी चउदश तप तणो रे हां, एतो खप करो मननें प्रमोद ॥ ज० ॥ चौद नियम संजारजो रे हां, एतो संक्षेपजो तिम चौद ॥ ज० ॥५॥ चौद पूरवना जावथी रे हां, एतो चौदमे चढे गुणठाण ॥ ज० ॥ अंतगरू केवली होवे रे हां, एतो अक्षर पंच प्रमाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ चौद जुवन ए लोकनां रे हां, एतो देखी जाणे जाव ॥ ज० ॥ चौद रज्ज्वात्मक जेदीने रे हां, एतो शिव सुख ते नित्य पाव ॥ज०॥७॥ चौद लाख मनु योनिना रे हां, एतो बूटीयें दुःखथी जीव ॥ ज० ॥ इम जाणी चऊदश आदरो रे हां, एतो दिल करि जाव अतीव ॥ज०॥ ॥ ८ ॥ चउदशना गुण सांजली रे हां, धरियें सुविहित बुध ॥ ज० ॥ लब्धिविजय रंगे करी रे हां, एतो लहिये ऋद्धि समृद्धि रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ पूर्णिमानी सज्झाय प्रारंजः ॥

॥ सुरूला संदेशो रे कहे माहरा पूज्यनें रे ॥ ए देशी ॥ पूनम कहे जव्य जीवनें रे, सांजलो सद्गुरु वाणी रे ॥ अथिर तन धन आउखुं रे, जलबुद

परें जाए रे ॥ जावें हे जवियण सांजलो ॥ ए आं कणी ॥ १ ॥ असार संसारने पेखीनें रे, धर्मशुं ध रो प्रतिबंध रे ॥ बांधव सयण ए जाणजो रे, स्वार्थ जूत संबंध रे ॥ जा० ॥ २ ॥ सकल कुटुंबनें पोषवा रे, जे नर करेय ठे पाप रे ॥ तेह तणां रे फल दो हिलां रे, सहेशे ते एकलो आप रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जिम मृग तृष्णानें कारणें रे, जमतो रणमां धाय रे ॥ जमे पडे ए जीवडो रें, जव जव डुःखीयो थायरे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ए धन घरणी ए धामने रे, कांइ न ले गयो साथ रे ॥ जिहां जइनें जीव ऊपनो रे, ति हां सहि होये तेहनें हाथ रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ इम जाणीनें धर्म कीजीयेरे, टाली ते विषय विकार रे ॥ दिन दिन दोलत अजिनवी रे, पामियें हर्ष अ पार रे जा० ॥ ६ ॥ पूरण जीवितव्य पामीनें रे, आ दरो पूरण धर्म रे ॥ पूरण शांत स्वजावथी रे, पूर ण ठेदो ए कर्म रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ पूरण जन्म जरा थकी रे, पूरण बूटीयें डुःख रे ॥ पूरण लीला पा मीयें रे, पूरण सुरनर सुख रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ पूरण पन्नर सिद्धना रे जाणियें पूरण जेद रे ॥ पूरण पंद र योगना रें ते पण जावनिर्वेद रे ॥ जा० ॥ ए ॥ पंदर जातिना जांखियां रे, परमाधामी जोर रे ॥ ॥ ते पण डुःखथकी बूटीयें रे, टाली ते कर्म अघो र रे ॥ जा० ॥ १० ॥ पंदर कर्म जूमि ठलखी रे,

ठंडो कषाय ते शोल रे ॥ जवियण दिन दिन पा
मीयें रे, संपदा पुण्यरंग रोल रे ॥ ना० ॥ ११ ॥
जिम शशी शोलकली सही रे, नांखे जिनवर वाच
रे॥ तिम ए धर्म कला सशी रे, पामीयें जगतमां साच
रे ॥ ना० ॥ १२ ॥ पूरणमासी ए जाणीने रे, जे स
सही करशे ए पुण्य रे ॥ विजयलब्धि ते पामशे
रे, दिन दिन निज सुखतन्न रे ॥ ना० ॥ १३ ॥
आठम चउदश पूर्णिमा रे, अंग उपांगें अधिकार
रे ॥ जिनवरें कहियो माहानिशीथमां रे, वीजप्रमु
खनो विचार रे ॥ ना ॥ १४ ॥ ते सवि जाणो व्यव
हारथी रे, धर्म उद्यम उपदेश रे ॥ निश्चयमार्गें अ
प्रमादी जे होवे रे, ते पाले पंदर तिथि विशेष रे ॥
॥ ना० ॥ १५ ॥ एम जाणीने नवि नाविये रे, ऽव्य
ने नावथी धर्म रे ॥ सघली तिथि आराधतां
रे, लब्धि कहे सदा सुख शर्म रे ना० ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेशी पद ॥

में हुं मुसाफर आया हो प्यारा, नही कोइ मे
रा ॥ नही० ॥ जनम हुवा तब अपना कहावे, न
ही रेहेणेका डेरा हो प्यारा ॥ नही० ॥ १ ॥ सजन
कुटुंब सब अपना कहावे, ज्युं तीरथका मेला हो
प्यारा ॥ २ ॥ धन कंचन कछु स्थिर नही रेहेणां,
ज्युं बादलका घेरा हो प्यारा ॥नही०॥ ३ ॥ रुपचंद
कहे प्रेमकी वातां, ज्युं धानीका फेरा हो प्यारा॥४

॥ अथ उपदेशी प्रजाती पद ॥

जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ पंचकुं प्रपंच कर, वश यारे ॥ जाग जाग रयण गइ जोर जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृषनामे मीन मरे, जोगमें मतंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयनमें पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें ज्रमर मरे नासा रस लेतां ॥ एक एक इंडीसंग, मरे जीव केता ॥ जा० ॥ ३ ॥ पंचके पड्यो तुं फंद, कयुं कर वश आवे ॥ मार तुं मन इछा जूत, ज्युं निरंजन पावे ॥ जाग० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां पद ॥

में परदेशी दूरका, प्रजु दरसनकुं आया ॥ लाख चोराशी देश फिरया, तेरा दरिसन पाया ॥ मे० ॥ ॥ १ ॥ सूक्ष्म वादर निगोदमें, वनस्पति वसाया ॥ अप तेज वायुकायमें काल अनंत गमाया ॥ में० ॥ ॥ २ ॥ स्वर्ग नर्क तिर्यंचमे, केता जन्म गमाया ॥ मनुष्य अनारजमें जन्म्या, तिहां नही दरिसन पाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तेरो मेरो दरिसन अब जयो, पुरन पुन्य पसाया ॥ रुपचंद कहे जाग्य खुले, निरंजन गुण गाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ मनहित शिक्षानुं पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ रे मन लोजी तेरो कोण पति यारो ॥ रे मन० ॥ आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ ठिनमें उरे पल

कर्में दूजो, घरी घरी दिलसें न्यारो ॥ रे मन० ॥
॥ २ ॥ चचंल मन वरज्यो नही माने, प्रजुनवपार
उतारो ॥ रे मन लोनी. ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

॥ राग वेलावल ॥ रे मन कयुं जिन नाम विसा
रयो ॥ कयुं० ॥ रे मन० ॥ विषय विकार महामद
धारयो, जनम जुआ ज्युं हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥
जीने तोकुं नरदेही दीनी, गर्जकी आंच उद्धारयो ॥
प्रजुजीकु तें शठ मूरख, एक घरी न संजार्यों ॥ रे
मन० ॥ २ ॥ नही कछु दान शियल तप पूजा, न
ही जीन नाम उच्चार्यो ॥ जैन धर्म चिंतामणी सरी
खो, काच जाणकर मार्यो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ कर ले
सुकृत दया जरूरले, जो नव चाहत सुधार्यो ॥ हर
खचंद वर्धमान जीनेसर अवसर मांहेन संजार्यो ॥
रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राघ जंगलो काफी ॥ जगमें नही तेरा कोइ,
नर देखहु निहचें जोइ ॥ जग० ॥ ए आंकणी ॥
सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथके हीतकारी
विन स्वारथ शत्रु सोइ ॥ जग० ॥ १ ॥ तुं फीरत
महा मदमाता, विषयन संग मूरख राता ॥ निज
संगकी सुध बुद्ध खोइ ॥ जग० ॥ २ ॥ घट ज्ञानक
ला नवि जाकुं, पर निज मानत सून ताकुं ॥ आख

र पछतावा होइ ॥ जग० ॥ ३ ॥ नवि अनुपम नर भव हारो, निज शुद्ध स्वरुप निहारो ॥ अंतर मम ता मल धोइ ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रभु चिदानंदकी वाणी, धार तुं निश्चे जग प्राणी ॥ जिम सफल होत भव दोइ ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ जूठी जूठी जगतकी माया, जिन जाणी भेद तिन पाया ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ तन धन जोवन सुख जेता, सऊ जाणहुं अस्थिर सुख तेता ॥ नर जिम बादलकी छाया ॥ जूठी ॥ १ ॥ जिम अनित्य भाव चित्त आया ॥ लख गलित वृषभकी काया ॥ बूझे कर कंमुराया ॥ जूठी ॥ २ ॥ इम चिदानंद न मनमांही, कछु करीए ममता नाहीं ॥ सदगुरुए भेद लखाया ॥ जूठी ॥ ३ ॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग प्रभाती ॥ मान कहा अब मेरा मधुकर ॥ मान० ॥ ए आंकणी ॥ नाभिनंदके चरण सरोज मे, कीजे अचल बसेरा रे ॥ परिमल तास लहत मन सेहेजे, त्रिविध पाप उतेरा रे ॥ मान० ॥ १ ॥ उदित निरंतर ज्ञान भान जिहां, तिहां न मिथ्यात अंधेरा रे ॥ संपुट होत नहीं ताते कहा, सांज कहा सवेरा रे ॥ मान० ॥ २ ॥ नहितर पछतावोगे

आखर वीतगया यो वेरा रे॥ चिदानंद प्रभु पदपंक ज सेवत, बहुरि न होय नव फेरारे ॥ मान० ॥३॥

॥ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग धनाश्री ॥ भूल्यो नमत कहा वे अजा न ॥ भूल्यो० ॥ ए आंकणी ॥ आल पंपाल सकल तज मूरख, कर अनुनव रस पान ॥ क० १॥ आप कृ तांत गहेगो इक दिन, हरि मृग जेम अचान ॥ होयगो तन धनथी तुं न्यारो, जेम पाको तरु पान ॥ कल्यो० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी सुत सेंती, गर ज न सरत निदान ॥ चिदानंद ए वचन हमारो, धर राखो प्यारे कान ॥ कह्यो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग नैरव ॥ जागरे वटाउ अव, नइ नोर वेरा ॥ जाग० ए आंकणी ॥ नया रविका प्रकाश, कुमुदहु थये विकास ॥ गया नाश प्यारे मिथ्या, रेनका अंधेरा ॥ जा० ॥ १ ॥ सूता केम आवे घाट, चालवी जरुर वाट ॥ कोइ नांहि मित्त परदेशमें ज्युं तेरा ॥ जा० ॥ २ ॥ अवसर वीत जाय, पिछे पिछतावो थाय ॥ चिदानंद निहचें, ए मान कहा मेरा ॥ जागरे वटाउ अव नइ नोर वेरा ॥३॥ इति

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग आशावरी ॥ उं घट विणसत वार न लागे ॥ उंघट ॥ ए आंकणी ॥ याके संग कहा अ

व मूरख, छिन छिन अधिको पागे ॥ ओ० ॥ १ ॥ काया गम्रा काचकी शीशी, लागत ठणका जागे ॥ उ घट० ॥ २ ॥ आधि व्याधि व्यथा दुःख इण जव, नरकादिक फुनि आगे ॥ मृगहु न चलत संग विण पोष्या, मारगहुमें त्यागे ॥ उं० ॥ ३ ॥ मदठक ठाक गहेल तज वीरला, गुरु किरपा कोउ जागे ॥ तनधन नेह निवारी चिदानंद, चलीये ताके सागे ॥ उं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यपदेशी पद ॥

॥ राग विलास ॥ जूठी जग माया नर केरी काया, जिम बादरकी छाया माइरी ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञानंजन कर खोल नयण मम, सद्गुरु इणे विग प्रगट लखाइरी ॥ जूठी० ॥ मूल विगत विषवेल प्रगटीइक, पत्र रहित त्रिभुवनमें छाइरी ॥ तास पत्र चुण खात मिरगवा, मुखवीन अचरिज देख हुंआइरी ॥ जूठी० ॥ २ ॥ पुरुष एक नारी निपजाइ, तेतो नपुंसक घरमे समाइरी ॥ पुत्र जुगल जायेति णवालाते जगमांहे अधिक दुःख दाइरी ॥ जूठी० ॥ ३ ॥ कारण विन कारजकी सिद्धि, केम जइ मुख कही नवि जाइरी ॥ चिदानंद एम अकल कलाकी, गति मति कोइ विरले जन पाइरी ॥ जठी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानोपदेशी पद ॥

॥ राग सारंग ॥ मेरे घट ग्यात जानु जयो

नोर ॥ मेरे० ॥ चेतन चकवा चेतन चकवी, नागो विहरको सोर ॥ मेरे० ॥ १ ॥ फैली चिंहु दीश चतुरा नाव रुचि, मिट्यो नरम तम जोर ॥ आपकी चोरी आपही जानत, औरे कहत न चोर ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अमल कमल विकस नये नूतल, मंद विषय शशी कोर ॥ आनंद घन एक वल्लन लागत, और न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशी पद ॥

॥ राग कल्याण ॥ या पुद्गलका क्या विसवासा, है सुपनेका वासारे ॥ या० ॥ ए आंकणी ॥ चमतकार विजुली दे जैसा, पाणी वीच पतासा ॥ या देहीका गर्व न करना, जंगल होयगा वासा ॥ या० ॥ १ ॥ जूठे तन धन जूठे जोंवन, जूठे है घरवासा ॥ आनंद घन कहे सवही जूठे, साचा शिव पुर वासा ॥ या० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ इति पंचम परिछेद समाप्त ॥

## ॥ शष्ठमपरिछेद प्रारंभः ॥

### ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो, शिष्य, गौतम नाम जपो निशदीश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तोघर विल से नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरि वर चडे मनोवांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वेरी विरूआ वंकडा, तस नामें नावे ढुकडा ॥ भूत प्रेत नविमंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम जि नशासन शणगार, गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनोवांछित कापड तंबोल ॥ घरसुघरिणी निर्मल चित, गौतम नामें पुत्र विनित ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौत म नाम जपो जग जाण ॥ महोटां मंदिर मेरुसमान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पहोंचे वांछित कोड ॥ मही यल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना

ुण ठे वहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोम, गौत
ूठे संपत्ति कोम ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तिजयपहुत्त प्रारंन ॥

॥ तिजयपहुत्त पयासय, अठ महापाफिहेरजुत्ता
णं ॥ समयक्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं
। १ ॥ पणवीसाय असीआ, पन्नरस पन्नास जिण
वर समूहो ॥ नासेउ सयल पुरिअं, नविआणं
नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणया लाविय, तीसा
पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहनूअ रक्क साइणि, घोरु
वसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय,
सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥ वाहि जल जलण
हरि करि, चोरारि महानयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नाय
दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे
सरीरं देवासुर पणमिआ सिआ ॥ ५ ॥ उ हरहुं
हः सरसुंसः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥ आलिहिय
नाम गप्न, चक्कं किर सबउनद्दं ॥ ६ ॥ उ रोहिणी
पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ॥ चक्के
सरि नरदत्ता कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥
गंधारी महाजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥
माणसि महमाणसिआ, विद्यादेवीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥
पंचदस कम्म नूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥
विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ पुरिआइं
॥ ए ॥ चउतीस अइ सय जुआ, अठ महापाडि

र्हेर कयसोहा ॥ तिच्चयरा गयमोहा, झाएअव्वा पय त्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसय जिणाणं, सव्वामर पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नवणवइ वाण वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ ॥ जे केवि डुठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥ एगंतराइ गहनूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं, डुवारि पमिलि हिअं ॥ डुरिआरि विजयवंतं, निप्भंतं निच्चमच्चेह ॥ ॥ १४ ॥ इति ॥ ०१ ॥

॥ अथ श्री नमिऊणनामक स्मरणं लिख्यते ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअ मणिणो ॥ चलणजुअलं महानय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निवु ड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुठ महा रोगानल, फुलिग निदड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेय वुड्ढिय छाया ( उछहा ) वण दव दड्ढा गिरिपा, यव्व पत्ता पुणो लच्छीं ॥ ३ ॥ डुवाय खुभिय जलनिहि, उप्भड कल्लोल नीसणारावे ॥ संभं त नय विसंठुल, निद्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवि दलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअ कूलं ॥ पासजिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जेन मंति

नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ डझंत मुद्ध मय वहु, नीसणरव नीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निवाविअ सयल तिहु अणान्नोअं ॥ जे संन्नरंति मणुआ, न कुणइ जलणो नयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत नोग नीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्गजुअंगं नवजलय सच्छहं नीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीड सरिसं दूर परिछुढ विसम विसवेगा ॥ तुह नामरकर फुडसि, द्धमंत गुरुवा नरा लोए ॥ ए ॥ अडवीसु निल्ल तक्कर, पुलिंद सदुल सद्दनीमासु ॥ नयविहुर वुन्नकायर, उल्लुरिअ पहिअ सछासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त वावोरा ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता हिय इछिय ठाणं ॥ ११ ॥ पज्ज्ञलि आनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंद कुंनछलानोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंनम पछिव, नह मणिमाणिक्क पडिअ पडिमरस ॥ तुह वयणपहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वुछि उछाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥ नीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे तुह्म चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥

समरम्मि तिख्ख खग्गा, निग्घाय पविद्ध उद्धूय कबं धे ॥ कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्कसिक्कार पउरं मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा नडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजि ण तुह प्पनावेण ॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण नयाइं ॥ पासजिण नाम संकी, त्तणेण पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा नयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ नविय जणा णंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥ राय नय जख्करख्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिख्कपीमासु ॥ संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणंकइणो य माणतुंग स्स ॥ पासो पावं पसमेउ,सयल नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठा,सुरम्मि झाणाउ जोन सं चलिउ ॥ सुरनर किन्नर जुवईहिं, संथुउ जयउ पा सजिणो ॥२२॥ एअस्स मज्झयारे, अठारस अख्खेरहिं जो मंतो ॥ जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्र फुमं पासं ॥२३॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हिययेण ॥ अठुत्तर सय वाहि नय, नासइ तस्स दूरेण॥२४॥

॥ अथ श्री नक्तामर स्मरण प्रारंनः ॥

॥ नक्तामर प्रणत मौलिमणि प्रनाणा, मुद्योतकं दलित, पापत मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुगं युगादा, वालंबनं नवजले पततां जनानाम्

॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धि पटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्रितय चित्त हरैरुदारैः स्तोष्येकिलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥२॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पादपीठ, स्तोतुं समुद्यतम तिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलसंस्थितमिंदु विंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांत कालपवनोद्ध तनक्रचक्रं, कोवा तरीतुमल मंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सो ऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्म वीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किंनिजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरु ते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु च्यूतकलिकानिकरै कहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निवद्धं, पापं क्षणात्क्षय मुपैतिशरीर भाजाम् ॥ आक्रांत लोकमलिनी लमशेपमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वर मंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यतिसतां नलिनीदलेपु, मुक्ताफल द्युतिमुपैति ननूदविंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवन मस्तसमस्त दोप, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥ दूरे सह

स्तकिरणः कुरुते प्रजैव, पद्मा करेषु जलजानि विका
शज्ञांजि ॥ ए ॥ नात्यद्भुतं जुवन जूषणजूतनाथ, जूतै
र्गुणैर्जुविजवंतमजिष्टुवंतः ॥ तुल्या जवंति जवतो
ननु तेन किंवा, जूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति
॥१० ॥ दृष्ट्वा जवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तो
षमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकर
द्युतिदुग्धसिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं कइच्छेत्
॥ ११ ॥ यैः शांतराग रुचिजिः परमणुजिस्त्वं, निर्मा
पितस्त्रिजुवनै कललामजूत ॥ तावंतएव खलु तेप्य
णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२
॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरग नेत्रहारि, निः शेषनिर्जित
जगत्त्रित योपमानम् ॥ विंबं कलंकमलिनं क्व निशा
करस्य, यद्वासरे जवति पांडुप लाशकल्पम् ॥ १३ ॥
संपूर्ण मंरुल शशांक कलाकलाप, शुभ्रागुणा स्त्रिजु
वनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर ना
थमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोय थेष्टम् ॥ १४ ॥
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागनाजि, र्नीतं मनागपि
मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांत कालमरुता चलि
ताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्
॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्र
यमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्योनजातु मरुता चलता
चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥
नास्तं कदाचिदुपयासि नराहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि

सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभा वः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते नव मुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किंशर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलिते षुतमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरा दयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्म नोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता॥सर्वादिशो दधति भानिसहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्य वर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनिंद्र पंथाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंग केतुम् ॥ योगीश्वरं विदित योगमने कमेकं, ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्ध स्त्व

मेव विबुधार्चित बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुवन त्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्ग विधेर्विधा नात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्त मो ऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नम स्त्रिभुवनार्त्ति हराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामल भूषणाय ॥ तुभ्यंनम स्त्रिजगतः परमे श्वराय, तुभ्यं नमोजिन भवो दधिशोषणाय॥ २६ ॥ कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वंसं श्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्त विविधा श्रय जातगर्वैः स्वप्नांःतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ उच्चै रशोकतरु संश्रित मुन्मयूख, माभाति रूप ममलं भवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरण मस्ततमो वितानं, विंबं रवेरिव पयोधर पार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विंबं वियद्विल सदंशुलतावि तानं, तुंगोदयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदात चलचामर चारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिवशातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थगितभानु करःप्रतापम्॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभ, प्रख्या पय त्रिजगत. परमेश्वरत्वंम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनव पंकजपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयुखशिखाभिरामौ ॥ पादौपदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्त., पद्मानि तत्र

विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इछं यथा तव विभू तिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलकमूल, मत्तभ्रमद भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्टा भयं भवति नो भवदाश्रिता नाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमःक्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् विश्वंजिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीपणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नो ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा स्त्रासं विहाय

नवतःस्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलो
दरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः॥
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकर
ध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टि
तांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाम
मंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयंविगतबंधभ
या भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि,
संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुप
याति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमान
धीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य
इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति ल
क्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति श्री भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम
निंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पो
ता यमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुर
गुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधा
तुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष
किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्य
तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश
भवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिव

धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोह
क्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं
न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्य
तोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसं
ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं ननिजबाहुयुगं वित
त्य, विस्तीर्णतांकथयति स्वधियांबुराशेः ॥५॥ ये योगि
नामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु
ममावकाशः ॥ जाता तदेव मसमीक्षित कारितेयं, ज
ल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आ
स्तामचिंत्यमहिमाजिनसंस्तवस्ते, नामापि पातिभ
वतो भवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजनान्नि
दाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवंति, जंतोः क्षणेन
निबिडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो भुजंगम मया इव
मध्यभाग, मभ्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥
मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रव शतै
स्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि
दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशव. प्रपलाय मानैः ॥ ९ ॥
त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहंति
हृदयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनु
न, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ य
स्मिन्हर प्रभृतयोऽपि ह व, सोऽपि त्वयार

तिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुत भुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि डुर्द्धरवारुवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्न नल्पगरिमाण मपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यति लाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रनावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विन्नो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा वत कथं किल कर्मचौराः॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरापि लोके, नीलडूमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांबुज कोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य संनवि पदं ननु कर्णिकायः ॥ १४ ॥ ध्याना झिनेश नवतो नविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजति ॥ तीव्रानला डुपल नावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुन्नेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिनयस्य विनाव्यसेत्वं, नव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुनावाः ॥१६॥ आत्मा मनीपिन्निरयं त्वदन्नेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र! नवतीह नवत्प्रनावः॥ पानीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं,किनाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नुनं विन्नो हरिहरा दिधियाप्रपन्नाः ॥ कि काचकामलिन्नि रीश सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विवि

धवर्णविपर्ययेण ॥ १७ ॥ धर्मोपदेशसमयें सविधानु
भावा, दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अ
भ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोपि, किंवा विबोधमु
पयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो कथमवा
ङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर पुष्पवृष्टिः ॥
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश गछंति नूनम
धएव हि वंधनानि ॥२०॥ स्थाने गभीर हृदयोदधि
संभवायाः, पीयूषतां तवगिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा
यतः परम संमदसंग भाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्य
जरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूर मवनम्यसमुत्प
तंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै
नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः
खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्वलहे
मरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्य शिखंडिन स्त्वाम् ॥
आलोकयंतिरभसेन नदंत मुच्चै, श्चामी कराद्रि
शिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गछता तव
शितिद्युति मंडलेन, लुप्त छदछवि रशोक तरुर्बभूव ॥
सान्निध्य तोऽपि यदिवातववीतराग, नीरागतां व्र
जतिको न सचेत नोपि ॥ २४ ॥ भोभोः प्रमाद म
वधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवा
हम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभि
नभः सुरदुंदुभिस्ते ॥२५॥ उद्योतितेषुभवता भुवने
षु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक

लाप कलितोल्लसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुव मभ्युपेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंमितेन, कांतिप्रताप यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥ ॥ २७ ॥ दिव्यस्त्रजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिवधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङमुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्त हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भारसंभृत नभांसि रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापितैस्तव न नाथ हताहताशो, ग्रस्तस्त्वमी भिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ॥ ३१ ॥ यदगर्जदुर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसल घोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृतिमर्त्यमुंड, प्रालंबभृद् भयदवक्र विनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोय., सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवंभ वदुःखहेतुः ॥३३॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति

विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ नक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मल
देहदेशाः, पादद्वयं तव विन्नो नुवि जन्मनाजः ।
॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारनववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न
मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्र
पवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महित
मीहित दानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवा
नां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नुनं
न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विन्नोसकृदपि प्रविलो
कितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः,प्रोद्य
त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि
महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नुनं न चेतसि मयाविधृ
तोऽसिनक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःख
पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न नावशून्याः ॥३०॥
त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यव
सते वशिनां वरेण्य, ॥ नक्त्या नते मयि महेश दयां
विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३ए ॥
निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरि
पुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवं
ध्यो, वध्योऽस्मिचेद् नुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विन्नो
नुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि,
सीदंतमद्य नयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति

नाथ त्नवदंघ्रिसरोरुहाणां, त्नक्तेः फलं किमपि संतति संचितायाः ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्य शरण्य न्नूयाः, स्वामीत्वमेव त्नुवनेऽत्र त्नवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इष्ठं समाहितधियो विधिवज्जिनेंड्, सांड्रोल्लसत्पुलककंचुकितांग त्नागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तवविन्नो रचयंति त्नव्याः ॥ ४३ ॥आर्या॥ जननयनकुमुदचंड्,प्रन्नास्वराःस्वर्गसंपदो त्नुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरंसंपूर्णं ॥

॥ अथ वृद्ध गोतम स्वामीनो रासलि० ॥ वीर जिणेसर चरण कमल,कमला कय वासो ॥ पणमवि पत्नणी सुसामिसाल, गोयम गुरुरासो ॥ मण तण वयणे एकांत करवि, निसुणउ त्नो त्नविया ॥ जिम निवसै तुम देह गेह, गुण गण गह गहियां ॥ १ ॥ जंबूद्विव सिर त्नरह खित्त, खोणी तल मंरूण ॥ मगह देश सेणिय नरेस, रिउ दल बल खंरूण ॥ धण वर गुव्वर गांम नाम, जिहां गुणगण सज्जा ॥ विप्प वसै वसुन्नूइ तत्थ, तसु पुहवीन्नज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरी इंद त्नुय,न्नूवलय पसिद्धो ॥ चउदह विज्जा विविह रूव,नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंत्ना वर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण विपंकज जलपाडिय, तेजेंहि तारा,

चंद सूर, आकास नमाकिय ॥ रूवहिमयण अनं ग करवि मेल्यो निरधाकिय धीरमें मेरु गंनीर सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल नीत इछ, गुण मेल्या संचिअ अहवा निश्चें पुव जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंना पउमा गौरी गंगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुरू नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउं ॥ पंचसया गुणपात्र गत्र, हींडे पर वरिउं ॥ करे निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण ठल होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु, ठंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह, नरह वासंमि, खो णीतलमंरूणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुनूइ सुंदर, तसु पुहवी नज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥ ताणपुतवीद्या निलउं, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ नापा ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउ विहसंघपइठाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ विह देव निकायें जुत्तो ॥८॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिणे दीठे मिथ्यामति सीजे ॥ त्रिजुवन गुरु सिंहासण वइठा, ततखिण मोह दिगतें पइठा ॥ ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठ जिम दिनचोरा ॥ देवडुंडुनि आकाशें वाजी, धर्म

नरेसर आविउं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहिं जिणवर जग सहु मोहे ॥११॥ उवसम रसन्नर न्नरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें ऊलऊल कंता, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रनूइ मन चिंते, सुर आवे अह्म जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समव सरण पुहता गहगहता ॥ तो अन्निमानें गोयम जपे,इणि अवसरे कोपें तणु कंपे ॥ १४॥ मूढा लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मूं आगल कोइ जाण न्नणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु छंद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, संपन्न पावा पुरि सुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहि देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुरककारण ॥ ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजयजयकार ॥ १६ ॥ न्नाषा ॥ तो चढिउ घणमाण गजें, इदनूइ नूय देव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउं, कवण सुजिणवर-देव तो ॥ जोजन नूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंन्न तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंन्न तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरुधजा, कोसीसे नव

चंद सूर, आकास जमाडिय ॥ रूवहिमयण अनं ग करवि मेल्यो निरधाडिय धीरमें मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल भीत इञ, गुण मेल्या संचिअ अहवा निश्चें पुव्व जम्म, जिणवर इणअंचिय ॥ रंभा पउमा गौरी गंगा, रति हा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र छात्र, हींडे पर वरिउ ॥ करे निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इंण छल होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु, छंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह, भरह वासंमि, खो णीतलमंरुणो, मगधदेस सेणिय नरे सर ॥ धण वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुंदर, तसु पुहवी भज्जा सयल, गुणगणरुव निहाण ॥ ताणपुतवीद्या निलउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भाषा ॥ चरम जिणेसर केवल नाणी, चउ विहसंघपइठ्ठाजाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउ विह देव निकायें जुत्तो ॥७॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिणे दीठे मिथ्यामति सीजे ॥ त्रिभुवन गुरु सिंहासण वइठा, ततखिण मोह दिगतें पइठा ॥ ॥ ए ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देवडुंडुभि आकाशें वाजी, धर्म

नरेसर आविउं गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहिं जिणवर जग सहु मोहे ॥११॥ उवसम रसन्नर न्नरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें फलफल कंता, गयण विमाणें रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रनूइ मन चिंते, सुर आवे अह्म जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समव सरण पुहता गहगहता ॥ तो अनिमानें गोयम जंपे,इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४॥ मूढा लोक अजाणिउ बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मूं आगल कोइ जाण न्नणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु छंद ॥ वीरजिणवर वीरजिणवर नाण, संपन्न पावा पुरि सुर महिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुरककारण ॥ ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, हुउं सुजयजयकार ॥ १६ ॥ न्नाषा ॥ तो चढिउं घणमाण गजें, इंदन्नूइ न्नूय देव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउ, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन न्नूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंन्न तो ॥ दह दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंन्न तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंमधजा, कोसीसे नव

॥ २८ ॥ खीरखंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुंसवे ॥ पंच सया शुन्न नाव, उज्जल नरिउ खीरमीसें ॥ साचो गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुउ ॥ २ए ॥ पंच सया जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंती घणमेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआपंचसया ॥ ३० ॥ वस्तुछंद ॥ इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमें नाणसंपन्न ॥पन्नरह सय परवरिय, हरिय डुरिय जिणनाह वंदिय ॥ जाणवी जगगुरु वयण, तिह नाण अप्पाण निंदइ ॥ चरम जिणे सर इम न्नणइ, गोयम मकरिस खेउ ॥ ठेह जइ आपण सही, होसुं तुल्ला वेउ ॥ ३१ ॥ न्नाषा ॥ सामि उ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए न्नरहवासम्मि वरिस वहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल संघें सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर पावापूरिसुरमहिय ॥ ॥ ३२ ॥ पेखीउ ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रति वोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देव, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणिय जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद न्नेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि आप कन्हे हुं टालिउ ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण

नाह, लोक वेवहार न पालिउं ए ॥ अति जलुं ए कीधलुं सामि, जाणिऊ केवल मागशे ए ॥ चिंतवि ऊं ए बालक जेम, अहवा केडें लागशे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीरजिणंद, जगतें जोलो जोलविउं ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इइ वीतराग, नेह न जेणें लालिउं ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वेरागें वालिउं ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उलट, रहेतो रागें साहिउं ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहेजें उमाहिउं ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, जवियण जव इम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तुछंद ॥ पढम गणहर पढम गहणर वरस पंचास गिहिवासें संवसिय ॥ तीस वरिस संजम विजूसिय॥ सिरिकेवल नाण पुण, बार वरिस तिहुयणनमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठविअ, बाणवइ वरिसाउं ॥ सामी गोयम गुणनिलो, होशे शिवपुर ठाउं ॥ ३७ ॥ जाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल महेके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें ऊलके, तिम गोयम सौजाग्य निधि ॥ ३७॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुर वर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव वनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिमअवर

तारा गण विकसें, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥३९॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरवदिसि जिम सहसकरो ॥ पचानन जिम गिरिवर राजे, नरवर घर जिम मयंगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥४०॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तमसुख मधुरी नाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम नूमिपति नूयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धें गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंन सवि वश हुउं ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहेलो पनणीजें, मायावीज श्रवण निसुणजें, श्री मती शोना संनवे ए ॥ देवहधुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवद्याय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए॥४३॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशांतर कांइ नमी जें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह उठी गोयम समरीजें काजसमग्रह ततखण सिझे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसे, किउं कवित उपगारकरो ॥ आदिहिंमंगल एहपन्नणीजे, परव महोछव पहिलो लीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणे उयरें धरिया,

धनपिता जिण कुल अवतरिया धन सद्गुरु जिणे दिखियाए ॥ विंनयवंत विद्या भंमार, जसुगुण कोइ न लभ्रे पार, विद्यावंत गुरु विनवे ए ॥ गौतमसामीनो रास भणीजे, चउविह संघ रलि यायत कीजे, रूद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुकुम चंदन छमो देव रावो ॥ माणक मोतिनां चोक पुरावो ॥ रयण सिंहासण॥ बेसणुंए ॥ तिहां वेसी प्रभु देसना देसे ॥ भविक जीवनां काज सरसे ॥ नित्य नित्य मंगल उदयकरो ॥ इति श्री गोतम स्वामीनो रास संपूर्ण

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरिक्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥ संतोष वृत्ति धरो चित्तमांहिं, राग द्वेषथी दूर थाउ उछांहि ॥१॥ पड्यामोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमोछो, जैनमार्ग छंमी भुला कों भमो छो ॥२॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो, नदी गंगा मूकी गलीमां पमोछो ॥३॥ केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले रुंढ माला ॥ केइ देवउत्संगें राखे छे वामा, केइ देवसाथें रमे वृद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांसभक्षी महावीकराला ॥ केइ योगिणी भोगिणि भोग रागें, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥ ५ ॥

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख ने केम चाखे ॥ जदा लोजना थोकलो पार नाव्यो, तदा मधनो विंडु उंसन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश राखे, तेह पिंमने मन्नशुं लेअ चाखे॥ दीन हीननी जीडते केम जांजे, फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ जाता जजो मोक्ष दाता, अलोजी प्रजूने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काच ना पिंमशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धिसु जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व जूलो जमे छे ॥ कीहां सर्षवाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा ने कीहां शूर वीरं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंजखंडं॥ किहा कोडवा ने कीहा खीर मंमं ॥ कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां छाग क्षीरं ॥१०॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकीने कीहां देवजोगी, कीहा इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वामी जजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठशुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंजरोषी, सजो पुण्य पोषीजजो ते अरोषी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहिं तुहिं प्रभु परम रागी, नव फेरनी शृंखला मोह त्यागी ॥ १४ ॥ मानीयें वीरजी अर्ज छे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउं गुरु आज मेरो वीवेकें लह्योमे प्रभू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परे, श्री जिन सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयज यकार ॥ १ ॥ अरुशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरया संपत्ति थाय ॥ संचित्त सागर सातनां, पातिक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु नापित सार ॥ सो नवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपीये नवकार॥छंदहाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेशर॥ पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता नरक निवारे, पामे नवनो पार ॥ सो नवियां नत्तें चोखे चित्ते, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वरुशाखा शिंके बेसि, हेठल कुंड हुताश ॥ तस्कर ने मंत्र समर्प्यो श्रावके, उड्यो ते आकाश ॥ विधि

इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुख ने केम चाखे ॥ जदा लोचना थोकलो पार नाव्यो, तदा मधनो विंदु उंमन्न नाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश राखे, तेह पिंमने मन्नशुं लेअ चाखे॥ दीन हीननी नीडते केम नांजे, फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता नजो मोक्ष दाता, अलोनी प्रन्नूने नजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काच ना पिंमशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धिसु जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व नूलो नमे छे ॥ कीहां सर्षवाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा ने कीहां शूर वीरं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंनखंड॥ किहा कोड्रवा ने कीहा खीर मंमं ॥ कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां छाग क्षीरं ॥१०॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकीने कीहां देवनोगी, कीहा इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वामी नजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठशुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंनरोपी, सजो पुण्य पोषीनजो ते अरोपी ॥ १३ ॥ गतिचा

र संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रनु पाय स्वामी ॥ तुहिं तुहिं तुहिं प्रनु परम रागी, नव फेरनी शृंखला मोह नागी ॥ १४ ॥ मानीयें वीरजी अर्ज ठे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउे गुरु आज मेरो वीवेकें लह्योमे प्रनू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकारनो ठंद ॥

॥ दोहा ॥ वंठित पूरे विविध परे, श्री जिन सासनसार ॥ निश्चय श्रीनकार नित्य, जपतां जयजयकार ॥ १ ॥ अमशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वय मुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्या संपत्ति थाय ॥ संचित्त सागर सातनां, पातिक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सफ़ुरु नापित सार ॥ सो नवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपीये नवकार॥ठंदहाटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेशर॥ पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिवनाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता नरक निवारे, पामे नवनो पार ॥ सो नवियां नत्तें चोखे चित्तें, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ वांधि वमशाखा शिंके वेसि, हेठल कुंड हुताश ॥ तस्कर ने मंत्र समप्यों श्रावके, उड्यो ते आकाश ॥ विधि

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदिजिनवर वंदी, सफल मनो रथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ वाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहेनमी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वमी ए ॥ ॥ २ ॥ वाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रिषज सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिजुवनमांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला बाल पणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदनां बाकुलां वीर प्रतिलज्या, केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लजा ए ॥ जोवन वेशें कामने जीत्यो, संयम लेइ देव डुल्लजाए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी, डुपदतनया वखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीरपूरा णां, शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंडिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावतीसती, सुरजुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची, राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुख डुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥

॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जगसहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुजद्रा, चंपा वार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंमित, शिवा शिव पदगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थइयें, बलि हारी तस नामनी ए १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांकुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥ पांमव माता दसे दसारनी, बहेन पविव्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे शीलव्रतधारिणी, त्रिविधेंतेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीयें ए ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी, दमयंती तस गेहनी ए, ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिजुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमा वती ए ॥ १६ ॥ वीरेंजांखी शास्त्रें साखी, उद यरतन जांखे मुदा ए ॥ वहाणु वातां जे नर जणशे, ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवकार लघु छंद ॥

॥ सुखकारण जवियण, समरो नित्य नवकार ॥ जिनशासनआगम, चौद पूरवनो सार ॥ ए मंत्रनो

महिमा, कहेतां न लहुं पार सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे करजोड ॥ भुविमंमल विचरे, तारे भवियण कोम ॥ सुर छंदें विलसे, अतिशय जास अनंत ॥ पहे ले पद नमियें, अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पन्नरे भेदें, सिद्ध थया भगवंत ॥ पंचमी गति पोहोता, अष्ट करम करि अंत ॥ कल अकल स्वरुपी, पंचानं तक जेह ॥ जिनवर पय प्रणमुं, वीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छभार धुरंधर, सुंदर शशिहर सोम ॥ करे सारण वारण, गुण छत्तीसें थोम ॥ सुत्र जाण शिरोमणि, सागर जेम गंभीर ॥ त्रीजे पद नमीयें, आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र भणावे सार ॥ तपविधि संयोगें, भांखे अर्थ विचा र ॥ मुनिवर गुण जुता, कहियें ते उवझ्झाय ॥ चो थे पद नमियें, अहोनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचा श्रवटाले, पाले पंचाचार ॥ तपसी गुण धारी, वारे विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर, लोकमांहें जे साध ॥ त्रिविधें ते प्रणमुं, परमारथ जिणें लाघ ॥ ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायणी मायणी भूत वैता ल ॥ सवि पाप पणासे, वाधेमंगल माल ॥ एणें समरण संकट, दूर टले ततकाल ॥ इम जंपे जिन प्रभ, सूरि शिष्य रसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ इति श्री पंचपरमेष्टी छंद ॥

॥ श्री ॥

जिनपञ्जरस्तोत्रं

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गौतम प्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कारः सर्व पाप क्षयंकरः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मनेनमः ॥ कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥ मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षे-दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं भगवा

नर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः, ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे. दजितोऽपि विलोचनम् ॥ संभवः कर्णयुगलेऽभिनन्द नस्तु नासिके ॥ १२ ॥ ओष्ठं श्रीसुमती रक्षेद्दन्तान्प द्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्र प्रभाभिधः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदय श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं,वासुपूज्यः करद्व यम् ॥१४॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ नखानपि ॥ श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभि मंमलम् ॥१५ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षे, दरो लोम कटी तटम् ॥ मल्लिरू रुपृष्ठवंशं,जंघे च मुनिसुव्रतः ॥१६॥ पादांगुलीर्नमीरक्षे च्छ्रीनेमिश्चरणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व नाथः सर्वांगं वर्धमा नश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वा काशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो नि रञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे शत्रु संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूत प्रेतभयाश्रिते ॥ ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीमिते ॥ २० ॥ माकिनीशाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चि भयं नास्ति, लभते सुखसंपदः ॥२२॥ जिन पिंजरनामेदं,यः स्मरेदनुवासर ॥ कमलप्रभ राजेन्द्र- श्रियं सलभते

नरः ॥२३॥ प्रातः समुत्थाय पठेत्कृतज्ञो, यस्तोत्र मेत ज्जिन पञ्जराख्यं॥ आसादयेत्स्री कमल प्रजाख्यं, लक्ष्मी मनोवांछितपूरणाय ॥२४॥ श्रीरुद्रपल्लीय वरेएयगछे, देवप्रजाचार्य पदाब्जहंसः ॥ वादीन्द्रचूरामणिरेषजै नो, जीयाद्गुरुः श्रीकमल प्रजाख्यः॥२५॥ इति श्रीकम लप्रजाचार्य विरचितं श्रीजिन पञ्जर स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ श्री ॥

## ॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुजाषितम् ॥ ग्रह शान्ति प्रवक्ष्यामि जव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जन्म लग्ने च राशौ च, यदा पीमन्ति खेचराः ॥ तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहिताञ्जिनान् ॥ २ ॥ पुष्पै र्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥ वर्णसदृशदानैश्च वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥ पद्मप्रजस्य मार्तमश्च न्द्रश्चन्द्रप्रजस्य च ॥ वासुपूज्येत्नूसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ विमलानन्तधर्माऽरा., शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा ॥ वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधो न्यसेत् ॥ ५ ॥ कृषजाजितसुपार्श्वाश्चाजिनन्द नशीतलौ ॥ सुमतिःसंजवस्वामी, श्रेयांसस्य बृहस्प तिः ॥ ६ ॥ सुविधेःकथितः शुक्र. सुव्रतस्य शनैश्च रः ॥ नेमिनाथस्य राहुः स्यात, केतुः श्रीमल्लिपार्श्व योः ॥ ७ ॥ जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्ति

तवे ॥ नमस्कारशतं जक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥८॥ जद्रबाहुरुवाचैव पञ्चमश्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः पूर्वात् ग्रहशान्तिविधिं शुजम् ॥ ए ॥

उँ ह्रीँ श्रीँ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वतिष्ठन्तुः मम धनधान्यजयविजयसुखसौजाग्यधृतिकीर्तिकान्तिशांतितुष्टिपुष्टिवृद्धिलक्ष्मीधर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा ॥ इति ग्रहशान्ति स्तोत्र समाप्त

॥ अथ मंत्राधिराज स्तोत्रं ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः ॥ नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥ सर्वविघ्नहरः स्वामी,सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ सर्वसत्वहितो योगी श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसिद्धश्चिदानन्दमयः शिवः ॥ परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, जूतेशः पुरुषोत्तमः ॥ सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुजार्णवः ॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्व देवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः ॥ सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥ तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ॥ परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥ अजः सनातनः शम्जुरीश्वरश्च सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुजप्रदः ॥ ७ ॥ साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः निर्ममो निर्विकारश्च, निर्वि

कल्पो निरामयः ॥ ८ ॥ अमरश्चा जरोऽनन्त, ए
कोऽनन्तः शिवात्मकः ॥ अलक्ष्यश्चैवामेयश्च, ध्यानल
क्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥ ॐकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरू
पस्त्रयीमयः ॥ ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्ष
रः ॥ १० ॥ दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्यु
तः ॥ आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान्
॥ ११ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः, स्वयंभूः परमाच्युतः ॥
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः ॥ १२ ॥
ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः ॥
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥
सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयःप्रभुः ॥ भगवान्
सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥ इति श्री
पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ॥ दिव्यमष्टोत्तरं
नामशतमत्र प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥ पवित्रं परमं ध्येयं,
परमानन्ददायकम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं पठते मङ्ग
लप्रदम् ॥ १६ ॥ श्रीमत्परमकल्याणसिद्धिदः श्रेय
सेऽस्तुवः ॥ पार्श्वनाथजिन. श्रीमान्, भगवान् परमः
शिवः ॥ १७ ॥ धरणेन्द्रफणछत्रालंकृतो वः श्रियं
प्रभुः ॥ दद्यात्पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः ॥
॥ १८ ॥ ध्यायेत्कमलमध्यस्थं, ॥ श्रीपार्श्वजगदीश्व
रम् ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं समायुक्तं, केवलज्ञानभास्कर
म् १९ ॥ पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ॥
परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्ट

पत्रस्थितैःयस्यनमस्कारैस्तथा त्रिनिः ॥ ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथ, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥ शतषोडशदला रूढं, विद्यादेवीनिरान्वितम् ॥ चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥ मायावेष्टयत्रयाग्रस्थं, क्रौंकारसहितं प्रजुम् ॥ नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालै र्दशनिर्वृतम् ॥ २३ ॥ चतुष्कोणेषु मन्त्राद्यचतुर्वीजा न्वितैर्जिनैः ॥ चतुरष्टदशद्वीति, द्विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् ॥ २४ ॥ दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लाकि तेन च ॥ चतुरस्रेण वज्रांकक्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ २५ ॥ श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् ॥ तं सर्वपापनिर्मुक्तं, जजते श्रीः शुजप्रदा ॥ २६ ॥ जिने शः पूजितो जक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥ ध्यात स्त्वं यैः क्षणं वापि, सिद्धस्तेषां महोदयः ॥ २७ ॥ श्रीपार्श्वयन्त्रराजान्ते,चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥ शान्ति पुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ २८ ॥ ऋद्धि सिद्धिमहाबुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥ मृत्युंजयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः ॥ २९ ॥ सर्वकल्या णपूर्णःस्याज्जरामृत्युविवर्जितः [illegible] णिमादिमहासि द्धिं, लक्षजापेन वाप्नुयात् [illegible] प्राणाय [illegible]

लसिद्धिदम् ॥ त्रिसंध्य यः पठे न्नित्यं, नित्यं प्राप्नो ति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

अथ लघु जिनसहस्रनाम लिख्यते ॥

॥ नम स्त्रिलोकनाथाय ॥ सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि ॥ मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शास्वतो शुद्धः ॥ निर्विकल्पो निरामयः ॥ निःशरीरो निरातंकः ॥ सिद्धः शुक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो ॥ निर्मोहो निर्मलो त्तमः ॥ निर्भयो निरहंकारो ॥ निर्विकारोथनिष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः ॥ निमद्यो निर्मलः शि वः ॥ निस्तरंगो निराकारो ॥ निष्कर्म्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः ॥ निरागो निरयोजिनः निः शब्दःप्रतिमश्लेष्टः ॥ उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःशंगात् प्राप्तकैवल्यो नैष्टकः शब्दवर्जितः ॥ अनि द्यो महपूतात्मा ॥ जगत्शिखर शेपरः ॥ ६ ॥ निः शब्दो गुण संपूर्ण ॥ पापतापप्रणाशनः ॥ सोपियोगात् शुभंप्राप्तः कर्मद्योतिवला वहः ॥७॥ अजरो अमर. सिद्धः ॥ अर्चितः अक्षयो विभुः ॥ अमूर्त्तः अच्यु तोब्रह्म ॥ विष्णु रीश प्रजापत ॥ ८ ॥ अनिंद्यो वि श्वनाथश्च ॥ अजो अनुपमोभवः ॥ अप्रमेयोजगन्ना थ ॥ बोधरूपो जिनात्मक. ॥ ए ॥ अव्ययसकलारा ध्यो ॥ निष्पन्नो ज्ञानलोचन. ॥ अछेद्यो निर्मलो नि त्यः ॥ सर्वसल्यविवर्जितः॥१०॥अजेयः सर्वतोभद्रः ॥

निष्कषायो ज्ञवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥ वीत
रागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजा नंद ॥ अवा
ज्ञानसगोचरः ॥ असाध्यशुद्धश्चैतन्यः ॥ कर्मनोकर्म
वर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतविमलज्ञानी ॥ निस्पृहो नि
ष्प्रकाशकः ॥ कर्माजितो महात्मानः ॥ लोकत्रयशि
रोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरःशंज्ञुः ॥ विश्व वे
दी पितामहः ॥ सर्वज्ञूतहितोदेव ॥ सर्वलोकसरण्य
कः ॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो ॥ ज्ञगवांस्त्रिजगद्गु
रुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः ॥ सत्यव्यक्त व्ययात्मकः
॥ १५ ॥ अष्टकर्म विनिर्मुक्तः ॥ सप्तधातुविवर्जित
गौरवादित्रयावारः ॥ सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अ
ज्ञयःप्राप्तकैवल्यः ॥ निर्माणे निरपेक्षकः ॥ निष्कलं
केवलज्ञानी ॥ मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अना
मयो महाराध्यो ॥ वरदो ज्ञानपावकः ॥ सर्वेशःसत्
सुखावासः ॥ जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यून
परमज्ञानी ॥ विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धो ज्ञगवान्ना
थः ॥ प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो
रौद्रः सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो ज्ञुवनाधीशः ॥
सचित्तः पुरुषोत्तमः २० ॥ सदोजातमहात्मानं ॥ वि
मुक्तोमुक्तिवल्लज्ञः योगींद्रो नादिसंसिद्धः ॥ निरीहो
ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्रः ॥ सत्सौ
ख्य स्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः ॥ कल्या
णकोष्ट मूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः ॥ सर्वपा

पविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः ॥ सर्वभूतहितंकरः ॥२३॥ स्वयंविद्यो महात्मानं ॥ प्रसिद्धः पापनाशनः तनुमात्रचिदानंद ॥ चैतन्यश्चैत्यचैत्तवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव ॥ मुक्तिस्थो महतांमहः ॥ मुक्तिकार्यसंतुष्टो ॥ निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो ॥ महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महादर्शः ॥ महामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी ॥ महातपो महात्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो ॥ महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुसो ॥ महामहिमः अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसंबोधः ॥ एकानेकविनिश्चल. सर्वबंधविनिर्मुक्तो ॥ सर्वलोकप्रधानकः॥२९॥महासूरो महाधीरो ॥ महादुःख विनाशकः॥ महामुक्ति प्रदोधीरो ॥ महाढ्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी ॥ निष्कामो विपयाच्युतः ॥ अगवंता महाभ्रांतो ॥ शांतिकल्याणकारक ॥ ३१ परमात्मापरं ज्योतिः ॥ परमेष्टी पमेश्वरः ॥ परमात्मापरानंद परंपरम आत्मकः ॥३२॥ प्रस्तुतोनंत विज्ञानी ॥ संख्यानिर्वाणसंयुतः॥ नाकृति नाक्षरोवर्णो ॥ व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः ॥ संसारछेदकारणः ॥ निरवद्योमहाराध्यः ॥ कर्मजिद्धर्म्मनायक. ॥ ३४ ॥ बोधसत्सुजगद्वंद्यो ॥ विश्वात्मानरकांतकः ॥ स्वयंभूपाप

हत्पूज्यः पुनीतोविभवःस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीतः ॥ रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो ॥ देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्योभवविध्वंसी ॥ योगिनांज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्यु जरातीतः ॥ सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥ विश्वहृद्भव्यसंवंद्यः ॥पवित्रोगुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भोजगत्स्वामी इंद्रवंद्यः सुरार्चितः ॥ निष्प्रपंचो निरातंको ॥ निःशेषक्लेश नाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो ॥ लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकीशो ॥ लोकाग्रशिखरस्थितः॥४०॥ नामाष्टकसहस्राणि ॥ ये पठन्ति पुनः पुनः ते निर्वाणपदं यांति ॥ मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति लघुसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं ॥ सहृदयं हृदयं गमदेशनं ॥ अजिनतोत्तमभक्तसुरेश्वरं ॥ नमतशीतलनाथजिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दरसद्गुणमन्दिरं ॥ विमलकेवलबोधविकस्वरं ॥अतिसुवर्णसुवर्णसमद्युतं॥ प्रवरबंधुरलक्षणसंयुतं ॥ २ ॥ ( युग्मं ) यदीयभक्तिर्भविनां भवे भवे भवेदभीष्टार्थनिदानमद्भुतं ॥ स एव नन्दात्मसमुद्भवो जिनः ॥ समर्चनीयः खलुशीतलः प्रभुः ॥ ३ ॥ कर्माजितस्तान् भविनः सुशीतलान् ॥ कुर्वं प्रदावाक् सुधया दयापरः ॥ सदैव देवो भवतात्सदैव मे ॥ सदिष्टसिद्ध्यै जिनराजशीतलः

॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा ॥ दृढ रथ तनुजन्मा सर्वतः साधधर्मा ॥ त्रिदशमहितमूर्तिः स्फूर्तिमत्पुण्यकीर्ति ॥ जयतु गतज्ञवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिनः स्तोत्रम् ॥

॥ यस्य ज्ञान दयासिन्धो ॥ दर्शनं श्रेयसे ध्रुवं ॥ सश्रीमान् पार्श्वतीर्थेशो ॥ निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामासूनोर्यशः पुंजे रगाधस्यानघागुणाः॥ स्मर्यन्तेयेन स स्मार्यो ॥ ज्ञवेत्प्राचीन वर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान् ॥ संसारिकसुरासुरान् ॥ सेव्यतामक्त्यो धीराःपार्श्व देवोपरः प्रजुः ॥ ३ ॥ जिनाःसर्वार्थ दानेन ॥ येन कल्पद्रुमाअपि ॥ ज्ञवेदन्यर्चितो लोके ॥ सश्रियेचाम्नतायच ॥४॥ संस्तुतो मधुर श्लोके॥ जैनलाजप्रदायकः ॥ कल्याणकारको ज्ञूयात् ॥ श्रीमान् शंखेश्वरःप्रजुः ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिन स्तुतिः

॥ शालिनीछन्दः ॥ ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारुतीर्थे ॥ जीरावल्यां पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्यांचापिविख्यातकीर्त्तीं श्रीपार्श्वेशंनौमि शंखेश्वरस्थं॥१॥इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं ॥ वामादेव्यानन्दनं देववंद्यं ॥ स्वर्गेज्ञूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥ जित्वाजेयं कर्मजालं विशालं ॥ प्राप्यानन्तं ज्ञानरत्नंचिरलं ॥ लब्धामंदानंदनिर्वाणसौख्यं ॥ श्री पा० ॥ ३ ॥ विश्वधीशं विश्वालोकेपवित्रं॥ पापागम्यं मोक्षलक्ष्मीकलत्रं, अंजो जाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्री

पा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्ये खं गदो न्नागचंद्र ॥ संख्येमासे माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यै दर्शनं यस्य तंच ॥ श्रीपा० ॥ इति शंखेश्वर जिनस्तवः ॥

॥ विशदसद्गुणराजि विराजितं ॥ घनघनाघनना दविन्नाजितं ॥ न्नजतन्नक्तिन्नरेण रमेश्वरं ॥ जगति पार्श्वजिनेशमनश्वरं ॥ १ ॥ विविधवर्णविन्नूषितविग्र हाः ॥ विहितदूर्द्दम दर्प्पक निग्रहाः ॥ वसुयुगार्कमि ताः सुकृताकराः जिनवरा प्रन्नवंतु शिवंकरा ॥२॥ रु चिरवर्णं निवरूमनिन्दितं ॥ सुमनसां प्रकरैरन्निवंदि तं ॥ निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नम तांचितशर्मदं॥३॥ सकलन्नव्यसरोज विकाशिका ॥ कुमत संतमसोच्चयनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मग तोन्मुदा ॥ न्नवतु वाग्जिन लान्नशुन्नार्थदा ॥ ४ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रन्ना ॥ न्नास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनांन्नोधौ व्यवस्थायिनः ॥ ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगतास्ते पाठकासाधवः ॥ स्तुत्यायोगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ॥ मुक्तिश्री नगरायत्तं जिनपतेः स्वर्ग्गापवर्ग्गप्रदः धर्म्मः सूक्ति सुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्र्यालयं प्रोक्तंतत्त्रि विधं चतुर्विध मर्मीकुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ २ ॥ नान्नेयादि जिनाधिपास्त्रिन्नुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः ॥ श्रीमन्तो

भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥ ये विष्णु
प्रतिविष्णुलाङ्गलधराः सप्ताधिकाविंशति ॥ स्त्रैलो
क्ये भयदास्त्रिषष्टिपुरुषाः ॥ कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥ ३ ॥
कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी ॥
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः ॥ सम्मेतशैलेर्हतां ॥
शेषाणामपि चोर्ज्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो ॥ नि
र्वाणाविनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्व्वंतु मे मङ्गलं ॥
॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतर भावनामर गृहे मेरौ कुलाद्रौ
स्थिता ॥ जंबूशाल्मलि चैत्यशाखिषु तथावक्षार
रूप्यादिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौच कुंडलनगेद्वीपेच नंदी
श्वरे ॥ शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतु मे मङ्गलं
॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपिजय त्यर्हतां जन्माभिषेको
त्सवे ॥ यो जातः परिनिष्क्रमेवचभवोयः केवलज्ञान
भाक् ॥ यः कैमल्यपुरप्रवेशमहिमासंभावितः स्वर्गि
भिः ॥ कल्याणानि च तानि पंचसततं कुर्व तु मे
मंगलं ॥ ६ ॥ ये पंचौषधिऋद्धयः श्रुततयोऋद्धिंग
ताः पंचये ॥ येचाष्टांगमहा निमित्तकुशला ये ष्टौवि
धाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्च येपि बलिनो ये बुद्धि
ऋद्धीश्वरा ॥ सप्तै ते सकलाश्च ते गणभृताः कुर्वं तु
मे मङ्गलं ॥ ७ ॥ देव्यश्चाष्टजयादिका द्विगुणिता
विद्यादिका देवता ॥ श्रीतीर्थं कर मातृकाश्च जन
कायक्षाश्च यक्षीश्वराः॥ द्वात्रिंशत् त्रिदशाग्रहानिधि
सुरादिक्कन्यकाश्चाष्टधा ॥ दिक्पाला दश इत्यमीसुर

गणाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्ग लाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां ॥ पूर्व्वाह्णेपि महोत्स वेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ ये शृण्वंति पठंति तैश्च मनुजैर्धर्मार्थकामान्विता ॥ लक्ष्मीराश्रयतेवि पायरहिताः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ए ॥ इति श्री ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं ॥ नदेवंनबंधुर्नकर्म नकर्ता नअंगं नसंगं नइच्छा नकामं ॥ चिदानन्दरुपं नमोवीतरगं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागादिलोकं ॥ नयोगंनजोगं नव्याधिर्नशोकं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं चि० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा ॥ चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्युं नमोदं नचिं ता ॥ न क्षुद्त्रद् ॥ नभीतं नकृष्यं नतुंदा, नस्वामीन भृत्यं नदेवोनमर्त्य ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडेह रेविश्वव्यापं ॥ ऋषीकेश विध्वस्त कर्म्मारिजालं ॥ न पुण्यं नपापं नअक्ष्यानप्राणं ॥ चि० ॥ ५ ॥ नबालं नवृद्धं नविद्यान्नमूढा ॥ नछेद्यं नभेद्यं नमूर्त्तिर्नमीहा नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा ॥ चि० ॥ ६ ॥ नआ द्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या ॥ नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो न भव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं चि० ॥ ७ ॥ इदंज्ञानरुपं स्वयंतत्ववेदी ॥ नपूर्णं न शून्यंसचैतन्य रूपं ॥ न अन्योभिन्नंनपरमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ [illegible] निधिश्चैतन्यरत्नाकरं ॥ सर्वें

भूतगतागते सुखडुखज्ञातात्वयासर्वग ॥त्रैलोक्याधि पतिस्त्वयंस्व मनसा ध्यायंति योगीश्वराः॥ वंदेतंहरि वंश हर्षहृदयं श्री मान ञ्रू दच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य ॥ दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं ॥ दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां ॥ साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्टतिचिरं पापं ॥ छिद्रहस्तेयथोदकं ॥ २ दर्शनं जिनसूर्यस्य ॥ संसारध्वांतनाशनं ॥ बोधनंचित्तपद्मस्य समस्तार्थप्रकाशकं ॥३॥ दर्शनंच जिनेंद्रस्य ॥ सद्धर्म्मामृतवर्षणं जन्मदाघविनाशाय ॥ वृंहणंसुखवारिधेः ॥४॥ जिनेज्ञक्ति जिनेज्ञक्ति ॥ जिनेज्ञक्ति दिनेदिने ॥ सदामेस्तु, सदामेस्तु, सदामेस्तु ज्ञवेज्ञवे ॥ ५ ॥ नह्रित्राता नह्रित्राता ॥ नह्रित्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमोदेवो ॥ न ज्रूतोन ज्ञविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति ॥ त्वमेवशरणं मम ॥ तस्मात् सर्व्व प्रयत्नेन॥रक्षरक्षजिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागमुखंदृष्ट्वा ॥ पद्मरागसमप्रज्ञं ॥ नैकजन्मकृतंपापं ॥ दर्शनेनविनश्यति ॥८॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं ॥ सिद्धाजगतिमंगलं ॥ मंगलंसाधवोमुख्यं ॥ धर्म्मः सर्व्वत्र मंगलं ॥ए॥ लोकोत्तमा ह्यर्हंतः ॥ सिद्धालोगोत्तमाः सदा ॥ लोकोत्तमोयतीशानां ॥ धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥१०॥ शरणं सर्व्वदार्हतः॥

सिद्धाशरणमंगलं ॥ साधवः शरणं लोके ॥ धर्म्मं शरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कार स्तोत्रं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्य ॥ मक्षरंव्याप्ययत्स्थितं ॥ अग्निज्वालासमंनाद ॥ बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं ॥ मनोमलविशोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे ॥ तत्पदंनौमिनिर्मलं ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरंब्रह्म ॥ वाचकं परमेष्टिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं ॥ सर्वतः प्रणिदध्महे ॥३॥ ॐ नमोर्हद्भ्यईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्य ॥ उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥४॥ ॐ नमः सर्व साधुभ्य ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य ॥ चारित्रेभ्यस्तु, ॐ नमः ॥५॥ श्रेयसेस्तु, श्रियेस्त्वेत ॥ दर्हदाद्यष्टकंशुभं ॥ स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं ॥ पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यंपदंशिखांरक्षे ॥ त्परंरक्षेत्तु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे ॥ तुर्यं रक्षेच्चनासिकां ॥ ७ ॥ पंचमंतुमुखंरक्षेत् ॥ षष्ठंरक्षेच्चघंटिकां ॥ नाभ्यंतंसप्तमंरक्षे ॥ रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांत ॥ सरेफोद्यब्धिपंचषान् ॥ सप्ताष्टदशसर्याकान् ॥ श्रितोबिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः ॥ पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सांतहसमलंकृतः ॥१०॥ ॐ॥ ह्रां ॥ ह्रीं॥ ह्रुं ॥ ह्रूं ॥ ह्रे ॥ ह्रै ॥ ह्रों ॥ ह्रः असिआउसा

ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्योनमः ॥ जंबूवृक्षधरोद्वीपः॥क्षारो दधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट ॥ काष्टाधिष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः ॥ कूटलक्षैरलंकृत. ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार ॥ स्तारामंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं बीजमध्यास्यसर्वगं ॥ नमामिबिंबमार्हत्यं ॥ ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलंशांतं ॥ बहुलं जाड्यतो ज्झितं ॥ निरीहं निरहंकारं ॥ सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं ॥ सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं चिरसंबुद्धं ॥ तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच निराकारं ॥ सरसं विरसंपरं ॥ परापरं परातीतं ॥ परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच ॥ त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं ॥ सपरंच परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलंतुष्ट ॥ निवृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं ॥ निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं ॥ बुद्ध सिद्ध मतंगुरु ॥ ज्योतीरूप महादेवं ॥ लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु, वर्णांतः ॥ सरेफोबिंदुमंडितः तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ॥ वृषभाद्याजिनोत्तमाः ॥ वर्णैं निंजैनिजैर्युक्ता ॥ ध्यातव्यास्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥ नादश्चं ड्समाकारो ॥ बिंदुर्नीलसमप्रभः ॥ कलारुणसमासांतः ॥ स्वर्णाभः सर्वतोमुख ॥२२॥ शिरः संलीन ईकारो ॥

विनीलोवर्णतःस्मृतः॥वर्णानुसारसंलीनं तीर्थकृन्मंमलं स्तुमः ॥२३॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ॥नादस्थिति समाश्रितौ ॥ विंडुमध्यगतौनेमि ॥ सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्म प्रज्ञवासुपूज्यौ ॥ कलापदमधिष्ठितौ शिरईस्थि तिसंलीनौ ॥ पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषा स्तीर्थकृतः सर्वे ॥ हरस्थाने नियोजिताः ॥ माया वीजाक्षरंप्राप्ता ॥ श्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ गतरागद्वे षमोहाः ॥ सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदाः सर्वकालेषु ॥ ते जवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययच्चक्रं तस्य चक्रस्ययाविज्ञा ॥ तयाछादित सर्वाङ्ग मामांहिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० ॥ मामांहिनस्तु, राकि नी ॥ २९ ॥ देवदे० ॥ मामांहिनस्तु, लाकिनी ॥ ॥ ३० ॥ देव० ॥ मामांहिनस्तु, काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० ॥ मामांहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० ॥ मामांहिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० ॥ मामांहि नस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतुपन्नगाः ॥ ३५ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० ॥ मामांहिंसंतुराक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० ॥ मामांहिंसंतु डुर्ज्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० ॥ मामांहिंसंतु जूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा ॥ तस्यायाजुविलब्धय, ॥ ताभिरज्यु द्यतज्योति ॥ रर्हंसर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवा

सिनो देवा ॥ देवाभूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि
ये देवाः ॥ सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिल
ब्धयो येतु ॥ परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयोदे
वाः ॥ मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूतवेता
लाः ॥ पिशाचामुझलास्तथा ॥ तेसर्वेप्यु पशाम्यंतु दे
वदेव प्रनावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्चधृतिर्लक्ष्मी ॥ गौ
री चंमी सरस्वती ॥ जया वा विजयानित्या ॥ क्लि
न्नाजितामद ड्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगाकामवाणाच ॥
सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री ॥ क
ला कालीकलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वामहादेव्यो ॥
वर्त्ततेयाजगत्त्रये ॥ मह्यसर्वाः प्रयछंतु ॥ कांतिंकीर्ति
धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुडुः प्राप्यः श्री
ऋषिमंमलस्तवः ॥ नापितस्तीर्थनाथेन जगतूत्राण कृ
तेनयः ॥ ४९ ॥ रणेराजकुलेवह्नौ ॥ जलेडुर्गे गजे ह
रौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे ॥ स्मृतो रक्षति मानवं
॥ ५० ॥ राज्यन्नष्टा निजं राज्यं ॥ पदन्नष्टा निजं प
दं ॥ लक्ष्मीनूष्टानिजां लक्ष्मी ॥ प्राप्नुवंति न संश
यः ॥ ५१ ॥ नार्यार्थीलनते नार्यां ॥ पुत्रार्थी लनते
सुतं ॥ वित्तार्थी लनते वित्त ॥ नरः स्मरण मात्रतः
॥ ५२ ॥ स्वर्णेरूप्ये पटेकांस्ये ॥ लिखित्वा यस्तुपूज
येत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धि ॥ गृहेवसति शाश्वती
॥ ५३ ॥ नूर्ज्यपत्रेलिखित्वदं ॥ गलके मूर्ध्नि वानुजं ॥
धारित्तं सर्वदा दिव्यं ॥ सर्वनीति विनाशकं ॥ ५४ ॥

ठाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै ॥ कोढपरा
भवियो किसमिसै ॥ तिहां थकी तू इहां आणजे ॥
सत्यवचन माहरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथि
र थापियो ॥ सिलावटनें सुहणो दियो ॥ रोगगमी
नें पूरुं आस ॥ पास तणो मंमें आवास ॥ ३२ ॥
सुपन माहे मान्यो तेवेण ॥ हेम वरण देखाड्यो
नैण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुवा ॥ सिलावटैने
गया तेरूवा ॥ ३३ ॥ सिला वटो आवे समरो ॥
जीमें खीरखांरू घृत चूरमो ॥ घमै घाट करै कोर
णी ॥ लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ्र कीधी
पूतली ॥ नाटक कौतिक करती रली ॥ रंग मंरूप
रलियामणो रसै ॥ जोतां मानवनो मन हसै ॥ ३५ ॥
नीपायो पूरो प्रासाद ॥ स्वर्गसमो मंडे संवाद ॥
दिवस विचारी ईंडोघड्यो ॥ ततखिण देवल ऊपर
चड्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेलावास ॥ पबासण
वैठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरुसमान ॥ एकल
मल्लवगडे रहै वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभ
ली ॥ तवन मांहि सूधी सांकली ॥ गोठी तणा
गोतरीया अछै ॥ यात्र करीनें परणे पछै ॥ ३८ ॥ (दूहा)
विघन विडारण यक्ष जगि ॥ तेहनो अकल सरूप ॥
प्रीतकरी श्रीसंघनें ॥ देखाडे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरु
ओ गोरूी पासजिन ॥ आपे अरयभंमार ॥ सानि
ध करै श्रीसंघनें ॥ आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील

पलाऐ नीलहृय ॥ नीलो थइ असवार ॥ मारग चूकामानवी ॥ बाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) घरण अढार तणो लहै जोग ॥ विघन निवारै टालै रोग ॥ पवित्र थई समरै जे जाप ॥ टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धन नो सूत्र ॥ आपै अपुत्रीयानें पुत्र ॥ कायरनें सूरापण धरै ॥ पार उतारे लछी वरे ॥ ४३ ॥ दो जागीनें दै सोजा ग ॥ पगविहूणानें आपै पग ॥ ठामनही तेहनें द्येठा म ॥ वछित पूरै अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधास्या नें द्ये आधार ॥ जवसायर ऊतारै पार ॥ आरतीआनी आर त जंग ॥ धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्यां सहाय दीयै यक्ष राज ॥ तेहना मोटा अछै दिवाज ॥ बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास ॥ गूंगानें द्यै वचन विला स ॥ ४६ ॥ डुखियांने सुखनो दातार ॥ जय जंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटै वेडी तणा ॥ श्रीपार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ ( दूहा ) श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपै ॥ विश्वानर विसराल ॥ हस्ति यूथ दूरेटलै ॥ डुक्करसीह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा जयचकवै ॥ विष अमृत उडकार ॥ विपधरनो विप ऊतरै ॥ संग्रामे जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोग दालिद्र डुःख ॥ दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्री पासनो ॥ महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ ( कक्खानीचाल ) २ उंजितुं उजितुं उंज उपसम धरी ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री

पार्श्व अक्षर जपंते ॥ जूतनें प्रेत कोटिंग व्यंतर सुरा उपसमै ॥ वार इकवीस गुणंतें ॥ ५१ ॥ ( उं० ) डुक्ष्ठरा रोग सोगा जरा जंतनें ॥ ताव एकांतरा डुत्तपंते ॥ गर्नबंधन व्रणं सर्पविन्नू विषं ॥ चालिका वालमेवा ऊखंतै ॥ ५२ ॥ ( उं ) साइणी राइणी रोहणी रंकणी ॥ फोटका मोटका दोषहुंतें ॥ दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी ॥ स्वान सीयाल विक रालदंतें ॥ ५३ ॥ ( उं ) धरणेंद्र पदमावती समर सोन्नावती ॥ वाट आघाट अटवी अटंतै ॥ लखमी लीलामिलै सुजस वेला वलै ॥ सयल आस्या फलै मन हसंतें ॥ ५४ ॥ ( उं० ॥ अष्टमहान्नय हरै कान पीका टलै ॥ ऊतरै सूल सीसगन्नणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रन्नू ॥ श्रीपास जिण नाम अन्निराम मंते ॥ ५५ ॥ ( उं जितु ) इति श्रीगोडी पार्श्वनाथ जी वृद्ध स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीन्नीरुन्नंजन पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ नुजंगी छंदनी चाल ॥

॥ वारु विश्वमां देश काशी विराजे, जिहां जान्हवी नीर गंन्नीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहां प्रसिद्धि, शोन्ना स्वर्गनी जिणे उलाली लीधी ॥ १ ॥ घणुं शुं वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे जोवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी धराने पाले, प्रेमशुं अश्वसेनान्निधाने ॥ २ ॥ वामा तेह

नी गेहनी रूपे रंजा, शीले सर्व नारी जीती ए अचं
जा ॥ सदा सुंदरी ते सोहे चंद्र वयणी, सुती सेज
मां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक दशमां थकी
जे सनूरे, प्रजुपार्श्व वामाकुखे पुण्यपूरे ॥ चतुर्थिदिने
चैत्रनी कृष्ण पक्षे, वस्या गर्नवासे विशाखा सुरक्षे
॥ ४ ॥ देवी चौद सुहणां तदा दिव्य देखे, महामो
द पामी माने तेह लेखे ॥ जायो पोश मासे दशमी
अंधारी, आखाविश्वनो जेह उद्योतकारी ॥ ५ ॥
मलि दिगकुमारी सुरेंद्र मलायो, गायो हूलरायो
पूजीने वधायो ॥ वधंते प्रजु यौवने जाम जायो,
प्रजावती राज कन्या प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय जोग
विलशी वस्या गृहवासे, वरश त्रीशमे व्रत लीधुं
उल्लासे ॥ त्याशी रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तप
स्या करी शुक्ल ध्यानाज्यासी, ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर
दोष चारित्र पाली, बहु कर्मना वृक्षनां मूल वाली ॥
थया केवली चैत्रनी कृष्ण चोथे, देखे लोक अलोकने
ज्ञान ज्योते ॥७॥ मली देवताये महा मोदधारी, कस्यो
त्रिगडो विश्व व्यामोह कारी ॥ स्वामी दिव्य सिंहासने
वेठासोहे ॥ वारे परखदानां बहु मन्नमोहे ॥ ए ॥
नवे नेहशुं एहने जे निहाले ॥ त्रिधा ताप संताप ते दूर
टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, मुने मान
खो तेहनो लागे मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना दीन
बंधु दयानी, प्राणी पुण्य पामी सुणो जैन वाणी ॥

लही दुर्लभं मानवं ए शरीरं, मुधा कां गमोछो बुध बोध हीरं ॥ ११ ॥ मदे जेह माता पड्या मोह पासे, धने जेह धाता विषयने विलासे ॥ मुंजाया मुग्ध माया तणा फंद मांही, मिथ्या ते ग्रस्या शुद्धने ते न चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ धर्म धोरी, तजी कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ भजी शुद्धने ते लहे शुद्ध हेतु, थाय तेह मिथ्यातनो धूम केतु ॥ १३ ॥ वसी वासना जेहनी जैन वयणे, नावे आमलो तेहने कोइ नयणे ॥ जेहनां चित्त सिद्धांत मांहे रमेछे, किम तेह भूला कहोने भमेछे ॥ १४ ॥ मिथ्याते लीना तेहने ते गमेछे, दोषी जीवना ते जिहां तिहां दमेछे ॥ फरी लाख चोराशीना फेर मांहे, विना नाथ तेहने धरे कोण वाहे ॥ १५ ॥ जिणे जैन सिद्धांतनी युक्ति जाणी, कहोनेकोइ तेहने गमे अन्यवाणी ॥ हीरे जे हल्यो ओलखी हेत आणी, कहो किम ते संग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥ देइ देशनाने प्रभु तीर्थ थापे, जग जंतु बंधुपणे बोध आपे ॥ मही मंडले विचरे जेम वायु, पुरुं भोगवी एकसो वर्ष आयु ॥ १७ ॥ मासे श्रावणे शैल समेत शृंगे, वश्या श्वेत षष्ठी दिने मुक्तिसंगे ॥ प्रभु भीड भंजन नामे भजंता, भांजे भीडने सुख आपे अनंता ॥ १८ ॥ सेवो शुद्ध बुद्धे सदा बोध दाता, भजो भाव भक्ते प्रभु भूत भ्राता ॥ सेव्यो हेजशुं एह सहजे सधारे,

पूज्यो प्रेमशुं पापना बंध वारे ॥ १९ ॥ वधे वंदतां संपदा जे वधारे, धर्युं ध्यानमां सेवकां वाहे धारे ॥ अर्च्यो उल्लटे आपदाथी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह संसार तारे ॥ २० ॥ नम्यो नेहशुं जेह नवेनिद्धि आपे, कीजे चाकरी तो चारे गति कापे ॥ जोतां जेहनी आदि कोई न जाणे, कवि तेहना गुण केता वखाणे ॥ २१ ॥ नमो नाथ अनाथ सनाथ कारी, नमस्ते अरूपी बहु रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा तथा सिद्धि भर्त्ता, नमो पारगामी नमो सौख्य कर्त्ता ॥ २२ ॥ नमो मुक्ति दाता नमो तु विधाता, नमो विश्वनेता नमो तुं विख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवेदी नमस्ते नमो शंकरो सर्वव्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥ सेढी वेत्रवल्योपकंठे दिदारु, खेरुं हरीआलुं वसे गाम वारु ॥ राजे तत्र त्रेवीशमो तीर्थराय, जेहना नामथी कोटि कल्याण थाय ॥ २४ ॥ धरणेंद्र पद्मावतीने पसाय, सदा संघना विघ्न दूरे पलाय ॥ उदयरत्न भांखे गाता पार्श्वस्वामी, पूरी आजमेतो नवे निद्धिपामी ॥ २५ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक प्रारंभः ॥

॥ हरिगीत छंद ॥

॥ बुद्ध विमलकर नाव बुधवर, निरूप रमनी, निर खियें ॥ वर देय न बाला, पद प्रवाला, मंत्रमाला हर खियें ॥ स्थिर थानंभा, अति अचंभा, रूप

रंभा भलकती ॥ भजियें भवानी, जगत जानी, राज रानी सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख दैवत, पद्म पेखत, आसनं ॥ सुखदाय सूरति, माय मूरति, दुःख डुरति निवारनं ॥ त्रिहु लोक नारक, विघ्न वारक, धरा धारक, धरपती ॥ भजियें० ॥ २ ॥ केवियां कोपित, लोभ लोपित, अवनि ठंपित, ईश्व री ॥ शंतोष धारन, विघन वारन, मदन मारन, महेश्वरी ॥ खल दल्लां खंरून, ठिद्द ठंडन, डुष्ट दंरून, नरपती ॥ भजियें० ॥३॥ शिव शक्ति साची, रंग राची, अज अजाची, योगिनी ॥ मद रुरन मत्ता तरन तत्ता, धत्त धत्ता ध्वंगिनी ॥ जिनआणपंति, मन रमंति, धवल दंति, वरमती ॥ भजियें० ॥ ४ ॥ जलथल जनानी पव न पानी, मति वखानी, वीजली ॥ गिरवरां गहन, वाघ वाहन, सर्प साहन, शीतली ॥ हदहांक धारी, हत हजारी, धनुष धारी, भगवत्ती ॥ भजियें० ॥ ५ ॥ रुणणाट रुह्नरि, धिधिम धपवरि, रिरिरिरधर, खज्जि यें॥धिधिधौंकिधौं, गरूदि धिधिक धिरतं, धिधिक धौंग रूदी गज्जियें ॥ रूांकिड्डौंड्डौं रुरुरु मतिड्डां भत्तकि त्रांत्रां दमकती ॥ भजियें० ॥ ६ ॥ रिरि रमकि रमि रिमि, भिभिम भिमि भिमि ठमकि ठम पग रच्चि यें ॥ घम घमकि घम घम ग्रहणिक ग्रहणि, गमअ ति अमग नृत्ति मच्चियें ॥ तत थेइय तांनन, मात मानन, अचल आनन दरसती ॥ भजियें ॥ ७ ॥ चव

चक्र चालन, फटिक फालन, गर्व गालन, गंजनी ॥ विरदां विदारन, मह्यिप मारन, दलिद्र दारन, ज्ञंजनी ॥ चरचिये चंडी, खलांखंडी, मदन मंडी मलकती ॥ जजियें ॥ ७ ॥ कविकरे अष्टक, टले कष्टक विसन पृष्टक कज्जियें ॥ मणिमौलि मंडित, पढेपंक्ति, ए अखंडित पेखियें ॥ दयासुर देवी, सुरांसेवी, नित नमेवी, जगपती ॥ जजियें० ॥ ए ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ क्रोध मान माया लोजनो छंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ पहेलां सरस्वतीनुं लीजे नाम, चोवीश जिनने करु प्रणाम ॥ क्रोध मान मायाने लोज, जाखुं अर्थ करी थिर थोज ॥ क्रोधें तप कीधो परजले, क्रोधें कर्म घणेरां फले ॥ क्रोधें करणी रूडी जाय, क्रोधें समतारस सूकाय ॥ २ ॥ क्रोध तणे वश कांइ नवि गणे, मातपिता गुरुने अवगणे ॥ क्रोधें पंचेंद्रिय मूंकाय, क्रोधें फेर घणेरो थाय ॥ ३ ॥ क्रोधें विकथा वाधे घणी, क्रोधें कर्म निकाचित जणी ॥ क्रोधें वे बंधव आंफले, क्रोधें जरत बाहुबल लडे ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधें अचंकारी जटा, क्रोधें परशुं करे खटपटा ॥ क्रोधें अरजुन मालि नाम, महावीर स्वामी किधो सुठाम ॥ ५ ॥ क्रोधें कूड कपट केलवें, क्रोधें कुक्ति गति मेलवे ॥ क्रोधें फरसराम फरसी फेरवे, क्रोधें सुज्जुम दल मेलवे ॥ ६ ॥ क्रोधें ब्रह्मदत्त थयो

कठोर, ब्राह्मण डोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें सासु थई नणंद, सुनद्रासती शिर कीधो फंद ॥ ७ ॥ क्रोधें काया कर्मनो बंध, क्रोधें घरमां पेंसे धंध ॥ क्रोधें चेडो ते महाराय, हल विहल मामा घरजा य ॥ ८ ॥ क्रोधें कोणिक कटकी करे, चांगी विशा ला पठो फरे ॥ क्रोधें लखमणने वलि राम, क्रोधें रावण टाल्यो ठाम ॥ ए ॥ क्रोधतणी ठे खोटी वात, कोइन करशो एहनी तात ॥ क्रोधें कर्म घणां बंधा य, क्रोधें डुर्गति पमवा जाय ॥ १० ॥ तेह जणीसहु ठंडो क्रोध, सुख निरबाध लहो वलि बोध ॥ मान तणी हवे सुणजो वात, मानतजे ते सवल सुजात ॥ ११ ॥ माने मान तुरंगें चडे, माने मोह जालमां पडे ॥ माने नीच कुलें अवतरें, माने विनय मूल नविजडे ॥ १२ ॥ माने चउगतिने अनुसरे, माने जंबुक जव मांहे फिरे ॥ शांब प्रद्युम्न कह्यो विचार, माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥ माने वलराजा निरधार, ब्राह्मण रूप धर्यो मोरार ॥ मान गयंद तणोठे जोर, बाहुबले ठांड्यो एकठोर ॥ १४ ॥ मान तणीठे वधती वेल, माने नमिया डुखनी रेल ॥ माने वीरमती ते नार, चंदनें कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥ प्रेमला लछी हाथें चमी,सूरज कुंडे कीधो नर फरी॥ माने डुर्योधन डुःख लहे, माने सर्पनी उपमा कहे ॥ १६ ॥ माने धर्म न पामे कदा, माने कर्म बंधाये

सदा ॥ माने मान वधंतो होय, माने जीव फरे सहु कोय ॥ १७ ॥ माने बुरू गलें नर सोय, मान तजे ते सुखियो होय ॥ माने गज असवारी करे, माने जीव अगोचर फिरे ॥ १८ ॥ मानतणी ते ए गति कही, धर्मी नरते सुणजो सही ॥ हवे मायानो कहुं विचार, माया नरक तणो बे बार ॥ १९ ॥ मायामोह तणोबे दोष, माया कर्म तणोबे पोष ॥ माया कपटें मल्लिनाथ, माया मोह तणोबे साथ ॥ २० ॥ माया यें कूरू कपट केलवे, माहायें कुंभी गति मेलवे ॥ माया मानव जूठोलवे, माया नरनारी शोपवे ॥ २१ ॥ माया आखारू नूति मुणींद, मायायें लारु वींझोस्या फद ॥ माया मोह्यो टो बे मकरंद, माया पडिया सूरज चंद ॥ २२ ॥ माया फंद तणीजे जाल, माया सिंह तणीबे फाल ॥ माया अधिक करे उफंड, माया कर्म तणोबे कुरू ॥ २३ ॥ माया मांहे धर्म न थाय, माया पुण्य करे अंतराय ॥ २४ ॥ बोहोटो महोटो माया धरे, माया सबल संसारें फिरे ॥ माया जालें बांध्यो जीव, मायाये प्राणी करतो रीव ॥ २५ ॥ अर्थ कह्यो मायानो सार, लोज तणो हवे कहुं विस्तार ॥ लोने लक्षण जाये सहु, लोने पमिया दाणव बहु ॥२६॥ लोने लाज घणेरो थाय, लोने नरनारी उजाय ॥ लोने गांमो घेलो होय, लोने धर्म न जाणे कोय ॥ २७॥ लोने सागर दत्त जलमां पड्यो, लोज सुजुम चक्रीने

नड्यो ॥ लोन्ने संचय धननो करे, माखी जिम मद्दू आलें फिरे ॥ २७ ॥ लोन्ने धन नवि खरचे धणी, वागुल नव पामशे कां फणी ॥ लोन्ने देश विदेशें जाय, लोन्ने नरनारी अफलाय ॥ २ए ॥ पुएय होय तो पामें वली, वेगा धर्म करो मन रली ॥ क्रोध लो नने ठांमोपास, श्रावक धर्म करी उल्लास ॥ ३० ॥ लोन्ने नाना मोटो जीव, लोन्ने अकार्य करे सदीव ॥ लोन्न तणी गति ठंमो सार, तीर्थयात्र करो उदार ॥ ३१ ॥ अढार पांत्रीसा वरश मकार, वागमदेश वडो कुसार॥देवदर्शनकरोसुखकार, पामो जिम नव सायर पार ॥ ३२ ॥ क्रोध मान माया नो संग, वली ठांडो लोन्न प्रसंग ॥ कहे कवि सुणो पंमित राय, कांतिविजय हरखे गुण गाय ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीमणिनड्जीनो ठंद प्रारंनः ॥

॥ श्री मणिनड् सदा समरो, उर बीचमें ध्यान अखंम धरो ॥ जपियां जय जयकार करो, नजियां सहु नित्य नंमार नरो ॥ १ ॥ जेकुशल करे नामज लियां, आनंद करे देव आश कियां ॥ सौन्नाग्य वधे जग सहस्सगुणो, दिलसेव्यादे प्रनु जश कुगुणो ॥ २ ॥ अरियण सहु अलगा न्नागे, विरुआवेरी जन पाय लागे ॥ संकट शोक वियोग हरे, ठण वेला आय सहाय करे ॥ ३ ॥ नूत नयंकर सहु न्नागे, जद्द योगणी सायणी नवि लागे ॥ वाय चोराशी जायअ

लगी, लखमी सहु आय मले वेगी ॥ ४ ॥ गुल पा
पमियां गुरुवार दिने, लापसिया लाडु शुरू मने ॥
धुप दिप नैवेद्य धरो, आठम दिन पूजा अवश्य क
रो ॥ ५ ॥ जेहने दिनप्रति जाप सदा, तस सुपनांतरमें
प्रत्यक्ष कदा ॥ जपियां सहु जाये आपदा, कोइ
मणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद सारु तमें जस
कर्यो, गुण सार जिस्यो तमें गुण कर्यो ॥ श्री दी
ना नाथजी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सख
रो ॥ ७ ॥ नविचण जे नावे नजशे, कारज सिद्धि
आपणी करशे ॥ पूज्यां पुत्र वधे डुगणा, किणी वा
तें कदि रहें नहि उंणा ॥ ८ ॥ श्री मणिनद्र मनमें
ध्यावो, सुख संपत्ति नहु वेगें पावो ॥ लक्ष्मी कीर्त्तिवर
आप लहे, शिवकीर्त्ति मुनि एम सुजस कहे ॥ ९ ॥

॥ अथश्रीमणिनद्रजीनी आरति प्रारंनः ॥

॥ जय जय निधि, जय माणिक देवा ॥ जयमा० ॥
हरि हर ब्रह्म पुरंदर, करता तुज सेवा ॥ जयदेव
जयदेव ॥ १ ॥ तुं वीराधिप वीरा, तुं वंछित दाता ॥
तुंवं० ॥ माता पिता तुं सहोदर, ठो प्रनु जगत्राता
॥ जय दे० ॥ २ ॥ हरि करी वंधन उदधी, फणिधर
अरि अनला ॥ फणि० ॥ ए तुज नामे नासे, साते
नय सघला ॥ जयदे० ॥ ३ ॥ डाक त्रिसुल फूल
माला, पासांकुस ठाजें ॥ पासां० ॥ एक कर दाणव
मस्तक, एम षट् नुज राजे ॥ जयदे० ॥ ४ ॥ तुं

नैरव तुं किंन्नर, तुं जग महादीवो ॥ तुंज० ॥ काम कल्पतरु धेनु, तुं प्रनु चिरंजीवो ॥ जयदे० ॥ ५ ॥ तपगछपति सुरि,ध्यावे तुऊ ध्यानं ॥ ध्यावे० ॥ मणि नड नडंकर, आशा विसरामं ॥ जयदे० ॥ ६ ॥ संवत् अढारहसें पांसठ, श्री माधव मास ॥ श्रीमा०॥ दीपविजय कविरायनी, पूरो सहु आस ॥ जयदे० ॥ ॥ ७ ॥ इति श्रीमणिनडजीनी आरति ॥

॥ अथ ज्वर ( ताव ) ठंद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनंद पुरनगरे, अजयपाल राजान ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥ सातरूप शक्ति हुर्ठ, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरा वे जूजुवा पसस्यो तुं इत्त ऊत्त ॥ २ ॥ एकांतरो वेयांतेरो, त्रइयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ ठंद ॥

॥ ए साते तुज नाम सुरंगा, जपता पूरे कोमि उमंगा ॥ तें नाम्या जे जालिम जूगां, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे नूपति सव रंका, त्रिनूवनमां वाजे तुज मंका ॥ माने नहिं तुं केहनी शंका, तूठो आपे सोवन टका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ उष्ठ धीठना कंधर तोडे, नमीचाले तेहने तुं ठोडे ॥ ६ ॥

आवंतो थरहर कंपावे, साह्याने जिम तिम बहकावे पहिलो तुं केडमां थी आवे, सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हुं हुंकार करावे, पांशलिया हाडां कडकावे ॥ उनाले पण असल जगावे, तापें पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्त्तिकमां तुज जोरो, हठ्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पसावे शोरो, करे सर्व तुं तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हाडां जंजे, पापीने ताडे करपंजे ॥ जक्ति वत्सल जावे जो रंजे, तो सेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोसक तोसक समरु साकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धुंसड धांसड धाकं, चढतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पठासण नहीको तोथी, तुज जस जीव्या जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी, मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ जक्त थकी एवडीकां खेडो, अवल अमिनां ठांटां रेडो ॥ लाखा जक्तनो ए निवेडो, महाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥ लाजवसोमां अजया राणी, गुरु आण मानो गुण खाणी ॥ घरें सिधावो करुणा आणी, कहुंछु नाके लीटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छंदजे पढशे, तेहने ताव कदी नव चढशे ॥ कांति वल देही नीरोगं, लेहेशे लखमी लीला जोगं॥ १५ ॥

॥ ॐ नमो धरि आदि, वीज गुरु नाम वदीजें ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आखीजें ॥ अजया

जात अढार, वांचिये साते वेटा ॥ जपतां एहिज जाप, जक्तसुं न करे खेटा ॥ उतरें अंग चढियो पल कमे, तारा वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदि, सार मंत्र गणियें सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वरछंद समाप्त ॥ ए छंद सात वार, अथवा एकवीश वार सांजे गणे तो ताप जतो रहे ॥

॥ अथ श्री यंत्र महिमा वर्णन छंद ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ जिण चोवीशे पय प्रणमेवि, सहु गुरु तणा वचन निशुणेवि ॥ यंत्र तणो महिमा अति घणो, जावे वोलुं जवियण सुणो ॥ १ ॥ शोले कोठे लखियें वीश, सघला जय टाले जगदीश ॥ अठावीसमां रोग जय हरे, बत्रीसें द्युति जय करे ॥ २ ॥ त्रीशे वलि सायणि नासंति, वत्रीसे सुख प्रसवते हुंति ॥ देवध्वजा जो लखियें इमें, परचक्र जय न होवे किमें ॥ ॥ ३ ॥ घर वारणे जो लखियें एह, कामण नव परा जवे तेह ॥ शाकणि संहारी न हुवे तिहां, चोत्रीसो यंत्र लखिये जिहां ॥ ४ ॥ चालिसे शीस रोग टले, पागे वयरी हेला दले ॥ अने वली ठाकरवे बहु मान वसुधा वलि वधारे वान ॥ ५ ॥ बासठे वंध्या गर्जज धरे, एसा वयण सद्गुरु उच्चरे ॥ चोसठनो महीमा छे घणो, मार्गे जय न होय कोइ तणो ॥ ६ ॥ वारि जय रिपु शाकणि तणां, चोसठना महिमा नहिं म

णां ॥ बावत्तरीभूत भूरि जेह झूझे नर जय पामे ते ह ॥ ७ ॥ पंचाशी पंथे भय हरे, अठ्योतरशो शिव सुख करे ॥ वीसोत्तरशो नयणे निरखंत, प्रवस वेद न ते नवि हुंत ॥ ८ ॥ बावनशोनो छली नीर, मुख धोवे हुवे वाहालो वीर ॥ सतरिसयनो महिमा अनंत, तुछ बुद्धि किम जाणे जंत ॥ ए ॥ एकसो बहुत्तरो यंत्र प्रभाव, बालकने टाले दुष्ट भाव ॥ विहुंसोनो यंत्र लखियें बार, वाणिज्य घणां होय हाट मझार ॥ १० ॥ त्रणशे नरनारीनो नेह, विंणठो वाधे नही संदेह ॥ चारशे घर भय नवि होय, कण उत्पत्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥ पांचसे महिला गर्भज धरे, पुरुषहने पुत्र संतति करे ॥ छसे यंत्र होये सुख कार, सातसे झगडे होये जय कार ॥ १२ ॥ नवसें पंथे न लागे चोर, दशसें दुःस्वन पराभवे घोर ॥ इग्यारसें छे जे जीव दुष्ट, तेहना भय टाले उत्कृष्ट ॥ १३ ॥ बंदि मोक्ष बारसे होय, दश सहसे पुनः ते हिजहोय ॥ वली सयलनीरक्षा करे, एमयंत्र तणी महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥ पंचासले राजादिक मान, शाकणि दोष निवारण ग्यान ॥ कंठे तथा मस्तक जे धरे, अशुभ कर्मते शुभज करे ॥ १५ ॥ बावनना नो मस्तके तथा, कंठे खेत्रपालनो हित सदा ॥ पण यालीस शिर कंठे होय, सर्व वश्य थाय तस जोय ॥ ॥ १६ ॥ कुंकुम गोरोचंदन सार, मृगमदसों चौदश

रवि वार ॥ पवित्र पणें पुष्य मूल नक्षत्र, एकमनां जो लखियें यंत्र ॥१७ ॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सव दूर पलाय ॥ पंडित अमर सुंदर इम कहे, पूजे परमारथ सव लहे ॥ १८ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंडें, तस घेर त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक जामिनी मध्ये शोजतांरे, सुपनदेखे वाल ॥ मयगल वृषनें केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सरजलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंवार उज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत चउद सुपन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलुं वोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुभूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथिवी नामें नार ॥ इंद्रभूति आदेश्र छे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणें आदर्युं, वहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें समे तिहां समोसर्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेहनो सांजली, लीधो संजमजार ॥ अगीयार गणधर

थापीया,श्रीवीरें तेणी वार॥इन्द्रभूति गुरुभगतें थयो माहा लब्धिनो भंमार ॥ मंगल बीजु बोलीयें, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरें, सकमाल नामें मंत्री सरू ए ॥ लाछलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रु टक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोमणि, थूलीभद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षजबार ॥ भोग भली पेरें भोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासें रह्यो निश्चल, रुग्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार॥ मंगल त्रीजुं बोलीए, श्रीथूलिभद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेममणि रूप मय घमित अनुपम, जडित कोशीसां तेजेंऊगेए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोभित, मध्य सिंहासन ऊगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ ऊगमगे जिन सिं हासने ए, वाजित्र कोमाकोम ॥ चार निकायना दे वता, ते सेवे बेहुकरजोड ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शो भे श्री भगवंत ॥ सुरनर किन्नर मानवी, बेठीते पर्ष दा बार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्मना चारप्रका र॥दान शीयल तप भावना रे, टाले सघलां कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्रीजिनधर्म ॥ ए

चार मंगल गावशेजे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोमि
मंगल पामशे, उदयरत्न जांखेएम ॥ ४ ॥

॥ अथ जीडजंजन पार्श्वनाथनो ढंद ॥

॥ फूलणा ढंद प्रजाती ॥ जीमजंजन प्रजु जीम
जंजन सदा, नहिंकदा निष्फल थायसेवा ॥ जविजन
जावशुं जजन मांही जजे, परमपद संपदा तखत
लेवा ॥ १ ॥ काशी वणारसी जिनपद पुरे जयो,
वामा अश्वसेन सुत विश्वदीवो ॥ सेढीवेत्रक तटे
खेटकपुरतपें, कल्पनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥
जीम जव जितिजय जावठ जंजणो, जक्ति जनरंज
णोजावें जेट्यो ॥ आज जिनराज मुज काज सिद्धां
सवे, मोह राजाननो मान मेट्यो ॥ ३ ॥ कोटि मन
कामना सुजस वहु ठामना, शिव सुख धामना आज
साध्यां ॥ मंगल मालिका आज दीपालिका, मुज मन
मंदिरें मोज वाध्या ॥ ४ ॥ पाठकें ठाठमें कांति वद
आठमें, सतर अट्योत्तरें पासगायो ॥ उदयनिज द
सनो एह अरदास सुणि,हितधरी नाथजी हाथ
सायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतम गुरु प्रजात ढंद ॥

जयोजयो गौतम गणधार, मोटी लब्धितणो न
डार ॥ समरे वंठित सुख दातार, जयो जयो गौतम
गणधार ॥ १ ॥ वीरवजीरवमो अणगार, चौद हजार
मुनि शिर दार ॥ जपतां नाम होय जयकार ॥ ज

यो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कल त्र सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोमि विस्तार ॥ जयो० ॥ ३ ॥ घरे घोमा पायक नहींपार, सुखासन पालखी उदार ॥ वैरी विकट थाये विसराल ॥ जयो० ॥ ४ ॥ प्रह उठी जपियें गणधार, ऋद्धि सिद्धि कमला दातार ॥ रूपरेख मयण अवतार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रूप चंद गुरु केरो शिष्य, गौतम गुरू प्रणमो निशदिस ॥ कहे गुण चंद ए शमता गार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ चोपाइ ॥ सकलसार सुरतरु जगजाणं, जसु जस वास जगत परिमाणं ॥ सकल देव शिरमुगुट सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरंगं ॥ १ ॥ पाऋधी च्छंद ॥ जो जन मन रंगं, अकल अनंगं, तेज तुरं गं नीलंगं ॥ सवि शोचा संगं, दग्ध अनंगं, शिश नुजंगं चतुरंग ॥ बहु पुण्य प्रसंगं, नित्य उछरंगं, नव नव रंगं नारंगं ॥ कीरति जलगंगं, देश डुरंगं, सुरपति संगं सारंगं ॥ १ ॥ सारंगा वक्रं, पुण्य पवि त्रं, रुचिर चरित्र जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्रं, पंक ज पत्रं, निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥ जग जीवन मित्रं, तरु सत सत्रं, मित्रामित्र मावित्रं ॥ विश्वत्रय चित्रं, चामर छत्रं, सीस धरित्रं पावित्रं ॥ २ ॥ पावित्रा चरणं, त्रिभुवन सरणं मुगुटा चरणं आचरणं ॥ सुर

अर्चित चरणं, शिव सुख करणं, दारिद्र हरणं, आवरणं ॥ सुख संपत्ति जरणं जवजल तरणं, अघ संहरणं, उद्धरणं ॥ गोअमृत ऊरणं, जन मन हर णं, वरणावरणं आदरणं ॥ ३ ॥ आदरणा पालं, ऊाकऊमालं, नित जूपालं अयुपालं ॥ अष्टमी शशि समजालं, देव दयालं, चैतन चालं सुकमालं ॥ त्रिजु वन रखवालं, महाडुकालं, महाविकरालं, जय टालं ॥ शृंगार रसालं, महकेमालं, हृदयविशालं जूपालं ॥ ४ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ अकल रूप उदा र, सार शिव संपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप, डुरिय डुह डुःख निवारक ॥ चिहुं दिश आण अखंरू, चंरू तप तेज दिणंदह ॥ अमर अपछर कोम्मि, गावे जस नमे नरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर मणि, पाय अधिक मंगल नीलो ॥ मुनि मेघराज कहे जिनवर जयो. श्रीपार्श्वनाथ त्रिजुवन तिलो ॥ ५ ॥

॥ अथ गोमीपार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ धवलधिंग गोमी धणी, सेवक जन साधार ॥ पंचम आरे पेखियें, साहिब जग आ धार ॥ १ ॥ जुजंग प्रयात वृत्तं ॥ तजोमान माया जजो जाव आणी, वामानंदनें सेवियें सार जाणी ॥ जुवो नाग नागिणी नाथ ध्यानें, पाम्या शक्रनी संप दा वोधि दानें ॥ २ ॥ वश्या पाटणें काल केतो धरामां, पधार्या पछे प्रेमशुं पार करमां ॥ थलीमा

वली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश त्रैलो क्य धारी ॥ ३ ॥ धरी हाथमां लाल कम्बान रंगें, ॥ जिसी गातसी, रातसी नील अंगें ॥ चडी नीलके तेजीयें विघ्न वारे, अराध्या थकां पंथ जूलां सधारे ॥ ४ ॥ जेणें पाशगोमी तणा पाय पूज्या, शत्रु सर्वदा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी थयां आज ठोटां, प्रजु पार्श्वनां एक प्राक्रम मोहो टां ॥ ५ ॥ गोमी आप जोरे नव खंम गाजे, जेह थी शाकिनी डाकिनी दूर जाजे ॥ पुरे कामना पार्श्व गोडी प्रसिद्धो, हेलां मोहराज जेणें जेर कीधो ॥ ६ ॥ महा डुष्ट डुर्दंत जे जूत जूंडा, प्रजु नाम पामें सर्वत्रास शुंमा, जरा जन्मने रोगनां मूल कापे, आरध्यो सदा संपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न जांखे नमो पार्श्व गोडी, नाखो नाथजी डुःखनी जाल त्रोडी ॥ ८ ॥

अथ चोत्रीस अतिशयनो ठंद ॥

॥ श्री सुमति दायक, डुरित घायक, ज्ञान अनु जव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमुं, जुग म कर जोडी करी ॥ १ ॥ बहु जाव जक्के, थुणु जिनवर, चोत्रीसें अतिशयें करी ॥ जे सुगुरु मुख थी, सुण्यांते कहुं, आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ २ ॥ तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिन केरा, रोम नख वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र अस्ति द्वितीय

अतिशय ए सही ॥ ३ ॥ गोदुग्ध सरिखो, मांस
लोही, तृतीय तेह वखाणियें ॥ चोथो ते उत्पल
गंध सरिखो, श्वासोच्छ्वास सुजाणियें ॥ ४ ॥ आ
हारने नीहार प्रछन्न, एह अतिशय पांचमो ॥
आकाश गत धर्मचक्र छठो, गगन छत्र ए सातमो
॥ ५ ॥ रह्या अंबर श्वेत चामर, जुगम अष्टम ए
कह्यो ॥ फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवम अतिश
यए लह्यो ॥ ६ ॥ आकाशगत ध्वज सहस मंफित,
इन्द्र ध्वज आगें चले ॥ ए दशमो अतिशय कह्यो
श्रुतमां, देखी परमत खलजले ॥ ७ ॥ इग्यारमें जि
हां, स्वामी उन्ना, रहे वली बेसे जिहां ॥ छाय शु
धज देव ततक्षण, अशोक तरुवर रचे तिहां ॥ ८ ॥
द्वादशम अतिशय प्रनामंडल, पुठें रविकर जीपए ॥
रमणिक सुंदर नोमी नागसो, तेरमो ए दीपए ॥
॥ ए ॥ अधोमुख होय सर्व कंटक चउदमें अतिश
य वली ॥ अनुकूल थइने परिणमें ऋतु, पंच दशमो
सुख लली ॥ १० ॥ संवर्तक पवनें नोमी पूंजे, जो
जन लगें ए शोलमे ॥ सुगंध वृष्टी तिहां वरसे,
प्रगट अतिशय सतरमे ॥ ११ ॥ जालु प्रमाणे वीट
नीचो, पंचवरण सुहामणा ॥ जलने ते थलना फूल
वरसे, अढारमें अतिशय घणा ॥ १२ ॥ अमनोज्ञ
शब्दादिकही नासे. उगणीसमें अतिशयें वली ॥
वीशमें शुनिक्ष थाये, एम कहेते केवली ॥ १३ ॥

एकवीशमें प्रभुतणी देशना, जोजन-लगें सविजन सुणे ॥ बाविशमें प्रभु अर्ध मागध, भाषायें जिन जी भणे ॥ १४ ॥ त्रेवीशमे जिनवाणी जननें, हेतु शिव भणी परिणमे ॥ चोवीसमे प्रभु चरण मूलें, वैर जंतुना उपशमे ॥ १५ ॥ अन्यलिंगी नमे जिननें, पंचविंशति अतिशयें ॥ अन्य तीरथी मौन्य थाये, छवीसमें प्रभु निश्चयें ॥ १६ ॥ पण वीश जोजन लगे जिनथी, इतनें मारी नहीं ॥ स्वचक्रनें परचक्र न होये, तीस अतिशय ए सही ॥ १७ ॥ अति वृष्टिने अनावृष्टि, दुर्भिक्ष भण ए नवि उपजे ॥ चोत्री समे प्रभु आधि पीडा, व्याधि दुःख न संपजे ॥ ॥ १८ ॥ चोत्रीस अतिशय एह कहिया, सूत्र सम वा यांगमां ॥ जे भणतां गुणतां हिये धरतां, रहे आत म रंगमां ॥ १९ ॥ निज शुद्ध आतम रूप प्रगटे, भावशु जो ध्याइयें ॥ दर्शनादिक रत्न लहियें, पर म सुख पद पाइये ॥ २० ॥ अरिहंत भगवंत तणा अतिशय, भणो प्राणी आसता ॥ बहु पुण्य करि यें ध्यान धरियें, सुख लहिये सासता ॥ २१ ॥ श्री सूरि विद्या उदधि सेवक, शिष्य एणी परें संस्त वे ॥ मुनि ज्ञान सागर कहे प्रभुपद, सेव मांगुं भवो भवे ॥ २२ ॥ १७ ॥

॥ अथ शिखामणनो छंद ॥

॥ त्रोटक वृत्त ॥ वरदायक माय सलाम करी,

कहुं सार शिखामण एकखरी ॥ नर नारी सहुहिय डे धरियें, जिम आपद संकट ऊरियें ॥ १ ॥ पर जात समे गुरु देव नमो, जिम दारिद्र दोहग दूरें गमो ॥ जगवंत सदा चरणां जजियें, कुलरीति कबू कबु नां तजियें ॥ २ ॥ लक्रियें नहिं मायनें वापथकी, वढियें नहि कोयथी वाधि जकी ॥ विशवास न कीजें नारि तणो, गुरुराज समीपथी ज्ञान जणो ॥ ॥ ३ ॥ दरवार अलिकन नां जखियें, घरजींतर अक्षर नहिं लखियें ॥ रखियें नहिं चारु पमोस सदा, तरियें नहिं नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू विधिसें करियें, ठग दाव रमी धन ना जरियें ॥ पर देशमां गांफिल नां फरियें, नरपति थकी डरता रहियें ॥ ५ ॥ जुगटां व्यसनी परि ना रमियें, ऋषि साध अनाथकुं ना दमियें ॥ करियें नहिं आल अगन्नी तणी, वलि दीजियें सीख सुमित्त जणी ॥ ६ ॥ गुरु आसन उपरि ना धसियें, दुर्जनसे संगति ना वसियें ॥ वलि धीज न कीजियें कुठ किसी, घणीवार न कीजियें वात हसी ॥ ७ ॥ वयणां मुख बोलह तें पलियें, सज्जनथी स्नेह धरी मलियें ॥ परनारिनी संगति प्यार तजो, परमारथ कारज नित्य जजो ॥८॥ सुखकार शिखामण एम कहे, कवि उत्तमते जय माल लहे ॥ गुरु चार लहू अरु दीर्घ धरो, इम त्रोटकनामक छंद करो ॥ ए ॥ इति शिखामण छंद

॥ अथ श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीठुं, त्रिहुं लोकमां एटलुं सार दीठुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नीठुं, मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठूं ॥ १ ॥ मन तुह्म पासे वसे रात दीसें, मुखपंकज निरखवा हंस हींसे ॥ धन्य ते घडीजेघडी नयण दीसे, जली जक्ति जावें करीवीनवीसे ॥२॥ अहो एह संसार छे डुःख दोरी, इंद्रजालमां चित्त लागुं ठगोरी ॥ प्रभु मानिये विनती एक मोरी, मुऊ तार तु तार वलिहारि तोरी ॥ ३ ॥ सही स्वप्न जंजालनां मन्न मोह्यो, घडी यालमां काल रमतां न जोयो ॥ मुधा एम संसारमां जन्म खोयों, अहो घृत तणे कारणें जल विलोयो ॥ ४ ॥ एतो जमरलो केसुआं जांति धायो, जई शुक तणी चंचुमांहे जरायो ॥ शुकें जंबु जाणी गह्यो डुःख पायो, प्रभु लालचें जीवमो एम वाह्यो ॥ ५ ॥ जम्यो जर्म्म जूलो रम्यो कर्म्मजारी, दयाधर्म्मनी शर्म्म में न विचारी ॥ तोरी नर्म्मवाणी परम सुख कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में न संजारी ॥ ६ ॥ विषय वेलमी सेलमी करिय जाणी, जजी मोह तृष्णा तजी तुज वाणी ॥ एहवो जलो जूंमो निज दास जाणी, प्रभु राखियें वांहिनी छांहि प्राणी ॥७॥ माहारा विविध अपराधनी कोमि सहीयें, प्रभु शरण आव्या तणी लाज वहीयें ॥ वली घणी घणी वीएतिन

म कहीयें, मुज मानसरें परम हंस रहीयें ॥ ८ ॥ कलश ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतीगामी गाईयें ॥ अति जक्ति जावें विपति नावे, परम संपद पाईयें ॥ प्रजु महिम सागर गुण विरागर, पास अंतरिक जे स्तवे ॥ तस सकल मंगल जय जयारव, आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनतिरूप छंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि ॥ हुं गाउं त्रिजुवनको स्वामी ॥ शांति शांति जपे जो कोइ, ता घर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें काम, सोइ काम होवे अजिराम ॥ शांति जपी परदेश सिधावे, ते कुशलें कमला लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्ज थकी प्रजु मारि निवारी, शांतिजी नाम दियो हितकारी ॥ जे नर शांति तणा गुणगावे, रुधि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रजु शांति सहाइ, ता नरकूं क्या आरति जाइ ॥ जो कछु वंछे सोई पूरे, दारिद्र डुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रजु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्युं नवि जाय, कहेतां मोमन अचरिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सबही हथियारा, जीत्यां मोह तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवशुं रंग राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहिजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥

ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम भायक, पण सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तज्यो परिग्रह भये जगना यक, नाम अतित सवे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव अरिहत भणीजें ॥ सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी महापद दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गम्भीरा, दूषण एक न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन जी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीश ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुं लय लाई ॥ लोभ विना गुणराशि ग्रहीजें, भिक्षु भये त्रिभुवन सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणें शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजें, करम सवेंको मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे, लछी घणी देखो नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे, न काहूकूं शीश नमावे ॥ अकिंचनको बिरुद धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ रागनहि पण सेवक तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ

चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रभु समरथ साहेब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुं रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथ तुं छे दयाल ॥ तुं शरणागत राखणधीरा, तुं प्रभु तारक छोवरु वीरा ॥ १८ ॥ तुंहि समोवरु नागज्युं पायो, तोमेरो काज चड्यो रे सवायो कर जोडी प्रभु विनवूं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना दोष निवारो. भव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हथ्णिाउरमंरुन सोहे, तिहां प्रभु शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन भाया ॥ जेनरनारी एक चित्तें गावे, ते मनोवंछित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल मानवदेवगनं ॥ जिनशासन मंडन स्वामि जयो, तुम दरिसन देखी अनंद भयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलां वर भानुनिभं, नव हस्तशरीर हरितप्रतिभं ॥ धर णेंद्र सुसेवित पादयुगं, भर भासुरकांति सदा सुभगं ॥ २ ॥ निजरूपविनिर्जित रंभपति, वदनो द्युति शा रद सोमतातिं ॥ नयनांबुज दीप्ति विशालतरा, तिल कुसुम सन्निभ नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद समान सदा, दशनालि अनार कली सुखदा ॥ अ धरारुण विद्रूम रंगघनं, जय शंखपुरा भिध पार्श्व

जिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें कुंमल रवि शशि जीपे ॥ तुम महिमा महि मंमल गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुऊ सेवे चोशठ इंद्र सदा, तुऊ नामें नावे कष्ट कदा ॥ ॥ ६ ॥ जे सेवे तुऊने जाव घणे, नवनिधि थाये घर तेह तणे ॥ अमयडियां तुं आधार कह्यो, समरथ साहिव में आज लह्यो ॥ ७ ॥ डुखीयाने सुखमां तुं राखे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुऊ नामे संकट विकट टले, वीठमीयां वालां आवि मले ॥ ७ नट विट लंपट दूरें नासे, तुऊ नामें चोरचरम त्रासे ॥ रण राउल जय तुऊ नाम थकी, सघले आगल तुऊ सेवथकी ॥ ए ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा, करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बंधन जय सघलां जाये, जे एक मनां तुजने ध्याये ॥ १० ॥ जूत प्रेत पिशाच ठली न शके, जगदीश तवाजिध जाप थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद चूरे ॥ ११ ॥ डायणी सायणी जाय हटकी, जगवंत जयां तुऊ जजनथकी ॥ कपटी तुऊ नाम लीया कंपे, डुर्जन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मठराला मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ डुर्मुख डुष्टादिक तुंही दमे, तुऊ जापे महोटा म्लेछ नमे ॥ १३ ॥ तुऊ नामे माने नृप सवाला, तुज यश उ

ज्ज्वल जेम चंद्रकला ॥ तुज नामें पामे ऋद्धि घ
णी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिं
तामणि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुज ना
में ॥ जन पद ठकुराइ तुं आपे, डुर्जन जननां दारि
द्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूठो को
ठार भंडार भरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो,
ते सहु महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि मा
णक मोती रत्न जड्या, सोवन भूषण बहु सुघड घ
ड्या ॥ वली पेहेरण नवरंग वेश घणा, तुम नामें
नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुर्ड नवि ताकि
सके, वली चाड चुगल मनथी चमके ॥ ठल ठिद्र
कदा केहनो नलगे, जिनराज सदा तुज ज्योति जगे
॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंडी पण
को नवि फरके ॥ लूंटा दिक सहु नासी जाए, मा
रग तुज जपतां जय थाए ॥ १९ ॥ जड मूरख जे
मति हीन वली, अज्ञान अंधेर तसु जाय टली ॥
तुज समरणथी डाह्या थाये, पंडित पद पामी पूजाये
॥ २० ॥ खस खांशि खयन पीडा नासे, डुर्बल मुख
दीनपणुं त्रासे ॥ गड गुंबड कुष्ट जिके सवलां, तुज
जापें रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिरा
य जिके, तुज ध्यानें गतडुख थाय तिके ॥ तनु कां
ति कला सुविशेष वधे, तुज समरणशुं नवनिधिसधे
॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण बंध सय, जल जल

ण जलोदर अष्ट जय ॥ रांघणी पमुहा सवि जाय टली, तुज नामे पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीँअर्हँ श्रीपार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां डुष्ट दमो ॥ चिंता मणि मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्धे जे आराधे, तस जश कीर्ति जगमां वाधे ॥ वली कामित काम सवे साधे, समहित चिंतामणि तुऊ लाधे ॥ २५ ॥ मद मछर मनथी दूर तजे, जगवंत जली परें जेहजजे ॥ तसघर कमला कल्लोल करे. वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥ २६ ॥ जय वारक तारक तुं त्राता, सज्ञान मन गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तु स्वामी; शिवदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठा कुर तुं महारो, निशिवासर नाम जपुं ताहारो, ॥ सेवकशुं परम कृपा करजो, वालेसर वंछित फल दे जो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा जय जयकारी, तुज मूर्ति अति मोहन गारी ॥ गुज्जर जनपद मांहे राजे, त्रि जुवन ठकुराइ तुऊ ठाजे ॥ २९ ॥ इम जाव जले जि नवर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि मुनि शशि संवछर रंगें, जयदेवसूरिमहा सुख संगें ॥ ३० ॥ जय शंखपुराजिध पार्श्व प्रजो, सकलार्थ समीहित देहि विजो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा, तप लब्धि रुचि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इत्थं स्तुतः सकलकामितसिद्धिदाता, यदुधिराजनत

शंखपुराधि राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्ष रुचि
साशत्, शिष्येण लब्धि रुचिनेति मुदा प्रस
॥ ॥ सरसति संपति द्यो मुजसदा
विघननिवारकदा ॥ नयरि उजेणी विक्र
सजापूरीनें वेगो गाय ॥ १ ॥ जोतिषीया सजाम
ण ॥ नवग्रहनाते करेवखाण ॥ एककहे शनि
तिक्रूर ॥ देखाडे अति प्राणी नेंरुड ॥ २ ॥ नि
शनिसर पांगलो ॥ पितासारथी तुमेसांजलो ॥
विक्रमबोलेइस्युं ॥ इणेरांक बापडे चाले किस्युं ॥
इणे अवसर सनीसरठै जह ॥ अवधी ज्ञाने
तह ॥ जोतांमुज विक्रम अवगुणे ॥ वेगिआवी
प्रते जणे ॥४॥ सांजल राजा माहरांकांम ॥ हुंरुध
लुं तुफ ठांम ॥ विहतो विक्रम बोले वांण ॥ खमज
बोल्युं अज्ञान ॥ पुजी प्रणमी शनीस्वर पाय ॥ र
यो निज थानक जाय ॥ पिण संका मनमांहि पय
केतेक काले शनिस्वर वेठ ६ निसदिन वीहतो जे
नाम ॥ ते लाग्यो मुजशनीस्वर स्वांम ॥ तेकी
आपैंराज ॥ मेंजावुं पर देसे आज ॥ ७ ॥ सुं
गयो परदेस ॥ चंपा नयरी करे प्रवेस॥ अ त
जइ बेठ ॥ तव तस नयणें अमीय पयठ ॥ ८
ने हाटठे वस्तु अनेक ॥ थोकीवेला मांहि वेची
जाग्यवंत नर जाण्यो जांम ॥ जिमवानें घर ९
ताम ॥९॥ जोजन जक्ती जली सांचवे ॥ सुख

सुवापाठवे ॥ पासे नीलठे ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥ नाहितव श्रीपति कुंमरी ॥ हारघोमले मुकेजांम ॥ इणें अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज उवेषी विक्रम राय ॥ चंपा नगरी वेगेजाय ॥ सुख शय्या सुतो रंगधरी ॥ तो प्राक्रम देखाडुं करी ॥ १२ ॥ शनी संक्रम्यो हंस मुझार ॥ चुणी हारनें वेगेगार॥ तेदेपीने बीहनो राय ॥ कलंक नणीते नाठेजाय ॥ १३ ॥ पुत्री नाहि करे सिणगार ॥ नवि देखे एकाव लहार॥ श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव ऊा ल्योफरी ॥ १४ ॥ चोरनणी ते ठेद्या हाथ ॥ चजटे पमीउं तवनरनाथ ॥ तेली एके दीठो जिसें ॥ ऊाली हाथने आण्यो तिसे ॥१५॥ काष्टतणा तव कर जोमवे ॥ वलीवेगे घाणी फेरवे ॥ खायखोलनें तेल रोटला ॥ बत्रीस राग करें तिहां नला ॥१६॥ दुःख वीसरीउं नी जघरतणो॥सरलें सादे गावेघणो ॥ नरपति पुत्री मंदिर पास॥ सुणी साद जोवा थइ आस ॥१७॥ तव तिहांथी दासीनें कहे ॥ घांची घरपुरुष जे रहे ॥ वेगें तेमी तेह ने लाव्य ॥ आवे घांची घर तव धाव ॥१८॥ तेह पुरुष लावे सापास॥ तव उतरीउं शनिशरतास ॥ अद्भुत रूप देखी अतिघणुं॥ वचन कहे तव वरवा तणुं ॥ १९ ॥ कहे विक्रम कर माहरे नथी॥नवी परणांए में तेहथी॥ चंमी मंत्र कुयरीयें साधीउं॥सोवर मागीते कर लीउं॥

शंखपुराधि राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्षे रुचि पंकजसुप्र
सादात्, शिष्येण लब्धि रुचिनेति मुदा प्रसन्नः ॥३१॥
॥ ॥ सरसति संपति दिओ मुजसदा ॥ अलिय
विघननविआवेकदा ॥ नयरि उजेणी विक्रमराय ॥
सन्नापूरीनें वेठो ठाय ॥ १ ॥ जोतिषीया सन्नामां हिजां
ण ॥ नवग्रहनाते करेवखाण ॥ एककहे शनिश्वर अ
तिक्रूर ॥ देखाडे अति प्राणी नेंरुड ॥ २ ॥ निजदृष्टि
शनिसर पांगलो ॥ पितासारथी तुमेसांजलो ॥ राजा
विक्रमवोलेइस्युं ॥ इणेरांकबापडे चाले किस्युं ॥ ३ ॥
इणे अवसर सनीसरछे जब ॥ अवधी ज्ञाने जोवे
तब ॥ जोतांमुज विक्रम अवगुणे ॥ वेगिआवी राय
प्रते जणे ॥४॥ सांजल राजा माहरांकांम ॥ हुंरुठो टा
लुं तुक ठांम ॥ विहसतो विक्रम बोले वांण ॥ खमजो जे

सुवापाठवे ॥ पासे नींतले ठोहित ठाम ॥ सारस हंसने मोर चित्रांम ॥ १० ॥ जोवेराजा कौतिक धरी ॥ नाहितव श्रीपति कुंमरी ॥ हारघोरूले मुकेजांम ॥ इणें अवसर शनि जोवेतांम ॥ ११ ॥ मुज नवेषी विक्रम राय ॥ चंपा नगरी वेठोठाय ॥ सुख शय्या सुतो रंगधरी ॥ तो प्राक्रम देखाडुं करी ॥ १२ ॥ शनी संक्रम्यो हंस मुझार ॥ चुणी हारनें वेठोठार॥ तेदेषीने वीहनो राय ॥ कलंक नणीते नाठोजाय ॥ १३ ॥ पुत्री नाहि करे सिणघार ॥ नवि देखे एकाव लहार॥ श्री पतिजोवे घणोखपकरी ॥ रायजणे तव ऊा ल्योफरी ॥ १४ ॥ चोरनणी ते ठेद्या हाथ ॥ चउटे पमीर्ठ तवनरनाथ ॥ तेली एके दीठो जिसें ॥ ऊाली हाथने आण्यो तिसे ॥१५॥ काष्टतुल्लु कुर जोरूने नी॥वेठो घाणी फेरवे ॥ ॥ ति पृथ्वीसुत प्रात ऊठी नमो गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रह्समे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुनूपति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम जेहनुं ॥ अन्नेद बुद्धें करी नविजन जे नजे, पूर्ण पोहोंचे सहि नाग्य तेहनुं ॥ मा०॥२॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण काम धेनु ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नहीं माहात्म्य केनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदे धरी माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम

ध्याये ॥ कोड्डि मनकामना सफल वेगें फले, विघ न वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥ ४ ॥ ज्ञान वल तेजने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखंरू प्रचंरू प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधिउपाधिनें व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर नांजे वली, गौनमनाम जपतां उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदें आप लब्धें जइ, पन्नरसें त्रणने दीरकदीधी ॥ अठमनें पारणे तापस कारणें, कीरलब्धें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ॥ ७ ॥ वरस पच्चास लगें गृहवासें वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ वार वरसां लगें केवल जोग व्युं, नक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल गोतम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि रुद्धि ने सेद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस सौनाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ दोधक बावनी लिख्यते ॥ ॐयह अक्षर सारहें॥ऐसा अवरन कोय॥सिद्ध सरुप नगवान शिव सिरसा वंदू सोय ॥ १ ॥ नमीयें देव जगतगुरु, नमीयें सद गुरुपाय॥दयायुक्त नमीयें धरम, शिव सुखदेय उपाय ॥ २ ॥ मनकी ममता दूरकर, समता धर घट मांहिं, रमतां रामपिछानकें, शिव सुख ले क्युं नांहि ॥३॥ शिवमंदिरकी चाह धर, अथिर अंध तजि दूर॥

लपट रह्यो क्या कीचमें, अशुचि जिहां जरपूर ॥ ४ ॥ धंधाहीमें पचरह्यो ॥ आरंजकीए अपार॥उठ चलेगो एकलो, शिरपर रहेंगो जार ॥ ५ ॥ अन्यायी जन देतधन, वहुत, रहित फल सोय ॥ दान स्वल्प फल पिण वहुत न्याय उपार्जित होय ॥ ६ ॥ आतम परहित आपकुं, क्या परकुं उपदेश, निज आतम समज्यो नही, किनो वहुत कलेस ॥ ७ ॥ इतनाही में समझलें, क्या वहुत पढेंसो ग्रंथ ॥ उपशम विवेक संवर लहें, याको शिव पुर पंथ ॥ ८ ॥ इति जिति याथें गइ, प्रगट जइ सवरीत॥गीत मार्ग पेदाकीउ गाउ तिनके गीत ॥९॥ उदय जएरविके जसा,जावे सव अंधार ॥ त्यौंसद गुरुकें वचनथें, मिटें मिथ्यात अपार ॥ १० ॥ ऊगत वीज सुखेतमें, जसा सुजल संयोग॥त्यौंसद गुरुके वचनथें, उपजत वोध प्रयोग ॥ ११ ॥ एक टेकधरीए जसा, निर्गुण निर्मम देह॥ दोपरोग जामें नही, करीयें ताकीसेव ॥ १२ ॥ ए विपम गति कर्मकी, लिखी नकाहुं जात ॥ रंकनथें राजाकरें,राजारंक दिखात ॥ १३ ॥ उंस विंछु कुशाग्र ग्रथें, परत नलगें वार, आयु अथिर तेसे जसा, कर कहु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊपध न मिलें मीत्त ज्युं जाथें मरें न कोय ॥ करउपध एक धर्मको, जसा अमर तुं होय ॥ १५ ॥ अंध पंगु ज्यों एक हे, जरे न पावक मांहिं ॥ ग्यान सहित क्रिया करे, जसा

अमर पुर जांहि ॥ १६ ॥ अमर जगतमें कोनही ॥ मरें अमर सुर राज॥गढ मढ मंदिर ढह परे, अमर सुज स जस राज ॥ १७ ॥ कंचनसें पीतर ग्रहे, मूरख मुढ गिमार॥ तजै धर्म्म मिथ्यामती, भजै अधर्म असार ॥ १८ ॥ खल संगति तजियें जसा, विद्या सोभिन तोय ॥ पन्नग मणि संयुक्तसो ॥ क्यौंन भय कर होय ॥ १९ ॥ गाज सरदकी कारिमी, करतहे वहुत अ वाज॥ तनक न वरसे दान त्यौं, कृपण नदें जसराज ॥ २० ॥ घरटी के दो पुरु विचे, कण चूरण ज्यौं होय॥त्यौंदो नारी विच पोड्यो, नर उगरें न कोय॥२१॥ नही ग्यान जामें जसा ॥ नही विवेक विचार॥ताको संगन कीजीइं, पर हरीइं निरधार ॥ २२ ॥ चपला कमला जानकें, कछु खरचो कछु खाउ॥इकदिन भोइ सुवो जसा॥ लांबा करकें पाउ ॥२३॥ छलकर वलकर वुधिकर, करकें जसा उपाय॥आतम वसकर आपनो दूर जन दूर तजाय ॥ २४ ॥ जुवती सव युगवस कीउ किसीन राखीमांम ॥ तासों जो न्यारारहे, ताको जसा प्रणाम ॥ २५ ॥ फाफी वात न कीजीइं,थोडा हीमें आनि ॥ जसा वरावर लेखवो, आप प्रानपर प्रान ॥ २६ ॥ नग दुहिता पति आभरण॥ ताको अरि जसराज ॥ तसपति नारी विनु पुरुष ॥ नवधें सोभा लाज ॥२७॥ टांणा टुणा ठोरदें, याथें-न सरें काज॥ चोखे चित जिन धर्मकर, ज्यूं काजसरें जसराज

॥ २८॥ ठगसो जो पर मनठगें, पर उपजावें रीझ॥ जासकरें वस जगतकों॥ साचा ठग सोईज ॥२९॥ करें कहा जस राज कहें,जो अपनें मन साच॥छिण में परगट होयगा, ज्यों प्रगटायो काच ॥ ३०॥ ढहे कोट अग्यांनका,गोलाग्यांन लगाय॥मोहरायकों मार लें, जसा लगें सब पाय ॥ ३१ ॥ नदी नखीनारी तणो॥नागन कुल जसराज॥नरस्त्री नरपति निर्गुणिन, आछे करें अकाज ॥ ३२ ॥ तारे ज्यों नरकों जसा जर सायरमें पोत ॥ त्यों गुरु तारे जव जलधि॥ करें ग्यांन उद्योत ॥ ३३॥ थोज लोजनहि जीउकों, जो लाख कोटिधन होत॥समता जो आवें जसा,सुखी सदा मन पोत ॥ ३४ ॥ दक्षिण उत्तर च्यारदिस, जसाजमें धन काज॥प्रापति विना नपाईयें, कोकि करो सुउपाय ॥ ३५ ॥ धन पाया खाया नही, दीयाकि कछु नाहिं,सो वागुरी होयें धनमें जसा,ढुढतहे धन मांहि ॥ ३६ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक खारो नीर॥नीच मीत जसराज कहें,पांचों दहें शरीर ॥३७॥ पर उपगारी जगतमे ॥ अलप पुरुष जसराज, सीतल वचन दया मया, जाके मुख परलाज ॥३८॥ फोज दिसो दिस मिल गई, जसा घुरे निसाण॥कुके सन मुख जायनें, सूरगणे नहि प्राण ॥ ३९ ॥ बुंब परें सब दोर है, लेले आयुध हाथ ॥ वदन मलिन कर हे जसा, जब जाचें कोय अनाथ ॥ ४० ॥

नगति नली नगवंतकी, संगति नली सुसाध ॥ ज
नकी संगति जसा, आठों पोहोर उपाध ॥ ४१॥ मृ
ख मरण नदेखकें, करत बहुत आरंन ॥ सात विस
सेवें जसा, करें धर्म विच दंन ॥४२॥ याग करें प्राण
हणें,नापें धर्म उलंठ॥देखोग्यान विचारकें, क्यों पा
वैकुंठ ॥ ४३ ॥ रीस त्याग वैरागधर, होय जोग
अवधूत ॥ शिव नगरी पावें जसा, कर एसी कर तूं
॥४४॥ लहैणा देणा कबु नही, मुहकि मिठी बात
हृदय कपट धर है जसा, ताके शिरपर लात ॥ ४५
वरसें वारधि अहोनिसें, खाखरतीनुंपान॥नाग्य विन
पावें नही, याचक दाता दान ॥४६॥ शंखसरीख
ऊजला, नर फूटरा फरक ॥ जसा न सोन्नें दान विण
तुटी कान धरक ॥ ४७ ॥ परोपंथ हें सूरको, रणवि
च मुंड विहंड ॥ पाठा पाउं धरेंनही, जो होई शतखंड
॥४८॥सायर मोती नीपजै, हीरा हीरा खांण ॥ ग्यांन
ध्यांन त्यां नीपजे, जसा सुगुरुकी वांण ॥ ४९ ॥ हस्त
को मंडण दांनहें,घर मंमण वर नार ॥ कुल मंडण अंग
ज जसा, धन मंडण संसार ॥ ५०॥ लंठन निसपति
श्यामरुचि, सूरज लंठन ताप ॥ दाता लंठन धनवि
ना, सबहुं देत सराप ॥ ५१ ॥ क्षांत दांत समता
ती,हणें नही पट काय ॥ जसा ग्यांन किरिया गमन,
सो साधु कहेंवाय ॥ ५२ ॥ सतरसें तीसें समें, नव
मी शुकल आषाढ ॥ दोधक बावन्नी जसमुनी, पुरन
करी आगध ॥ इति पष्टम परिछेद समाप्त ॥

॥ सप्तमपरिछेद प्रारंभः ॥

साधुसाध्वीयोग्य आवश्यक क्रियाके सूत्रे.

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो सव्व पाव पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ १ ॥ श्री करेमिभंते ॥

॥ करेमि भंते सामाइयं । सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावज्जीवाए । तिविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ २ ॥ श्री इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे देवसिउ अइयारो कउ । काइउ वाइउ माणसिउ । उस्सुत्तो । उम्मग्गो । अकप्पो । अकरणिज्जो । डुझाउ । डुविचिंतिउ । अणायारो । अणिछियव्वो । असमण पाउग्गो । नाणे दंसणे चरित्ते । सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं । चउण्हं कसायाणं । पंचण्हं मह व्वयाणं । छण्हं जीव निकायाणं । सत्तण्हं पिंडेसणाणं । अठण्हं पवयण माउणं । नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं । दस विहे समण धम्मे । समणाणं जोगाणं । जं खंडियं जं विराहियं । तस्स मिछामिडुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियंआलोउं। जो मे देवसिउ अइ यारो कउ॥ शेषं उपर प्रमाणे॥

इच्छामि पडिक्कमिउं। जो मे देवसिउं अइयारो कउ॥ शेषं उपर प्रमाणे

॥ ३ ॥ देवसिक अतिचार ॥

॥ गाणे कमणे चंकमणे। आउत्ते अणाउत्ते। हरियकाय संघट्टे। वीयकाय संघट्टे। त्रसकाय संघट्टे। थावरकाय संघट्टे। छप्पइसंघट्टे। गणाउं गणं संक्रामीया। देहरे गोचरी मार्गे जातां आवतां स्त्री तीर्यंचतणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, दिवस मांहि चार वार सझाय सात वार चैत्यवंदन कीधां नहिं, प्रतिलेखण आधी पछी भणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्यायां, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नहीं, गौचरीतणा दोष उपजता जोया नही, पांच दोष संमलितणा टाल्या नहीं, मात्रुं अणपुजे लीधुं, अणपूंजी भूमिकायें परठव्युं, देहरा उपाश्रयमांहिपेसतां निसरतां निसिही आवस्सही कहेवी विसारी, जिनभुवने चोराशी आशातना, गुरु प्रतें तेत्रिश आशातना, अनेरुं जे कांइ दिवस सबंधीऊं पापदोष लाग्युं होय ते सवीहुं मने वचने कायाए करीने तस्स मिछामि छुक्कडं॥

॥ ४ ॥ रात्रिक अतिचार ॥

। संथाराउद्दणकी। परियट्टणकी। आउंटणकी।

पसारणकी । उप्पिय संघट्टणकी । संथारो उत्तरपट्टो टाली अधिकुं उपगरण घाल्युं, अणपडि लेह्यु हला व्युं, मात्रुं अणपडिलेह्युं लीधुं, अणपुजी नूमिए पर ठव्युं, परठवतां अणुजाणह उस्सगो कीधो नहीं, परठव्या पुंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे कीधुं नहीं, संथार पोरसी नणवी विसारी, पोरसी नणाव्या विना सुता, कुस्वप्न लाधुं सुपनांतरमांहि शिलनी वि राधना हुइ, आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं, संकल्प विकल्प कीधो, रात्रीसंबंधीउं जे कोइ अतिचार लाग्यो होय, तेसवी मने वचने कायाए करी तस्स मिछामि डुक्कडं ॥

॥ ५ ॥ श्री श्रमणसूत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं० ॥ करेमि नंते सामाइ अं० ॥ चत्तारि मंगलं० ॥ अरिहंता मंगलं । सिद्धा मंगलं । साहु मंगलं । केवली पन्नतो धम्मं मंगलं ॥ चत्तारी सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरण पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि । केवली पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ चत्तारी लोगुत्तमा अरि हंता लोगुत्तमा ॥ सिद्धा लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा केव ली पन्नत्तो । धम्मो लोगुत्तमो ॥ इछामि पडिक्कमिउ जो मे देवसिउं० । इछामि पडिक्कमिउं । इरिआवहिआए० । इछामि पडिक्कमिउं ॥ पगामसिज्जाए ॥ निगामसि ज्जाए ॥ संथारा उव्वट्टणाए ॥ परिअट्टणाए ॥ आउ टण पसारणाए । उप्पइया संघट्टणाए ॥ कुइए ।

कक्कराइए छीए । जंजाइए ॥ आमोसे ॥ ससरक्खा मोसे ॥ आउलमाउलाए ॥ सोअणवत्तिआए ॥ इत्थी विप्परिआसिआए । दिठी विप्परिआसिआए । मण विप्परिआसिआए । पाणभोअण विप्परिआसिआए । जो मे देवसिउ अइआरो कउ । तस्स मिछामि दुक्कडं॥ पडिक्कमामि गोअचरिआए ॥ भिरकायरिआए॥उग्घा डकवाड उग्घाडणाए । साणावछादारा संघट्टणाए॥ मंडिपाहुडिआए ॥ बलिपाहुडिआए ॥ ठवणापाहु डिआए संकिए ॥ सहसागारिए । अणेसणाए पाणे सणाए ॥ पाणभोअणाए ॥ बीअभोअणाए ॥ हरि अभोअणाए ॥ पछेकम्मिआए ॥ पुरेकम्मिआए ॥ अदिठहडाए ॥ दगसंसठहडाए रयसंसठहडाए ॥ पारिसाडणिआए ॥ पारिठावणिआए ॥ उहासण भिरकाए ॥ जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए ॥ अपरि सुद्धं पडिगाहिअं ॥ परिभुत्तं वा ॥ जं न परिठविअं तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं सझा यस्स अकरणयाए ॥ उभउकालं भंडोव गरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए ॥ अ

मामि तिहिं दंडेहिं ॥ मणदंडेणं । वयदंडेणं । कायदंडेणं ॥ पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं ॥ मनगुत्तीए ॥ वयगुत्तीए ॥ कायगुत्तीए ॥ पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं ॥ माया सल्लेणं ॥ निआण सल्लेणं ॥ मिछादंसण सल्लेणं ॥ पडि० ॥ तिहिं गारवेहिं ॥ इड्डी गारवेणं । रसगारवेणं ॥ साया गारवेणं ॥ पडि० ॥ तिहिं विराहणाहिं ॥ नाण विराहणाए दंसण विराहणाए । चरित्त विराहणाए ॥३॥ पडि०॥चउहिं कसाएहिं ॥ कोह कसाएणं ॥ माण कसाएणं ॥ माया कसाएणं ॥ लोज कसाएणं ॥ पडि० ॥ चउहिं सन्नाहिं ॥ आहार सन्नाए ॥ नय सन्नाए ॥ मेहुण सन्नाए ॥ परिग्गह सन्नाए ॥ पडि० ॥ चउहिं विकहाहिं ॥ इछिकहाए ॥ नत्तकहाए ॥ देसकहाए ॥ रायकहाए ॥ पडि० ॥ चउहिं जाणेहिं ॥ अट्टेणं जाणेणं॥ रुद्देणं जाणेणं ॥ धम्मेणं माणेणं ॥ सुक्केणं जाणेणं॥४॥ ॥ प० ॥ पंचहिं किरिआहिं ॥ काइआए ॥ अहिगरणियाए ॥ पाउसिआए ॥ पारितावणिआए ॥ पाणाइवाय किरिआए ॥ प० ॥ पंचहिं कामगुणेहिं ॥ ॥ सद्देणं ॥ रूवेणं रसेणं ॥ गंधेणं ॥ फासेणं ॥ ॥ प० ॥ पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउ वेरमणं ॥ मुसावायाउ वेरमणं ॥ अदिन्नादाणाउ वेरमणं ॥ मेहुणाउ वेरमणं ॥ परिग्गहाउ वेरमणं ॥ प० ॥ पंचहिं समिइहिं ॥ इरिआसमिइए ॥ नासासमिइए ॥

एसणासमिइए ॥ आयाणनंमत्तनिक्खेवणा समिइए ॥ उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाण पारिठावणिआ समिइए ॥५॥ प० ॥ उहिं जीवनिकाएहिं॥पुढविकाएणं ॥ आउकाएणं ॥ तेउकाएणं ॥ वाउकाएणं ॥ वणस्सइकाएणं तसकाएणं ॥ प० ॥ उहिं लेसाहिं ॥ किएहलेसाए॥नील लेसाए॥कार्उ लेसाए॥तेउलेसाए पउमलेसाए ॥ सुक्क लेसाए ॥६॥प०॥ सत्तहिं नयठाणेहिं ॥ अठहिं मयठाणेहिं ॥ नवहिं वंनचेर गुत्तीहिं ॥ दसविहे समणधम्मे ॥ इगारसहिं उवासग पमिमाहिं ॥ बारसहिं भिख्खुपमिमाहिं ॥ तेरसहिं किरिआठाणेहिं ॥ चउदसहिं ॥ नूअगामेहिं ॥ पन्नरसहिं ॥ परमाहम्मिहिं ॥ सोलसहिं गाहासोलसएहिं ॥ सत्तरसविहे असंजमे ॥ अठारसविहे अवंने ॥ एगूणवीसाए नायअयणेहिं ॥ वीसाए असमाहि ठाणेहिं॥ इक्कवीसाए सवलेहिं ॥ बावीसाए परीसहेहिं ॥ तेवीसाए सुअगरूअयणेहिं ॥ चउवीसाए देवेहिं ॥ पणवीसाए नावणाहि ॥ उवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं ॥ सत्तावीसाए अणगार गुणेहिं॥ अठावीसाए आयारपकप्पेहिं ॥ एगुणतीसाए पावसुअपसंगेहिं ॥ तीसाए मोहणीअठाणेहिं ॥ इगतीसाए सिद्धाइ गुणेहिं ॥ बत्तीसाए जोग संगहेहिं ॥ तित्तीसाए आसायणाएहिं ॥ अरिहंताणं आसायणाए ॥ सिद्धाणं आसायणाए आयरिआणं आसा

यणाए ॥ उवझायाणं आसायणाए ॥ साहूणं आसा यणाए ॥ साहुणीणं आसायणाए ॥ सावयाणं आसा यणाए ॥ सावियाणं आसायणाए ॥ देवाणं आसा यणाए ॥ देवीणं आसायणाए ॥ इहलोगस्स आसा यणाए ॥ परलोगस्स आसायणाए ॥ केवलि पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए ॥ सदेवमणु आसुरस्सलोगस्स आसायणाए ॥ सव्वपाणभूअ जीवसत्ताणं आसायणाए ॥ कालस्स आसायणाए ॥ सुअस्स आसाणाए ॥ सुअदेवयाए आसायणाए ॥ वायणारिअस्स आसायणाए ॥ जं वाइद्धं वच्चामेलिअं हीणक्खरं । अच्चक्खरं । पयहीणं विणयहीणं । घोस हीणं । जोगहीणं । सुठुदिन्न डुठुपडिच्छिअं । अका ले कउसझाउ । काले न कउ सझाउ । असझाए सझाइअं । सझाए न सझाइअं । तस्स मिछामिडु क्कडं० ॥ नमो चउवीसाए तिछयराणं । उसन्नाइ महावीर पज्जवसाणाणं । इणमेव निग्गं थंपावयणं । सच्च । अणुत्तरं । केवलिअं । पडिपुन्न । नेआउअं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्ति मग्गं निज्जा ण मग्गं । निवाण मग्गं । अवितहमविसंधिं । सव्व डुक्खप्पहीण मग्गं । इहं ठिआ जीवा । सिझंति । बुझंति । मुच्चंति । परिनिवायति । सवडुक्काणमंतं करंति । तं धम्मं सद्दहामि । पत्तिआमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि अणुपालेमि । तं धम्मं सद्दहंतो । पत्ति

अंतो। रोअंतो। फासंतो। पालंतो। अणुपालंतो। तस्सधम्मस्स अपुढिर्उमि आराहणाए। विरउमि विराहणाए। असंजमं परिआणामि। संजमं उव संपज्जामि। अबंनं परिआणामि। बंनं उवसंपज्जा मि। अकप्पं परिआणामि। कप्पं उवसंपज्जामि अनाणं परि आणामि। नाणं उवसंपज्जामि। अकि रिअं परिआणामि। किरिअं उवसंपज्जामि। मिछ त्तंपरिआणामि। सम्मत्तं उवसंपज्जामि। अबोहिं परिआणामि। बोहिं उवसंपज्जामि। अमग्गं परिआ णामि। मग्गं उवसंपज्जामि।। जं संनरामि। जं च न संनरामि। जं पडिक्कमामि। जं च न पक्किमा मि तस्स सवस्स देवसिअस्स अईआरस्स पडिक्क मामि।समणोहं संजय। विरय पक्किहय पञ्चस्काय पाव कम्मे। अनिआणो। दिठिसंपन्नो। मायामोस विव ज्जिउ। अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु। पन्नरससु कम्म नूमीसु। जावंत केइ साहू। रयहरण गुछपक्किग्गह धारा। पंचमहव्वय धारा। अढारससहस्स सीलंग धारा। अरकआयार चरित्ता। ते सवे सिरसा मणसा मछएण वंदामि। खामेमि सव जीवे, सवेजीवा खमंतु मे॥ मित्ती मे सवनूएसु। वेरं मज्झं न केणइ॥ १॥ एवमहं आलोइ अ। निंदिअ गरहिअछुगंछिअं सम्मं॥ तिविहेण पक्किंतो। वंदामि जिणे चउवी सं॥ २॥ इतिश्री यतिप्रतिक्रमणसूत्रं॥

॥ ६ ॥ पाक्षिक अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ । चरणंमि तवम्मि तहय विरयंमि। आयरणं आयारो। इय एसो पंचहा नणिउं । १ । ज्ञानाचार । दर्शनाचार । चारित्राचार । तपाचार । वीर्याचार । ए पंचविध आचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहिं सूक्ष्म बादर जाणतां हुउं होय ते सविहुं मन वचन कायाइं करी मिच्छामि डुक्कडं । १ ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार।काले विणये बहुमाणे । उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्र तडुनए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान काल वेला मांहिं पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं । अकाले पढ्यो। विनयहीन बहुमानहीन योग उपधानहीनअनेराकन्हे पढ्यो अनेरो गुरु कह्यो । देववंदण वांदणे । पडिक्कमणे सझाय करतां । पढतां गुणतां कूडो अक्षर कानें मात्रेंआगलो उंठो नण्यो गुण्यो । सूत्रार्थ तडुनय कूडां कह्यां । काजो अणउधर्यो । मांडा अण पडिलेह्यां वस्ति अणसोध्यां अणपवेयां । असझाइ । अणोज्झा कालवेला मांहिं श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो । अविधें योगोपधान कीधा कराव्या । ज्ञानोपगरण । पाटी पोथी ठवणी ॥ कवली । नोकारवाली । सांपडा । सांपडी । दस्त्री वही । कागलिआ उलिआप्रतें ।.पग लाग्यो

थूकलाग्यो । थूकें अक्षर जांज्यो । ज्ञानवंतप्रते द्वेष मत्सर वह्यो । अंतराय अवज्ञा आशातना कीधी। कुणहिप्रतें तोतलो बोबमो देषी हस्यो वितर्क्यो । मतिज्ञान । श्रुतज्ञान । अवधिज्ञान । मनपर्यवज्ञान । केवलज्ञान । ए पांच ज्ञानतणी आशातना कीधी । ज्ञानाचार विषइउ । अनेरो जे कोइ अतिचार ०। १ ।

दर्शनाचारे आठ अतिचार । निस्संकिअ निक्कंखिअ । निव्वित्तिगिछाअमूढदिठ्ठीअ ॥ उववूयथिरीकरणे । वछ्ल्ल पन्नावणे अठ ॥ २ ॥ देव गुरु धर्मतणे विषे निस्संकपणुं न कीधुं । तथा एकांत निश्चय धर्युं नही । धर्म्म संबधिआ फलतणे विषे निस्संदेह बुद्धि धरी नही । साधु साध्वीतणी निंद्या जुगुप्सा कीधी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रन्नावना देखी । संघमांहिं गुणवंततणी अनुपवृहणाकीधी।अस्थिरीकरण अवात्सल्य अन्नक्ति निपजावी । तथा देवद्रव्यगुरुद्रव्य । नक्षित उपेक्षित । प्रज्ञापराधे विणास्यो । विणसंतो उवेख्यो । ठतीशक्तिं सारसंन्नाल न कीधी । ठवणायरिउ हाथथकी पाड्यो । पमिलेहवो विसर्यो । जिनन्नुवनतणी चोरासी आशातना कीधी । दर्शनाचार विषइउ । अनेरो जे कोइ अतिचार० । ३ ।

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाणजोगजुत्तो । पंचहिंसमिईहिं तिहिंगुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो । अठविहो होइनायवो ॥४॥ ईर्यासमिति, न्ना

षासमिति, एषणासमिति, आदानजंडमत्त निक्षेपणा समिति, पारिष्टापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता रूडी परे पाली नही, साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावकतणे धर्म्मेसामायिक पोसह लीधे, जे कांइ खंरून विराधना कीधी होय, चारित्राचार विषइर्ज अनेरो जेकोइ अतिचार ॥ ४ ॥

॥ विशेषतश्चारित्राचारे तपोधनतणे धर्मे ॥ वयछक्कं कायछक, अकप्पो गिहि जायणं ॥ पलिअंक निसिज्जाए, सिणाणं सोजवज्जणं ॥ ५ ॥

॥ व्रत षट्के, पहिले महाव्रतें प्राणातिपात, सूक्ष्म वादर, त्रस थावर जीवतणी विराधना हूई, वीजें महाव्रतें क्रोध लोज हास्य जय लगे जूठुं वोल्या, तीजें अदत्तादानविरमण महाव्रते ॥ सामिजीवादत्तं, तिछयरत्तं तहेवय गुरुहि ॥ एवमदत्तंचछहा । पन्नत्तंवीयराएहिं ॥ १ ॥ स्वामी अदत्त, जीव अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, गुरु अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादान मांहि जेकांइ अदत्तपरिजोगव्युं ॥ चोथे महाव्रते ॥ वसहीकहनिसिज्जिंदिय, कुड्तिरपुव्वकीलिए पणिए॥ अइमायाहारविजूसणाइं, नववजचेरगुत्तिर्ज ॥ १ ॥ ए नववाडी सूधी पाली नही, सुहणे स्वप्नांतरें दृष्टिविपर्य्यास हूर्ज ॥ पंचमे महाव्रते, धर्मोपगरणने विषे इछा मूर्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिका उपगरण वावस्वार्या, पर्व तिथि पडिलेहवो विसास्यो ॥ छठे

रात्री जोजन विरमण व्रतें, असूरां पाणी कीधां, ठारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्रावंधे तक्रादिकनो ठांटो लाग्यो, खरड्यो रह्यो, लेप तेल उपधादिकतणो संनिधि रह्यो, अतिमात्रायें आहार लीधा, ए ठठ्ठा व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अ० ॥ ६ ॥

॥ कायषट्के ॥ गामतणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसार्या, माटी मीठुं खडी धावडी अरणेटो, पाषाणतणी चातली उपर पग आव्यो, अप्पकाय वाघारी फूसणा हुवा, विहरवा गया, जल खो हाल्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणीतणा ठांटा लाग्या, तेउकाय वीज दीवातणी उजेही हुइ, वाउ काय, उघाडे मुखें वोल्या, महावाय वाजतां कपडा कांवली तणा ठेडा साचव्या नहीं, फूक दीधी ॥ वनस्पतिकाय, नीलफूल सेवाल थरुमूल फल फूलवृक्ष शाखा प्रशाखातणा संघट्ट परंपर निरंतर हूवा ॥ त्रसकाय, वेरिंडी तेरिंडी चउरिंडी पंचेंडी काग वग उडाव्या, ढोर त्रासव्यां वालक वीहाव्यां षट् काय विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ ७ ॥

अकल्पनीय सय्या वस्त्र पात्र पिंड परिजोगव्यो, सिज्जातरतणो पिंड परिजोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे विहर्या, धात्री दोष, त्रस वीजसंसक्त पूर्वक र्म्म पश्चात्कर्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नहीं, गृहस्थतणो जाजन जांज्यो, फोड्यो, वली पाठो

आप्यो नहीं, सूतां संथारिया उत्तरपट्टा टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशतः स्नान मुखे जीनो हाथ लगाड्यो, सर्वतः स्नानतणी वांछा कीधी, शरीरतणो मल फेड्यो, केश रोम नख समार्या, अनेरी जे कांइ गाडाविनूषा कीधी, अकल्पनीय पिंमादि विषइर्ज अनेरो जे को० ॥ ८ ॥

आवस्सयसद्याए, पम्लिेहणद्याण निक्क अन्नत्ते ॥ आगमणे नीगमणे । ठाणे निसिअणे तु अट्टे ॥ १ ॥ आवश्यक जन्नयकाल व्याक्षिप्त चित्तपणे पम्किमणुं कीधुं, पम्किक्कमणा मांहि उंघ आवी, वेठां पम्किक्कमणुं कीधुं, दिवस प्रतें चार वार सद्याय, सात वार चैत्यवंदन न कीधां, पम्लिेहणा आघी पाठी नणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नहीं, गोचरी गयां बेंतालीश दोष उपजता चिंतव्या नहि, छती शक्तिए पर्व तिथे उपवासादिक कीधो नहि, उपासरा देहरामांहि पेसतां निसिही निसरतां आवस्सही कहेवी विसारी, इछामिछादिक दशविध चक्रवाल समाचारी सांचवी नहि, गुरुतणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यों नहि, अपराध आव्यां मिछामि डुक्कम दीधा नहि, स्थानके रहेतां हरियकाय वियकाय कीमीनगरां सोध्यां नहीं, उंघो मुहपत्ति चोलपट्टो संघट्या, स्त्री तीर्यंचतणा संघट्ट अनंतर परंपर हूवा,

वमा प्रतें पसाउं करी, लहुडां प्रतें इछाकार इत्या दिक विनय साचव्यो नहि, साधु सामाचारी वि० अ० पक्षि० सु० वा० जाणतां अजाणतां हुउं होय, ते सविहु मन वचन कायायें करी मिछामी डुक्कमं. ॥ ए ॥ इति साधु अतिचार संपूर्णः ॥

७ ॥ पाक्षिक सूत्र. ॥

तिह्नंकरे अतिछे, अतिछसिद्धेअ तिछसिद्धेअ ॥ सिद्धेजिणे अ रिसी, महरिसी नाणं च वंदा मि ॥ १ ॥ जे इमं गुण रयण सायर, मविराहिऊण तिणसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआ-राहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगल मरिहंता। सिद्धा साहु सुअं च धम्मोअ ॥ खंती गुत्ती मुत्ती । अज्ज वया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करिंति । परमरिसि देसियमुआरं ॥ अहमवि उवछिउंतं । महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ से किं तं महव्वय उ च्चारणा ; महव्वय उच्चारणा पंच विहा पन्नत्ता ॥ राइ-भोअणवेरमण ठछा । तंजहा ॥ सवाउं पाणाइवाया उं वेरमणं ॥ १ ॥ सवाउं मुसावायाउं वेरमणं ॥२॥ सवाउं अदिन्नादाणाउं वेरमणं ॥ ३ ॥ सवाउं मेहुणा उं वेरमणं ॥ ४ ॥ सवाउं परिग्गहाउं वेरमणं ॥५॥ सवाउं राइभोअणाउं वेरमणं ॥ ६ ॥

तछखलु पढमे भंते महव्वए. पाणाइवायाउं वेर मणं सवं भंते पाणाइवायं पच्चरकामि से सुहुमं वा ।

बायरं वा । तसं वा । थावरं वा । नेवसयं पाणे अइ
वाइज्जा । नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा । पाणेअ
इवायंते वि । अन्ने न समणुजाणामि । जावज्जीवाए
तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि
न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणमि । तस्स
जंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि
रामि ॥ से पाणइवाए चउविहे पन्नत्ते । तंजहा ।
दव्वउ खित्तउ कालउ जावउ । दव्वउणं पाणाइवाए
उसु जीवनिकाएसु । खित्तउणं पाणाइवाए सव्वलोए ।
कालउणं पाणाइवाए दिआवा राउआ । जावउणं पा
णाइवाए रागेणवा दोसेणवा । जं मए इमस्स धम्मस्स
केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालरकणस्स सच्चाहिठिअस्स
विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवणियस्स
उवसमप्पजवस्स नवबंजचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स
जिरकाविंत्तिअस्स कुरकीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स
संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निव्वि
त्तिलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स
अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निवाणगम
णपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवयाए अ
बोहिआए अणजिगमेणं अजिगमेणवा पमाएणं राग
दोसपमिवद्धआए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्ड
याए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएण पंचिंदिउव
संट्टेणं पमिपुन्नजारिआए सायासुरकमणुपालयंतेणं

इहंवाभवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु पाणाइवाओ कओ वा। कराविओवा कीरंतोवा परेहिंसमणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सि ओहं नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा तं जहा अरिहंतसक्खि अं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं एवंभ वइ भिक्कूणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पाव कम्मे दिआवा राओवा एगओवा परिसागओवा सु त्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्स वेर मणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पार गामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जी वाणं सव्वेसिं सत्ताणं असोअणयाए अजूरणयाए अ तिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्द वणयाए महत्थे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परम रिसिदेसिए पसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्ट उव संपज्जित्ताणंविहरामि पढमेभंतेमहव्वए उवठिओमि सव्वाओपाणाइवायाओवेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे भंते महव्वए मुसावाओ वेरमणं। सव्वं भंते मुसा वायं पच्चक्खामि से कोहा वा १ लोहा वा २ भया वा ३ हासा वा ४ नेवसयं मुसंवइज्जा ने

वन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेवि अन्ने न समणु
जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वा
याए काएणं न करेमि न कारवेमि ॥ तस्स भंते प
डिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥
से मुसाए चउव्विहे पन्नत्ते। तं जहा। दव्वर्ज १ खित्तर्ज २
कलर्ज ३ भावर्ज ४। दव्वर्जणं मुसावाए सव्वेदव्वेसु।
खित्तर्जणं मुसावाए लोएवा अलोएवा । काल
र्जणं मुसावाए दिआवा राउवा। भावर्जणं मुसा
वाए रागेणवा दोसेणवा। जं मए इमस्स धमस्स
केवलि पणत्तस्स अहिंसालक्कणस्स सच्चाहिठिअ
स्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसो
वणियस्स उवसमप्पन्नवस्स नवबन्नचेरगुत्तस्स अ
पय माणस्स भिरकाविभिअस्स कुक्कि संवलस्स
निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुण
ग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्कणस्स पंच
महव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइअस्स
संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमण पज्जवसा णफल
स्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अण
भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवरूयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं
पंचिंदिर्जवसट्टेणं पडिपुन्नं भारयाए सायासुरकमणु
पालयंतेणं इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु
मुसावाउ भासिर्ज वा भासाविर्ज वा भासिजंतोवा परेहिं

समणुन्नाउं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईअंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयंपच्चक्कामि सव्वंमुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउंहं नेवसयं मुसं वाइज्जा नेवन्नेहिंमुसं वायाविज्जा मुसं वायंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा। तं जहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवंहवइ भिक्कुवा भिक्कुणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआवा राउंवा एगउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु मुसावायस्सवेरमणे हिए सुहे। खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूआणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्कणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुजावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्करकयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवठिउंमि सवाउं मुसावायाउं वेरमणं ॥ २ ॥

॥ अहावरेतच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउं वेरमणं। सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्कामि। से गामेवा नगरेवा रसेवा अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थुलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा। नेवसयं अदिन्नं गिण्हि

ज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिएहाविज्जा अदिएणं गिएहंतेवि अन्नेन समणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुज्जाणामि तस्स नंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते । तं जहा । दव्वउं खित्तउं कालउं नावउं । दव्वउंणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु; खित्तउंणं अदिन्नादाणे गामेवानगरेवा रएवा, कालउंणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्कणस्स उवसमप्पन्नवस्स नववन्नचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स निक्काविचियस्स कुक्किसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निवियारस्स निव्वित्तिलक्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणनिगमेणं अनिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धआए बालआए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचिंदिअवसट्टेणं पमिपुन्नं नारियाए सायासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवा नवे अन्नेसुवा नवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअंवा गाहाविअंवा घिप्पंतंवा परेहिं समणुन्नाउं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं

तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईअं निंदामि पडुप्पण्णंसंवरेमि अणागयं पच्चक्कामि सव्वं अदिन्ना दाणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेवसंयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा। तं जहा। अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवस क्खिअं अप्पसक्खिअं एवं हवइ भिक्खुणीवा संजय विरयपडिहय पच्चक्काय पावकम्मे दिआवा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु अदिन्ना दाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सव्वेसिं पाणाणं सवेसिं जीवाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्क णयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अ पीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे म हागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि दे सिए पसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसंपजि त्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए उवठिउमि स व्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाउ वेरमणं। सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्कामि। से दिव्वंवा माणुस्संवा तिरिक्कजोणिअंवा। नेवसअं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुजाणा

मि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नन समणुजा णामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अ प्पाणं वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नते । तंज हा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ। दव्वउणं मेहुणे रूवे सुवा रूवसहगएसुवा। खित्तउणंमेहुणे उड्ढलोएवा अ हो लोएवा तिरियलोएवा कालउणं कालउणं दिआवा राउवा । भावउणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा । जंम ए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालरकण स्स सच्चाहिठिअस्स विणयमूलस्स । खंतिप्पहाण स्स अहिरन्नसोअस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिरकाविति्तअस्स कुरिकसंब लस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलरकणस्स पंच महव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि संवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप ज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवगएणं पचिं दिउवसट्टेणं पडिपुन्नं भारियाए सायासुरकमणुपाल यंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणं सेवि अंवा सेवाविअंवा सेविज्जंतंवा परेहिं समणुन्नाउ

ंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वाया ए काएणं अइयं निंदामि पमिपुन्नं संवरेमि अणा यं पच्चरकामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सि हं नेवसयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवा वेद्या मेहुणं सेवंतेवि अन्ने नसमणुज्जाणिद्या। तं तहा अरिहंत सक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं हवइ भिरकूवा भि कूणीवा संजयविरय पडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दिआवा राउंवा परिसागउंवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए सवेसिंपाणाणं सवेसिं भूआणं सवे सिं जीवाणं सवेसिं सत्ताणं अडुक्खणयाए असोयण याए अजूरणआए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अ परियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे, महागुणे म हाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसछे तंडुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहि लाभाए संसारुत्तारणयाए उवसंपद्धित्ताणं विहरामि चउत्थेभंतेमहव्वए उवठिउमिसव्वाउ मेहुणाउवेरमणं ४

अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाउवेरमणं। सव्वं भंते परिग्गहं पच्चरकामि। अप्पंवा बहुंवा अणुं वा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयंपरिग्ग हं परिगिण्हिवा नेवन्नेहिं परिग्गिहं परिगिण्हाविद्या परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेन समणुज्जाणामि जाव

जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए काएणं नकरे मि नकारवेमि करंतंपि अन्नं नसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि रामि ॥ सेपरिग्गहे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ । दव्वउणं परिग्गहे सचि त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु, खित्तउणं परिग्गहे सव्वलोए कालउणं परिग्गहे दिआ वा राउ वा भावउणं प रिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा जं मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लरकणस्स सच्चाहि ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहा णस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिरकावित्तिअस्स कु रिकसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्त दोसस्स गुणग्गाहिअस्स निविआरस्स निवित्ति ल रकणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अविसंवाअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणप यवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अ वोहिआएअणभिगमेणं अभिगमेणं वा पमाएणं रा गदोसपडि वद्धआए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचिं दिउवसट्टेणं पडिपुन्नंभारियाए साया सुरकमणुपालयं तेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिउवा गाहाविउ वा घिप्पंतो वा परेहिं समणु

न्नाउं तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाएकाएणं अईअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अ णागयं पच्चरकामि सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए अणि स्सिउंहं नेवसयं परिग्गहं पगिरिण्हिज्जा नेवन्नेहिं प रिग्गहं परिगिण्हाविद्या परिग्गहं परिगिण्हतेवि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खिअं सिद्ध सक्खिअं साहु सक्खिअं देव सक्खिअं अप्प सक्खिअं एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दिआवा राउं वा एगउं वा परि सागउं वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु परिग्ग हस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामि ए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं नूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अडुक्खणयाए असोणयाए अजूरण आए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महछे महागुणे महाणुन्नावे महापुरि साणुचिन्ने परमरिसि देसिए पसह्वे तंडुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणायाए तिक हु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पंचमे नंते महव्वए उ वट्ठिउंमि मवाउं परिग्गहाउं वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे ठठे नंते महव्वए राईअ नोअणाउं वेर मणे सव्वं नंते राईनोअणं पच्चरकामि॥ से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेवसयं राइ नोअणं नुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइनोअणं नुंजाविद्या राइनोअ

णं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥ से राइभोअणे चउव्विहे पन्नत्ते दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ॥दव्वउणं राइभोअणं असणे वा पाणे वा खाइमे साइमे वा खित्तउणं राईभोअणे समयखित्ते कालउणं राइभोअणे, दिआ वा राउ वा,भावउणं राइभोयणे, तित्ते वा कडुए वा कसायले वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लरकणस्स सच्चाहिठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवस्सिअस्स उवसमप्पभवस्स नववभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिरकाविति्तअस्स कुरिकसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्सनिव्वितिलरवणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्ववसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहिआए अणभिगमेणं अभिगमेणं वा पमाएण रागदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किडयाए तिगारवगुरुआए चउक्कसाउवएणं पंचिंदिअवसट्टेणं पडिपुणंभारिआए सायासुरकमणुपालयतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु वा राइभो

विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तोठिउं समण धम्मे ॥ पढ मंवयमणुरक्के । विरयामो पाणाइ वायाउं ॥ १३ ॥ आलय विचारसमिउं। जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥ वीयं वय मणुरक्के॥ विरयामो मुसावायाउं ॥१४॥ आ लयवियारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे। तीयं वयमणुरक्के. विरयामोअदिणा दाणाउं ॥१५॥ आलय विचारसमिउं। जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे। चउञ्चवय मणुरक्के। विरयामो परिग्गहाउं ॥१६॥ आलय विया रसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ पंचम वयमणुरक्के । विरयामो परिग्गहाउं ॥ १७ ॥ आलय विचारसमिउं । जुत्तो गुत्तो ठिउं समणधम्मे ॥ ढंठव यमणुरक्के ॥ विरयामो राईजोयणउं ॥ १८ ॥ आलय विहार समिउं ॥ जुत्तो गुत्तो ठिउं समण धम्मे ॥ तिविहेण अप्पमत्तो । रक्कामि महव्वए पंच ॥ १९॥ सावज्जजोगमेगं ॥ मिछत्तं एगमेव अन्नाणं ॥ परिव चंतो गुतो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २० ॥ अणवद्य जोगमेगं ॥ सम्मत्तं एगमेवनाणं तु ॥ उवसंपन्नो जु त्तो ॥ रक्कामि महव्वएपच ॥ २१ ॥ दो चेव रागदो से ॥ दुन्निअ जाणाइंअट्टरुद्दाइं ॥ परिवचंतो गुत्तो । रक्कामि महव्वएपंच ॥ २२ ॥ दुविहं चरित्त धम्मं । दुन्निअ जाणाइं धम्मसुक्काइं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ २३ किण्हा नीला काउ ॥ तिन्निअ लेसाउं अप्पसह्नाउं ॥ परिवचंतो गुत्तो र

रक्खामि महव्वए पंच ॥ २४ ॥ तेउ पह्मा सुक्का ॥ तिन्निअ लेसाउ सुप्पसन्नाउ ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २५ ॥ मणसा मणसच्चविउ ॥ वायासच्चेण करण सच्चेण ॥ तिविहेण सच्चविउ ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६ ॥ चत्तारि अ दुह सिज्जा ॥ चउरो सन्ना तहाकसायाय ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २७ ॥ चत्तारि अ सुह सिज्जा ॥ चउविहं संवरं समाहिठाणं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २८ ॥ पंचेवय काम गुणे ॥ पंचेवय अएहवे महादोसे ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २९ ॥ पचिंदिअ संवरणं ॥ तहेव पंच विहमेव सज्जायं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥३०॥ छज्जीवनिकाय वहं ॥ छप्पिअ भासाउ अप्पसत्थाउ ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३१ ॥ छविहमभिंतरयं ॥ बझंपिअ छव्विहं तवो कम्मं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३२ ॥ सत्त य जय ठाणाइं ॥ सत्तविहं चेव नाणविभंगं ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥रक्खामि महव्वए पंच ॥३३॥ पिंडेसण पाणेसण उग्गह सत्ति कया महप्पयणा ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३४ ॥ अठय मयठाणाइं अठय कम्माइं तेसिं वंधंच ॥ परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३५ अठय पवयण माया ॥ दिठा अठ

विइ निठिअठेहिं॥उवसंपन्नो जुत्तो । रक्कामि महव्व ए पंच ॥३६॥ नव पाव निआणाइं ॥ संसारछाय न वविहा जीवा ॥ परिवद्यंतो गुत्तो । रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३७ ॥ नव बंभचेर गुत्तो ॥ डुनवविहं बंभचे र परिसुद्धं ॥ उवसंपन्नो जुत्तो ॥ उवसंपन्नो जुत्तो । रक्कामि महव्वए पंच ॥ ३८ ॥ उवघायं च दसविहं॥ असंवरं तहय संकिलेसं च ॥ परिवद्यंतागुत्तो रक्कामि महव्वए पंच ॥३९॥ सच्च समाहिठाणे ॥ दसचेव दसउ समण धम्मंच ॥ उव संपन्नो जुत्तो ॥ रक्कामि म हव्वए पंच ॥ ४० ॥ आसायणं च सव्वं ॥ तिगुण इक्कारसं विवद्यंतो ॥ परिवद्यंतो गुत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ४१ ॥ एवंतिदंम विरउ ॥ तिगरण सुद्धो तिसल्ल निसल्लो ॥ तिविहेण पमिक्कंतो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ४२ ॥

इच्चेइअं महव्वय उच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं । धिइ बलं ववसाउ । साहणठो पाव निवारणं । निकाय णा ज्ञाव विसोही पडागाहरणं । निज्जूहणाराहणा गुणाणं । संवरजोगो पसठ्याणो । वउत्तया जुत्तयाय नाणे परमठो उत्तमठोय । एसखलु तिठंकरेहिं । रइ राग दोस महणेहिं । देसिउ पवयणस्ससारो । ठज्जीवनीकाय संजमं । उवएसिअं । तेलुक्क सक्कअं गाणं । अप्पुवगया नमोहु ते । सिद्ध बुद्ध मुत्त निरय। निसंग माणमूरण । गुण रयण । सायर । मणंत

मप्पमेश्र । नमोत्थुते महइ महावीर वद्धमाण सामि स्स । नमोत्थते अरहओ । नमोत्थुते नगवओ । तिकट्टु । एसाखलु । महव्वय उच्चारणाकया ॥

इच्छामो सुत्त कित्तणं काउं । नमोतेसिं खमासम णाणं । जेहिं इमं वाइश्रं । बव्विह मावस्सयं । नग वंतं तंजहा । सामाइश्र ॥ १ ॥ चउवीसत्थओ ॥ २ ॥ वंदणयं ॥ ३ ॥ पमिक्कमणं ॥ ४ ॥ काउसग्गो ॥ ५ ॥ पच्चरकाणं ॥ ६ ॥ सवेहिंपि एश्रंमि । बव्विहे श्राव स्सए । नगवंते ससुत्ते । सश्रत्थे सगंथे सनिज्जुत्ती ए । ससंगहणिए जेगुणावानावावा । श्ररिहंतेहिंनग वंतेहि । पण्णत्तावा । परूविश्रावा । तेनावेसद्दहामो । पत्तियामो । रोएमो फासेमो । पालेमो । श्रणुपाले मो । तेनावेसद्दहंतेहिं पत्तिश्रंतेहिं । रोश्रंतेहिं । फासं तेहिं । पालंतेहिं । श्रणुपालंतेहिं । श्रंतोपरकस्स जंवा इश्रं । पढिश्रं परिश्रट्टिश्रं । पुच्छिश्रं श्रणुपालिश्रं । तंडुरकरकयाए कम्मरकयाए । मुरकयाए । बोहिला नाए । संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । श्रंतोपरकस्स । जंनवाइश्रं नपढिश्रं नप ढिश्रं नपरिश्रट्टिश्रं । नपुच्छिश्रं । नाणुपेहिश्रं । नाणु पालिश्रं संतेबले संतेवीरिए । संतेपुरिसकारपरिक्कमे। तस्सश्रालोएमो । पमिक्कमामो । निंदामो गरिहामो। विउट्टेमो । श्रकरणयाएश्रप्पुट्ठेमो । श्रहा रिहंतवो कम्मं । पायच्छित्तंपडिवज्जामो। तस्समिच्छा मिडुकडं।

नमोतेसिंखमासमणाणं । जेहिंइमंवाइअं । अंग वाहिरं उकालिअंनगवंतं । तंजहा । दसवेआलिअं । कप्पिआकप्पिअं । चुल्लकप्पसुअं । महाकप्पसुअं । उवाइअं रायप्पसेणिअं । जीवाजिगमो । पन्नवणा । महापन्नवणा। नंदी अणुउगदाराइं देविंदथ्थउ । तंडुल विआलिअं चंदाविज्ञियं।पमायप्पमायं। पोरिसिमंकलं। मंडलप्पवेसो गणिविद्या । विद्याचारणविणीछउ । जाण विन्नत्ती । मरणविन्नत्ती । आयविसोही । संलेहणा सुअं । वीयरायसुअं । विहारकप्पो । चरणविहि । आउरपच्चरकाणं । महापच्चरकाणं ॥ २० ॥ सवेहिंपि एअंमि । अंगवाहिरे उक्कालिए । नगवंते ससुत्ते । सअछे । सगंथे । सनिज्जुत्तिए । ससंगहणिए जेगु णावा नावावा । अरिहंतेहिं । नगवंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविआवा । तेनावे सद्दहामो पत्तिआमो । रोएमो फासेमो । पालेमो अणुपालेमो । तेनावे सद्द हंतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोअंतेहिं । फासंतेहिं पालंते हिं । अणुपालंतेहिं । अंतोपरकस्स । जंवाइअं पढि अं । परीअट्टिअं । पुछिअं । अणुपेहिअं । अणुपालि अं । तंडुरकरकयाए । कम्मरकयाए । मुरकयाए । वोहिलानाए संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसंप ज्जित्ताणंविहरामि । अंतोपरकस्स । जंनवाइअं नप ढिअं नपरिअट्टिअं । नपुछिअं । नाणुपेहिअं । नाणु पालिअं । संतेवले संतेविरिए । संतेपुरिसकारपरिक

मे।तस्सआलोएमो।पमिक्कमामो।नींदामो।गरिहामो। विउट्टेमो।विसोहेमो।अकरणयाएअप्पुठेमो।अहारिहं तवोकम्मं।पायछित्तं पमिवज्ञामो।तस्समिच्छामिदुक्कडं।

नमोतेसिंखमासमणाणं। जेहिंइमंवाइअं अंगवाहिरंकालिअंजगवंतं । तंजहा। उत्तरज्ञयणाइं। दसाकप्पो। ववहारो । इसिजासिआइं । निसीहं। महानिसीहं। जंबुद्दीवपणत्ती। सूरपणत्ती। चंदपन्नत्ती। दीवसागरपन्नत्ती । खुड्डयाविमाणपविजत्ती। महल्लिआविमाण पविजत्ती। अंगचूलिआए। वंगचूलिआए। विवाहचूलिआए अरुणोववाए। वरुणोववाए गरुलोववाए।धरणोववाए। वेलंधरोववाए। वेसमणोववाए। देविंदोववाए। उठाणसुए। समुठाणसुए। नागपरिआवलिआणं । निरयावलिआणं। कप्पिआणं। कप्पवमिंसिआणं। पुप्फिआणं। पुप्फचूलिआणं। वण्हीयाणं। वण्हीदसाणं आसीविसजावणाणं। दिठि विसजावणाणं। चारणसुमिण जावणाणं। महासुमिणजावणाणं। तेअग्गिनिसग्गाणं ॥३६॥ सवेहिं पिएअंमि। अंगवाहिरे कालिए जगवंते। ससुत्ते। सअछे सगंथे। सणिज्जुत्तिए। ससंगहणिए जेगुणावां जावावा। अरिहंतेहिं। जगवंतेहिं। पणत्तावा परूवीआवा तेजावेसद्दहामो। पत्तिआमो रोएमो। फासेमो पालेमो। अणुपालेमो। तेजावेसद्दहतेहिं। पत्तिअंतेहिं। रोयंतेहिं फासंतेहिं।

पालंतेहिं । अणु पालंतेहिं । अंतोपख्खस्स जंवाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुछिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तंडुख्खख्खयाए । कम्मख्खयाए॥ मुख्खयाए।वोहि लाजाए। संसारुत्तारणयाए । त्तिकट्ट।उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतोपख्खस्स। जंनवाइअं नपढीअं नप रियट्टिअं नपुछिअं । नाणुप्पेहिअं नाणुपालिअं । संतेवले । संतेवीरिए । संतेपुरिसक्कारपरिक्कमें। तस्सआ लोएमो।पडिक्कमामो। निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अप्पुठेमो।अहारिहंतवो कम्मं । पायछित्तंपडिवद्यामो । तस्समिछामिडुक्कडं ॥

नमोतेसिंखमासमणाणं । जेहिंइमंवाइअं । डुवालसंगंगणिपिडगं । जगवंतं । तंजहा । आयारो सुअगडो ठाणं । समवाउ । विवाहपन्नत्ती । नायाधम्मकहाउ । उवासगदसाउ अंतगडदसाउ । अणुत्तरोववाइअदसाउ । पएहावागरणं । विवागसुअं दिठिवाउ॥ सव्वेहिंपि एअंमि । डुवालसंगे गणिपिडगे । जगवंते। सअठे । ससुत्ते । सगंथे । सणिज्जुत्तिए । ससंग हणिए । जे गुणा वा । जावा वा । अरिहंतेहिं । जगवंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविआ वा । ते जावे सद्दहामो । पत्तिआमो । रोएमो । फासेमो । पालेमो । अणुपालेमो । ते जावे सद्दहंतेहिं । पत्तिअंतेहिं । रोयतेहिं । फासंतेहिं । पालंतेहिं । अणुपालंतेहिं । अंतोपख्खस्स । जंवाइअं । पढिअं । परिअट्टिअं । पु

छिअं । अणुपेहिअं । अणुपालिअं । तंडुक्खक्खयाए । कम्मक्खयाए । मुक्खयाए । बोहिलाभाए । संसारुत्ता रयाए । तिकट्ट । उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतो पक्खस्स जं न वाइअं । न पढिअं । न परिअट्टिअं । न पुछिअं । नाणुपेहिअं । नाणुपालिअं । संते बले । संते वीरिए । संते पुरिसक्कारपरिक्कमे । तस्स आलो एमो पडिक्कमामो । निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणयाए । अप्पुट्ठेमो । अहारिहं तवोकम्मं । पायच्छित्तं पडिवज्जामो । तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ ७ ॥ नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइअं डुवा लसंगं गणिपिडगं । भगवंतं । तं जहा सम्मं काएणं । फासंति । पालंति । पूरंति । तीरंति । किट्टंति । सम्मं आणाए । आराहंति । अहं च नाराहेमि । तस्स मिछामिडुक्कडं ॥ ८ ॥

सुअदेवआ भगवई । नाणावरणीअकम्मसंघायं । तेसि खवेउ सययं । जेसिं सुअ सायरे भत्ति ॥ ७ ॥

इति पाक्षिक सूत्र समाप्तं ॥

## पाक्षिकखामणा. ॥

इछामि खमासमणो पिअं च मे जंभे । हठाणं तु ठाणं अप्पायंकाणं । अभग्गजोगाणं । सुसीलाणं । सु व्वयाणं । सायरिअउवज्झायाणं । नाणेणं । दंसणेणं । चरित्तेणं । तवसा । अप्पाणं । भावेमाणाणं । बहुसु भेण भे दिवसो पोसहो । पक्खो वइक्कंतो । अन्नो भे

कल्लाणेणं । पच्चुवठिए । सिरसा मणसा । मछएण वंदामि ॥ १ ॥ तुम्हेहिं समं ॥

इछामि खमासमणो । पुव्वि चेइआइं वंदित्ता । नमंसित्ता । तुम्हएहं पायमूले । विहरमाणेणं । जे केइ बहुदेवसिआ । साहुणो । दिठा समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं । डुइज्ञमाणा वा । राइणिआ संपुछंति । उमराइणिआ वंदंति । अज्जया वंदंति अज्जियाउ वंदंति । सावया वंदंति । सावियाउ वंदंति अहंपि निस्सल्लो । निक्कसाउ । त्तिकट्टु । सिरसा मणसा । मछएण वंदामि ॥२॥ अहमवि वंदामि चेइआइं॥

इछामि खमासमणो । अप्पुठिउहं । तुम्हएहं । संतिअ । अहाकप्पं वा । वछं वा । पडिग्गहं वा । कंबलं वा । पायपुछणं वा । रयहरणं वा । अरकरं वा। पयं वा । गाहं वा । सिलोगं वा । सिलोगर्द्धं वा । अठं वा । हेउ वा । पसिणं वा । वागरणं वा । तुम्हेहिं । चिअत्तेण दिन्नं । मए । अविणएण । पडिछिअं । तस्समिछामिडुक्कडं ॥ ३ ॥ आयरियसंतिअं ॥

इछामि खमासमणो । अहमपुव्वाइं । कयाइं च मे। किइकम्माइं । आयारमंतरे । विणयमंतरे । सेहिउ । सेहाविउ । संगहिउ । उवग्गहिउ । सारिउ । वारिउ चोइउ । पडिचोइउ । चिअत्ता मे । पडिचोयणा । अप्पुठिउहं । तुम्हएहं तवतेयसिरीए । इमाउ चाउरंत संसारकंताराउ । साहट्टु । निछारिस्सामि

तिकट्टु । सिरसा मणसा । मछएण वंदामि ॥ ४ ॥ निछारगपारगाहोह ॥ इति पाक्षिक खामणा ॥

साधुउंको देवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमणमें
अतिचारकी आठ गाथाके स्थानपर
गुणनेकी एक गाथा

सयणासन्न पाणे, चेइ जइ सिज्ज काय उच्चारे ।
समिइ जावणा गुत्ती,वितहायरणे य आड्यारो॥१॥

यह गाथा गुण तेतिस्में कहिहुइ वातें संबंधी जो कुछ अतिचार लगा होसो सांधुने याद करना. सामान्य साधुसें गुरुको अल्प व्यापार होनेसें गुरुने दोवार यह गाथा अर्थ सह विचारनी.

( प्रातः पडिलेहणकी विधि ),

इरिआवही पडिक्कमी, खमासमण देके, इछाकारेण संदिसह जगवन् पडिलेहण करुं? 'इछं' कही मुहपत्ति ५० बोलसें, उघो १० बोलसें, कटासण २५ बोलसें, कंदोरा १० और चोलपट्टा २५ बोलसें पडिलेहना पिछे इरियावही पडिक्कमके, खमासमण देके, इछकारी जगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहवोजी, एसा कहकें स्थापनाचार्यकी पडिलेहणा करनीसो नीचे प्रमाण

प्रथम कामली पडिलेही संकेलके तिस उपर स्थापनाचार्य रखणी. पिछे थापनाजी. ठोडीके प्रथम उपरकी एक मुहपत्ति पडिलेहे पिछे "शुद्धस्वरूपके

धारक गुरु ज्ञानमयी. दर्शनमयी चारित्रमयी, शुद्ध श्रद्धामय, शुद्ध प्ररुपणामय, शुद्ध स्पर्शनामय, पंचाचार पाले पलावे, अनुमोदे, मनगुप्ति वचनगुप्ति, कायगुप्तिसें गुप्त" यह तेरह बोल बोलके पांचोंस्थापनाजीकी पृथक् पृथक् पडिलेहणा करे. पिछें स्थापनाजी संबंधी डुसरी मुह पत्तिये पडिलेहे. ( सांजकी पडिलेहण वखत पहेली स्थापनाजीकी सब मुहपत्तियें पडिलेहना पिछें स्थापनाजी बांधके ठवणी ऊपर रखके खमा समण देके इछा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इछं कही मुहपत्ति पडिलेही, खमा० इछा० उपधि संदिसाहुं ? इछं, खमा० इछा० उपधि पडिलेहु ? इछं. कही दूसरे सववस्त्रें पडिलेहने अंतमें कंबक पडिलेहना पिछें डंडासण लेके पडिलेही, इरिआवही पडिक्कमी, काजा लेना पिछें इरिआवही पडिक्कमी काजा परठवना. पिछें इरिआवही पडिक्कमी, खमासण देके इछा० सझाय करुं ? इछ कही एक नवकार गणी 'धम्मो मंगल मुक्किठं, ए सझाय कहेना इतिप्रातः पडिलेहणविधि

( संध्या पडिलेहणविधि )

खमासमण देके इछा० बहु पडिपुन्ना पोरिसि ? खमासमण देके इरियावही पडिक्कमी खमासमण देके इछा० पडिलेहण करुं? इछं खमा० इछा० वस्ती प्रमार्जुं ? इछं कहके उपवास कीया होय तो मुहप

त्ति, उंघो, कटासणं पडिलेहना नहीं तो पूर्ववत् पांच चीजें पडिलेहना. पिछें इरियावही पडिक्कमी खमासमण देके, इच्छाकारी जगवन् पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी. यों कहके पूर्वोक्त रीत स्थापनाजीनी पडिलेण करनी. पिछें खमा० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कही मुहपति पडि लेहि खमा० इच्छा० सज्झाय करूं? इच्छ कही एक नवकार गुणके "धम्मो मंगल मुक्किठं" एसज्झाय कहे. पिछें आहार कीया होयतो वांदणा देके योग्य पच्चरकाण करना. उपवास किया होयतो खमसमण देके इच्छकारी जगवन् पसाय करी पच्चरकाण आदेशदिजीयें योंकहके पच्चरकाण करे. पिछें खमा०इच्छा० उपधि संदिसाहुं? इच्छं खमा० इच्छा० उपधि पडिलेहुं? इच्छ कही सर्व वस्त्र पडिलेहे. पिछें पूर्वोक्त रीत इरियावही पडिक्कमी, काजा लेके, इरियावही पडिक्कमी, काजा परठवना. ॥ इति ॥

( पोरसिविधि )

ठ घडी दिवस चडे पिछे खमासमण देके इच्छा० वहु पडिपुन्ना पोरिसि? इच्छं कही खमासमण देके इरियावही पडिक्कमना पिछें खमासमण देके इच्छा० पडिलेहण करुं? इच्छं कही मुहपति पडिलेहनी. इति.

पच्चरकाण पानेकी विधि.

खमासमण देके इरियावही पडिक्कमी, खमासम

ए देके इच्छा० चैत्यवंदन करुं? इच्छं कही जगचिंता मणीका चैत्यवंदन जयवियराय संपुर्ण पर्यंत करना. (स्तवन स्थान उव सग्गहरं कहेना.) पिछें खमास मण देके इच्छा० सज्झाय करुं? इच्छं कही एक नव कार गणी धम्मो मंगलमुक्किठं सज्झाय कहेना खमा समण देके इच्छा० मुहपति पडिलेहुं? इच्छं कही मुहपत्ति पडिलेहणी. पिछें खमा० इच्छा० पच्चरकाण पारुं 'तहत्ति' कही जमणा हाथ उंघा उपर स्थापन करके एक नवकार गुणके आंबिल पर्यंतके पच्चरकाण नीचे प्रमाणे कह करपारणा.

"उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसिं साढपो रसिं सूरेउग्गए पुरिमड्ढ मुठि सहिअं पच्चरकाण कीया चउविहार ॥ आंबील, नीवी, एकासणं पच्च रकाण किया तिविहार ॥ पच्चरकाण फासिअं, पालि अं सोहिअं, तीरिअं किट्टिअं, आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिछामि डुक्कडं. ॥

इसमें जो पच्चरकाण कीया होय उहांतक बोलनां आगेकेपाठ न बोलवां तिविहार उपवासवालो ने नीचे प्रमाणे कहेना

"सूरे उग्गए पच्चरकाण किया तिविहार; पाण हार पोरिसि साढपोरिसि पुरिमड्ढ मुठि सहिअं पच्चरकाण किया पाणहार; पच्चरकाण फासिअं० पूर्ववत् ए प्रमाणे पच्चरकाण पार्या पिछे नीचे प्रमाणे ॥ १७ ॥

## गाथा कहेनी.

धम्मो मंगल मुक्किठं । अहींसा संजमो तवो देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥ जहा डुमस्स पुप्फेसु । नमरो आवियइ रसं । नय पुप्फं किलामेइ । सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मूत्ता । जे लोए संति सोहुणो । विहंगमाव पुप्फेसु । दाण नत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं ल प्नामो । न य कोइ उवहम्मई । अहा गडेसुरीयंते । पुप्फेसु नमरी जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा । जे नवति अणिस्सिया । नाणापिंकरया दंता ॥ तेणवुच्चं ति साहुणो त्तिबेमि ॥५॥ डुम्म पुप्फिआ अज्झयणम् ॥१॥ कहन्नु कुद्या सामण्ण । जो कामे न निवारए । पए पए विसीयतो । संकप्पस्स वसंगउ । ६ । वच्छ गंधमलंकारं । इत्थिउ सयणाणि य । अछंदा जे न नुंजं ति । न से चाइत्तिवुच्चई । ७ । जे अ कंते पिए नोए। लद्धेवि पिछि कुवई । साहीणे चवइ नोए । सेहु चाइत्ति वुच्चई ॥ ८ ॥ समाइपेहाइ परिव्वयंतो । सिआ मणो निस्सरई वहिद्धा ॥ न सामहं नो वि अहंपि तीसे । इच्चेव ताउ विणइद्य रागं ॥ ९ ॥ आयावया हीचयसोगमल्लं । कामेकमाहीकमि यं खु डुक्कं । छिं दाहिदोसं विणइज्ज रागं । एवंसुही होहिसि संपरा ए ॥१० ॥ पक्कंदे जलियं जोइं । धूमकेउं डुरासयं । निछंति वंतयं नोत्तं । कुले जाया अगंधणे ॥ ११ ॥

धिगबु ते जसो कामी। जोतं जोवियकारणा। वंतं इ
छसिश्रावेउं। से अंते मरणं नवे ॥ १२ ॥ अहं च
नोग रायस्स। तं चसि अंधगवन्हिणो। माकुले गंध
णाहो मो। संजमं निहुउंचर ॥ १३ ॥ जइ तं काहि
सि नावं। जा जा दिछसि नारीउ। वायाविद्धुवह
मो। अठि अप्पा नविस्ससि ॥ १४ ॥ तीसे सो व
यणं मुच्चा। संजयाइसु नासियं। अंकुसेण जहा ना
गो। धम्मे संपडिवाइउं ॥ १५॥ एवं करंति संबुद्धा।
पंमिश्रा पवियरकणा। विणिअट्टंति नोगेसु। जहा
से पुरिसुत्तमो। त्तिवेमि ॥ १६ ॥ संजमे सुठियप्पा
णं। विप्पमुक्काण ताइणं। तेसिमेय मणाइन्नं। निग्गं
थाण महेसिणं ॥ १७ ॥ इतिसामन्नपुवियञ्चयणम् ॥

गोचरी आलोयण विधि.

निसिही कहके उपाश्रयमें प्रवेश करके गुरु सन्मुख आकें नमो खमासमणाणं मछएण वंदामी' कहके पिछें पग नूमि प्रमार्जी शुरू करके गुरु सन्मुख खडे रहके साये पग उपर मांमा रखके दक्षिण हाथमे मुहपत्ति रखके खडेखडे खमासमण देय. पिछें आदेश मांगके इरिश्रावही पमिक्कमे. एक लोगस्सका काउसग्ग करे. काउसग्गमें जो क्रमसें गोचरीकी जो जो वस्तुयें लीनी होय सो यादकरे तिस्में जहां जहां जो जो दोष लागे होय सो याद करे पिछें नमो अरि हंताणं कह पारके क्रम प्रमाण

गुरुकों कह बतावे. पिछें गुरुकों आहार दिखावे. पिछें गोचरी आलोवे सो ए प्रमाणे—

पडिक्कमामि गोअरचरिआएसें मिछामिडुकडं पर्यंत (श्रमण सूत्र पगाम सझाय) मे आवे सो आलावा कहे. पिछे तस्स उत्तरी० अन्नठ० कहके काउसग्ग करे. सो काउसग्गमे नीचेकी गाथा तिन वार विचारे.

अहो जिणेहीं असावज्जा, वित्ती साहुण देसिया।
मुक्खसाहण हेउस्स, साहु देहस्स धारणा ॥ १ ॥

पिछें काउस्सग्ग पारके लोग्गस्स कहे. ॥ इति ॥

स्थंडिल शुद्धिका विधि.

सायंकाले दैवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमे इरिआवही पडिक्कमी पच्चखाण करे पिछें खमा० इछा० स्थंडिल पडिलेहुं? इछं कही मंडला करे सो ए प्रमाणे—

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

दूसरे ६ मांडलेमे अणहियासेके बदल अहियासे' कहेना. तत्पश्चात् दूसरी बारमे आघाडेके बदल अणाघाडे कहेना शेष उपर प्रमाणे कहेना. एकंदर २४ मंडले करना.

पिछें इरिआवही पडिक्कमी, चैत्यवंदन करके प डिक्कमणां शरु करे. ॥ इति. ॥

## संथारा पोरिसीकी विधि.

पहोर रात्री पर्यंत सझाय ध्यानकिये पिछे संथा रा करनेके अवसर खमा० इच्छा० बहु पडिपुन्ना पोरि सि कही खमासमेण देके इरिआवही पडिक्कमे पिछें खमा० इच्छा० 'बहु पडिपुन्ना पोरिसि राइय संथारए ठाउं?' यौं कहके चउक्कसायका चैत्यवंदन जय विय रायपर्यंत करना पिछे खमा० इच्छा० संथारा विधि भ णनेकी मुहपत्ति पडि लेहुं? इच्छं कही मुहपत्तिपडि लेना. 'निसिही निसिही नमो खमासमणाणं गोयमा इणं महामुणीणं' इतना पाठ, कहके नवकार तथा करेमिभंते–त्रणवार कहना पीछे संथारा पोरसि बो लना ( प्रतिक्रमणकी बुकमे छपगयाहे. )

तिस्से चौदमी गाथा तीनवार कहना पिछे तीन नवकार गुणना पिछे छेल्ली तीन गाथा कहेनी तत्प श्चात् निद्रा न आवे तहांतक सझाय ध्यानकरना.

## पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कोइको छींक आवे तो करनेकी विधि.

जो पाक्षिक अतिचारके पहिले छींक आवेतो सब पुनः करना. तत्पश्चात बृहच्छांति तकमे छीक आवे तो दुखक्खउके काउसग्गके पहिले इरिआवही पडिक्कमी लोगस्स कही खमासण देके इच्छा० क्षुद्रो

पद्रव उंडावणार्थ काउसग्ग करुं? इछं कही अन्नछ कही चार लोगस्सका काउसग्ग सागरवरगंभिरा तक करना नीचेकी गाथा कहके पारना.

सर्वे यक्षांबिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने ॥
क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयंतु नः ॥ १ ॥

पिछे प्रगट लोगस्स कहेना.

छमासि काउस्सग करनेकाविधि

चैत्र सुदि ११–१२–१३ तथा आसो सुदि ११–१२–१३ ए तीनतीन दिवसोमे हररोज दैवसिक प्रतिक्रमणमे सझाय कहे पिछें ए काउस्सग्ग करना प्रथम खमासमण देके इछा० सचित अचित्तरज उहावणछं काउस्सग्ग करुं? इछं. करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ कही चार लोगस्सका सागरवर गंभिरा तक काउस्सग्ग करना पारके लोगस्स कहेनाः

लोच करनेके समय काउस्सग्ग करनेका विधि.

लोच करना होय तिस दिन लोचकिये अगाउ इरिआवही पडिक्कमी खमा० इछा० सचित्तअचित्त रज उहावणछं काउस्सग्ग करुं? इछा करेमी काउस्सग्गं अन्नत्थ०कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवरगंभिरा तक करना. पारके प्रगट लोगस्सकहेना.

कोइ साधु काल करे तव साधुकों करनेका विधि.

जो साधुनें काल किया होय तिनके पास आके एक साधु नीचेप्रमाण कहे–'कोटिक गण, वज्रीशा

खा, चंद्रकुल, अमुक आचार्य, उपाध्याय, स्थवीर, अमुक पंन्तिके शिष्य (अमुक मुनि) महा पारिठाव णीआ करेमि काउस्सग्गं' अन्नथ० कही एक नव कार कहे. पिछे तीन वार 'वोसिरे' कहे. पिछे श्रावक संस्कार करनेको ले जाय. तत्पश्चात् जीर्ण काचली प्रमुख नांगना. जीर्ण वस्त्र परठवना. पवित्र अचित्त पाणीसे नूमिशुद्धि हस्तपाद वस्त्र शुद्धि कर ना पिछे श्रावक पास गोमूत्रादि छंटायके अवले देव वंदानें. तिसकी विधि नीचे प्रमाणे—

अंतिम देव वंदन विधि.

काल करने वाले साधुके एक शिष्य अथवा ल घु पर्यायवाला कोइ शिष्य प्रथम उलटा काजा (द्वारसें आसन तरफ) लेवे. वस्त्रादि पहेरे उलटा. पिछे काजा संबंधी इरिआवही पडिक्कमके उलटा देव वंदन करे सो इस प्रमाणे.

प्रथम कल्लाणकंदकी एक थोइ. पिछे एक नवकारका काउस्सग्ग, पिछे अन्नत्थ० अरिहंत चे० जयवि० उव सग्ग० नमोर्हत्० जावंति के० खमासमण० जावंतीचे० नमुथ्थुणं० चैत्यवंदन० लोग्गस्स० एक लोगस्सका० काउस्सग्ग० अन्नत्थ० तस्सउ० इरिआ वही० खमा समण देके. अविधि आशातना मिछामि डुक्कडं कहे. पिछे सीधा काजा लेके इरियावही पडिक्कमे.

पिछे सज्ञा समक्ष सर्व साधु साध्वीने आठ

थोइसें सीधे देववंदन करना. तिस्में स्तवनके स्थान अजीसंता कहना. और देव पूरा होनेसें खमा० इछा० क्षुद्रोपद्रव उंमावणछं काउस्सग्ग करुं? इछं करेमि काउस्सग्गं अन्नछं० कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग सागरवर गंजीरा तक करना. स्तुतिके स्थान वृद्ध शांति कहना. पिछें प्रगट लोगस्स कहना.

दूसरे गामसें स्वसमाचारीवाले साधुके काल धर्म का समाचार मिलनेसेंजी उपर प्रमाणे आठ थोइसे, सीधे देव वांदने तथा अजीसंता वृध्धशांति कहना. साध्वीने समाचार आनेसे साध्वीओंने देव वंदन करना.

कोइ साधु कालधर्म पामे तव श्रावककों करनेका विधि.

प्रथम स्नान करना केश होय तो प्रथम उतराना जरा पगकी अंगुलीको छेदकरना. हाथ पगकी आंगलीयोंकों बंध करना. शरीरपर चंदन केशर बरासका विलेपन करना. मृत्यु स्थानके तथा स्नान करायके बेठानेके स्थानक लोखंडकी खीली ठोकनी. नये वस्त्र पहेनाना. दक्षिण तर्फ रजोहरण (चरवली) मुहपत्ति रखना मांही तर्फ झोली, उस्मे अन्न पात्र एक लडु सहित रखना रोहिणी, विशाखा. पुनर्वसु तिन उत्तरा ए ठ नक्षत्र में दो पुतले दर्जके करके रखना. ज्येष्टा, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, जरणी अश्लेषा ए ठ नक्षत्रे पुतलें न करणा दूसरे १५ नक्षत्रेमें एक पुतला करणा. वो पुतलेके जमणे

हाथमे उंघा ( चरवला ) मुहपत्ति देना और वाम हाथमे अन्न पात्र तथा एक लकु सहीत झोली देनी. दो पुतले होय तो दोनोकों देना. पिछें शोकयुक्त चित्तसें महोत्सव सहित योग्य स्थानके ले जाके चंदनादि काष्टोंसें अग्नि संस्कार करना. प्रांतमें सर्व अग्नि शांत कर रक्षा योग्य स्थानकमें परठवणी पिछे गुरु पास आयके लघुशांति वा बृहच्छांति सुनके अनित्यताका उपदेश श्रवण कर स्वस्थानक जाना.

साधु दररोज सात चैत्यवंदन करे सो नीचे प्रमाण.

१ राइपडिक्कमणाके प्रारंभमें जग चिंतामणीका.
२ राइपडिकमणाके अंतमें विशाल लोचनका
३ मंदरजीमें दर्शन करने जाय उहां करे
४ पच्चरकाण पारतें जगचिंतामणीका.
५ आहार कररहे पिछे जगचिंतामणीका.
६ दैवसिक प्रतिक्रमके प्रारंभमे.
७ संथारा पोरिसी भणावणमें चउक्कसायका

२४ साधु दररोज चारवार सझाय करे सोइस प्रमाणे,
१ सवेरकी पडिलेहणके अंतमें धम्मो मंगल० की.
२ सांजकी पडिलेहण मध्यमे धम्मो मंगल० की.
३ दैवसिक प्रतिक्रमणके अंतमें कहतें हें सो.
४ राइ पडिक्कमणाके प्रारंभमे भरहेसर की.

सप्तम परिच्छेदः समाप्तः

## ॥ अथ अष्टम परिछेदः प्रारंभः ॥

### ॥ अथ षोडश संस्कार प्रारंभ ॥

तत्व ज्ञान मयो लोके, य आचारं प्रणीतवान् ॥
केनापि हेतुना तस्मै, नम आद्याययोगिने ॥
गर्भाधानं पुंसवनं जन्मचन्द्रार्कदर्शनम् ॥
क्षीराशनं चैव षष्ठी तथा च शुचि कर्म च ॥
तथा च नामकरणमन्नप्राशनमेव च ॥
कर्णवेधो मुण्डनं च तथोपनयनं परम् ॥
पाठारम्भो विवाहश्च व्रतारोपोन्तकर्म च ॥
अमी षोडशसंस्कारा गृहिणां परिकीर्त्तिताः ॥

भावार्थः–गर्भाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, चंद्र सूर्यदर्शन ४, क्षीराशन ५, षष्ठी ६, शुचिकर्म ७, नामकरण ८, अन्नप्राशन ९, कर्णवेध १०, मुंडन ११, उपनयन १२, विद्यारंभ १३, विवाह १४, व्रतारोप १५, अंतकर्म १६ येह सोलां संस्कार गृहस्थीको करने चहिये व्रतारोपसंस्कारको वर्जके, शेष १५ पंदरां संस्कार, साधुउने नही करणे.

### संस्कार कराने वाले गुरु विषे

अर्हन्मंत्रोपनीतश्च ब्राह्मणः परमार्हतः ॥
क्षुल्लको वाऽऽसगुर्वाज्ञो गृहिसंस्कारमाचरेत् ॥१॥

अर्थः–अर्हन्मंत्रोपनीत परमश्रावक, ब्राह्मण, और प्राप्त करी है गुरुकी आज्ञा जिसने ऐसा क्षुल्लक

( श्रावक विशेष ) जिसका स्वरूप आगें लिखेंगे. इन दोनोंमेंसे कोइ एक गृहस्थोंको संस्कार करावे.

## प्रथम गर्भाधान संस्कारका विधि

जब गर्भधारण को पांच मास होवे, तब गर्भाधानविधि, गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणों ने कराना. गर्भाधान १, पुंसवन २, जन्म ३, नाम ४ और अंत ५, इन पांच संस्कारोंमें अवश्य कर्मके वास्ते मास दिनादिकोंकी शुद्धि न देखनी. । श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, मूल, पुष्य, मृगशीर्ष, येह नक्षत्र और रवि, मंगल, बृहस्पति, येह वार पुंसवनादिकर्मोंमें कहे हैं. । ईसवास्ते पांचमे मासमें शुभ तिथि, वार, नक्षत्रके दिनमें पतिको बलवान् चंद्रादि देखकर, देशविरतिगुरु जिसने स्नान करा है, चोटी बांधी है, उपवीत और उत्तरासंग धारण करा है, श्वेतवस्त्र पहिना है, पंचकक्षा धारण करा है, मस्तकमें चंदनका तिलक करा है, सुवर्णमुद्रासहित दक्षिणकर साविन्नीक प्रकोष्ठबद्ध पंचपरमेष्ठि मंत्रोद्दिष्ट पांच ग्रंथियुक्त दर्भसहित कौसुंभ सूत्रका कंकण है जिसके, तथा जिसने रात्रिमें ब्रह्मचर्य पाला है, जिसने उपवास, आचाम्ल, निर्विकृति, एकाशनादि प्रत्याख्यान करा है, संप्राप्तकरी है आजन्मसें यतिगुरुकी आज्ञा जिसने, ऐसे पूर्वोक्त विशेषणयुक्त, जैनब्राह्म

ए, अथवा क्षुल्लक, गृहस्थोंके संस्कारकर्म करणेके योग्य होता है. ॥

उक्तं च ॥

शांतो जितेंद्रियो मौनी दृढसम्यक्त्ववासनः ॥

अर्हत्साधुकृतानुज्ञः कुप्रतिग्रहवर्जितः ॥

जापार्थः–शांत, जितेंद्रिय, मौनी, दृढसम्यक्त्ववान्, अर्हन् और साधुकी आज्ञा करनेवाला, बुरा दान न लेवे, क्रोध मान माया लोजका जीपक, कुलीन, सर्व शास्त्रोंका जानकार, अविरोधी, दयावान्, राजा और रंकको समदृष्टिसें देखनेवाला, प्राणोंके नाश होते जी अपने आचारको न त्यागे सुंदर चेष्टावाला होवे, अंगहीन न होवे, सरल होवे, सदा सद्गुरुकी सेवा करने वाला होवे, विनीत, बुद्धिमान्, क्षांतिमान्, कृतज्ञ, दोप्रकारसें द्रव्यजावसें शुचि होवे; गृहस्थोंके संस्कार करनेमें ऐसा गुरु चाहिये.

सो पूर्वोक्त विशेषणविशिष्ट गुरु, गर्जाधान कर्ममें प्रथम गर्जवंतीके पतिकी आज्ञा लेवे. । और सो गर्जवंतीका पति, नखसें लेके शिखा (चोटी) पर्यंत स्नान करके, शुचि वस्त्र पहिनके निज वर्णानुसार उपवीत उत्तरीय वस्त्र उत्तरासंग करके, प्रथम शास्त्रोक्त बृहत्स्नात्रविधिसें अर्हत्प्रतिमाका स्नात्र करे. और तिस स्नात्रके पाणीको शुद्ध जाजनमें स्थापन करे. । तिसपीछे शास्त्रोक्त विधिसें गंध, पुष्प, धूप,

दीप, नैवेद्य, गीत, वादित्रोंकरके जिनप्रतिमाकी पूजा करे. । पूजाके अंतमें गुरु, गर्भवंतीको, अविध वायोंके हाथोंकरी स्नात्रोदककरके सिंचनरूप अभिषेक करवावे. । पीछे सर्व जलाशयोंके जलोंको एकत्र मिलाके, सहस्रमूलचूर्ण तिसमें प्रक्षेप करके, तिस जलको शांतिदेवीके मंत्रकरके, अथवा शांतिदेवीके मंत्रगर्भित स्तोत्रकरके मंत्रें. ॥

शांतिदेवीमंत्रो यथा ॥

"ॐ नमो निश्चितवचसे । भगवते । पूजामर्हते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकलमहासंपत्तिसमन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय । सर्वासुरामरस्वामिपूजिताय । अजिताय । भुवनजनपालनोद्यताय । सर्वदुरितौघनाशनकराय । सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाचशाकिनीप्रमथनाय । यस्येतिनाममंत्रस्मरणतुष्टा । भगवती । तत्पदभक्ता । विजयादेवी ॐ ह्रीं नमस्ते । भगवति । विजये । जय २ । परे । परापरे । जये । अजिते । । अपराजिते । जयावहे । सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवतुष्टिपुष्टिप्रदे । जय २ भव्यानां कृतसिद्धे । सत्वानां निर्वृतिनिर्वाणजननि । अभयप्रदे । स्वस्तिप्रदे भक्तानां जंतूनां शुभप्रदानाय नित्योद्यते । सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदे । जिनशासनरतानां शांतिप्रणतानां जनानां श्रीसंपत्कीर्त्तियशोव

र्द्धिनि । सलिलात् रक्ष २ । अनिलात् रक्ष २ । वि
पात् रक्ष २ । विषधरेभ्यो रक्ष २ । दुष्टग्रहेभ्यो रक्ष
२ । राज नयेभ्यो रक्ष २ । रोग नयेभ्यो रक्ष २ । रण
नयेभ्यो रक्ष २। राक्षसेभ्यो रक्ष २। रिपुगणेभ्यो रक्ष
२ । मारिभ्यो रक्ष २ । चौरेभ्यो रक्ष २ । ईतिभ्यो
रक्ष २ । श्वापदेभ्यो रक्ष २ । शिवं कुरु २ । शांतिं
कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । स्वस्तिं कुरु २ ।
नगवति । गुणवति । जनानां शिवशांतितुष्टिपुष्टि
स्वस्तिं कुरु २ । ॐ नमो ॐ ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् २।
स्वाहा " ॥ इति ॥

शांतिदेवी स्तोत्र ॥

"ॐ नमो नगवतेऽर्हते । शांतिस्वामिने । सकला
तिशेषकमहासंपत्समन्विताय । त्रैलोक्यपूजिताय ।
नमः शांतिदेवाय । सर्वामरसमूहस्वामिसंपूजिताय ।
नुवनपालनोद्यताय । सर्वदुरितविनाशनाय । सर्वा
शिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहनूतपिशाचमारिमाकिनी
प्रमथनाय । नमो नगवति । विजये । अजिते । अ
पराजिते । जयंति । जयावहे । सर्वसंघस्य । नद्रक
ल्याणमंगलप्रदे । साधूनां शिवशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्ति
दे । नव्यानां सिद्धिवृद्धिनिवृतिनिर्वाणजननि। सत्त्वा
नां अनयप्रदाननिरते । नक्तानां शुनावहे । सम्यग्
दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते । जिनशासन
निरतानां श्रीसंपत्यशोवर्द्धिनि । रोगजलज्वलनविष

विषधरदुष्टज्वरव्यंतरज्वरराक्षसरिपुमारि चौरेतिश्वा पदोपसर्गादिनयेन्यो रक्ष २। शिवं कुरु २। शांतिं कुरु २। तुष्टिं कुरु २। पुष्टिं कुरु २। स्वस्तिं कुरु २। न गवतिश्रीशांतितुष्टिपुष्टिस्वस्तिं करु २। ॐ नमो नमो हुँ क्ष: यः क्षः ह्री फट् २ स्वाहा"॥ इति॥

इस स्तोत्र करके अथवा पूर्वोक्त मंत्र करके सहस्र मूल चूर्ण सर्व जलाशयोंके जलको सातवार मंत्रके, पुत्रवाली सधवा स्त्रीयोंके हाथेंकरी मंगलगीतोंके गातेहुए गर्नवंतीको स्नानकरावे, सुगंधका अनुलेपन करी सदश वस्त्र (विवाह समय पहिरनेका वस्त्र) प हिराके, संपत्तिअनुसार आनरण धारण करवाके, पतिके साथ वस्त्रांचलका ग्रंथिबंधन करके, पतिके वामेपासे शुन आसनके ऊपर स्वस्तिक मंगलकरके, गर्नवंतीको बिठलावे ग्रंथियोजनमंत्रो यथा॥

ॐ अर्हं। स्वस्ति संसारसंबंधबद्धयोः पतिनार्ययोः॥
युवयोरवियोगोस्तु नववासांतमाशिषा॥ १॥

विवाहको वर्जके, सर्वत्र इसीमंत्रकरके दंपतीका (स्त्रीनर्त्ताका) ग्रंथिबंधन करना.। तदपीछे गुरु, तिस गर्नवंतीके आगे शुन पट्टे ऊपर पद्मासन लगाके बैठके, मणिस्वर्णरूप्यताम्रपत्रके पात्रोंमें जिनस्नात्रके जलसंयुक्त तीर्थोदकको स्थापन करके, आर्यवेदमंत्र पढके, कुशाग्र बिंदुयोंकरके, गर्नवं तीको सींचन करे.

आर्यवेदमंत्रो यथा ॥

"ॐ अर्हं । जीवोसि । जीवतत्त्वमसि । प्राण्यसि । प्राणोसि । जन्मासि । जन्मवानसि । संसार्यसि । संसरन्नसि । कर्मवानसि । कर्मबद्धोसि।नवभ्रांतोसि। नवविभ्रमिषुरसि । पूर्णाङ्गोसि । पूर्णपिण्डोसि । जातोपाङ्गोसि । जायमानोपांङ्गोसि । स्थिरो नव नन्दिमान् नव । वृद्धिमान् नव । पुष्टिमान् नव । ध्यातजिनो नव । ध्यातसम्यक्त्वो नव । तत्कुर्या येन न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवासं गर्नवासं प्राप्नोषि । अर्हं ॐ ॥"

इस मंत्रकरके दक्षिणहाथमें धारण करे कुशाग्र तीर्थोदक बिंदुयोंकरके गर्नवंतीके शिर और शरीर ऊपर सातवार सींचन करे. । तदपीछे पंच परमेष्ठिमंत्र पठनपूर्वक दंपतीको आसनसें उठायकरके, जिनप्रतिमाके पास लेजाके शक्रस्तव पाठ करके जिनवंदन करवावे. । यथाशक्ति फलमुद्रा वस्त्र स्वर्णादि जिनप्रतिमाके आगे ढोवे तदपीछे गर्नवंती स्वसंपत्तिके अनुसार वस्त्रानरण द्रव्य सुवर्णादिदान गुरुको देवे. । तदपीछे गुरु, पतिसहित गर्नवंतीको आशीर्वाद देवे. यथा ॥

ज्ञानत्रयं गर्नगतोपि विंदन् संसारपारैकनिबद्धचित्तः ॥ गर्नस्य पुष्टिं युवयोश्च तुष्टिं युगादिदेवः प्रकरोतुनित्यम् ॥ १ ॥

तदपीछे आसनसें उठायके ग्रंथिवियोजन करे. ग्रंथिवियोजनमंत्रो यथा ॥

ॐ अर्हं । ग्रंथौ वियोज्यमानेऽस्मिन् स्नेहग्रंथिः स्थिरो स्तु वां ॥ शिथिलोस्तु नवग्रंथिः कर्मग्रंथिर्दृढीकृतः॥१॥

इस मंत्रकरके ग्रंथि खोलके धर्मागारमें दंपतीको लेजाके गुरु को वंदना करवावे, और साधुयोंको निर्दोष भोजन वस्त्र पात्रादि दिलवावे. ॥

तदपीछे स्वकुलाचारयुक्तिकरके कुलदेवता, गृहदेता, पुरदेवतादि पूजन जानना.

॥ जैन वेद मंत्रोत्पत्ति ॥

यहां जो कहाहै कि,जैनवेदमंत्र;सो कथन करतेहैं. यथा आदिदेव ( ऋषभदेव ) का पुत्र.अवधिज्ञानवान्, आदिचक्री, भरत राजा,श्रीमदादिजिनरहस्योपदेशसें प्राप्त किया है सम्यक् श्रुतज्ञान जिसने–सो भरत राजा–सांसारिक व्यवहारसंस्कारकी स्थितिकेवास्ते, अर्हन्की आज्ञा पाकरके, धारे हैं ज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रय, करणा करावणा अनुमतिसें त्रिगुणरूप तीनसूत्र–मुद्राकरके चिन्हितवक्षःस्थलवाले ब्राह्मणोंको (माहनोंको ) पूज्यतरीके मानता हुआ, और तिस अवसरमें अपनी वैक्रियलब्धिसें चार मुखवाला होके, चार वेदोंको उच्चारण करता भया. तिनके नाम–संस्कारदर्शन १, संस्थापनपरामर्शन २, तत्त्वावबोध ३, विद्याप्रबोध ४, । सर्व नयवस्तु कथन

करनेवाले इन चारां वेदोंको, माहनोंको पठ न कराता हुआ । तदपीछे वह माहन, सात तीर्थ करोंके तीर्थतक अर्थात् चंद्रप्रभतीर्थकरके तीर्थतक सम्यक्त्वधारी रहें, और आर्हतश्रावकोंको व्यवहार दिखाते रहें, तथा धर्मोपदेशादि करते रहें । तदपी छे नवमे तीर्थकर श्रीसुविधिनाथपुष्पदंतके तीर्थके व्यवछेद हुए, तिस वीचमें तिन माहनोंने परिग्र हके लोभी होके, स्वछंदसें तिन आर्यवेदों कि ज गे कुछकसुनी सुनाइ वातो लेके नवीन श्रुतियां र ची, तिनमें हिंसक यज्ञादि और अनेक देवतायोंकी स्तुति (प्रार्थना) रची (क्रमसें ऋग्, यजुः साम, अथ र्व,) नाम कल्पना करके, मिथ्यादृष्टिपणेको प्राप्तकरे तब व्यवहारपाठसें पराङ्मुख अर्थात् परमार्थरहि त मनःकल्पित हिंसक यज्ञप्रतिपादकशास्त्रोसें परा ङ्मुख, ऐसे श्रीशीतलनाथादिके साधुयोंने तिन हिं सक वेदोको छोरुके, जिनप्रणील आगमकोंही प्रमा णभूत माने । तिन ब्राह्मणोमेंसें भी, जिन माहनोंने ( ब्राह्मणोने ) सम्यत्क न त्यागन करा, अर्थात् जे माहन पुन॰ तीर्थंकरोके उपदेशसें सम्यत्तव पाके दृढ रहे,तिनोके संप्रदायमें आजभी भरत प्रणीत वेदका लेश कर्मांतरव्यवहार गत सुनते हैं; सोही यहां कहते हैं॰

यत उक्तमागमे ॥
सिरिजरहचक्कवट्टी आरियवेयाण विस्सुउं कत्ता ॥
माहणपढणहमिणं कहिअं सुहझाणववहारं ॥ १ ॥
जिणतिहे वुछिन्ने मिछत्ते माहणेहिं ते ठविया ॥
असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्याः-श्रीजरतचक्रवर्त्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध है. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुज ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहारकेवास्ते । जिन तीर्थकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रंथसे जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥ पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३, दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, द्रव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८, सदशवस्त्र दो (चुनरी) ९, शुजआसन १०, शुजपट्ट ११, स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली स्त्रीयां १४ और गर्जवंतीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि.

## ॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्भके उत्पन्न हुए, तिसके श
रीरमें पूर्णभाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका
सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य,
हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र; और मंगल, गुरु
आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत है । रिक्ता
दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी
तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथि
यां वर्जके, गंडांत और अशुभ नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त
वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए,
पुंसवनका आरंभ करे; सो ऐसें है । पूर्वोक्त वेष, और
स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा न हुए, ग
र्भाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेष औरकेशवेष धा
रण करे है, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्भवं
तीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे
तब मंगलगीतगानपूर्वक आभरणसहित अविधवा
स्त्रीयोकरके, अभ्यंग उद्वर्त्तन जलाभिषेकोंकरके स्नान
करावे. । तदपीछे प्रभात हुए नवीन वस्त्र गंधमा
ल्यभूषित गर्भवंतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामें
अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा
तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पंचामृतकरके
बृहत्स्नात्रविधिसें स्नात्र करावे । तदपीछे सहस्त्रमू
लीस्नात्र प्रतिमाको करे. । पीछे तीर्थोदक स्नात्रकरे
पीछे सर्वस्नात्रोदकोंको सुवर्णरूप्यताम्रादि भाजनमें

यत उक्तमागमे ॥

सिरिजरहचक्कवट्टी आरियवेयाण विस्सुउं कत्ता ॥
माहणपढणछमिणं कहिअं सुहझाणववहारं ॥ १ ॥
जिणतिछे वुछिन्ने मिछत्ते माहणेहिं ते ठविया ॥
असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या;–श्रीजरतचक्रवर्त्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध हे. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुज ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहारकेवास्ते । जिन तीर्थकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रंथसे जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥ पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३, दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, द्रव्य ६, फल ७, नैवेद्य ८, सदशवस्त्र दो (चुनरी) ९, शुजआसन १०, शुजपट्ट ११, स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली स्त्रीयां १४ और गर्जवंतीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि.

## ॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्भके उत्पन्न हुए, तिसके श
रीरमें पूर्णीभाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका
सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य,
हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र, और मंगल, गुरु
आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत है. । रिक्ता
दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी
तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथि
यां वर्जके, गंडांत और अशुभ नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त
वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए,
पुंसवनका आरंभ करे; सो ऐसें है.। पूर्वोक्त वेष, और
स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा न हुए, ग
र्भाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेष औरकेशवेष धा
रण करे है, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्भवं
तीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे
तब मंगलगीतगानपूर्वक आभरणसहित अविधवा
स्त्रीयोंकरके, अभ्यंग उद्वर्त्तन जलाभिषेकोंकरके स्नान
करावे. । तदपीछे प्रभात हुए नवीन वस्त्र गंधमा
ल्यभूषित गर्भवंतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामें
अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा
तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पंचामृतकरके
बृहत्स्नात्रविधिसें स्नात्र करावे. । तदपीछे सहस्रमू
लीस्नात्र प्रतिमाको करे. । पीछे तीर्थोदक स्नात्रकरे
पीछे सर्वस्नात्रोदकोंको सुवर्णरूप्यताम्रादि भाजनमें

यत उक्तमागमे ॥
सिरिजरहचक्कवट्टी आरियवेयाण विस्सुउ कत्ता ॥
माहणपढणछमिणं कहिअं सुहकाणववहारं ॥ १ ॥
जिणतिछे वुछिन्ने मिछत्ते माहणेहिं ते ठविया ॥
असंजयाण पूया अप्पाणं कारिया तेहिं ॥ २ ॥

व्याख्या;–श्रीजरतचक्रवर्त्ती आर्यवेदोंका कर्त्ता प्रसिद्ध है. जरतने आर्यवेद किसवास्ते करे, माहनोंके पढनेके वास्ते, शुज ध्यानकेवास्ते, और जगत्व्यवहार केवास्ते. । जिन तीर्थकरके तीर्थके व्यवछेद हुए वह आर्यवेद तिन माहनोंने मिथ्यामार्गमें स्थापन करे, और असंयतिहोके तिनोने अपनी पूजा जगत्में करवाइ इन वेदोंका विशेष निर्णय जैनतत्त्वादर्शग्रंथसे जानना ॥

इस गर्जाधानसंस्कारमें इतनी वस्तु चाहिये ॥ पंचामृत स्नात्र १, सर्वतीर्थोदक २, सहस्रमूलचूर्ण ३, दर्ज ४, कौसुंजसुत्र ५, ड्व्य ६, फल ७, नैवेद्य ८, सदशवस्त्र दो (चुनरी) ए, शुजआसन १०, शुजपट्ट ११, स्वर्णताम्रादिजाजन १२, वादित्र १३, पतिवाली स्त्रीयां१४ और गर्जवंतीका पति १५,

इति गर्जाधान संस्कार विधि

## ॥ अथ पुंसवन संस्कार वर्णन ॥

गर्जसें आठ मास व्यतीत हुए, सर्व दोहदोंके

पूर्ण हुए, सांगोपांग गर्नके उत्पन्न हुए, तिसके श रीरमें पूर्णीनाव प्रमोदरूप स्तनोंमें दूधकी उत्पत्तिका सूचक, पुंसवन संस्कार करना । मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिर, श्रवण, येह नक्षत्र; और मंगल, गुरु आदित्य, येह वार, पुंसवन कर्ममें संमत है । रिक्ता दग्धा, क्रूरा, तीन दिनको स्पर्शनेवाली, अवम् (टूटी तिथी) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, ये तिथि यां वर्जके; गंमांत और अशुन नक्षत्रवर्जित, पूर्वोक्त वारनक्षत्रसहित दिनमें पतिको चंद्रमाके बल हुए, पुंसवनका आरंन करे, सो ऐसें है । पूर्वोक्त वेष,और स्वरूपवाला गुरु पतिके समीप हुए, अथवा न हुए,ग र्नाधान कर्मके अनंतर, जो वस्त्रवेष औरकेशवेष धा रण करे है, तिसही वस्त्रवेष और केशवेषवाली गर्नवं तीको, रात्रिके चौथे प्रहरमें तारेसहित आकाशहोवे तब मंगलगीतगानपूर्वक आनरणसहित अविधवा स्त्रीयोंकरके,अन्यंग उद्वर्त्तन जलानिषेकोंकरके स्नान करावे । तदपीछे प्रनात हुए नवीन वस्त्र गंधमा ल्यनूषित गर्नवंतीको साक्षिणी करके, घरदेहरामे अर्हत्प्रतिमाको तिसका पति, वा तिसका देवर, वा, तिसके कुलका पुरुष, वा गुरु, आप पंचामृतकरके बृहत्स्नात्रविधिसें स्नात्र करावे. । तदपीछे सहस्रमू लीस्नात्र प्रतिमाको करे । पीछे तीर्थोदक स्नात्रकरे पीछे सर्वस्नात्रोदकोको सुवर्णरूप्यताम्रादि-नाजनमें

स्थापन करके, शुभासन ऊपर बैठी हुई साक्षीभूत करे हैं पतिदेवरादि कुलज जिसने, ऐसी गर्भवंतीको, दक्षिणहस्तमें कुशा धारण करके, कुशाग्रविंदुयोंकरके स्नात्रोदकसें गर्भवंतीके शिरस्तनउदरको सिंचन करता हुआ, इस वेदमंत्रको पढे. ॥

"॥ ॐ अर्हं । नमस्तीर्थंकरनामकर्मप्रतिबंधसंप्राप्तसुरासुरेंद्रपूजायार्हते । आत्मन् त्वमात्मायुः कर्मबंधप्राप्यं मनुष्यजन्मगर्भावासमवाप्नोषि तद्भव जन्मजरामरणगर्भवासविछित्तये प्राप्तार्हद्धर्मः अर्हद्भक्तः सम्यक्त्वनिश्चलः कुलभूषणः सुखेन तव जन्मास्तु । भवतु तव त्वन्मातापित्रोः कुलस्याभ्युदयः । ततः शांतिः पुष्टिः तुष्टिर्वृद्धिर्ऋद्धिः कांतिः सनातनी अर्हॐ॥

इस वेदमंत्रको आठवार पढता हुआ, गर्भवंतीको अभिषेचन करे. । तदपीछे गर्भवंती आसनसें ऊठके सर्वजातिके आठ २ फल, स्वर्णरूप्यमयी मुद्रा आठ, प्रणाम (नमस्कार) पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे ढोवे. । तदपीछे गुरुके चरणोंको नमस्कार करके, दो वस्त्र, सोनेरूपेकी आठ मुद्रा, और तंबोलसहित आठ सुपारी गुरुको देवे । तदपीछे धर्मागार (पोषधशाला) में जाकर साधुयोंको वंदना नमस्कार करे, और साधुयोंको यथाशक्तिसें शुद्ध अन्न वस्त्र पात्र देवे. । कुलवृद्धोंको नमस्कार करे. ॥

तदपीछे स्वकुलाचारकरके कुलदेवतादिपूजन जानना.

पंचामृत १, स्नात्रवस्तु २, स्त्रीके नवीन वस्त्र ३, नवीन वस्त्रयुगल ४, स्वर्णकी आठ मुद्रा ५. रूपेकी आठ मुद्रा ६, सोनेकी ७, और रूपेकी ७ एवं षोमश (१६) मुद्रा और ७, फलकी जाति ७; मूलसहित दर्जण, तांबूल १०, सुगंध पदार्थ ११, पुष्प १२, नैवेद्य १३, सधवा स्त्रीयां १४, गीत मंगल १५, इतनी वस्तु पुंसवनसंस्कारमें चाहिये ॥

इति द्वितीय पुंसवन संस्कार विधि

अथ तृतीयं जन्मनामा संस्कार वर्णनं ॥

जन्मसमय हुए, ज्योतिषि सहितगुरु,सूतिकागृह के निकट गृहमें एकांतस्थानमें जहां रौला न सुनाइ देवे, स्त्री, बाल, पशु, जहां न आवे, तहां घटियंत्र ( घमी–कलाक ) सहित उपयोगसहित चित्तवाला होकर, परमेष्ठिजापमें तत्पर हुआ थका रहे. । यहां पहिलां तिथि वार नक्षत्रादि देखना न चाहिये क्यों कि, यह जीव कर्म और कालके अधीन है. ॥

बालकके जन्म हुए समीप रहा हुआ गुरु, ज्यो तिषिको जन्मक्षण जाननेके वास्ते आज्ञा करे तिसने जी सम्यक् जन्मकाल, करगोचर करके धारण करना तदपीछे बालकके पिता, पितृव्य ( चाचा-काका ) पितामहोनें, नाल विना छेद्यां गुरुका, और ज्योति षिका बहुत वस्त्र आजूषणवित्तादिसें पूजन करना. क्योंकि, नाल छेद्यांपीछे सूतक हो जाता है. । गुरु

बालके पिता, पितामह ( दादा ) आदिकको आशी र्वाद देवे. ॥

यथा ॥

'ॐ अर्हं कुलं वो वर्द्धतां । संतु शतशः पुत्रप्रपौत्राः । अक्षीणमस्त्वायुर्द्धनं यशः च अर्हं ॐ ॥' इति वेदाशीः ॥

यो मेरुशृंगे त्रिदशाधिनाथैर्दैत्याधिनाथैस्सपरिच्छदैश्च ॥ कुंभामृतैः संस्नपितस्सदेव आद्यो विदध्यात् कुलवर्द्धनंच ॥ १ ॥

ज्योतिषिकाशीर्वादो यथा शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

आदित्यो रजनीपतिः क्षितिसुतः सौम्यस्तथा वाक्पतिः शुक्रः सूर्यसुतो विधुंतुदशिखिश्रेष्ठा ग्रहाः पांतुवः ॥ अश्विन्यादिजमएफलं तदपरो मेषादिराशिक्रमः कल्याणं पृथुकस्य वृद्धिमधिकां संतानसप्यस्य च ॥१

तदपीछे लग्न धारण करके, ज्योतिषिके स्वघर गये हुए, गुरु सूतिकर्मकेवास्ते कुलवृद्धा स्त्रीयोको, और दाईयोंको निर्देश करे। अन्य घरमें रहाही बालकको स्नान करानेवास्ते जलको मंत्रके देवे ॥

जलाभिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

॥ॐ अर्हं । नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले, यैर्मेरुशृङ्गे स्नपितो जिनेन्द्रः॥ स्नानोदकं तस्य भवत्विदं च,शिशोर्महामङ्गलपुण्यवृद्धै ॥ १ ॥

इस मंत्रकरके सात वार जलको मंत्रें, तिस जल करके कुलवृद्धा स्त्रीयों बालकको स्नान करावे. । औ र अपनेश्कुलाचारके अनुसार नालछेद करे. तदपीछे गुरु स्वस्थानमें वैठाही चंदन, रक्तचंदन, विल्वका ष्ठादि दग्ध करके तिनकी नस्म श्वेतसर्षप और लव ण मिश्रित करके पोट्टलिका बांधे.

रक्षाभिमंत्रणमंत्रो यथा ॥

" ॐ ह्रीं श्रीअंवे जगदंवे शुन्ने शुनंकरे अमुं बा लं नूतेन्यो रक्ष २ । ग्रहेन्यो रक्ष २ । पिशाचेन्यो रक्ष २ । वेतालेन्यो २। शाकिनीन्यो रक्ष २। गगनदे वीन्यो रक्ष २ । डुष्टेन्यो रक्ष २ । शत्रुन्यो रक्ष २ । कार्मणेन्यो रक्ष २ । दृष्टिदोषेन्यो रक्ष । २ जयं कुरु विजयं कुरु । तुष्टिं कुरु । पुष्टिं कुरु । कुलवृद्धिं कुरु । श्रीं ह्रीं ॐ नगवति श्रीअंबिके नमः ॥

इस मंत्रकरके सातवार मंत्रित रक्षापोट्टलीको काले सूत्रसें बांधके, लोहेका टुकमा, वरुणमूलका टुकडा, रक्तचंदनका टुकमा और कौडी, इनोसहित रक्षापोट्टलिको कुलवृद्धा स्त्रीयोके पास बालकके हा थ ऊपर बंधावे. ॥

सांवत्सर(पंचांग)घटीपात्र, चंदन, रक्तचंदन, समी पमें एकांत गृह,सरसव,लवण कौशेय कृष्णसूत्र,कौमी गीतमंगल, लोहा,रक्षा,वस्त्र,दक्षिणावास्ते धन, सूति का, कुलवृद्धा, सर्व जलाशयका जल, जन्मसंस्कारमें

इतनी वस्तु चाहिये. ॥ इतिजन्म सं० विधि; ॥ अथ कदाचित् अश्लेषामें, ज्येष्टामें, मूलमें, गंडांतमें जन्मामें बालकका जन्म होवे तो बालकको, बालकके मातापिताको, बालकके कुलको, दुःख, दारिद्र, शोक, मरणादि कष्ट होवे, इसवास्ते बालकका पिता और कुलज्येष्ट (कुलका बडा) शांतिकविधिमें कहे विधानके करेविना बालकका मुख न देखे ॥

इति जन्मसंस्कार विधिः

अथ चतुर्थ सूर्यचंद्रदर्शन संस्कार वर्णन

तीसरे दिन गुरु समीपके घरमें अर्हत् पूजन पूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्वर्णताम्रमयी वा रक्त चंदनमयी सूर्यकी प्रतिमा स्थापन करे.तदपीछे स्नान करके अलंकृत बालककी माताको जिसने दोनों हाथोंमें बालकको धारण किया है ऐसी माताको प्रत्यक्ष सूर्यके सन्मुख लेजाके, वेदमंत्रको उच्चारण करता हुआ, गुरु पुत्रको सूर्यका दर्शन करावे ॥

सूर्यवेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्ह । सूर्योऽसि । दिनकरोऽसि । सहस्रकिरणोऽसि । विभावसुरसि । तमोपहोऽसि । प्रियंकरोऽसि । शिवंकरोऽसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोऽसि । विततविमानोऽसि । तेजोमयोऽसि । अरुणसारथिरसि । मार्त्तंडोऽसि । द्वादशात्माऽसि । चक्रबांध

वोऽसि। नमस्ते भगवन् प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं प्रमोदं कुरु २ सन्निहितो भव अर्हं ॥"

ऐसें गुरुके पठन करे हुए, सूर्यको देखके, माता पुत्रसहित, गुरुको नमस्कार करे. गुरु पुत्रसहित माताको आशीर्वाद देवे. ।

यथा। आर्या ॥

सर्वसुरासुरवंद्यः कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ॥
भूयात्रिजगच्चक्षुर्मंगलदस्ते सपुत्रायाः ॥ १ ॥

सूतकमें दक्षिणा नहीं है. । तदपीछे गुरु स्वस्थानमें आयकर जिन प्रतिमाको और स्थापित सूर्यको विसर्जन करे. माता और पुत्रको सूतकके भयसें तहां जिनप्रतिमाके पास न लावे. तिस दिनमें ही संध्याकालमें गुरु जिनपूजापूर्वक जिनप्रतिमाके आगे स्फटिकरूप्यचंदनमयी चंद्रमाकी मूर्ति स्थापन करे, तिस चंद्रमाकी मूर्तिका शांतिकादिक प्रक्रमोक्त विधिकरके पूजन करे तदपीछे तैसेंही सूर्यदर्शनरीतिसें चंद्रमाके उदय हुए प्रत्यक्ष चंद्रसन्मुख माता और पुत्रको ले जाके, वेदमंत्र उच्चार करता हुआ, मातापुत्र दोनोंको चंद्रका दर्शन करावे. ॥

चंद्रस्य वेदमंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं। चंद्रोऽसि। निशाकरोऽसि । सुधाकरोऽसि। चंद्रमा असि । ग्रहपतिरसि। नक्षत्रपतिरसि। कौमुदीपतिरसि । निशापतिरसि। मदनमि

अथ षष्टमं षष्ठीसंस्कारस्वरूपं ॥

छट्ठे दिनमें संध्याके समयमें गुरु प्रसूतिघरमें आकरके षष्ठीपूजन विधिका आरंभ करे, षष्टीपूजनमें सूतक नही गिणना. यत उक्तम् ।

स्वकुले तीर्थमध्ये च तथावश्ये बलादपि ॥
षष्ठीपूजनकाले च गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

इसवचनसें ॥ सूतिकागृहकी भींत और भूमि दोनोंको सधवायोंके हाथसें गोबरसें लेपन करावे, । तदपीछे दृश्य शुक्रबृहस्पतिके वर्त्तनेवाली दिशाके भींतभागको खडी आदिसें धवल (श्वेत) करावे, और भूमिभागको चौंकमंडित करावे. । तदपीछे श्वेत भींतभागके ऊपर सधवाके हाथेंकरी कुंकुम हिंगुलादिवर्णोसें आठमाताओंको उर्ध्वा, (खमीयां) आठ बैठी, और आठ सुती, लिखवावे. कुलक्रमांतरमें गुरुकर्मांतरमें षट् (६) षट् (६) लिखनीया. । तदपीछे सधवा स्त्रीयोंके गीतमंगल गाते हुए चौंकमें शुभासनके ऊपर बैठा हुआ गुरु, अनंतरोक्त पूजाक्रम करके मातायोंको पूजे. यथा ॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने श्वेतवर्णे । इह षष्ठीपूजने आगच्छ २ स्वाहा ॥"

तीनवार पढके पुष्पकरके आह्वान करे॥तदपीछे॥

"॥ ॐ ह्रीं नमो भगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त

कपद्माक्षसूत्रकरे। हंसवाहने। श्वेततवर्णे। मम सन्नि- हिता जव २ स्वाहा ॥"

तीनवार पढके सन्निहित करे ॥ पीठे ॥

"॥ ॐ ह्रीँ नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । इह तिष्ठ २ स्वाहा ॥"

इति । तीनवार पढके स्थापन करे ॥ पीठे ॥

"॥ ॐ ह्रीँ नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणा पुस्तकपद्माक्षसूत्रकरे। हंसवाहने । श्वेतवर्णे । गंधं गृह्ण २ स्वाहा ॥"

चंदनादि गंध चढावे ॥

"ॐ ह्रीँ नमो जगवति । ब्रह्माणि । वीणापुस्त कपद्माक्षसूत्रकरे । हंसवाहने । श्वेतवर्णे । पुष्पं गृह्ण २ स्वाहा ॥"

इसीतरे मंत्रपूर्वक ।

"धूपं गृह्ण २ ।' दीपं गृह्ण २ ।' 'अक्षतान् गृह्ण २ ।' 'नैवेद्यं गृह्ण २ स्वाहा ॥"

ऐसे एकएकवार मंत्रपाठपूर्वक इन पूर्वोक्त गंधा दिवस्तुयोंकरके जगवतीको पूजे. ॥ ऐसेंही अन्य सात मातायोंकी पूजा करणी. ।

विशेष मंत्रोंमें है, सो लिखते हैं. ॥

"ॐ ह्रीँ नमो जगवति । माहेश्वरि । शूलपि नाककपालखट्वांगकरे। चंद्रार्द्धललाटे। गजचर्मावृते।

र्थोदक, सर्वौषधिजल और तीर्थजल, इनोंकरके स्नान कराये हुए बालकको वस्त्राभरणादि पहिनावे. ॥ तथा स्त्रीयोंको सूतकदिनोंके पूर्ण हुएभी,आर्द्र नक्षत्रोंमें, और सिंह गजयोनि नक्षत्रोंमें सूतकस्नान नही करावणा. । आर्द्र नक्षत्र दश है. । कृत्तिका १, भरणी २, मूल ३, आर्द्रा ४, पुष्य ५, पुनर्वसु ६, मघा ७, चित्रा ८, विशाखा ९, श्रवण १०, ये दश आर्द्र नक्षत्र हैं; इनमें स्त्रीको सूतकस्नान न करावे. यदि स्नान करे तो, फिर प्रसूति न होवे. ॥ धनिष्ठा १, पूर्वाभाद्रपदा २, ये दो सिंहयोनि नक्षत्र जाणने; और भरणी १, रेवती २, ये दो नक्षत्र गजयोनि जाणने. ॥ कदाचित् सूतक पूर्ण हुए दिनमें इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंमेंसे कोइ नक्षत्र आवे, तब एक एक दिनके अंतरे शुचिकर्म करणा. ॥ पूजावस्तु, पंचगव्य, स्वगोत्रज जन, तीर्थोदक, शुचिकर्मसंस्कारमें चाहिये. ॥

इति सप्तमशुचिकर्मसंस्कार विधि

## अथ नामकरणसंस्कार विधि ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चर, इन नक्षत्रोंमें पुत्रका जातकर्म करना. अथवा गुरु वा शुक्र, चतुर्थ स्थित होवे, तब नाम करना, सज्जन पुरुषोंको सम्मत है. ॥ शुचिकर्मदिनमे अथवा तिसके दूसरे वा तीसरे

शुन्न दिनमें बालकको चंड्रमाके बल हुए, ज्योतिषि कसहित गुरु तिसके घरमें शुन्नस्थानमे शुन्नासनके ऊपर बैठा हुआ, पंचपरमेष्टिमंत्रको स्मरण करता हुआ रहे । तिस अवसरमें बालकके पिता, पिता महादि, पुष्प फलकरके हाथ परिपूर्ण करके ज्योति षिकसहित गुरुको साष्टांग नमस्कार करके ऐसें कहे. हे नगवन् ! पुत्रका नामकरण करो. । तब गुरु तिन पिता, पितामहादिको, तिसके कुलके पुरुषोंको, और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको, आगे बैठाके, ज्योतिषिको जन्म लग्न कहनेकेवास्ते आदेश करे. । तब ज्योतिषिक शुन्नपट्टेऊपर खटिका (खमी) करके तिस बालक के जन्मलग्नको लिखे, स्थान १ में ग्रहोंको स्थापन करे. तब बालकके पितापितामहादि जन्मलग्नकी पूजा करे. । तिसमे स्वर्णमुद्रा १२, रूप्यमुद्रा १२, ताम्रमुद्रा १२, क्रमुक (सुपारी) १२, अन्य फल जाति १२, नालिकेर १२, नागवल्लीदल (पान) १२. इनोंकरके द्वादश लग्नका पूजन करे। इनही नव नव वस्तुयोंकरी नव ग्रहोंका पूजन करे. ऐसें लग्न के पूजे हुए, तिनोंके आगे ज्योतिषिक लग्न विचार कहे. वेन्नी उपयोगसहित सुणे. । तदपीछे व्याव र्णनसहित लग्नको ज्योतिषिक कुंकुमाक्षरोंकरके पत्रे में लिखके, कुलज्येष्टको सौंप देवे. । बालकके पिता दिकोंने ज्योतिषिका अपनी संपदानुसार वस्त्र

स्वर्णदान करके सन्मान करणा. और ज्योतिषिक भी तिनोंके आगे जन्मनक्षत्रानुसारे, नामाक्षरको प्रकाश करके, स्वघरको जावे. तदपीछे गुरु, सर्व कुलपुरुषोंको और कुलवृद्धा स्त्रीयोंको आगे स्थापन करके (विठलाके) तिनोंकी सम्मतिसें हाथमें दूर्वा लेके परमेष्टिमंत्रपठनपूर्वक (कुलवृद्धाके) कानमें जातिगुणोचित नाम सुणावे. । तिसपीछे कुलवृद्धा नारीयां गुरुकेसाथ पुत्र गोदीमें लीया तिसकी माता शिविकादि नरवाहनमें वैठी हुई, वा पादचारिणी अविधवायोंके गीत गाते हुए, जिनमंदिरमें जावे.। तहां मातापुत्र दोनों जिनको नमस्कार करे, माता चौवीस २ सुवर्णमुद्रा, रूप्यमुद्रा, फलनालिकेरादि करके जिनप्रतिमाके आगे ढौकनिका करे. । तदपीछे देवके आगे कुलवृद्धा स्त्रीयां वालकका नाम प्रकाश करें. चैत्य न होवे तो, घरदेरासरकी प्रतिमाके आगे यह विधि करना. तदपीछे तिसही रीतिसें पौषध शालामें आवे, तहां प्रवेश करके भोजनमंडली स्थानमें मंडलीपट्ट स्थापन करके तिसकी पूजा करे. मंडलीपूजाका विधि यह है. पुत्रकी माता "श्रीगौतमाय नमः" ऐसा उच्चार करती हुई, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य करके मंडलीपट्टकी पूजा करे. मंडलीपट्टोपरि स्वर्णमुद्रा १०, रूप्यमुद्रा १०, क्रमुक १०८, नालिकेर २९, वस्त्रहस्त २९, स्थापन

करे. । तदपीछे पुत्रसहित माता तीन प्रदक्षीणा करके यतिगुरुको नमस्कार करे. । नव सोनेरूपेकी मुद्रा करके गुरुके नवांगकी पूजा करे. । निरुंछना और आरात्रिका ( आरती ) करके क्षमाश्रमणपूर्वक हाथ जोडके, "वासखेवंकरेह" ऐसा पुत्रकी माता कहे. तब यतिगुरु वासक्षेपको, ॐकार ह्रीं कार श्रींकार सन्निवेशकरके कामधेनुमुद्राकरके, वर्द्धमान विद्याकरके जपके, मातापुत्र दोनोके शिरपर क्षेप करे. तहां नी तिनके शिरमें ॐ ह्रीं श्रीं अक्षरोका सन्निवेश करे. । तदपीछे बालककों अक्षतसहित चंदनकरके तिलक करके, कुलवृद्धाके अनुवाद करके, नाम स्थापन करे. । तदपीछे तिसही युक्ति करके सर्व अपने घरको आवे. । यतिगुरुयोंको शुद्ध आहार वस्त्र पात्रका दान देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र अलंकार स्वर्णदान देवे. ॥ नांदी, मंगलगीत, ज्योतिषिकसहित गुरु, प्रभूत फल, और मुद्रा, विविधप्रकारके वस्त्र, वास, चंदन, दूर्वा, नालिकेर, धन, इतनी वस्तु नामसंस्कार कार्यमे चाहिये. ॥

इति अष्टम नामकरणसंस्कार विधिः

## ॥ अथ नवमं अन्नप्राशनविधि ॥

रेवती, श्रवण, हस्त, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, चित्रा, रोहिणी, उत्तरात्रय, धनिष्टा, पुष्य, इन निर्दोष नक्षत्रोंमें और रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, गुरु

वारोंमें पुरुषोंको नवीन अन्नप्राशन ( खाना ) श्रेष्ट हैं. और बालकोंको अन्नभोजनरिक्तादि कुतिथीयां और कुयोगोंको वर्जके श्रेष्ट है. । पुत्रको छठे मासमें, और कन्याको पांचमे मासमें अन्नप्राशन, सत्पुरुषों ने कहा है. । जे नक्षत्र कहे तिनमें और पूर्वोक्त वारमें सद्ग्रहोंके विद्यमान हुए अमावासी और रिक्ता, तिथीको वर्जके शुभ तिथीमें करणा. क्यों कि, लग्नमें रवि होवे तो, कुष्टी होवे; मंगल होवे तो, पित्तरोगी होवे; शनि होवे तो, वातव्याधि होवे; क्षीणचंद्र होवे तो, भीख मांगनेमें रत होवे; बुध होवे तो, ज्ञानी होवे; शुक्र होवे तो, भोगी होवे; बृहस्पति होवे तो, चिरायु होवे; और पूर्ण चंद्रमा होवे तो, पूजा करनेवाला और दान देनेवा ला होवे. कंटक ४ । ७ । १० । अंत्य १२ । निधन ८ । त्रिकोण ५ । ए । इन घरोंमें पूर्वोक्त ग्रह होवे तो, शरीरमें शुभफल देते हैं. । छठे और आठमे घरमें चंद्रमा अशुभ होता है, । केंद्र १ । ४ । ७ । १० । त्रिकोण ५ । ए । इन घरोंमें सूर्य होवे तो, अन्ननाश होवे. ॥ तिसवास्ते छठे मासमें बालकको, और पांचमे मासमें कन्याको पूर्वोक्त तिथी वार नक्षत्र योगोंमें बालकको चंद्रबलके हुए अन्नप्राश नका आरंभ करे. । तद्यथा । पूर्वोक्त वेषधारी गुरु, तिसके घरमें जाके सर्वदेशोत्पन्न अन्नोंको एकत्र

करे; देशोत्पन्न और अन्य नगरोंमेंसें जे प्राप्त होवे, तिन सर्व फलोंको, और षट्विकृयोंको गृहण करे.। तदपीछे सर्व अन्नोंको, सर्व शाकोंको, सर्व विकृती योंको, घृत, तैल, इक्षुरस, गोरस, जल, इत्यादिकों सें पकाये हुए बहुतप्रकारके पदार्थोंको पृथक् न्यारे २ करे. । तदपीछे अर्हत्प्रतिमाका बृहत्स्नात्रविधि सें ( प्रतिष्ठा विधिमे लिखेंगे ) पंचामृतस्नात्र करके पृथक् पात्रोंमें तिन अन्न शाक विकृति पाकादिकोंको जिनप्रतिमाके आगे अर्हत्कल्पोक्त विंशोपचारी नैवेद्यमंत्रकरके ढोवे. सर्वजातके फलभी ढोवे.। तदपीछे बालकको अर्हत्स्नात्रोदक पिलावे. । फिर जिनप्रतिमाके नैवेद्यसें उद्धरित बची (हुइ) तिन सर्ववस्तुयोंको सूरिमंत्रके मध्यगत अमृता श्रवमंत्रकरके श्रीगौतमप्रतिमाके आगे ढोवे, । तिससें उद्धरित वस्तुयोंको कुलदेवताके मंत्रकरके गोत्रदेवीकी प्रतिमाके आगे चढावे, । तदपीछे कुल देवीके नैवेद्यमेंसें योग्य आहार मंगलगीत गाते हुए माता पुत्रके मुकमें देवे. । और गुरु यह वेद मंत्र पढे. ॥ यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं भगवानर्हन् त्रिलोकनाथस्त्रिलोक पूजितः सुधाधारधारितशरीरोपि कावलिकाहारमा हारितवान् । तपस्यन्नपि पारणाविधाविक्षुरसपरमान्न भोजनात् परमानंदादापकेवलं तद्देहिन्नौदारिकशरी

"॥ ॐ अर्हँ श्रुतेनाङ्गोपाङ्गैः कालिकैरुत्कालिकैः पूर्वगतैश्चूलिकाभिः परिकर्मभिः सूत्रैः पूर्वानुयोगैः छन्दोभिर्लक्षणैर्निरुक्तैर्धर्मशास्त्रैर्विद्धकर्णो भूयात्अर्हँ ॐ ॥"

शूद्रादिकोंको ॥ '॥ ॐ अर्हँ तव श्रुतिद्वयं हृदयं धर्म? विद्धमस्तु ॥' ऐसें कहना. ॥

तदपीछे बालकको यानमें बैठाके, वा नर नारी उत्संगमें लेके धर्मागारमें लेइ जावे; तहां पूर्वोक्त विधिसें मंडलीपूजा करके बालकको गुरुके चरणां आगे लोटावे. तब यतिगुरु विधिसें वासक्षेप करे. । तदपीछे बालकको घरमें ल्याके गृहस्थगुरु कर्णाभरण पहिनावे. । यतिगुरुयोंको शुद्ध चार प्रकारका आहार वस्त्र पात्र देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्णदान देवे. ।

इति दशमंकर्णवेधसंस्कारवर्णनं

अथ क्षौर विधि

ग्रह केंद्रमें १।४।७।१० होने चाहिये.। यदि केंद्रमें सूर्य होवे तो ज्वर होवे. मंगल होवे तो शस्त्रसें नाश होवे.। षष्टी (६), अष्टमी (८), चतुर्थी (४), सिनीवाली (चतुर्दशीयुक्तअमावास्या) चतुर्दशी (१४), नवमी (९), इन तिथीयोंमें और रवि, शनि, मंगल, इन वारोमें क्षौरकर्म न करावणा.। धन २, व्यय १२, त्रिकोण ५। ९, इन गृहोंमें असद्ग्रह होवे तो, मृत्यु हुए जी क्षुरक्रिया सुंदर नही होवे, और इनही घरोमे शुन ग्रह होवे तो क्षुरक्रिया पुष्टिकी करणहार जाणनी। तिसवास्ते बालकको सूर्यबलयुक्त मासके हुए, चंद्रताराबलयुक्त दिनमें, पूर्वोक्त तिथिवार नक्षत्रमें कुलाचारानुसार कुलदेवताकी प्रतिमाके पास अन्य ग्राममें, वनमें, पर्वतके ऊपर, वा घरमे शास्त्रोक्त रीतिसें प्रथम पौष्टिक करे.। तदपीछे षष्टीपूजावर्जित मातृपूजा पूर्ववत्.। तदपीछे कुलाचारानुसार नैवेद्य देवपक्वान्नादि करणा.। तदपीछे सुस्नात गृहस्थगुरु बालकको आसनऊपर बैठाके बृहत्स्नात्रविधिकृत जिनस्नात्रोदकसें शांतिदेवीके मंत्रकरके सिंचन करे. तदपीछे कुलक्रमागत नापित (नाइ) के हाथसे मुंमन करावे.। तीन वर्णके शिरके मध्यनागमें शिखा स्थापन करे और शूद्रको सर्वमुंमन.। चूडाकरण करते हुए यह वेदमंत्र पढे.॥ यथा॥

"॥ ॐ अर्हं ध्रुवमायु, ध्रुवमारोग्यं, ध्रुवाः श्रीयो, ध्रुवं कुलं, ध्रवं यशो, ध्रुवं तेजो ध्रुवं कर्म्म, ध्रुवा च गुण संतति रस्तु. अर्हं ॐ ॥"

यह सातवार पढता हुआ बालकको तीर्थोदककरके सींचे. । गीत वाजंत्र सर्वत्र जाणने.।तदपीछे पंच परमेष्टिपाठपूर्वक बालकको आसनसें उठायकर स्नान करावे. । चंदनादिकरके लेपन करे. । श्वेतवस्त्र पहिनावे. । भूषणोंकरके भूपित करे. । तदनंतर धर्मागारमें लेजावे. तदपीछे पूर्वरीतिसें मंडलीपूजा गुरुवंदना वासक्षेपादि. । तदपीछे साधुयोंको शुद्ध वस्त्र, अन्न, पात्र औंर षड्रस विकृति दान देवे. । गृहस्थगुरुको वस्त्र स्वर्ण दान देवे. । नापितको वस्त्र कंकण दान देवे. ॥

॥ इति दशमंचूडाकरणसंस्कारवर्णनं ॥

## अथ उपनयनसंस्कारविधि लिख्यते

तिहां उपनयन नाम मनुष्योंको वर्णक्रममें प्रवेश करणेवास्ते संस्कारही वेषमुद्राके उद्वहनसें स्व २ गुरुयोंके उपदेशे धर्ममार्गमें प्रवेश करना. यदुक्तं ।

धम्मायारे चरिए वेसो सवछ कारणं पढमं ॥
संजमलज्जाहेउ साह्वाणं तहय साहूणं ॥ १ ॥

अर्थः—धर्माचारके आचरण करते हुए वेष जो

है, सो सर्वत्र प्रथम कारण है. श्रावक तथा साधु योंको संजमलज्जाका हेतु है. ॥

तथा च श्रीधर्मदासगणिपादैरुपदेशमालायामप्युक्तम् ॥ यथा

धम्मं रक्खइ वेसो संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं
उम्मग्गेण पडंतं रक्खइ राया जणवउव्व ॥ १ ॥

अर्थः–वेष धर्मकी रक्षा करता है. क्योंकि, वेष होनेसें अकार्य करता हुआ मनमें शंका करता है कि, मैं दीक्षितवेषवाला हूं,मुझको देखके लोक निंदा करेंगे, इसवास्ते उन्मार्गमें पडते हुएकी भी वेष रक्षा करता है, जैसें राजा देशकी रक्षा करता है.॥ तथा इक्ष्वाकुवंशी, नारदवंशी, वैश्य, प्राच्य, उदीच्य, इन वंशोंके जैन ब्राह्मणको उपनयन और जिनोपवीत धारण करणा. । तथा क्षत्रीयवंशमें उत्पन्न हुए जिन, चक्रि, बलदेव, वासुदेवोंको, श्रेयांसकुमार दशार्णभद्रादि राजायोंको, हरिवंश, इक्ष्वाकुवंश, विद्याधरवंश, इन वंशोंमें उत्पन्न हुएको भी, उपनयन जिनोपवीतधारणविधि है. । जिसवास्ते कहा है. । आगममें,

"देवाणुप्पिआ, न एअं भूअं, न एअं भवं, न एअं भविस्सं, जन्नं, अरहंता वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, तुच्छकुलेसु वा, दरिद्दकुलेसु वा, भिरकागकुलेसु वा, माहणकुलेसु वा, आयाइंसु

वा आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, एवं खलु, अरहंता वा, चक्कबलवासुदेवा वा उग्गकुलेसु वा, भोगकुलेसु वा, राइन्नकुलेसु वा, खत्तियकुलेसु वा, इरकागकुलेसु वा, हरिवंशकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तहप्पगारेसु विसुद्ध जाइकुलवंसेसु आयाइंसु वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, अह्नि पुण एसेवि नावे, लोगह्येय नूए, अणंताहिं उसप्पिणि ऊसप्पिणीहिं वइक्कंताहिं समुपद्यइ, नागगुत्तस्स, वा, कम्मस्स, अरकीणस्स, अवेइयस्स, अणिद्यिणस्स, उदएणं, जन्नं, अरहंता वा, चक्कबलवासुदेवा वा, अंतकुलेसु वा, पंतकिविण तुह्नदरिद्द न्निरकागमाहणकुलेसु वा, आयाइंसुं वा, आयाइंति वा, आयाइस्संति वा, नो चेवणं, जोणी जम्मणनिरकमिंसु वा, निरकमंति वा, निरकमिस्संति वा, तं जीअमेअं, तीअपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं, देविंदाणं, देवराईणं, अरहंते नगवंते, तहप्पगारे हिंतो, अंतकुलेहिंतो, पंतकुलेहिंतो, तुह्नदरिद्दकिविण न्निरकागमाहणकुलहिंतो; तहप्पगारेसु उग्गनोगराय न्नखत्तियइरकागहरिवंसकुलेसु वा, अन्नयरेसु वा, तह प्पगारेसु विसुद्धजाइकुलवंसेसु साहराविन्तए. ॥"*
तिसवास्ते कार्तिकशेठ कामदेवादिवैश्योंको नी उप

* इस पाठका नावार्थ यह है कि पुर्वोक्त अंतादिकुलमें अरिहंतादि नही उत्पन्न होते है, किंतु उग्रादि उपनयनादिसंयुक्त कुलमें उत्पन्न होते है, शुद्ध होनेसें. ॥

नयन जिनोपवीत धारण करणा. । आनंदादि शुद्रो को भी उत्तरीय धारण करणा. । शेष वणिगादिकों को उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. जिनोपवीत जो है सो भगवान् जिनकी गृहस्थपणेकी मुद्रा है. । सर्व बाह्य अभ्यंतर कर्मविमुक्त निर्ग्रथ यतियोंको तो, नव ब्रह्मगुप्तिगुप्तज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयी, हृदयमेंही है क्योंकि, ॥ मुनिजन सर्वदा तद्भावनाभावितही होते है. इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तियुक्तरत्नत्रयी सूत्ररूप बाह्य मुद्राको नही धारण करते है, तन्मय होनेसें. नही समुद्र, जलपात्रको हस्तमे करता है. । नही सूर्य दीपकको धारण करता है. यदुक्तं ॥

अग्नौ देवोस्ति विप्राणां हृदि देवोस्ति योगिनाम् ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां सर्वत्र विदितात्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थः—अग्निहोत्रि ब्राह्मणोका तो अग्निही देव है, अर्थात् अग्निविषेही देवबुद्धि है; और योगिजनोंके हृदयमेंही देव है; क्योंकि, योगाभ्यासी मुनिजन तो, अपने पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, रूपातीत, ध्यानके बलसें अपने हृदयमेंही देवका स्वरूप ध्याय सकते हैं; और जो अल्पबुद्धि अर्थात् गृहस्थधर्मी श्रावकादि हैं, तिनोंको भगवान्की प्रतिमाही देव है; और तिसकेही पूजन, ध्यान, प्रभावना, उत्सव, रथयात्रा, करनेसें कल्याण है. और जिनोंने आत्म स्वरूप जाना है, ऐसें यति, ऋषि, मुनियोंको तो

सर्वजगें देव मालुम होता है, अर्थात् ध्याता, ध्येय, ध्यान, ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान रूपकरके सर्व देवस्वरूपही है. ॥ इसवास्ते शिखासूत्रविवर्जित ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रय करण कारण अनुमतिमें सदैव आदरवाले यतिजन हैं. । और गृहस्थी, ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयलेशश्रवणस्मरण मात्रसें ब्रह्मगुप्तिरत्नत्रयकोसूत्रमुद्राकरके हृदयमें धारण करते है. । 'प्रतिमा स्वल्पबुद्धीनां इसवचनसें' ॥

तदात्मकत्वके न हुए मुद्राका धारण है. । जैसें वनस्थको वाह्य अभ्यंतर तपःका करणा है. । तथा नवतंतुगर्भितसूत्रमय एक अग्र ऐसें तीन अग्र ब्राह्मणको, दो अग्र क्षत्रियको, एक अग्र वैश्यको, शूद्रको उत्तरीमक, और अपरको उत्तरासंगकी अनुज्ञा है. । ऐसा विशेष क्यों है ? सोही कहते हैं. ब्राह्मणोंने नवब्रह्मगुप्तियुक्त ज्ञान दर्शनचारित्ररूप रत्नत्रय आप पालन करणे, अन्योंसें करावणे, अन्य करतांको अनुमति देणी. ॥ ब्रह्मगुप्तिगुप्ताइति । ब्राह्मण आप रत्नत्रयीको ध्ययन सम्यकदर्शन चारित्र क्रियायोकरके आचरते है, अन्योसें अध्यापन सम्यक्त्वोपदेश आचार प्ररूपणा करके रत्नत्रयीका आचरण करवाते हैं, और ज्ञानोपाशन सम्यगदर्शन धर्मोपाशनादिकों करकें श्रद्धा करने वाले ओर अनुज्ञा मांगनेवासे अन्योको अनुज्ञा देते हैं, इसवास्ते नवब्रह्मगुप्तिगर्भि रत्नत्रय करण कारण

अनुमतिवाले ब्राह्मणोंको जिनोपवीतमें तीन अग्र. । और क्षत्रियोंको आप रत्नत्रयका आचरण करणा. और निजशक्तिसें न्यायप्रवृत्तिकरके अन्योसें आचरण करावणा योग्य है. परंतु तिन क्षत्रियोंको अन्य जनोंको अनुज्ञा देनी योग्य नही है. क्योंकि. वे ठकुराइवाले प्रभुहोंनेसें अन्योंविषे नियमादिकी अनुज्ञा नही देते हैं इसवास्ते क्षत्रियोंको जिनोपवीतमें दो अग्र. । वैश्योंने ज्ञानभक्तिकरके सम्यक्त्व धृतिकरके उपासकाचारशक्तिकरके स्वयमेव रत्नत्रय आचरणा । तिन वैश्योंको असामर्थ्य होंनेसें अनुपदेशक होनेसें रत्नत्रयका करावणा और अनुमतिका देणा योग्य नही हे; इसवास्ते वैश्योको जिनोपवीतमें एक अग्र. । शूद्रोंको तो ज्ञानदर्शनचारित्ररूप रत्नत्रयके करणेमें आपही अशक्त है तो करावणा और अनुमतिका देणा तो दूरही रहा. तिनोंको अधमजाति होनेसें, निःसत्व होनेसें, अज्ञान होनसे, तिनोंको जिनाज्ञानरूप उत्तरीयका धारण है । तिनसें अपर वणिगादिकोंको देवगुरुधर्मकी उपासनाके अवसरमें मात्र जिनाज्ञानरूप उत्तरासंग मुद्रा है. ॥ जिनोपवीतका स्वरूप यह है.॥ स्तनांतरमात्रको चोराशी गुणा करिये तव एकसूत्र होवे तिसको त्रिगुणा करणा, तिसको भी त्रिगुणा करके वर्त्तन करणां (वटना) ऐसें एक तंतु हुआ

इसी रीतिसें दो तंतु और योजन करिये, तवतीनो तंतु मिलाके एक अग्र होवे है. । तहां ब्राह्मणको तीन अग्र, क्षत्रियोको दो और वैश्योंको एक. । परम तमें तो ऐसा कथन है ॥

॥ कृते स्वर्णमयं सूत्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ॥
द्वापरे ताम्रसूत्रं च कलौ कर्प्पासमिष्यति ॥ १ ॥

कृतयुगमें स्वर्णमयसूत्र, त्रेतायुगमें रूपेका, द्वाप रयुगमें तांवेका और कलियुगमें कर्पासका यज्ञोपवीत करना ॥ " परंतु जिनमतमें तो, सर्वदा ब्राह्मणोंको सौवर्णसूत्र, और क्षत्रियवैश्योंको सर्वदा कार्पाससूत्र हीहै. ॥ इतिजिनोपवीतयुक्तिः ॥

अथ उपयनविधि कहते हैं:—उपनीयते वर्णक्र मारोहयुक्तिकरके प्राणीको पुष्टिको प्राप्त करिये; इत्युपनयनं. । श्रवण, धनिष्टा, हस्त, मृगशिर, अ श्विनी, रेवती, स्वाति, चित्रा, पुनर्वसू. । तथा च । मृगशिर, रेवती, श्रवण, धनिष्टा, हस्त, स्वाति, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, इन नक्षत्रोंमें मेखलावंध, और मोक्ष करणा, आचार्यवर्य्य कहतें हैं. । गर्भाधानसें वा जन्मसें आठमे वर्षमें ब्राह्मणोंको मौंजीबंध उप नयनका प्रारंभ कथन करते हैं, क्षत्रियोंको इग्या रह (११) वर्षमें, और वैश्योंको बारमे वर्षमें. । वर्णा धिपके वलवान हुए उपनीतिक्रिया हितकारिणी होती है, अथवा सर्व वर्णोंको गुरु चंद्र सूर्य वल

वान् हुए, हित है.। बृहस्पतिवार होवे, बृहस्पति बलमान् होवे, वा केंद्रगत होवे, तो, द्विजोंको उपनयन श्रेष्ट है. और बृहस्पति तथा शुक्र नीच घरमें होवे, शत्रुके घरमें होवे, वा पराजित होवे तो श्रवणविधीमें स्मृतिकर्म हीन होवे। लग्नमें बृहस्पति होवे, त्रिकोणमें शुक्र होवे, और शुक्रांशमें चंद्रमा होवे तो जैनवेदवित् होवे, शुक्रसहित सूर्य लग्नमें शनिके अंशमें स्थित होवे, तदा सीखी हुइ विद्या भूल जावे ऐसा कृतघ्न होवे. । केंद्रमें बृहस्पति होवे तो, स्वअनुष्ठानमें रक्त होवे, प्रवरमतियुत होवे शुक्र होवे तो, विद्या सौख्य अर्थ युक्त होवे, बुध होवे तो, अध्यापक होवे, सूर्य होवे तो, राजाका सेवक होवे, मंगल होवे, तो, शूरवीर होवे चंद्रमा होवे तो, व्यापारी होवे. शनि होवे तो, नीच जातीका सेवक होवे.। शनिके अंशमें मूर्खता उदय होवें, सूर्यके भागमे क्रूरपणा होवे, मंगलके अंशमें पाप बुद्धिहोवे, चंद्रांशमें अति जरूपणा होवे, बुधांशमे अति पटुपणा होवे, गुरु शुक्रके भागमे सुज्ञपणा होवे, सुर्य सहित बृहस्पति होवे तो निर्गुण होवे, अर्थ हीन होवे, मंगल सहित सूर्य होवे, तो क्रूर होवे, बुध सहित होवे तो पटु होवे, शनि सहित होवे तो आलसु और निर्गुण होवे, चंद्र सहित शुक्र होवे तो अर्थहीन जाणना, पूर्वोक्त निर्दोष नक्षत्रो

स्तवसंयुक्त शक्रस्तव पाठ करे। तिस दिनमें, जल जवान्न जोजन करके आचाम्लका प्रत्याख्यान उपनेयको करावे । तदपीछे उपनेयको वामे पासे स्थापके सर्वतीर्थोदकोंकरके अमृताजलमंत्रकरके कुशाग्रोंसें सिंचन करे ।

तदनंतर परमेष्टिमंत्र पढके.

" नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुज्यः "

ऐसा कहके, जिन प्रतिमाके आगे उपनेयको पूर्वाजिमुख बैठावे; तदपीछे गृहीगुरु, चंदनमंत्रकरके अजिमंत्रण करे. ॥ चंदनमंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ नमो जगवते. चंद्रप्रजजिनेंद्राय, शशांक हारगोक्षीरधवलाय, अनंतगुणाय, निर्म्मलगुणाय, जव्यजनप्रबोधनाय, अष्टकर्म्ममूलप्रकृतिसंशोधनाय, केवलालोकावलोकितसकललोकाय, जन्मजरामरण विनाशनाय सुमंगलाय, कृतमंगलाय, प्रसीद जगवन् इह चंदनेनामृताश्रवणं कुरु २ स्वाहा ॥ "

इस मंत्रकरके चंदनको मंत्रके हृदयमें जिनोपवीतरूप, कटिमें मेखलारूप और ललाटमें तिलकरूप, रेखाकरे, तदपीछे उपनेय " नमोस्तु २ ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें पमके खमा होके हाथ जोडके ऐसें कहे. ।

" ॥ जगवन् वर्णरहितोऽस्मि । आचाररहितोऽस्मि । मंत्ररहितोऽस्मि । गुणरहितोऽस्मि । धर्म्मरहितोऽस्मि ।

शौचरहितोऽस्मि । ब्रह्मरहितोऽस्मि । देवर्षिपितृतिथिकर्म्मसु नियोजय मां ॥"

ऐसें कहकर फिर "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुके चरणोंमें पडे; गुरु भी. इस मंत्रको पढके उपनेयको चोटीसें पकडके खडा करे । मंत्रो यथा ॥

"ॐ अर्हं देहिन् निमग्नोऽसि भवार्णवे तत्कर्षति त्वांभगवतोऽर्हतः प्रवचनैकदेशरज्जुना गुरुस्तदुत्तिष्ट प्रवचनादानाय श्रद्धाधाहि अर्हं ॐ ॥"

ऐसें पढके उपनेयको खडा करके अर्हत्प्रतिमाके आगे पूर्वाभिमुख खडा करे. तदपीछे गृहीगुरु, त्रिर्वर्त्तित–तीन तंतुकी बुणी, एकाशीति (८१) हाथ प्रमाण, मुंजकी मेखलाको अपने दोनों हाथोमें लेके, इस वेदमंत्रको पढे.

"॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् ज्ञानावरणेन बद्धोऽसि । दर्शनावरणेन बद्धोऽसि । वेदनीयेन बद्धोऽसि । मोहनीयेन बद्धोऽसि । आयुषा बद्धोऽसि । नाम्ना बद्धोऽसि । गोत्रेण बद्धोऽसि । अंतरायेण बद्धोऽसि कर्माष्टकेन प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैश्च बद्धोऽसि । तन्मोचयति त्वां भगवतोर्हतः प्रवचनचेतना तद्बुद्ध्यस्व मामुहःमुच्यतां तव कर्म्मबधनमनेन मेखलाबंधेन अर्हं ॐ ॥"

ऐसा पढके उपनेयकी कटिमें नवगुणी मेखलाको बांधे । तदपीछे उपनेय 'नमोस्तु २' कहता

हुआ, गृहीगुरुके पगोंमें पडे । मेखलाको एकाशी (८१) हाथपणा विप्रको एकाशीतंतुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, क्षत्रियको चौपन (५४) हाथ तावत्प्रमाणतंतुगर्भ जिनोपवीत सूचनकेवास्ते, और वैश्यको सत्ताइस (२७) हाथ तद्गर्भसूत्रसूचनके वास्ते है । ब्राह्मणको नवगुणी क्षत्रियको ठगुणी और वैश्यको त्रिगुणी, मेखला बांधनी । तथा मौंजी, कौपीन, जिनोपवीत, इनोंका पूजन, गीतादिमंगल, निशाजागरण, तिसके पूर्वदिनकी रात्रिमें करणा । मेखलाबंधनके पीछे फेर गृहस्थगुरु, उपनेयके विलस्त (वेंत) प्रमाण पृथुल (चौडा) और तीन विलस्त प्रमाण दीर्घ (लंबा) कौपिन दोनों हाथोंमें लेके ॥

" ॥ ॐ अर्हं आत्मन् देहिन् मतिज्ञानावरणेन श्रुतज्ञानावरणेन अवधिज्ञानावरणेन मनःपर्यायावरणेन केवलज्ञानावरणेन इंद्रियावरणेन चित्तावरणेन आवृतोऽसि तन्मुच्यतां तवावरणमनेनावरणेन अर्हं ॐ ॥ "

इस वेदमंत्रको पढता हुआ, उपनेयके अंतःकक्षकों कौपीन पहरावे । तदपीछे उपनेय 'नमोस्तु २' कहता हुआ, फिर भी गुरुके पगोंमें पडे । फिर तीन २ प्रदक्षिणा करके चारों दिशामें शक्रस्तव पाठ करे. ॥

तदनंतर लग्नवेलाके हुए गुरु, पूर्वोक्त जिनोपवी तको अपने हाथमें लेवे पीछे उपनेय फेर खमा होकर हाथ जोमके ऐसें कहे ॥

"॥ नगवन् वर्णोंचितोऽस्मि । ज्ञानोचितोस्मि । क्रियोचितो । तज्जिनोपवीतदानेन मां वर्णज्ञानक्रियासु समारोपय ॥"

ऐसें कहके 'नमोस्तु २, कहता हुआ गुरुके पगोंमें पडे गुरु फिर पूर्वोक्त उत्थापनमंत्रकरके तिसको उठाके खमा करे । तदपीछे गुरु दक्षिण हाथमें जिनोपवीत रखके ॥

"॥ ॐ अर्हं नवब्रह्मगुप्तीः स्वकरणकारणानुमती न्रियेः तदक्ष्यमस्तु ते व्रतं स्वपरतरणतारणसमर्थो नव अर्हं ॐ ॥" क्षत्रियको

' ॥ करणकारणाभ्यां धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥" वैश्यको

"॥ करणेन धारयेः स्वस्य तरणसमर्थो नव ॥" शेषं पूर्ववत् ॥

इस वेदमंत्रकरके पंच परमेष्टिमंत्र पढता हुआ उपनेयके कंठमें जिनोपवीत स्थापन करे । पीछे उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे. गुरु नी "निस्तारगपारगो नव" ऐसा आशीर्वाद कहे । तदपीछे गुरु पूर्वाभिमुख होके, जिनप्रतिमाके आगे शिष्यको

वामेपासे बेठाके, सर्व जगत्में सार, महा आगम रूप क्षीरोदधिका माखण, सर्ववांछितदायक, कल्प द्रुम कामधेनु चिंतामणिके तिरस्कारका हेतु, निमे षमात्र स्मरण करनेसें मोक्षका दाता, ऐसें पंचपरमे ष्ठिमंत्रको गंधपुष्पपूजित शिष्यके दक्षिणकानमें तीनवार सुणावे पीछे तीनवार तिसके मुखसें उच्चा रण करावे ॥ यथा ॥

" ॥ नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं ॥ " पीछे उपनेयको मंत्रका प्रभाव सुणावे. ॥ तद्यथा ॥

सोलससु अरकरेसु, इक्किकं अरकरं जगुज्जोअं ॥
नवसयसहस्स महणो, जम्मि छिअं पंच नवकारो॥१॥
थंभेइ जलं जलणं चिंतियमत्तो इ पंच नवकारो ॥
अरिमारिचोरराउलघोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २ ॥

एकत्र पंचगुरुमंत्रपदाक्षराणि । विश्वत्रयं पुनरनं तगुणं परत्र ॥ यो धारयेत्किल तुलानुगतं ततोऽपि । वंदे महागुरुतरं परमेष्टिमंत्रम् ॥ ३ ॥ ये केचनापि सुखमाद्यरका अनंता । सत्सर्पिणीप्रभृतयः प्रययुर्वि वर्त्ताः ॥ तेष्वप्ययं परतरः प्रथितः पुराऽपि । लब्ध्वै नमेव हि गताः शिवमत्र लोकाः ॥ ४ ॥ जग्मुर्जि नास्तदपवर्गपदं यदैव । विश्वं वराकमिदमत्र कथं विनास्मान् ॥ एतद्विलोक्य भुवनोद्धरणाय धीरैः ।

मंत्रात्मकं निजवपुर्निहितं तदाऽत्र ॥ ५ ॥ इंदुर्दिवा करतया रविरिंदुरूपः । पातालमंबरमिलासुरलोक एव ॥ किंजल्पितेन वहुना भुवनत्रयेऽपि तन्नास्ति यन्न विषमं च समं च तस्मात् ॥ ६ ॥ सिद्धांतोदधि निर्म्मथान्नवनीतमिवोद्धृतम् ॥ परमेष्टिमहामंत्रं धारयेत् हृदि सर्वदा ॥ ७ ॥ सर्वपातकहर्त्तारं सर्ववांछितदायकम् ॥ मोक्षारोहणसोपाने मंत्रे प्राप्नोति पुण्यवान् ॥ ८ ॥ धार्योयं भवता यत्नात् न देयो यस्य कस्यचित् ॥ अज्ञानेषु श्रावितोयं शपत्येव न संशयः ॥ ९ ॥ ❀ न स्मर्त्तव्योऽपवित्रेण न जने नाऽन्यसंश्रये ॥ नाऽविनीतेन नो दीर्घशब्देनाऽपि कदाचन ॥ १० ॥ न बालानां नाऽशुचीनां नाऽधर्म्माणां नदुर्दृशाम् ❀ नप्लुतानां न दुष्टानां दुर्जातीनां न कुत्रचित् ॥ ११ ॥ अनेन मंत्रराजेन भूयास्त्वं विश्वपूजितः ॥ प्राणांतेऽपि परित्यागमस्य कुर्यान्न कुत्रचित् ॥ १२ गुरुत्यागे भवेद्दुःखं मंत्रत्यागे दरिद्रता ॥ गुरुमंत्रपरित्यागे सिद्धोऽपि नरकं व्रजेत् ॥ १३ ॥ इति

---

❀ न स्मर्त्तव्योपचित्तेन न शठेनान्यसंश्रये इति पुस्तकांतरे ॥ तथा अन्येषु श्राद्धदिनकृतश्राद्धविधिकौमुदीपंचाशकादिषु शास्त्रेष्वेवमुक्तं यथा सा काप्यवस्था नास्ति यस्यां नमस्कारो न स्मर्त्तव्य इति ॥

❀ नाऽपूतानां न दुष्टानां दुर्जनानां न कुत्रचित् । इति पुस्तकांतरे ॥

ज्ञात्वा सुगृहीतं कुर्या मंत्रममुं सदा ॥ सेत्स्यंति सर्वकार्याणि तवास्मान्मंत्रतो ध्रुवम् ॥ १४ ॥

गुरुने ऐसे शिक्षा दिया हुआ उपनेय तीन प्रदक्षिणा करके "नमोस्तु २" ऐसें कहता हुआ, गुरुको नमस्कार करे. पीछे गुरुको स्वर्णका जिनोपवीत, सुवर्णमौंजी, श्वेत वस्त्र रेशमी स्वसंपदानुसारें देवे. और सर्वसंघको जी तांबूल वस्त्रादि देवे ॥ इत्युप नयने व्रतबंधविधिः ॥

अथ व्रतादेशविधि लिख्यते हैं. ॥ तिसही अवसरमें, तिसही संघके संगममें, तिसही गीतवाजं त्रादि उत्सवमें, तिसही वेदचतुष्किकामें प्रतिमास्थापन संयोगमें, व्रतादेशका आरंज करे. तिसका यह क्रम है. । गृहस्थगुरु, उपनीत पुरुषके कार्पास रेशमी अंतरीय(उत्तरीय)वस्त्र दूर करके मौंजी, जिनोपवीत कोपीन, येह वस्तुयों तिसकी देहमें तैसेंही स्थापके, तिसके ऊपर कृष्णसाराजिन ( कालामृगचर्म ) वा, वृक्षके वल्कलका वस्त्र पहिरावे. । हाथमें पलाशका दंरुा देवे. और इस मंत्रको पढे.

" ॥ ॐ अर्हं ब्रह्मचार्यसि । ब्रह्मचारिवेषोऽसि अवधिब्रह्मचर्योसि । धृतब्रह्मचर्योसि । धृताजिनदंमोसि । बुद्धोऽसि । प्रबुद्धोऽसि । धृतसम्यक्त्वोऽसि दृढसम्यक्त्वोसि । पुमानसि । सर्वपूज्योऽसि । तदवधिब्रह्मव्रतं आगुरुनिदेशं धारयेः अर्हं ॐ ॥ "

ऐसें पढके व्याघ्रचर्ममय आसनके ऊपर, वा कल्पित काष्टमय आसनके ऊपर उपनीतकों बिठलावे. तिसके दक्षिण हाथकी प्रदेशिनी अंगुलीमें दर्भसहित कांचनमयी षोडश १६ मासे प्रमाण ( पांच गुजाका एक मासा जाणना ) पवित्रिका मुद्रा पहरावे. । पवित्रिका परिधापनमंत्रो यथा ॥

"पवित्रं दुर्लभं लोके सुरासुरनृवल्लभम् ॥
सुवर्ण हंति पापानि, मालिन्यं च न संशयः॥ १ ॥

तदपीछे उपनीत, मुखसें पंचपरमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, गंध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यकरके चारों दिशामें जिनप्रतिमाको पूजे । तदपीछे जिनप्रतिमाको प्रदक्षिणाकरके और गुरुको प्रदक्षणा करके 'नमोस्तु २' कहता हुआ, हाथ जोडके ऐसें कहे ॥ "भगवन् उपनीतोहं" गुरु कहे "सुष्टूपनीतो भव।" फेर उपनीत 'नमोस्तु, कहता हुआ नमस्कार करके कहे । "कृतो मे व्रतबंधः ।" गुरु कहे । "सुकृतोऽस्तु ।' फेर 'नमोस्तु' कहके नमस्कार करके शिष्य कहे । "भगवन् जातो मे व्रतबंधः ।" गुरु कहे । "सुजातोऽस्तु ।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जातोऽहं ब्राह्मणः । क्षत्रियो वा । वैश्यो वा ।" गुरु कहे । "दृढव्रतो भव । दृढसम्यक्त्वो भव ।" फेर शिष्य नमस्कार करके कहे । "भगवन् यदि त्वया कृतो ब्राह्मणोऽहं तदादिश

कृत्यं।" गुरु कहे अर्हद्गिरा दिशामि । " फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयंममादिष्टं।" गुरु कहे। "आदिष्टं । फेर नमस्कार करके शिष्य । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं मम समादिश।" गुरु कहे। "समादिशामि ।" फेर नमस्कार करके शिष्य जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं मम समादिष्टं।" गुरु कहे। "समादिष्टं।" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं ममानुजानीहि"। गुरु कहे । "अनुजानामि" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं ममानुज्ञातं।" गुरु कहे। "अनुज्ञातं"। फेर नमस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं मया स्वयं करणीयं।" गुरु कहे। "करणीयं।" फेर नामस्कार करके शिष्य कहे । "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं मया अन्यैः कारयितव्यं।" गुरुकहे "कारयितव्यं" फेर नमस्कार करके शिष्य कहे। "जगवन् नवब्रह्मगुप्तिगर्न्न रत्नत्रयं कुर्वंतोऽन्ये मया अनुज्ञातव्याः" गुरु कहे । "अनुज्ञातव्याः" क्षत्रियकों यह विशेष है 'जगवन् अहं क्षत्रियो जातः' आदेश समादेश दोनों कहने, अनुज्ञा न कहनी. करणकारणमें 'कर्त्तव्यं' 'कारयितव्यं' ऐसें कहना, 'अनुज्ञातव्यं' ऐसे न कहना. । और वैश्यको

आदेश ही कहना, समादेश अनुज्ञा यह दोनों न कहने. । 'कर्त्तव्यं' कहना, 'कारायितव्यं' अनुज्ञातव्यं 'यह न कहने. । तदपीछे उपनीत हाथ जोम के कहे. । 'हे जगवन् ! आदिश्यतां व्रतादेशः ।' तव गुरु आदेश करे अर्थात् व्रतादेश कथन करे । तहां प्रथम ब्राह्मणप्रति व्रतादेश कहते हैं. यथा ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रो विधेयो हृदये सदा ॥
निर्ग्रथानां मुनींद्राणां कार्यं नित्यमुपासनम् ॥ १ ॥
त्रिकालमर्हत्पूजा च सामायिकमपि त्रिधा ॥
शक्रस्तवैस्सप्तवेलं वंदनीया जिनोत्तमाः ॥ २ ॥
त्रिकालमेककालं वा स्नानं पूतजलैरपि ॥
मद्यं मांसं तथा क्षौद्रं तथोडुंवरपंचकम् ॥ ३ ॥
आमगोरससंपृक्तं द्विदलं पुष्पितौदनम् ॥
संधानमपि संसक्तं तथा वै निशि जोजनम् ॥ ४ ॥
शूद्रान्नं चैव नैवेद्यं नाश्नीयान्मरणेऽपि हि ॥
प्रजार्थं गृहवासेऽपि संजोगो न तु कामतः ॥ ५ ॥
आर्यवेदचतुष्कं च पठनीयं यथाविधि ॥
कर्षणं पाशुपाल्यं च सेवावृत्तिं विवर्जयेः ॥ ६ ॥
सत्यं वच· प्राणिरक्षामन्यस्त्रीधनवर्जनम् ॥
कषायविषयत्यागं विदध्याः शौचजागपि ॥ ७ ॥
प्रायः क्षत्रियवैश्यानां न जोक्तव्यं गृहे त्वया ॥
ब्राह्मणानामार्हतानां जोजनं युज्यते गृहे ॥ ८ ॥

स्वज्ञातेरपि मिथ्यात्ववासितस्य पलाशिनः ॥
न भोक्तव्यं गृहे प्रायः स्वयंपाकेन भोजनम् ॥ ए ॥
आमान्नमपि नीचानां न ग्राह्यं दानमंजसा ॥
भ्रमता नगरे प्रायः कार्यः स्पर्शो न केनचित् ॥१०॥
उपवीतं स्वर्णमुद्रां नांतरीयमपि त्यजेः ॥
कारणांतरमुत्सृज्य नोष्णीषं शिरसि व्यधाः ॥ ११ ॥
धर्म्मोपदेशः प्रायेण दातव्यः सर्वदेहिनाम् ॥
व्रतारोपं परित्यज्य संस्कारान् गृहमेधिनाम् ॥ १२ ॥
निर्ग्रंथगुर्वनुज्ञातः कुर्याः पंचदशापि हि ॥
शांतिकं पौष्टिकं चैव प्रतिष्टामर्हदादिषु ॥ १३ ॥
निर्ग्रंथानुज्ञया कुर्याः प्रत्याख्यानं च कारयेः ॥
धार्यं च दृढसम्यक्त्वं मिथ्याशास्त्रं विवर्जयेः ॥१४॥
नानार्यदेशे गंतव्यं त्रिशुद्ध्याशौचमाचरेः ॥
पालनीयस्त्वया वत्स व्रतादेशो भवावधिः ॥ १५ ॥

॥ इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥

(भावार्थः) परमेष्टिमहामंत्र सदा हृदयमें धारण करना, निर्ग्रंथ मुनींद्रोंकी नित्य उपासना करनी। तीन कालमें अरिहंतकी पूजा करनी, तीनवार सामायिक करनी, शक्रस्तवमें सातवार चैत्यवंदना करनी. छाने हुए शुद्ध जलसें त्रिकालमें वा, एककालमें स्नान करना, मदिरा, मांस, मधु, माखण पांच जातिके उंडुबरफल, आमगोरससंयुक्त अर्थात्

कच्चे विना गरम करे गोरस दूध दही छाछके साथ द्विदल अन्न, जिसपर नीली फूली आजावे सो अन्न, जीवोत्पत्तिसंयुक्त संधान अर्थात् तीन दिन उपरां तका आचार, रात्रिजोजन, शूद्रका अन्न, देवके आगे चढा नैवेद्य इन पूर्वोक्त वस्तुयोंको मरणांतमें जी न खाना। संतानोत्पत्तिकेवास्ते गृहवासमें स्त्रीसें संजोग करना न तु कामासक्त होके। चारों आर्य जैन वेद विधिसें पढने खेती, पशुपालपणा और सेवा वृत्ति (नौकरी) येह नही करने। शुचिमान् होके सत्य वचन बोलना, प्राणिकी रक्षा करनी, अन्य स्त्री और अन्य धन येह वर्जने, कषाय विषयको त्यागने, प्रायः क्षत्रिय और वैश्योंके घरमें तेरे जोजन न करना, आर्हत् ब्राह्मणोंके घरमें जोजन करना तुझको योग्य है। अपनी ज्ञातिका जो मिथ्यात्ववासित होवे, और मांसाहारी होवे तिसके घरमें जी जोजन नही करणा। प्रायः आपही पकाके जोजन करना। कच्चे अन्नका जी दान नीचोंकेहाथका न ग्रहण करणा, नगरमें भ्रमण करतां किसीका जीप्रायः स्पर्श न करना। उपवीत, स्वर्णमुद्रा और अंतरीय, इनको त्याग न करने. कारणांतरको वर्जके शिरके ऊपर उष्णीष (पगडी) धारण न करना। प्राय. सर्व मनुष्योंको धर्मोपदेश देना, व्रतारोपको वर्जके निर्ग्रंथ गुरुकी आज्ञासें पंचदश १५ संस्कार

गृहस्थांको करने तथा शांतिक, पौष्टिक, जिनप्रति माकी प्रतिष्ठादि करावने । निर्ग्रंथकी आज्ञासें प्रत्या ख्यान करना, और अन्यको करावना; सम्यक्त्वको दृढ धारण करना, मिथ्याशास्त्रकी श्रद्धा वर्जनी। अनार्य देशमें जाना नही, तीनों शुद्धियां गरके शौच आचरण करना; हे वत्स ! तैनें पूर्वोक्त व्रता देश जवतग संसारमें रहे तवतक पालना ॥ १५ ॥

इतिब्राह्मणव्रतादेशः ॥ अथक्षत्रियव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

परमेष्ठिमहामंत्रः स्मरणीयो निरंतरम् ॥
शक्रस्तवैस्त्रिकालं च वंदनीया जिनेश्वराः ॥ १ ॥
मद्यं मांसं मधु तथा संधानोडुंवरादि च ॥
निशि भोजनमेतानि वर्जयेदतियत्नतः ॥ २ ॥
दुष्टनिग्रहयुद्धादिवर्जयित्वा वधोंगिनाम् ॥
न विधेयः स्थूलमृषावादस्त्यक्तव्य एव च ॥ ३ ॥
परनारीं परधनं त्यजेदन्यविकत्थनम् ॥
युक्त्यासाधूपासनं च द्वादशव्रतपालनम् ॥ ४ ॥
विक्रमस्याविरोधेन विधेयं जिनपूजनम् ॥
धारणं चित्तयत्नेन स्वोपवीतांतरीययोः ॥ ५ ॥
लिंगिनामन्यविप्राणामन्यदेवालयेष्वपि ॥
प्रणामदानपूजादि विधेयं व्यवहारतः ॥ ६ ॥
सांसारिकं सर्वकर्म्म धर्मकर्म्मापि कारयेत् ॥
जैनविप्रैश्च निर्ग्रंथैर्दृढसम्यक्त्ववासितः ॥ ७ ॥

रणे शत्रुसमाकीर्णे धार्यो वीररसो हृदि ॥
युद्धे मृत्युज्नयं नैव विधेयं सर्वथापि हि ॥ ८ ॥
गोब्राह्मणार्थे देवार्थे गुरुमित्रार्थ एव च ॥
स्वदेशज्नंगे युद्धेत्र सोढव्यो मृत्युरप्यलम् ॥ ए ॥
ब्राह्मणक्षत्रियोर्नैव क्रियाज्नेदोस्ति कश्चन ॥
विहायान्यव्रतानुज्ञाविद्यावृत्तिप्रतिग्रहान् ॥ १० ॥
दुष्टनिग्रहणं युक्तं लोज्नं ज्नूमिप्रतापयोः ॥
ब्राह्मणव्यतिरिक्तं च क्षत्रियोदानमाचरेत् ॥ ११ ॥
॥ इतिक्षत्रियव्रतादेशः ॥

अथ क्षत्रियव्रतादेश कहते हैं ॥ परमेष्ठिमहामंत्र निरंतर स्मरण करना. शक्रस्तवोंकरके त्रिकाल जिनेश्वरको वंदन करना । मद्य, मांस, मधु, संधान, पांच उंडुंबरादि, ( आदिशब्दसें अमगोरससंयुक्त द्विदल, पुष्पितौदन, ) और रात्रिज्नोजन, इनको यत्नसे वर्जे । दुष्टका निग्रह करना, और युद्धादि वर्जके प्राणियोका वध न करना, स्थूलमृषावाद न बोलना, परस्त्रीका और परधनका त्याग करना; परकी निंदाका त्याग करे, युक्तिसे साधुयोकी उपासना करे, और वारां व्रत पालन करे । अपनी शक्ति अनुसार जिनपूजन करना चित्तयत्नसें अर्थात् उपयोगसें स्वउपवीत, और अंतरीयको धारण करना । लिंगियोंको, अन्य ब्राह्मणोंको, और अन्यदेवालयोंमे ज्नी, प्रणाम दान पूजादि काम पडे तो, लोक

व्यवहारसें करने । संसारिक सर्व कर्म जैनब्राह्मणों और धर्म कर्म निर्ग्रथों करके करावे. दृढसम्यक्त्वकी वासनावाला होवे । शत्रुयोंकरके समाकीर्ण रणमें हृदयके विषे वीररस धारण करना, युद्धमें मृत्युका नय सर्वथा नही करना । गौ ब्राह्मणके अर्थ, देवके अर्थ, गुरु और मित्रके अर्थ, स्वदेशके नंग होते, और युद्धमें, मृत्यु नी सहन करना योग्य है । ब्राह्मण और क्षत्रियकी क्रियामें कुछ नी नेद नही है, परं अन्यको व्रतअनुज्ञा देनी विद्यावृत्ति, दान लेनेमे नेद है. दुष्टोंका निग्रह करना योग्य है, नूमि और प्रतापका लोन करना, ब्राह्मणसें व्यतिरिक्त क्षत्रिय दान आचरण (गृहण) करे ॥११॥ इति क्षत्रियव्रतादेशः ॥ अथ वैश्यव्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

त्रिकालमर्हत्पूजा च सप्तवेलं जिनस्तवः ॥
परमेष्टिस्मृतिश्चैव निर्ग्रथगुरुसेवनम् ॥ १ ॥
आवश्यकं द्विकालं च द्वादशव्रतपालनम् ॥
तपोविधिर्गृहस्थार्हो धर्मश्रवणमुत्तमम् ॥ २ ॥
परनिंदावर्जनं च सर्वत्राप्युचितक्रमः ॥
वाणिज्यपाशुपाल्याभ्यां कर्षणेनोपजीवनम् ॥ ३ ॥
सम्यक्त्वस्यापरित्यागः प्राणनाशेपि सर्वथा ॥
दानं मुनिन्य आहारपात्राछादनसद्मनाम् ॥ ४ ॥

कर्म्मादानविनिर्मुक्तं वाणिज्यं सर्वमुत्तमम् ॥
उपनीतेन वैश्येन कर्त्तव्यमिति यत्नतः ॥ ५ ॥
॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥

अथ वैश्यव्रतादेश कहते हैं ॥ त्रिकाल अर्हत् पूजा करनी, सातवार जिनस्तव चैत्यवंदन करना, पंचपरमेष्ठिमंत्रका स्मरण करना, निर्ग्रंथ गुरुकी सेवा करनी. । दो कालमें (प्रातः कालमें और सायं कालमें) आवश्यक (प्रतिक्रमणादि) करना. बारां व्रत पालने, गृहस्थोचित तपोविधि करना, उत्तम धर्म श्रवण करना, परकी निंदा वर्जनी, सर्वत्र उचित काम करना, वाणिज्य, पशुपालन और खेती करके आजीविका करनी । सर्वथाप्रकारे प्राणोंका नाश होवे तो भी, सम्यक्त्व नही त्यागना; मुनियोंको अहार, पात्र, वस्त्र, मकान (उपाश्रय) का दान करना. । कर्मादानसें रहित सर्व उत्तम वाणिज्य (व्यापार) करना, उपनीत वैश्यको ये पूर्वोक्त यत्नसे करणे योग्य है. ॥ इतिवैश्यव्रतादेशः ॥ अथ चातुर्वर्ण्यस्य समानो व्रतादेशः ॥

॥ मूलम् ॥

निजपूज्यगुरुप्रोक्तं देवधर्म्मादिपालनम् ॥
देवार्चनं साधुपूजा प्रणामोविप्रलिंगिषु ॥ १ ॥
धनार्जनं च न्यायेन परनिंदाविवर्जनम् ॥
अवर्णवादो न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥ २ ॥

स्वसत्वस्यापरित्यागो दानं वित्तानुसारतः ॥
आयोचितो व्ययश्चैव काले काले च जोचनम् ॥३॥
न वासोऽल्पजले देशे नदीगुरुविवर्जिते ॥
न विश्वासो नरेन्द्राणां नागरीयनियोगिनाम् ॥४॥
नारीणां च नदीनां च लोभिनां पूर्ववैरिणाम् ॥
कार्यं विना स्थावराणामहिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥
नासत्याहितवाक् चैव विवादो गुरुभिर्न च ॥
मातापित्रोर्गुरोश्चैव माननं परतत्ववत् ॥ ६ ॥
शुभशास्त्राकर्णनं च तथा नाऽभक्ष्यभक्षणम् ॥
अत्याज्यानां न च त्यागोप्यऽघात्यानामघातनम् ॥७॥
अतिथौ च तथा पात्रे दीने दानं यथाविधि ॥
दरिद्राणां तथांधानामापन्नारमृतामपि ॥ ८ ॥
हीनाङ्गानां विकलानां नोपहासः कदाचन ॥
समुत्पन्नक्षुत्पिपासाघृणाक्रोधादिगोपनम् ॥ ९ ॥
अरिषड्वर्गविजयः पक्षपातो गुणेषु च ॥
देशाचाराऽऽचरणं च भयं पापापवादयोः ॥ १० ॥
उद्वाहः सदृशाचारैः समजात्यन्यगोत्रजैः ॥
त्रिवर्गसाधनं नित्यमन्योन्याप्रतिबंधतः ॥ ११ ॥
परिज्ञानं स्वपरयोर्देशकालादिचिंतनम् ॥
सौजन्यं दीर्घदर्शित्वं कृतज्ञत्वं सलज्जता ॥ १२ ॥
परोपकारकरणं परपीडनवर्जनम् ॥
पराक्रमः परिभवे सर्वत्र क्षांतिरन्यदा ॥ १३ ॥
जलाशयश्मशानानां तथा दैवतसद्मनाम् ॥

निद्राहाररतादीनां संध्यासु परिवर्जनम् ॥ १४ ॥
प्रवेशोल्लंघनं चैव तटे शयनमेव च ॥
कूपस्य वर्जनं नद्यालंघनं तरणीं विना ॥ १५ ॥
गुर्वासनादिशय्यासु तालवृंदे कुजूमिषु ॥
दुर्गोष्टिषु कुकार्येषु सदैवासनवर्जनम् ॥ १६ ॥
न लंघनं च गर्त्तादेर्नदुष्टस्वामिसेवनम् ॥
न चतुर्थीदुनभस्त्रीशक्रचापविलोकनम् ॥ १७ ॥
हस्त्यश्वनखिनां चापवादिनां दूरवर्जनम् ॥
दिवासंभोगकरणं वृक्षस्योपासनं निशि ॥ १८ ॥
कलह तत्समीपं च वर्जनीयं निरंतरम् ॥
देशकालविरुद्धं च भोज्यं कृत्यं गमागमौ ॥ १९ ॥
भाषितं व्यय आयश्च कर्त्तव्यानि न कर्हिचित् ॥
चातुर्वर्ण्यस्य सर्वस्य व्रतादेशोयमुत्तमः ॥ २० ॥
॥ इतिचातुर्वर्ण्यस्यसमानोव्रतादेशः ॥

अथ चारों वर्णोंका समान व्रतादेश कहते हैं. ॥ अपने पूज्य गुरुके कहे देवधर्मादिकापालना, देव पूजा करनी, साधुकी यथायोग्य पूजा करनी, ब्राह्मण और लिंगधारीको प्रणाम करना. । न्यायसें धन उपार्जन करना. परकी निंदा वर्जनी, किसीका भी अवर्णवाद न बोलना, राजादिविषयक तो विशेषसें अवर्णवाद न बोलना. । अपने सत्वको छोडना नही, धनके अनुसार दान देना, लाभानुसार खरच करना, भोचनके कालमें भोजन करना. । थोडे जल

वाले देशमें वसना नही, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें नी नही वसना. । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोनी, पूर्ववैरी, इनोंका विश्वास नही कर ना. । कार्यविना स्थावर जीवोंकी नी हिंसा नही करनी. । असत्य अहितकारि वचन नही बोलना, गुरुओं ( बमों ) के साथ विवाद नही करना. माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्त्वकीतरें मान सत्कार करना । शुन अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञो क्त शास्त्रका श्रवण करना; अनदय ( नही खाने योग्य ) का नदण नही करना; जे त्यागने योग्य नही है, उनका त्याग नही कर ना; जे मारणे योग्य नही है, तिनको मारणा नही. अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि यथा योग्य दान देना; दरिद्र, अंधे, डुःखी, इनको नी यथाशक्ति दान देना. । हीन अंगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नहीं. । नूख, तृष्णा,(तृषा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए नी, गोपन करने. । षट् ( ६ ) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमें पदपात करना, देशाचार आचरण करना, पाप और अप वादका नय करना. । सदृश आचारवाले, समजाति, और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना; धर्म अर्थ कामको निरंतर परस्पर अप्रतिबंधसें साधन करना. । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

लादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना. परोपकार करना, परको पीमा न करनी, अपना परिनव ( तिरस्कार ) होवे तब पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति करनी. । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना. । कूपमें प्रवेश, कूपका उल्लंघन, कूपकांठेपर शयन, इन सर्व को वर्जना; तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना. । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, तामवृक्षके हेठे, बुरी नूमिमें, फुर्गोष्टिमें, कुकार्यमें, बेठना सदा ही वर्जना । खाम कूदनी नही, लोनी स्वामीकी सेवा, नही करनी; चौथका चंद्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनुः, इनको देखना नही. । हाथी, घोमा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसें वर्जना. । दिनमें संनोग ( मैथुन ) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना. । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना. । देशकाल विरुद्ध, नोजन, कार्य, गमन, आगमन, नाषण, व्यय ( खरच ) और आय ( लान ) ये कदापि न करने. यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोका है. ॥ २० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेशः ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसें शिष्यको व्रतादेश करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन प्रदक्षिणा

वाले देशमें वसना नही, नदी और धर्मगुरुवर्जित देशमें नी नही वसना. । राजा, राज्याधिकारी, स्त्री, नदी, लोनी, पूर्ववैरी, इनोंका विश्वास नही करना. । कार्यविना स्थावर जीवोंकी नी हिंसा नही करनी. । असत्य अहितकारि वचन नही वोलना; गुरुओं (वमों) के साथ विवाद नही करना. माता पिता और गुरु, इनका उत्कृष्ट तत्त्वकीतरें मान सत्कार करना. । शुन अष्टादश दूषणरहित सर्वज्ञोक्त शास्त्रका श्रवण करना; अनदय (नही खाने योग्य) का नक्षण नही करना; जे त्यागने योग्य नही है, उनका त्याग नही कर ना; जे मारणे योग्य नही है, तिनको मारणा नही. अतिथि, सुपात्र, और दीन, इनको यथाविधि योग्य दान देना; दरिद्र, अंधे, दुःखी, इनको नी यथाशक्ति दान देना । हीन अंगवालोंको, और विकलोंको कदापि हसना नहीं. । नूख, तृष्णा,(तृषा,) घृणा, क्रोधादि उत्पन्न हुए नी, गोपन करने । षट (६) अरिवर्गका विजय करना, गुणोंमें पक्ष... करना, देशाचार आचरण करना, पाप और ... वादका नय करना. । सदृश आचारवाले, समजा... और अन्य गोत्रजोंके साथ विवाह करना; ... अर्थ कामको निरंतर परस्पर अप्रतिवंधसें ... करना. । अपने और परायेका ज्ञान करना, देशका

लादिका चिंतन करना, सौजन्य धारण करना, दीर्घ दर्शी होना, लज्जालु होना. परोपकार करना, परको पीमा न करनी, अपना परिजव ( तिरस्कार ) होवे तब पराक्रम दिखाना, अन्यथा सर्वत्र क्षांति करनी. । जलाशय, श्मसान, देवल, इनमें और तीन संध्यामें निद्रा, आहार, मैथुनादि वर्जना. । कूपमें प्रवेश, कूपका उल्लंघन, कूपकांठेपर शयन, इन सर्व को वर्जना; तथा नावाविना नदीका लंघना वर्जना. । गुरुके आसनशय्यादिके ऊपर, तारूवृक्षके हेठे, बुरी जूमिमें, डुर्गोष्टिमें, कुकार्यमें, बेंठना सदा ही वर्जना । खाम कूदनी नही, लोची स्वामीकी सेवा, नही करनी; चौथका चंद्र, नग्न स्त्री, इंद्रधनुः, इनको देखना नही. । हाथी, घोमा, नखोंवाले, जनावरों और निंदक, इनको दूरसें वर्जना. । दिनमें संजोग (मैथुन) न करना, रात्रिको वृक्षका सेवन न करना. । कलह, और कलहका समीप, निरंतर वर्जना । देशकाल विरुद्ध, जोजन, कार्य, गमन, आगमन, जापण, व्यय (खरच) और आय (लाज) ये कदापि न करने. यह पूर्वोक्त उत्तम व्रतादेश चारों वर्णोंका है. ॥ २० ॥ इति चातुर्वर्ण्यस्य समानोव्रतादेशः ॥

गृहस्थगुरु, पूर्वोक्त प्रकारसें शिष्यको व्र... करके, आगे करके जिन प्रतिमाको तीन ...

करावे. फिर पूर्वाभिमुख होके शक्रस्तव पढे. । उस पीछे गृहस्थगुरु, आसन ऊपर बैठ जावे, और शिष्य 'नमोस्तु' कहता हुआ गुरुके पगोंमें पडके ऐसें कहे, "भगवन् भवद्भिर्मम व्रतादेशो दत्तः" तब गुरु कहे, "दत्तःसुगृहीतोस्तु सुरक्षितोस्तु स्वयं तर परं तारय संसारसागरात्" ऐसें कहके नमस्कार पढता हुवा ऊठके दोनों (गुरु शिष्य) चैत्यवंदन करें. उसपीछे ब्राह्मणने, विप्र क्षत्रिय वैश्यके घरमें भिक्षाटन करना; क्षत्रियने शस्त्र ग्रहण करना; और वैश्यने अन्नदान करना. ॥

इत्युपनयने व्रतादेशः ॥

अथ व्रतविसर्गःकथ्यतेः—अथ व्रतविसर्ग कहते हैं. ॥ ब्राह्मणने आठ वर्षसें लेके सोलां वर्षपर्यंत, दंड और अजिन धारण करके, भिक्षावृत्ति करके भोजन करना, यह उत्तम पक्ष है क्षत्रियने दंड अजिन धारण करके दश वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत आपहिं पाक करके, देवगुरुकी सेवामें तत्पर होके, भोजन करना; और वैश्यने दंड अजिन धारण करके संस्कृत भोजन करके बारां वर्षसें लेके सोलां वर्ष पर्यंत भोजन करना; यह उत्तम पक्ष है. । यदि कार्यव्यग्रतासें तितने दिन न रह सके तो, छ (६) मास पर्यंत रहना. तदभावे एक मास पर्यंत, तदभावे पक्ष पर्यंत, तदभावे तीन दिन रहना. यदि तीन दिन भी न

रह सके तो, तिसही उपनयनव्रतादेशके दिनमेंही विसर्ग करिये, सोही कहते हैं. । उपनीत, तीन २ प्रदक्षिणा करके चारों दिशायोंमें जिनप्रतिमाके आगे पूर्ववत् युगादिजिनस्तोत्र सहित शक्रस्तव पढे. तदपीछे आसनपर बैठे गुरुके आगे नमस्कार करके हाथ जोमके ऐसें कहे ॥ "भगवन् देशका लाद्यपेक्षया व्रतविसर्गमादिश " ॥ गुरु कहे ॥ " आदिशामि ॥ " फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ "भगवन्ममव्रतविसर्ग आदिष्टः ॥ गुरु कहे ॥ " आदिष्टः ॥ " फिर नमस्कार करके शिष्य कहे ॥ " भगवन् व्रतबंधो विसृष्ट ॥ " गुरु कहे ॥ "जिनो पवीतधारणेन अविसृष्टोस्तु स्वजन्मतः पोडशाब्दी ब्रह्मचारी पाठधर्मनिरतस्तिष्ठेः ॥ उसपीछे पंचपरमे ष्ठिमंत्र पढता हुआ शिष्य, मौंजी, कौपीन, वल्कल, दंड, इनको दूर करके, गुरुके आगे स्थापन करे; और आप जिनोपवीतधारी श्वेतवस्त्र उत्तरीय होके गुरुके आगे नमस्कार करके बैठे, तब गुरु तिस वारां तिलकधारी उपनीतके आगे उपनयनका व्या ख्यान करे. ।

तद्यथा ॥ आठ वर्षके ब्राह्मणको दश वर्षके क्षत्रि यको, और बारां वर्षके वैश्यको, उपनयन करना तिसमें गर्भमास भी बीचमेंही गणने । तथाच ॥ "जिनोपवीतमिति जिनस्य उपवीतं मुद्रासूत्रमित्यर्थः"

जिनका उपवीत अर्थात् मुद्रासूत्र सो कहावे जिनोपवीत. । नवब्रह्मगुप्ति गर्भरत्नत्रय, येह पुरा, श्रीयुगादिदेवने गृहस्थीवर्णत्रयको अपनी मुद्राका धारण करना यावत् जीवतांइ कहा था. । तदपीछे तीर्थके व्यवछेद हुए, मिथ्यात्वको प्राप्त ब्राह्मणोंनें हिंसा प्ररूपणेसें चारों वेदको मिथ्या पथमें प्राप्त करे हुए, पर्वत और वसुराजासें प्रायः हिंसक यज्ञके प्रवृत्त हुए, 'यज्ञोपवीत' ऐसा नाम धारण करा. मिथ्या दृष्टि यथेछासें प्रलाप करो ! परंतु जिनमतमें तो, जिनोपवीतही नाम है, नतु यज्ञोपवीत. तिसवास्ते तैनें इस जिनोपवीतको अछीतरें धारण करना मासमासपीछे नवीन धारण कराना, प्रमादसें जिनो, पवीत जाता रहे, वा टुट जावे तो, तीन उपवास करके नवीन धारण करना. प्रेतक्रियामें दक्षिण स्कंधके ऊपर, और वाम कक्षाके हेठे, ऐसें विपरीत धारण करना. क्योंकि, सो विपरीत कर्म है. । मुनि जी, मृत मुनिके त्यागनेमें तथाविध विपरीतही वस्त्र पहेनते हैं, जिसवास्ते, तूं जन्मकरके शूद्र आजतक था सांप्रत संस्कारविशेषकरके ब्रह्मगुप्तिके धारणेसें ब्राह्मण, वा क्षतात्राणेन-रक्षणकरनेसें क्षत्रिय, वा न्यायधर्ममें प्रवेश करनेसें वैश्य हुआ है; तिसवास्ते, क्रियासहित इस जिनोपवीतको अछीतरें ग्रहण करना अछीतरें रखना. तेरेको सत्कर्मवासना उपन

यनविधि क्षयरहित हो. एसें व्याख्यान करके पर मेष्ठिमंत्र पढकर दोनों गुरु शिष्य खडे होवे. पीछे चैत्यवंदन, और साधुवंदन करे. ॥ इत्युपनयने व्रत विसर्गविधिः ॥ अथ गोदानविधिर्यथा ॥

अथ गोदानविधि लिखते है. ॥ तदा व्रतविसर्गके अनंतर शिष्यसहित गुरु, जिनको तीन २ प्रदक्षिणा करके पूर्ववत् चारों दिशामें शक्रस्तवका पाठ करे. पीछे गृहस्थगुरु, आसनपर बैठे तब शिष्य गुरुको तीन प्रदक्षिणा करके नमस्कार करके हाथ जोडके खडा होके, गुरुको विज्ञापना करे. यथा ॥

"॥ भगवन् तारितोहं, निस्तारितोहं, उत्तमः कृतोहं, सत्तमःकृतोहं, पूत कृतोहं, पूज्यकृतोहं, तद्भगवन्नादिश, प्रमाद बहुले गृहस्थधर्म्में, मम किंच नापि रहस्यभूतं सुकृतं ॥"

हे भगवान् ! तारा मुझको, निस्तारा मुझको, उत्तम करा मुझको, अतिशयसाधु (श्रेष्ठ) करा मुझको, पवित्रकरा मुजको, पूज्य करा मुझको, तिसवास्ते, हे भगवन् ! प्रमादबहुल गृहस्थधर्ममें मेरेको कुछभी रहस्यभूत सुकृत कथन करो. ॥ तब गुरु कहे ॥

"॥ वत्स ! सुष्ठनुष्ठितं सुष्टु पृष्टं ततः श्रूयताम् ॥"

हे वत्स ! अच्छा करा, भला पूछा, तिसवास्ते तूं श्रवण कर. ॥

दानं हि परमो धर्म्मो दानं हि परमा क्रिया ॥
दानं हि परमो मार्ग्गस्तस्माद्दाने मनः कुरु ॥ १ ॥
दया स्यादभयं दानमुपकारस्तथाविधः ॥
सर्वो हि धर्म्मसंघातो दानेन्तर्भावमर्हति ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी च पाठेन भिक्षुश्चैव समाधिना ॥
वानप्रस्थस्तु कष्टेन गृही दानेन शुध्यति ॥ ३ ॥
ज्ञानिनः परमार्थज्ञा अर्हन्तो जगदीश्वराः ॥
व्रतकाले प्रयच्छन्ति दानं सांवत्सरं च ते ॥ ४ ॥
गृह्णतां प्रीणनं सम्यक् ददतां पुण्यमक्षयम् ॥
दानतुल्यस्ततो लोके मोक्षोपायोऽस्ति नाऽपरः ॥ ५ ॥

अर्थः—दानही परम उत्कृष्ट धर्म है, दानही परमा क्रिया है, दानही परम मार्ग है, तिसवास्ते दान देनेमें मन कर. । अभयदानसें दया होवे है, दानसेंही तथाविध उपकार होवे है, सर्वही धर्म समूह दानमें अंतर्भाव हो सक्ता है । ब्रह्मचारी पाठ करके, साधु समाधि करके, वानप्रस्थ कष्ट करके, और गृहस्थी दान करके शुद्ध होता है. । तीन ज्ञानके धर्त्ता परमार्थके जाणकार, ऐसें अर्हंत भगवंत जगदीश्वर भी व्रतसमयमें सांवत्सर दान देते हैं. । दान ग्रहण करनेवालेको तो, दान तृप्त करता है; और देनेवालेको अक्षय पुण्य प्राप्त करा ता है; तिसवास्ते दानके समान दूसरा कोई मोक्ष का उपाय लोकमें नही है. ॥ ५ ॥ जिसवास्ते हे

वत्स ! तैनें ब्राह्मणपणा, वा क्षत्रियपणा, वा वैश्य पणा प्राप्त करा है, अंगीकार करा है; तिसवास्ते हे वत्स ! तूं गृहस्थधर्ममें मोक्षके सोपानरूप दान देनेका प्रारंज कर. । तब नस्कार करके शिष्य कहे, हे जगवन् ! मुझको दानका विधी कहो. । गुरु कहे ' आदिशामि ' कहता हूं । यथा ॥

गावो जूमिः सुवर्णं च रत्नान्यन्नं च नक्तकाः ॥
गजाश्वाइति दानं तदष्टधा परिकीर्त्तयेत् ॥ १ ॥
एतच्चाष्टविधं दानं विप्राणां गृहमेधिनाम् ॥
देयं न चापि यतयो गृह्णन्त्येतच्चनिःस्पृहाः ॥ २ ॥
यतिज्यो जोजनं वस्त्रं पात्रमौषधपुस्तके ॥
दातव्यं द्रव्यदानेन तौ द्वौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥

अर्थः–गौ १, जूमि २, सुवर्ण ३, रत्न ४, अन्न ५, नक्तक वस्त्रविशेष ६, हाथी ७, और घोमा ८, येह आठ प्रकारका दान कहा है । यह पूर्वोक्त आठ प्रकारका दान, गृहस्थी ब्राह्मणगुरुयोंको देना. और निःस्पृह यति साधु मुनिराज, इस दानको नही लेते हैं । साधवोंको तो, जोजन, वस्त्र, पात्र, औषध पुस्तक, इनका दान देना साधुकों द्रव्य ( धन ) का दान देनेसें, देनेलेनेवाले दोनोंही नरकगामी होते हैं. ॥ ३ ॥ तिसवास्ते प्रथम गोदान ग्रहण करना. उपनीत, वछडेसहित कपिला, वा पाटला, वा श्वेत रंगकी, स्नापित, चर्चित, जूपित, धेनुको, आगे क्या

यके पूंछसे पकडके, रूप्यमय खुरा है जिसके, स्वर्ण मय शृंग है जिसके, ताम्रमय पृष्ठ है जिसकी, कांस्य मय दोहपात्र है जिसका, ऐसी धेनु, गृहस्थगुरुके तांइ देवे। गुरु तिस गौकी पूंछको हाथमें धारण करकें, यह वेदमंत्र पढे। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं गौरियं धेनुरियं प्रशस्यपशुरियं सर्वोत्तमक्षीरदधि घृतेयं पवित्रगोमयमूत्रेयं सुधास्त्राविणीयं रसोद्भाविनीयं पूज्येयं हृद्येयं अभिवाद्येयं तद्दत्तेयं त्वया धेनुः कृतपुण्यो भव प्राप्त पुण्यो भव अक्षयं दानमस्तु अर्हं ॐ॥"

यह कहकर गृहीगुरु धेनुको ग्रहण करे. शिष्य तिस गौकेसाथ द्रोणप्रमाण सात धान्य, तुलामात्र षट् (६) रस और पुरुषतृप्तिमात्र षट् (६) विकृती (विगय) देवे॥ इतिगोदानम्॥ अन्य सर्व भूमिरत्नादिदानोंविषे यह मंत्र पढना.। यथा॥

"॥ ॐ अर्हं एकमस्ति दशमकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति अयुतमस्ति लक्षमस्ति प्रयुतमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतकमस्ति कोटिसहस्रमस्ति कोट्ययुतमस्ति कोंटिलक्षमस्ति कोटिप्रयुतमस्ति कोटाकोटिरस्ति संख्येयमस्ति असंख्येयमस्ति अनंतानंतमस्ति दान फलमस्ति तदक्षयं दानमस्तु ते अर्हं ॐ॥" इति परेषां दानानां मंत्रपाठः॥

यहां उपनयनमें गोदानकाही निश्चय है, शेष दान क्रमकरके अन्यदा भी देना. गोदानादि दान गृहस्थगुरु ब्राह्मणोंकोही देना. निःस्पृह यतियोंको न देना. तथा तिन यतियोंको, अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, भेषज, वसति, पुस्तकादि दानमें 'धर्मलाभः' यही मंत्र जाणना. । अथ गृहस्थगुरु, उपनीतसें गोदान लेके, पर्णानुज्ञा देके, चैत्यवंदन, और साधु वंदन करायके, तैसेंही संघके मिले हुए, मंगलगीत वाजत्रोंके वाजते हुए, शिष्यको साधुयोंकी वसतिमें (उपाश्रयमें) ले जावे. तहां मंडलीपूजा, वासक्षेप, साधुवंदनादि सर्व पूर्ववत् करना. । पीछे चतु र्विध संघकी पूजा, और मुनियोंको वस्त्र, अन्न, पात्रा दि दान करे. ॥ इति गोदानविधिः ॥

संपूर्णोयं चतुर्विधउपनयनविधिः ॥

अथ शूद्रको उत्तरीयक देनेकी विधि लिख हैं. ॥ सात दिन तैलनिषेकस्नान पूर्ववत् जाणना. । तदनंतर यथाविधि पौष्टिक, सर्व शिरका मुंडन, वेदिकरण, चतुष्किकाकरण, जिनप्रतिमास्थापन, पूर्ववत् । पीछे गृहस्थगुरु, जिनेश्वरकी अष्टप्र कारी पूजा करे. चारोंदिशायोंमें शक्रस्तव पाठ करे. पीछे गुरु आसनऊपर बैठ जावे. तब शिष्य श्वेत वस्त्र पहिरके, उत्तरासंगकरके समवसरण और गुरुको, प्रदक्षिणा करके, 'नमोस्तु २' कहता हुआ, गुरुको

नमस्कार करके हाथ जोमके, खमा होयके कहे. "॥ नगवन् प्राप्तमनुष्यजन्मार्यदेशार्यकुलस्य मम वोधिरूपां जिनाज्ञां देहि ॥" गुरु कहे "॥ ददामि ॥" शिष्य फिर नमस्कार करके कहे "॥ न योग्योहमुपनयनस्य तज्जिनाज्ञां देहि ॥" गुरु कहे ददामि ॥" पीठे द्वादश (१२) गर्न्नतंतुरूप, जिनोपवीतप्रमाण दीर्घ (लंबा) कार्प्पासका, वा रेशमका, उत्तरीयक, परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, जिनोपवीतवत् पहिरावे. पीठे गुरु, पूर्वान्निमुख शिप्यको चैत्यवंदन करावे. । पीठे शिष्य 'नमोस्तु २" कहता हुआ, सुखसें वैठे गुरुके पगोंमें पमके, फिर खडा होके, हाथ जोमके, ऐसें कहे. "॥ नगवन् उतरीयकन्यासेन जिनाज्ञामारोपितोहं ॥" गुरु कहे "सम्यगारोपितोसि तर नवसागर" गुरु

कार्य व्रतं प्रेतकर्मकरणं वृषल त्वया ॥
युक्तिरेषोत्तरासंगानुज्ञायां च विधीयते ॥ ५ ॥
क्षात्राणामथ वैश्यानां देशकालादियोगतः ॥
त्यक्तोपवीतानां कार्यमुत्तरासंगयोजनम् ॥ ६ ॥
धर्मकार्ये गुरोर्दृष्टौ देवगुर्वालयेऽपि च ॥
धार्यस्तथोत्तरासंगः सूत्रवत् प्रेतकर्मणि ॥ ७ ॥
अन्येषामपि कारूणां गुर्वानुज्ञां विनापि हि ॥
गुरुधर्मादिकार्येषु उत्तरासंग इष्यते ॥ ८ ॥

अर्थः—सम्यक्त्वके संयुक्त द्वादश व्रत तैंने धारण करने, और कुलका मद न करना । जैन ब्राह्मणोंकी उपासना करनी; तथा गीतार्थाचीर्ण तप करना. । किसी पापात्माको निंदना नही, अपनी प्रशंसा नकरनी, हित इच्छके ब्राह्मणको मान देना. । शेष चतुर्वर्णशिक्षाश्लोकमें कहे आचारको आचरण करना, (उत्तरीयके परिभ्रंशमे, वा नंगने उपवीतवत् जाणना. । व्रत करना, प्रेतकर्म करना,) हे वृषलशूद्र । उत्तरासंगकी अनुज्ञामें तैंने यह युक्ति करनी । देशकालादियोगसें त्याग किया है उपवीत जिनोंनें, वैसे क्षत्रिय और वैश्योंको, उत्तरासंग योजन करना. । धर्मकार्यमें,. गुरुकी दृष्टिमें, देव और गुरुके मकानमें, तथा प्रेतकर्ममे, सूत्रकी तरें उत्तरासंग धारण करना. । और नी कारुओंको गुरुकी आज्ञाके विना नी गुरुधर्मादिकार्योमें उत्त

रासंग इच्छते हैं. । ऐसा व्याख्यान करके गुरु शिष्य को चैत्यवंदन करावे. । परमेष्ठिमंत्रका उच्चार और मंत्रव्याख्यान पूर्ववत्. । इतना विशेष है. शूद्रादि कोंको 'नमो' के स्थानमें 'णमो' उच्चारण कराना. इतिगुरुसंप्रदायः । पीछे शिष्यसहित गुरु, उत्सव करते हुए धर्मागारमें जावे. तहां मंडलीपूजा, गुरु नमस्कार, वासक्षेपादि पूर्ववत्. । पीछे मुनियोंको अन्न, वस्त्र, पात्र दान देवे. और चतुर्विध संघकी पूजा करे. ॥ इति उपनयने शूद्रादीनां उत्तरीयक न्यासोत्तरासंगानुज्ञोविधिः ॥

अथ वट्टकरणविधिः—अथ वट्टकरणविधि लिखते हैं. ॥ जिसवास्ते सम्यक् उपनीत, वेदविद्यासंयुक्त, दुष्प्रतिग्रहवर्जित, अशूद्रान्नभोजन करनेवाले, माहनोंके आचारमें रक्त, सर्व गृहस्थोकेसंस्कारप्रतिष्ठादिकमोंके करानेवाले, ऐसें ब्राह्मण, पूज्य होते है. । परंक्षत्रियादि राजायोंको, सेवा, अन्नपाक, तिसकी आज्ञा करनी, अभ्युत्थान, चाटुः—मनोहर वचन, प्रशंसा, विना नमस्कारके आशीर्वाद देना, विज्ञानकर्म, कृषि वाणिज्यकरण, तुरंगवृषभादि शिक्षाकरण, इत्यादि कर्म करनेवाले ब्राह्मणयोग्य नहींहै. इसवास्ते एसे ब्राह्मणो वा हरकोइ को शुद्ध ब्राह्मण वनानेके लिए "वट्ट करण" विधि करनाचहिये. सो वतातेंहै. उक्तं च यतः ॥

च्युतव्रतानां व्रात्यानां तथा नैवेद्यभोजिनाम् ॥
कुकर्म्मणामवेदानामजपानां च शस्त्रिणाम् ॥ १ ॥
ग्राम्याणां कुलहीनानां विप्राणां नीचकर्म्मणाम् ॥
प्रेतान्नभोजिनां चैव मागधानां च वंदिनाम् ॥ २ ॥
घांटिकानां सेवकानां गंधतांबूलजीविनाम् ॥
नटानां विप्रवेषाणां पर्शुरामान्वयाथिनाम् ॥ ३ ॥
अन्यजात्युद्भवानां च वंदिवेषोपजीविनाम् ॥
इत्यादिविप्ररूपाणां वट्टकरणमिष्यते ॥ ४ ॥

अर्थः–व्रतसें भ्रष्ट हुए, संस्कारहीन, नैवेद्यका भोजन करनेवाले, कुकर्मके करनेवाले, जैन वेदको नही जाणनेवाले, वेद मंत्रोंका जप न करनेवाले, शस्त्रको धारण करनेवाले, कुग्रामके वसनेवाले, कुलहीन, नीच कर्मके करनेवाले, प्रेतके अन्नका भोजन करनेवाले, मागध–स्तुतिपाठ पठनेवाले वंदीराजादिकी स्तुति पढनेवाले, घंटिका वजानेवाले, सेवा करनेवाले, गंधतांबूलकरके आजीविका करनेवाले, विप्रवेष धारण करनेवाले नट, पर्शुरामके संतानीय, अन्य जातिसें उत्पन्न हुए, वंदिवेषसें आजीविका करनेवाले, इत्यादि विप्ररूपको वट्टकरण इच्छते है । तिस का यह विधि है. प्रथम तिसके घरमें गृहस्थगुरु, यथोक्त विधिसें पौष्टिक करे. पीछे तिसको शिखा वर्जके मुंडन करावे, पीछे तिसको तीर्थोदक

मंत्रोंकरके मंत्रित जलकरके स्नान करावे. । तिर्थों दकाभिमंत्रणमंत्रोयथा ॥

" ॥ ॐ वं वरुणोसि वारुणमसि गांगमसि यामुनमसि गौदावरमसि नार्म्मदमसि पौष्करमसि सारस्वतमसि शातद्रवमसि वैपाशमसि सैंधवमसि चांद्रभागमसिवैतस्तमसि ऐरावतमसि कावेरमसि कारतोयमसि गौमतमसि शैतमसि शैतोदमसि रोहितमसि रोहितांशमसि सारेयवमसि हारिकांतमसि हारिसलिलमसि नारिकांतमसि नारकांतमसि रौप्यकूलमसि सौवर्णकूलमसि सालिलमसि रक्तवतमसि नैमग्नसलिलमसि उन्मग्नसलिलमसि पाद्ममसि महापाद्ममसि तैगिंछमसि कैशरमसि जीवनमसि पवित्रमसि पावनमसि तदमुं पवित्रय कुलाचाररहितमपि देहिनं॥

इस मंत्रसें कुशाग्रकरी सात वार अभिसिंचन करे. पीछे नदीकांठे वा तीर्थऊपर, वा मंदिरमें, वा पवित्र गृहस्थानमें तिस बटूकरण योग्यको, प्रथम तीनगुणी कुशमेखला, तीन प्रकारसें बांधे. । मेखला बंधमंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ पवित्रोसि प्राचीनोसि नवीनोसि सुगमोसि अजोसि शुद्धजन्मासि तदमुं देहिनं धृतव्रतमव्रतं वा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणं कुरु ॥ "

इस मंत्रका तीन वार पाठ करे. ॥ पीछे कौपीन पहिरावे. । कौपीनमंत्रो यथा ॥

ॐ अब्रह्मचर्यगुप्तोपि ब्रह्मचर्यधरोपि वा ॥
व्रतः कौपीनबंधेन ब्रह्मचारी निगद्यते ॥ १ ॥

ऐसें तीन वार पढके कौपीन पहिरावणा. । पीछे पूर्वोक्त ब्राह्मणसमान उपवीत, मंत्रपूर्वक पहिरावे. । मंत्रो यथा ॥

" ॥ ॐ सधर्म्मोसि अधर्मोसि कुलीनोसि अकुनोसि सब्रह्मचर्योसि सुमनाअसि दुर्म्मनाअसि श्रद्धालुरसि अश्रद्धालुरसि आस्तिकोसि नास्तिकोसि आर्हतोसि सौगतोसि नैयायिकोसि वैशेषिकोसि सांख्योसि चार्वाकोसि सलिंगोसि अलिंगोसि तत्त्वज्ञोसि अतत्त्वज्ञोसि तद्भव ब्राह्मणोऽमुनोपवीतेन भवंतु ते सर्वार्थसिद्धयः ॥ "

इस मंत्रको नव वार पढके उपवीत स्थापन करे. । पीछे तिसके हाथमें पलाशका दंड देवे, और मृगचर्म तिसको पहिरावे, और भिक्षा मांगनी करावे. भिक्षामार्गणकेपीछे उपवीतको वर्जके, मेखला, कौपीन, चर्मदंडादि दूर करे. । दूरकरनेकामंत्र यथा ॥

" ॥ ॐ ध्रुवोसि स्थिरोसि तदेकमुपवीतं धारय ॥ "

ऐसें तीन वार पढे । पीछे गुरु, धारण किया है श्वेतवस्त्रका उत्तरासंग जिसने, ऐसे ब्राह्मणको, आगे बिठलाके, शिक्षा देवे । यथा ॥

परनिंदां परद्रोहं परस्त्रीधनवांछनम् ॥
मांसाशनं म्लेच्छकंदभक्षणं चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥

वाणिज्ये स्वामिसेवायां कपटं मा कृथाः क्वचित् ॥
ब्रह्मस्त्रीभ्रूणगोरक्षां देवर्षिगुरुसेवनम् ॥ २ ॥
अतिथीनां पूजनं च कुर्याद्दानं यथा धनम् ॥
अथात्मघातं मा कुर्या मा वृथा परतापनम् ॥ ३ ॥
उपवीतमिदं स्थाप्यमाजन्मविधिवत्त्वया ॥
शेषः शिक्षाक्रमः कथ्यश्चातुर्वर्ण्यस्य पूर्ववत् ॥ ४ ॥

अर्थः—परनिंदा, परद्रोह, परधनकी वांछा, मांस भक्षण, म्लेच्छकंद" लशुनादिभक्षण, इनको वर्जना.। वाणिज्यमें स्वामीकी सेवामें, कदापि कपट न करना; ब्राह्मण, स्त्री, गर्भ और गौ, इन चारोंकी रक्षा करनी देव ऋषि और गुरुकी सेवा करनी. । अतिथीयोंका पूजन करना, धनके अनुसार दान देना, आत्मघात नही करना, परको पीडा न करनी, । जन्मपर्यंत यावज्जीवे तबतक विधिपूर्वक उपवीत धारण करना, शेष शिक्षाक्रम पूर्ववत् चारों वर्णोंका कथन करना. ॥ पीछे सो वटुकृत, गुरुको स्वर्ण, वस्त्र, धेनु, अन्न, दान करे. । यहां वटुकरणमे वेदी, चतुष्कि का, समवसरण, चैत्यवंदन, व्रतानुज्ञा, व्रतविसर्ग, गोदान, वासक्षेपादि नही है. ॥ इति वटुकरणविधिः॥ इति द्वादशमोपनयनादिसंस्कारवर्ण समाप्तम् ॥



## ॥ अथ अध्ययनारंज संस्कार लिख्यते ॥

अश्विनी, मूल, पूर्वा ३, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, हस्त, शतभिषा, स्वाति, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, येह नक्षत्र और बुध, गुरु, शुक्र, येह वार विद्यारंजमें शुज है. अर्थात् इनोंमें प्रारंज करी विद्या प्राप्त होती है. रवि और चंद्र, मध्यम हैं. मंगल और शनिवार, त्यागने योग्य है. । अमावास्या, अष्टमी, प्रतिपत् ( एकम, ) चतुर्दशी, रिक्ता, षष्ठी, नवमी, येह तिथियें विद्यारंजमें सदाही वर्जनी. ।

अथ उपनयनसदृश दिन और लग्नमें विद्यारंज संस्कारका आरंज करिये, तिसका यह विधि है. । गृहस्थगुरु प्रथम विधिसें उपनीत पुरुषके घरमें पौष्टिक करे; पीछे गुरु, मंदिरमें, वा उपाश्रयमें, वा कदंबवृक्षकेतले, कुशाके आसनउपर आप बैठके, शिष्यको वामेपासे कुशासनोपरि बिठलाके तिसके दक्षिण कानको पूजके तीनवार सारस्वत मंत्र पढे. पीछे गुरु, अपने घरमे, वा पाठ शालामें वा पौषधागारमे, शिष्यको पालखी, वा घोडेपर चढायके मंगलगीतोंके गाते हुए, दान देते हुए, वाजंत्र वाजते हुए, यति गुरु केपास लेजाके मंडलीपूजापूर्वक वास क्षेप करवाके, पाठशालामें लेजावे. पीछे गुरु शिष्यको आगे येह शिक्षाश्लोक पढे. । यथा ॥

अज्ञानतिमिरांधानां, ज्ञानांजनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥
यासां प्रसादादधिगम्य सम्यक्, शास्त्राणि विंदन्ति परं पदंज्ञाः ॥ मनीषितार्थप्रतिपादकाभ्यो नमोस्तु ताभ्यो गुरुपा दुकाभ्यः ॥ २ ॥
सत्येतस्मिन्नरतिरतिदं गृह्यते वस्तु दूरा, दप्यासन्नेप्य सति तु मनस्याप्यते नैव किंचित् ॥ पुंसामित्यप्यवग तवतामुन्मनीभावहेता, विच्छा वाढं भवति न कथं सद्गुरूपासनायाम् ॥ ३ ॥
इति मत्वा त्वया वत्स ! त्रिशुद्धोपासनं गुरोः ॥
विधेयं येन जायंते गोधीकीर्तिधृतिश्रियः ॥ ४ ॥

ऐसें शिष्यको शिक्षा देके, और तिससें स्वर्ण वस्त्र दक्षिणा लेके, गुरु अपने घरको जावे. पीछे उपाध्याय, सर्वको पहिले मातृका पढावे; पीछे विप्रको प्रथम आर्यवेद पढावे, पीछे षडंगी, पीछे न्याय व्याकर्ण धर्मशास्त्र पढावे; क्षत्रियको भी ऐसेंही चतुर्दश विद्या पढावे. पीछे आयुर्वेद, धनुर्वेद, दंड नीति और आजीविकाशास्त्र पढावे. वैश्यको धर्म शास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र और अर्थशास्त्र पढावे. शूद्रको नीतिशास्त्र और आजीविकाशास्त्र पढा वे, कारुयोंको तिनके उचित विज्ञानशास्त्र पढावे. पीछे सा धुयोंको चतुर्विध आहार वस्त्र पात्र पुस्तक दान देवे.।

इति त्रयोदशमविद्यारंभसंस्कारवर्णनं समाप्तं ॥

# अथ विवाह संस्कार विधिर्लिख्यते ॥

विवाह जो है सो समानकुलशीलवालोंकाही होता है. यतउक्तं ॥

ययोरेव समं शीलं, ययोरेव समं कुलम् ॥
तयोर्मैत्री विवाहश्च, न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ १ ॥

तिसवास्ते समकुलशील, समजाति, जाने है देशकृत्य जिनोंके, तिनका विवाहसंबंध जोडना योग्य है; तिसवास्ते जो अविकृत है, तिसनें विकृतकुलकी कन्या ग्रहण नही करनी । विकृतकुलं यथा । जिनकेकुलमें शरीरऊपर रोम बहुत होवे, अर्शरोग होवे, दाद होवे, चित्रकुष्टि होवे, नेत्ररोग होवे, उदररोग होवे, ऐसे वंशोंकी कन्या न ग्रहण करनी. विकृत कुल होनेसें. । कन्या विकृता यथा । वरसें लंबी होवे, हीन अंगवाली होवे, कपिला होवे, ऊंची दृष्टिवाली होवे, जिसका नाषण और नाम नयानक होवे, ऐसी कन्या विचक्षणोंको त्यागने योग्य है. तथा देवता, ऋषि, ग्रह, तारा, अग्नी नदी, वृक्षादिकके नामसे जो कन्या होवे, तथा जिसके शरीरऊपर बहुत रोम होवे, पिंगाक्षी और घरघरास्वरवाली, ऐसी कन्या नी पाणिग्रहणमें वर्जनी ॥ कन्यादाने वरस्य विकृतं कुलं यथा ॥ हीन होवे, क्रूर होवे, वधूसहित होवे, दरिद्री होवे,

व्यसन ( कष्ट ) संयुक्त होवे, कन्यादानमें ऐसें कुल और पुरुषको वर्जना. मूर्ख, निर्धन, दूर देशमें रह नेवाला, शूर, योद्धा, मोक्षाभिलाषी, कन्यासें तीन गुणासे अधिक उमरवाला, इनको भी कन्या न देनी. तिसवास्ते दोनों अविकृत कुलोंका, और दोनों विकृत कुलवालोंका विवाहसंबंध योग्य है. तथा पांच शुद्धियें देखके वधूवरका संयोग करना, सोही दिखावे हैं. राशि १, योनि २, गण ३, नाम्मी ४, और वर्ग ५, येह पांच शुद्धियें दोनोंकी देखके वरवधूका संयोग करना. । कुल १, शील २, स्वामि पणा ३, विद्या ४, धन ५, शरीर ६, और वय ७, येह सातो गुण वरमें देखने, अर्थात् येह सात गुण वरमेंदेखके कन्या देनी. आगे जो होवे, सो कन्या का भाग्य है. गर्भसें आठ वर्षसें लेके इग्यारह वर्ष तांइ कन्याका विवाह करना * तिसके ऊपरांत रज स्वला होती है. तिसको राका भी कहते हैं. तिस का विवाह शीघ्र होना चाहिये. वरको पाकरके

* यह कथन प्रायः लौकिकव्यवहारानुसार है. क्योंकि, जैना गममें तो " जोवणगमणमणुपत्ता " इतिवचनात्, जब वरकन्या योवनको प्राप्त होवे, तब विवाह करना और 'प्रवचनसारो द्धार' में लिखा है कि, सोला वर्षकी स्त्री, और पच्चीस वर्षका पुरुष, तिनके सयोगसें जो संतान उत्पन्न होवे, सो बलिष्ठ होवे है. इत्यादि मूलागमसें तो बाललग्नका और वृध्धके विवाहका निषेध सिद्ध होता है ॥

चंद्रबलके हुए, तुच्छ महोत्सवके भी हुए, विवाह करना उचित है. यतउक्तम् ॥

वर्षमासदिनादिनां शुद्धिं राकाकरग्रहे ॥
नालोकयेच्चंद्रबलं वरं प्राप्य विधापयेत् ॥ १ ॥

पुरुषका आठ वर्षसें लेके ७० वर्षके बीच २ विवाह होना चाहिये क्योकि, अस्सीवर्ष उपरांत प्रायः पुरुष शुक्ररहित होता है. ।

विवाह दो प्रकारके होते हैं, आर्यविवाह १, और पापविवाह २. । आर्य विवाहके चार भेद हैं. ब्राह्यविवाह १, प्राजापत्यविवाह २, आर्षविवाह ३, और दैवतविवाह ४. ये चारों विवाह मातापिताकी अज्ञासें होनेसें लौकिक व्यवहारमें धार्म्मिक विवाह गिने जाते है. पापविवाहके भी चार भेद हैं. गांधर्वविवाह १, आसुरविवाह २, राक्षसविवाह ३, और पैशाचविवाह ४. ये चारों स्वेच्छानु सार करनेसें पापविवाह गिने जाते हैं. ।

प्रथम ब्राह्याविवाहविधि लिखते हैं. । शुभ दिनमें, शुभ लग्नमें, पूर्वोक्त गुणसंयुक्त वरको बुलवाके स्नान अलंकार करके संयुक्त हुए तिस वरकों अलंकृत कन्या देवे ॥ मंत्रो यथा ॥

" ॐ अर्हं सर्वगुणाय सर्वविद्याय सर्वसुखाय सर्वपूजिताय सर्वशोभनाय तुभ्यं वस्त्रगंधमाल्यालं

कारालंकृतां कन्यां ददामि प्रतिगृह्णाष्व नद्रं नवतु ते अर्हं ॐ ॥"

इस मंत्रकरके वस्त्रांचलदंपती—स्त्रीनर्ता, अपने घरमें जावे. ॥ इति धार्म्यो ब्राह्मविवाहः ॥ १ ॥

प्राजापत्य विवाह जगत्में प्रसिद्ध है, इसवास्ते विस्तारसें कहेंगें. ॥

आर्ष विवाहमें वनमें रहनेवाले मुनि, ऋषि, गृहस्थ अपनी पुत्रीको, अन्यऋषिके पुत्रकों, गौ बैलके साथ देते हैं. तहां अन्य कोइ उत्सवादि नही होते हैं, इस विवाहका मंत्र जैनवेदोंमें नही है जैनी मंत्र जैन वेदकरके वर्णादि आश्रित हुए जैनोंके आचार कथन करनेवाले हे और ऐसें विवाह अकृत्य होनेसें जैनोकों कथन करनेकी जरुर नही हे. दैवत । विवाहमें नी ऐसेंही जाणना. । इन दोनों विवाहोके मंत्र पर समयसें जाणने. ॥ इति धार्म्य आर्षविवाहः ॥ ३ ॥

दैवत विवाहमें तो, पिता, अपने पुरोहितकों इष्ट पूर्त्त कर्मके अंतमें अपनी कन्याको दक्षिणाकी तरें देवे. यह कार्य नी जैनोंकों सम्मत नही होनेसें इस्के मंत्रनी कथन करतें नही हें ॥ इति दैवत धार्म्य विवाहः ॥ ४ ॥ ये चार धार्म्यविवाह हैं. ॥

पितादिकोंकी सम्मती विना, अन्योन्यप्रीतिकरके जो विवाह होता है, सो गांधर्वविवाह. ॥१॥

पणबंध, सो आसूरविवाह. ॥ २ ॥ हठसें कन्या ग्रहण करे सो राक्षस विवाह ॥ ३ ॥

सुप्त, और प्रमत्तकन्याको ग्रहण करनेसें, पैशाच विवाह कहा जाता है. ॥ ४ ॥ माता, पिता, गुरु, आदिकी आज्ञा न होनेसें इन चारों विवाहोंको विवाहज्ञ पुरुष पापविवाह कहते हैं. ॥ तथा ब्राह्म १ आर्ष २, और दैवत ३, येह तीन विवाह दुःखमका लकलियुगमें प्रवर्त्तते नही है. । चारों पापविवाहोंका वेदोक्तविधि भी नही है. अधर्म होनेसें ॥

संप्रति वर्त्तमान प्राजापत्य विवाहका विधि कहते है ॥ मूल, अनुराधा, रोहिणी, मघा, मृगशिर, हस्त, रेवती, उत्तरा ३, स्वाति, इन नक्षत्रोंमें लग्न करना. । वेध, एकार्गल, लत्ता, पात, उपग्रहसंयुक्त नक्षत्रोंमें विवाह नही करना. । तथा युति, क्रांति, साम्य, दोषमें भी नही करना. । तीन दिनको स्पर्शनेवाली तिथिमें, ( अवम् क्षय तिथिमें, ) क्रूर तिथिमें, दग्ध तिथिमें, ) रिक्ता तिथिमें, अमावास्या, अष्टमी, षष्टी, द्वादशी इनमें विवाह नही करना. । भद्रामें, संक्रांतमें, दुष्टनक्षत्र तिथि वार योगों, व्यतिपातमें, वैधृतिमें और निंद्यसमयमें विवाह नही करना सूर्यके क्षेत्रमे बृहस्पति होवे और बृहस्पतिके क्षेत्रमें सूर्य होवे तो, दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाह प्रमुख वर्जने. । चौमासेमें, अधिकमा

समें, गुरु शुक्रके अस्त हुए, मलमासमें, और जन्म मासमें, विवाहादि न करना. । मासांतमें, संक्रांति में, संक्रांतिके दूसरे दिनमें, ग्रहणादि सात दिनोंमें नी, पूर्वोक्त कार्य नही करना. । जन्मके तिथि वार, नक्षत्र, लग्नमें; राशि और जन्मके ईश्वरके अस्त हुए, और क्रूर ग्रहोकरके हत हुए नी, विवाह नही करणा. । जन्मराशिमें, जन्मराशि और जन्मलग्नसें बारमें और आठमेमें, और लग्नके अंशके अधिपके छठे, और आठमे घरमें गए हुए, लग्न नही करना । स्थिर लग्नमें, वा द्विस्वनावलग्नमें, वा सद्गुण करी संयुक्त चर लग्नमें, उदयास्तके विशुद्ध हुए, विवाह करना. परंतु उत्पातादिकरके विदूषितमें नही करना. । लग्न और सप्तम घर, ग्रहकरके वर्जित होवे; तीसरे, छठे, और इग्यारमे घरमें, रवि, मंगल और शनि होवे । छठे और तीसरे घरमें, तथा पापग्रहवर्जित पांचमें घरमें राहु होवे; लग्नमें तथा पांचमें, चौथे, दशमे, और नवमे घरमें बृहस्पति होवे. । ऐसेंही शुक्र, बुध, होवे; लग्न, छठे, आठमे, बारमे घरसें, अन्यत्र चंद्रमा होवे, सो नी पूर्ण होवे. । क्रूरकरके दृष्ट, और क्रूरसंयुक्त चंद्र वर्जना; क्रूर, और अंतस्थ लग्न और चंद्र वर्जने. । इत्यादि गुणसंयुक्त, दोष विवर्जित लग्नमें, शुन्न अंशमें शुन्न ग्रहोंकर दृष्ट हुए, पाणिग्रहण शुन्न है. ॥ इत्यादि

श्रीभद्रबाहु, वराह, गर्ग, लल्ल, पृथुयशः, श्रीपति, विरचितविवाहशास्त्रके अवलोकनसें शुभ लग्न देख के विवाहका आरंभ करना. ॥

श्लोकः ॥

ततश्च कुलदेशादि गुरुवाक्यविशेषतः ॥
अनुज्ञातं विवाहादि गर्गादिमुनिभिः पुरा ॥१॥

वृत्तम् ॥

सूर्यः षट् त्रिदशस्थितस्त्रिदशषट्सप्ताद्यगश्चंद्रमा
जीवः सप्तनवद्विपंचमगतो वक्रार्कजौ षट्त्रिगौ ॥
सौम्यः षट्द्विचतुर्दशाष्टमगतः सर्वेप्युपांते शुभाः
शुक्रः सप्तमषट्दशाष्टरहितः शार्दूलवत्रासकृत् ॥ १ ॥

स्त्रीयोंको बृहस्पति बलवान् होवे, पुरुषोको सूर्य बलवान् होवे, और दंपतीको चंद्र बलवान् होवे तो, लग्न शोधना. ॥

प्रथम कन्यादानविधि कहते हैंः—पूर्वोक्त समान कुलशीलवाले, अन्य गोत्रीसें कन्या मांगनी. । पूर्वोक्त गुणविशिष्ट वरकेतांइ कन्या देनी. । कन्याके कुलज्येष्ठने वरके कुलज्येष्ठको, नालियर, क्रमुक (सुपारी) जिनोपवीत, व्रीही, दूर्वा, हरिद्रा अपने २ देशकुलोचित वस्तु दानपूर्वक कन्यादान करना. तदा गृहस्थगुरु वेदमंत्र पढे । स यथा ॥

" ॥ ॐ अर्हं परमसौभाग्याय, परमसुखाय, परमभोगाय, परमधर्माय, परमयशसे, परमसन्तानाय,

समें, गुरु शुक्रके अस्त हुए, मलमासमें, और जन्म मासमें, विवाहादि न करना. । मासांतमें, संक्रांति में, संक्रांतिके दूसरे दिनमें, ग्रहणादि सात दिनोंमें भी, पूर्वोक्त कार्य नही करना. । जन्मके तिथि वार, नक्षत्र, लग्नमें; राशि और जन्मके ईश्वरके अस्त हुए, और क्रूर ग्रहोकरके हत हुए भी, विवाह नही करणा. । जन्मराशिमें, जन्मराशि और जन्मलग्नसें बारमें और आठमेमें, और लग्नके अंशके अधिपके छठे, और आठमे घरमें गए हुए, लग्न नही करना. । स्थिर लग्नमें, वा द्विस्वभावलग्नमें, वा सद्गुण करी संयुक्त चर लग्नमें, उदयास्तके विशुद्ध हुए, विवाह करना. परंतु उत्पातादिकरके विदूषितमें नही करना. । लग्न और सप्तम घर, ग्रहकरके वर्जित होवे; तीसरे, छठे, और इग्यारमे घरमें, रवि, मंगल और शनि होवे. । छठे और तीसरे घरमें, तथा पापग्रहवर्जित पांचमें घरमें राहु होवे; लग्नमें तथा पांचमें, चौथे, दशमे, और नवमे घरमें बृहस्पति होवे. । ऐसेंही शुक्र, बुध, होवे; लग्न, छठे, आठमे, बारमे घरसें, अन्यत्र चंद्रमा होवे, सो भी पूर्ण होवे. । क्रूरकरके दृष्ट, और क्रूरसंयुक्त चंद्र वर्जना; क्रूर, और अंतस्थ लग्न और चंद्र वर्जने. । इत्यादि गुणसंयुक्त, दोष विवर्जित लग्नमें, शुभ अंशमें शुभ ग्रहोंकर दृष्ट हुए, पाणिग्रहण शुभ है. ॥ इत्यादि

श्रीनद्रबाहु, वराह, गर्ग, लल्ल, पृथुयशः, श्रीपति, विरचितविवाहशास्त्रके अवलोकनसें शुन्न लग्न देख के विवाहका आरंन्न करना. ॥

श्लोकः ॥

ततश्च कुलदेशादि गुरुवाक्यविशेषतः ॥
अनुज्ञातं विवाहादि गर्गादिमुनिन्निः पुरा ॥१॥

वृत्तम् ॥

सूर्यः षट् त्रिदशस्थितस्त्रिदशषट्सप्ताद्यगश्चंद्रमा
जीवः सप्तनवद्विपंचमगतो वक्रार्कजौ षट्त्रिगौ ॥
सौम्यः षट्द्विचतुर्दशाष्टमगतः 'सर्वेप्युपांते शुन्नाः
शुक्रः सप्तमषट्दशाष्टरहितः शार्दूलवत्त्रासकृत् ॥ १ ॥

स्त्रीयोंको बृहस्पति बलवान् होवे, पुरुषोंको सूर्य बलवान् होवे, और दंपतीको चंद्र बलवान् होवे तो, लग्न शोधना. ॥

प्रथम कन्यादानविधि कहते हैंः—पूर्वोक्त समान कुलशीलवाले, अन्य गोत्रीसें कन्या मांगनी. । पूर्वोक्त गुणविशिष्ट वरकेतांइ कन्या देनी । कन्याके कुलज्येष्ठने वरके कुलज्येष्ठको, नालियर, क्रमुक (सुपारी) जिनोपवीत, व्रीही, दूर्वा, हरिद्रा अपने २ देशकुलोचित वस्तु दानपूर्वक कन्यादान करना. तदा गृहस्थगुरु वेदमंत्र पढे । स यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं परमसौन्नाग्याय, परमसुखाय, परमन्नोगाय, परमधर्म्माय, परमयशसे, परमसन्तानाय,

नोगोपनोगांतरायव्यवच्छेदाय, इमां अमुकनाम्नीं कन्यां अमुकगोत्रां अमुकनाम्ने वराय अमुकगोत्राय ददाति गृहाण अँर्हं ॐ ॥ ”

पीठे सर्व लोकोंकेतांइ कन्याके पक्षी तांबूल देवे. । तथा दूर रहे विवाहकालमें वरके जीते हुए, सो कन्या अन्यको न देवे.

उक्तंच ॥

“ सकृज्जल्पन्ति राजानस्सकृज्जल्पन्ति पण्डिताः ॥
सकृत् प्रदीयते कन्या त्रीण्येतानि सकृत् सकृत्॥१॥ ”

राजाओं एकवार बोलते हैं, पंमित जन एक वार बोलते हैं, कन्या एकवार दिइजाती हैं. पूर्वोक्त तीन कार्य एकएकहीवार होते हैं. ॥ तथा वर नी, तिस कन्याको वस्त्र, आनरण, गंधादिजत्सवसहित, तिसके पिताके घरमें देवे. । कन्याका पिता नी, परिजनसंयुक्त वरको, महोत्सवसहित वस्त्र मुडिकादिक देवे. ॥

लग्नदिनसें पहिले मासमें. वा पक्षमें, अवकाशानुसारें दोनों पक्षोंके स्वजनोंको एकठे करके, सांवत्सर–ज्योतिषिकको उत्तम आसनऊपर बिठलाके, तिसके हाथसें विवाहलग्न नूमिके ऊपर लिखवावे; और रूप्य, स्वर्णमुद्रा, फल, पुष्प, दूर्वा करके जन्म लग्नवत् विवाहलग्नको पूजे. । पीठे ज्योतिषिको-

दोनों पक्षोंके वृद्धनें वस्त्रालंकार तांबूलदान देना इति विवाहारंजः ॥

पीछे कोरे शरावलोंमें यव बोवने। पीछे कन्या के घरमें मातृस्थापना, और षष्ठीस्थापना, षष्ठी पूजनविधिके प्रकारसें करना. । वरके घरमें मातृ स्थापन, और कुलकरस्थापन करना. । परमतमें गण पति, कंदर्प स्थापन करते हैं. सो सुगम, और लोक प्रसिद्ध है. ॥

अथ कुलकर स्थापनविधि कहते हैं. ॥ गृहस्थ गुरु जूमिपर नहीं पडे गोमय (गोवर) करके लीपी हुई जूमिमें, स्वर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय, वा श्रीप र्णीकाष्ठमय, पट्टा, स्थापन करे. । पट्टकस्थापन मंत्रः

"॥ ॐ आधाराय नमः आधारशक्तये नमः ।

इस मंत्रकरके एकवार मंत्रके पट्टेको स्थापन करके, तिस पट्टेको अमृतामंत्रकरके तीर्थजलोंसें अजिषिंचन करके. । पीछे चदन, अक्षत, दूर्वाकरके पट्टेको पूजे. । पीछे आदिमें.

"॥ ॐ नमः प्रथमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्यामवर्ण चंद्रयशः प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रोच्चारख्यापितन्याय्यपथाय, विमलवाहनाजिधानाय, इह विवाहमहोत्सवादौ आगच्छ २, इह स्थाने तिष्ठ २, सन्निहितो जव २, क्षेमदो जव २, उत्सवदो जव २, आनंददो जव २, जोगदो जव २, कीर्तिदो जव २,

अपत्यसंतानदो नव १, स्नेहदो नव १, राज्यदो नव १, इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं चर्चां आचमनीयं गृहाण १, सर्वोपचारान् गृहाण ॥ " १, पीछे ॥

" ॥ ॐ गंधं नमः । ॐ पुष्पं नमः । ॐ धूपं नमः । ॐ दीपं नमः । ॐ उपवीतं नमः । ॐ नूषणं नमः । ॐ नैवेद्यं नमः । ॐ तांबूलं नमः ॥ "

पूर्वोक्त मंत्रकरी आव्हान संस्थापन करके, इस मंत्रसे अर्घ्य, पाद्य, बलि, चर्चा, आचमनीय, दान देवे. यह बोटे मंत्रोंसें गंधके दो तिलक, दो पुष्प, दो धूप, दो दीप, एक उपवीत, दो स्वर्णमुद्रा, दो नैवेद्य, दो तांबूल, चढावे. ॥१॥ पीछे दूसरे स्थानमें ॥

" ॥ ॐ नमो द्वितीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णचंद्रकांता प्रियतमासहिताय, हाकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, चक्षुष्मदभिधानाय, ॥ " शेषं पूर्ववत् ॥ २ ॥

" ॥ ॐ नमस्तृतीयकुलकराय, श्यामवर्णाय, श्यामवर्णसुरूपाप्रियतमासहिताय माकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, यशस्वअभिधानाय ॥ " ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

" ॥ ॐ नमश्चतुर्थकुलकराय, श्वेतवर्णाय, श्यामवर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय, माकरमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, अभिचंद्राभिधानाय ॥ " शेषं पूर्ववत् ॥

" ॥ ॐ नमः [illegible] य, श्यामवर्णचक्षुःकांताप्रियतमास[illegible]

पितन्याय्यपथाय प्रसेनजिदभिधानाय ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ५ ॥

" ॥ ॐ नम षष्ठकुलकराय, स्वर्णवर्णाय, श्यामवर्णश्रीकांताप्रियतमासहिताय,धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय मरुदेवाभिधानाय, ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ६ ॥

" ॥ ॐ नमः सप्तमकुलकराय, कांचनवर्णाय, श्यामवर्णमरुदेवाप्रियतमासहिताय, धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय, नाभीअभिधानाय ॥" शेषं पूर्ववत् ॥ ॥ ७ ॥ इतिकुलकरस्थापन पूजनविधिः ॥

यह कुलकरस्थापना और परसमयमें गणेशमदन स्थापना, विवाहके पीछे भी सात अहोरात्रपर्यंत रखनी चाहिये. । पीछे वरके घरमें शांतिक, पौष्टिक करे. और कन्याके घरमें मातृपूजा पूर्ववत् । पीछे विवाहकालसें पूर्व सात, नव, इग्यारह, वा तेरह, दिनोंमें वधूवरको अपने २ घरमें, मंगलगीतवाजंत्र पूर्वक, तैलाभिषेक और स्नान, नित्य विवाहपर्यंत कराना. । प्रथमतैलाभिषेकदिनमें, वरके घरसें कन्याके घरमें, तैल, शिरःप्रसाधनगंधद्रव्य, द्राक्षादि खाद्य, शुष्कफल, भेजने. । नगरकी औरतें वरके घरमें और कन्याके घरमें, तैल, धान्य, ढौकन करें । वधूवरके घरकी वृद्ध नारीयों तिन तैल धान्यढौकने वाली नारीयोंको, पूडे आदि पक्वान्न देवें । तहां धारणादि देशाचार, कुलाचारोंसें करना. । तैलाभि

पेक, कुलकर गणेशादि स्थापन, कंकणबंध, अन्य विवाहके उपचारदिक सर्व, वधूवरको चंद्रबलके हुए, विवाहवाले नक्षत्रमें करना. । तथा धूलिजक्त, कौर जक्त, सौजाग्यजलल्यावन प्रमुख, कर्म, मंगलगीत वाजंत्रादिसहित देशाचार कुलार विशेषसें करना. । पीछे जेकर, वर, अन्य ग्रामांतर, नगरांतर, वा देशांतरमें होवे तो, तिसकी गमनयात्रा (जान जनेत वरात) कन्याके निवासस्थानप्रति करनी; तिसका विधि यह है. ॥

प्रथम एक दिनमें मातृपूर्वक सर्व लोकोंको जोजन देना; पीछे दूसरे दिन सुस्नात होके, चंदन का लेपन करके, वस्त्रगंधमाल्यादिकरके अलंकृत होके, मुकुट जूषित शिरको करके, घोडेपर, वा हाथी पर, वा पालखीमें आरूढ होके, वर चले. । तिसके समीप, अच्छे वस्त्रोंवाले, प्रमोदसहित, पानबीडे चावे हुए, संबंधी ज्ञातिजन, अपनी २ संपदानु सार घोडेआदि ऊपर चढे हुवे, वा पगोंसें चलते हुए, वरकेसाथ चलें । दोनों पासे, मंगलगानमें तत्पर ऐसी ज्ञातिकी नारीयां चलें और आगे जैन ब्राह्मणलोक, गृहशांतिमंत्र पढते हुए चलें. ॥

"ॐ अर्हं आदिमोर्हन्, आदिमो नृपः, आदिमो यंता, आदिमो नियंता, आदिमो गुरुः, आदिमः स्रष्टा, आदिमः कर्त्ता, आदिमो जर्त्ता, आदिमो

जयी, आदिमो नयी, आदिमः शिल्पी, आदिमो विद्वान्, आदिमो जल्पकः, आदिमः शास्ता, आदिमो रौद्रः, आदिमः सौम्य, आदिमः काम्यः, आदिमः, शरण्यः, आदिमो दाता, आदिमो वंद्यः, आदिमः स्तुत्यः, आदिमो ज्ञेयः, आदिमो ध्येयः, आदिमो भोक्ता, आदिमः सोढा, आदिम एकः, आदिमोऽनेकः, आदिमः स्थूलः, आदिमः कर्म्मवान् आदिमोऽकर्म्मा, आदिमो धर्म्मवित्, आदिमोऽनुष्टेयः, आदिमोऽनुष्ठाता, आदिमः सहजः, आदिमो दशावान् आदिमः सकलत्रः, आदिमो निःकलत्रः, आदिमो विवोढा, आदिमः ख्यापकः, आदिमो ज्ञापकः, आदिमो विदुरः, आदिमः कुशलः, आदिमो वैज्ञानिकः, आदिमः सेव्यः, आदिमोगम्यः, आदिमो विमृश्यः, आदिमो विश्वष्टा, सुरासुरनरोरगप्रणतः, प्राप्तविमलकेवलो यो गीयते, सकलप्राणिगणहितो, दयालुरपरापेक्षापरात्मा, परंज्योतिः, परं ब्रह्म, परमैश्वर्यभाक्, परंपरः, परापरो, जगदुत्तमः सर्वगः, सर्ववित्, सर्वजित्, सर्व्वीयः, सर्व्वप्रकास्यः सर्ववंद्यः, सर्वपूज्यः, सर्वात्माऽसंसारोऽव्ययोऽवार्य[illegible]र्यः, श्रीसंश्रय·, श्रेयः, संश्रय., विश्वावश्याय[illegible] संशयहृत्, विश्वसारो, निरंजनो, निर्ममो, [illegible]को, निःपाप्मा, निःपुण्यः, निर्मना, निर्वाचा, [illegible] निःसंशयो, निराधारो, निरवधिः प्रमाणं, प्रमेयं, [illegible]

जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्ज्जराबंधमोक्षप्रकाशकः, स एव जगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु, ऋद्धिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु, श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अर्हं ॐ ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चलें. । पीछे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी, गुरुवंदन, मंफलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके, नगरके समीप रहे; पीछे पंथसें चलें. । तथा इसी रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना. । तिसही नगरमें विवाहकेवास्ते चले हुए वरका जी, यही विधि जाणना. । तथा निरयज्ञानके अनंतर कौसुंज सूत्रकरके वधूवरके शरीरका माप करना. । पीछे विवाहदिनके आये हुए, विवाहलग्नसें पहिले, तिस ही नगरका वासी, वा अन्यदेशसें आया वर, तिस ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चलें. तिस ही वदिन विशेषकरके न्हंणआदि [illegible] । करे. । पीछे वर, आकंबर और एहस्थ [illegible] कन्

नसूत्रसें अलंकृत, मंथानको लाके, तिससें, तीन वार वरके ललाटको स्पर्श करे । पीछे वर, वाहन सें नीचे उतरके, वामे पगसे तिस अग्निलवण संयुतसंपुटको खंडित करे (तोडे.) पीछे वरकी सासु, वा कन्याकी मामी, वा कन्याका मामा, कौसुं नवस्त्रको वरके कंठमें डालके, खेंचता हुआ वरको मातृघरमें ले जावे. तहां विभूषाकरके, कौतुकमंगलकरके, प्रथम आसनऊपर वैठी हुई कन्याके वामे पासे, मातृदेवीके सन्मुख, वरको विठलावे. । पीछे गृहस्थगुरु लग्नवेलामे शुभांशके हुए, पीसी हुई समी (खेजडी) की छाल, और पीपलकी छाल, चंदनद्रव्यमिश्रितकरके, तिससें लीपे हुए, वधूवरके दोनों दक्षिण हाथ जोडे. । उपर कौसुंनसूत्रसें वांधे. ॥ हस्तबंधनमंत्रः ॥

"॥ ॐ अर्हं आत्मासि, जीवोसि, ... समचित्तोसि, समकर्मासि, समाश्रयोसि ... नोसि, समक्रियोसि, समस्नेहोसि, समचेष्टितोसि, ... ना षोसि, समेच्छोसि, समप्रमोदोसि, सम... समावस्थोसि, समनिमित्तोसि, समवचा...

जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जराबंधमोक्षप्रकाशकः, स एव जगवान्, शान्तिं करोतु, तुष्टिं करोतु, पुष्टिं करोतु, ऋद्धिं करोतु, वृद्धिं करोतु, सुखं करोतु, सौख्यं करोतु, श्रियं करोतु, लक्ष्मीं करोतु अर्हं ॐ ॥

ऐसें आर्यवेदके पाठी ब्राह्मण, आगे चलें. । पीछे इसी विधिसें महोत्सवकरके, चैत्यपरिपाटी, गुरुवंदन, मंकलीपूजन, नगरदेवतादिपूजन, करके, नगरके समीप रहे; पीछे पंथमें चलें. । तथा इसी रीतिसें कन्याधिष्ठित नगरमें प्रवेश करना. । तिसही नगरमें विवाहकेवास्ते चले हुए वरका जी, यही विधि जाणना. । तथा नित्यस्नानके अनंतर कौसुंज सूत्रकरके वधूवरके शरीरका माप करना. । पीछे विवाहदिनके आये हुए, विवाहलग्नसें पहिले, तिस ही नगरका वासी, वा अन्यदेशसें आया वर, तिस ही पूर्वोक्त विधिसें, पाणिग्रहणकेवास्ते चले. तिस की बहिन विशेषकरके लूंणआदि उत्तारण करे. । पीछे वर, आमंबर और गृहस्थगुरुसहित कन्याके घरके द्वारमें आवे. तहां खडे हुए वरको, तिसके सासुजन, कर्पूरदीपकादिकरके आरात्रिक ( आरति ) करे । पीछे अन्य स्त्री, जलते हुए अंगारे, और लवणकरके संयुक्त, त्रम त्रम ऐसे शब्द करते हुए, सरावसंपुटको, वरको निरुंछन करके, प्रवेशमार्गके मे पासे स्थापन करे. । पीछे अन्य स्त्री कौसुं

ज्ञातीया,अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहित्रीअमुका वर्य्या तदेतयोर्वर्य्यावरयोर्वरवर्य्ययोर्नि बिडा विवाहसंबंधोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अर्हं ॐ ॥" ऐसें कहे ॥

पीछे गुरु, वरवधूके पाससें गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे । पीछे वधू लाजांजलिको अग्निमें निक्षेप करे. । पीछे फिर तैसेंही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर बैठे. । पीछे गुरु वेदमंत्र पढे

" ॥ ॐ अर्हं अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादिकालः, अनादिकर्म्म, अनादिसंबंधो, देहिनां, देहानुमतानुगतानां, क्रोधोहंकारछद्मलोभैः, संज्वलनप्रत्याख्यानावरणाप्रत्याख्यानानंतानुबंधिभिः शब्दरूपरसगंधस्पर्शैरिछानिछापरिसंकलितैः संबंधो अनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः स्वनुष्टितः सुनिवृत्तः सुप्रातः सुलब्धो द्रव्यभावविशेषेण अर्हं ॐ॥ " यह मंत्र पढके फेर ऐसा कहे.

" ॥ तदस्तु वां सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतुर्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं नरनारीप्रत्यक्षं नृप्रत्यक्षं जनप्रत्यक्षं मातृप्रत्यक्षं पितृप्रत्यक्षं मातृपक्षप्रत्यक्षं पितृपक्षप्रत्यक्षं ज्ञाति

गान, वादित्रवादन, जोजन तांबूल वस्त्र सामग्री सदैव करनेचहिये ॥ पीठे गुरु ॥

"॥ ॐ नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुन्यः ॥"

ऐसें कहके, प्रथम अक्षतपूर्ण हाथवाला होके वधूवरके आगे ऐसा कहे. ॥

" विदितं वां गोत्रं संवंधकरणेनैव ततःप्रकाश्यतां जनाग्रतः "

जाना है तुमारा गोत्र, संवंध करनेसेंही; तिस वास्ते प्रकाश करो, लोकोंके आगे.। तव प्रथम वरके पक्षीय, अपने गोत्र, अपनी प्रवर, ज्ञाति और अपने अन्वय–वंशको प्रकाश करे,। पीठे वरकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, और वंशको प्रकाश करे.। पीठे कन्याके पक्षीय, अपने गोत्र, प्रवर ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे.। फिर कन्याकी माताके पक्षीय, गोत्र, प्रवर, ज्ञाति, वंशको प्रकाश करे.। पीठे गुरु. ॥

"॥ ॐ अर्हं अमुकगोत्रीयः, इयत्प्रवरः, अमुकज्ञातिः, अमुकान्वयः, अमुकप्रपौत्रः, अमुकपौत्रः अमुकपुत्रः, अमुकगोत्रीयः, इयत्प्रवर अमुकज्ञातीयः, अमुकान्वयः, अमुकप्रदौहित्रः, अमुकदौहित्रः, अमुकः सर्ववरगुणान्वितो, वरयिता, अमुकगोत्रीया, इयत्प्रवरा, अमुकज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रपौत्री, अमुकपौत्री, अमुकपुत्री. अमुकगोत्रीया, इयत्प्रवरा, अमुक

ज्ञातीया, अमुकान्वया, अमुकप्रदौहित्री, अमुकदौहित्रीअमुका वर्य्या तदेतयोर्वर्य्यावरयोर्वरवर्य्ययोर्नि विक्तो विवाहसंबंधोस्तु शांतिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, अर्हं ॐ ॥" ऐसें कहे ॥

पीछे गुरु, वरवधूके पाससें गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य करके अग्निकी पूजा करावे. । पीछे वधू लाजांजलिको अग्निमें निक्षेप करे. । पीछे फिर तैसेंही दक्षिण पासे वधू, और वामे पासे वर बैठे. । पीछे गुरु वेदमंत्र पढे

" ॥ ॐ अर्हं अनादिविश्वमनादिरात्मा, अनादिकालः, अनादिकर्म्म, अनादिसंबंधो, देहिनां, देहानुमतानुगतानां, क्रोधोहंकारछद्मलोभैः, संज्वलनप्रत्याख्यानावरणाप्रत्याख्यानानंतानुबंधिभिः शब्दरूपरसगंधस्पर्शैरिछानिछापरिसंकलितैः संबंधो अनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुकृतः स्वनुष्ठितः सुनिवृत्तः सुप्राप्तः सुलब्धो द्रव्यभावविशेषेण अर्हं ॐ॥ " यह मंत्र पढके फेर ऐसा कहे.

" ॥ तदस्तु वां सिद्धप्रत्यक्षं केवलिप्रत्यक्षं चतुर्णिकायदेवप्रत्यक्षं विवाहप्रधानाग्निप्रत्यक्षं नागप्रत्यक्षं नरनारीप्रत्यक्षं नृप्रत्यक्षं जनप्रत्यक्षं मातृप्रत्यक्षं पितृप्रत्यक्षं मातृपक्षप्रत्यक्षं पितृपक्षप्रत्यक्षं ज्ञाति

स्वजनबंधुप्रत्यक्षं संबंधः सुकृतः सदनुष्ठितः सुप्राप्तः सुसंगतः तत्प्रदक्षिणी क्रियतां तेजोराशिर्विभावसुः॥"

ऐसें कहके तैसेंही ग्रथित अंचल वरवधू, अग्निकी प्रदक्षिणा करें. तेसें प्रदक्षिणाकरके तैसेंही पूर्वरी तिसें बैठे. लाजांजलीकी तीनों प्रदक्षिणामें आगे वधू और पीछे वर हो. दक्षिण पासे वधूका आसन, औरवामे पासे वरका आसन. ॥ इति प्रथमलाजाकर्म॥

पीछे वरवधूके आसन ऊपर बैठे हुए, वेद मंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निबिडमस्ति दुःछेद्यमस्ति अष्टाविंशतिप्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति संज्वलनोस्ति प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानोस्ति अनंतानुबंध्यस्ति चतुश्चतुर्विधोस्ति हास्यमस्ति रतिरस्ति अरतिरस्ति भयमस्ति जुगुप्सरस्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति स्त्रीवेदोस्ति नपुंसकवेदोस्ति मिथ्यात्वमस्ति मिश्रमस्ति सम्यक्त्वमस्ति सप्तति कोटाकोटि सागरस्थित्यस्ति अर्हं ॐ ॥" यह वेदमंत्र पढके ऐसा कहे.

"॥ तदस्तु वां निकाचितनिबिडबद्धमोहनीयकर्मोदयकृतः स्नेहः सुकृतोस्तु सुनिष्ठितोस्तु सुसंबंधोस्तु आभवमक्षयोस्तु तत् प्रदक्षिणी क्रियतां विभावसुः ॥"

फेर भी तैसेंही अग्निकी प्रदक्षिणा करे ॥ इति द्वितीयलाजाकर्म ॥

चारोंही लाजामें प्रदक्षिणाके प्रारंभमें वधू, अग्निमें लाजामुष्टि प्रक्षेप करे. पीछे तिन दोनोंके तैसेंही बैठे हुए, गुरु, ऐसा वेदमंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं कर्म्मास्ति, वेदनीयमस्ति, सातमस्ति, असातमस्ति, सुवेद्यं सातं, दुर्वेद्यमसातं, सुवर्गणाश्रवणं सातं, दुर्वर्गणाश्रवणमसातं, शुभपुद्गलदर्शनं सातं, दुःपुद्गलदर्शनमसातं, शुभषट्रसास्वादनं सातं, अशुभषट्रसास्वादनमसातं, शुभगंधाघ्राणं सातं, अशुभगंधाघ्राणमसातं, शुभपुद्गलस्पर्शः सातं, अशुभपुद्गलस्पर्शोऽसातं, सर्वं सुखकृत् सातं, दुःखकृद सातं, अर्हं ॐ इस वेदमंत्रको पढके ऐसें कहे

"॥ तदस्तु वां सातवेदनीयं माभूदसातवेदनीयं तत् प्रदक्षिणीक्रियतां विभावसुः ॥"

इति पुनः अग्निको प्रदक्षिणा करके वधूवर दोनों तैसेंही बैठ जावे ॥ इति तृतीयलाजाकर्म ॥

पीछे गुरु ऐसा वेदमंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं सहजोस्ति, स्वभावोस्ति, संबंधोस्ति, प्रतिबद्धोस्ति, मोहनीयमस्ति, वेदनीयमस्ति, नामास्ति, गोत्रमस्ति, आयुरस्ति, हेतुरस्ति, आश्रवबद्धमस्ति, क्रियाबद्धमस्ति, कायबद्धमस्ति, सांसारिकसंबंधः अर्हं ॐ ॥

ऐसा वेदमंत्र पढके, कन्याके पिताके, चाचेके, भाइके वा कुलज्येष्टके, हाथको तिलयवकुशदूर्वासें युक्त जलसें पूरके, ऐसें कहे.

"॥ अद्य अमुकसंवत्सरे, अमुकायने, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवारे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकमुहूर्त्ते, पूर्वकर्मसंबंधानुबद्धवस्त्रगंधमाल्यालंकृतां सुवर्णरूप्यमणिभूषण भूषितां ददात्ययं प्रतिगृह्णीष्व ॥"

ऐसें कहके वधूवरके योजित हाथमें जलक्षेप करे। तब वर कहे. "प्रतिगृह्णामि" तदनंतर गुरु कहे.

"सुप्रतिगृहीतास्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धनसंतानवृद्धिरस्तु, ॥"

पीछे प्रथम तीन लाजामें कन्याके हाथ ऊपर थे अब कन्याके हाथको नीचे करे, और वरके हाथको ऊपर करे, पीछे वरवधूको आसनसें उठाकर वरको आगे करे, और वधूको पीछे करे. । पीछे लाजाकी मुष्टि अग्निमें प्रक्षेप करकेगुरु ऐसें कहे. "प्रदक्षिणीक्रियतां विभावसुः" वर वधूको प्रदक्षिणा करते हुए, कन्याका पिता, यावत् कन्याका कुलज्येष्ट, वरवधूके देनेयोग्य वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, भूमि, निष्कय, हाथी, घोडा, दासी, गौ, बैल, पल्यंक, तूलिका, उत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाकके भांडे, आदि सर्व वस्तुको वेदिमें ल्यावे. । और भी तिसके भाइ, संबंधी, मित्रादि, स्वसंपदाके अनुसारसें देने योग्य वस्तुयें वेदिमें ल्यावे. । पीछे प्रदक्षिणाके अंतमें वरवधू, तैसेंही आसन

ऊपर बैठें. नवरं इतना विशेष है कि, चतुर्थ लाजा के अनंतर वरका आसन दक्षिण पासे, और वधू, का आसन वामे पासे करणा. । पीछे गुरु, कुश दूर्वा अक्षत वासकरके हस्त पूर्ण हुआ थका, ऐसें कहे.

“ ॥ शक्रादिदेवकोटिपरिवृतो जोग्यफलकर्मजोगाय संसारिजीवव्यवहारमार्गसंदर्शनाय, सुनंदासुमंगले पर्यणैपीतु,ज्ञातमज्ञातं वा तदनुष्ठानमनुष्ठितमस्तु”

ऐसें कहके वास, दूर्वा, अक्षत, कुशको वरवधूके मस्तक ऊपर क्षेप करे । पीछे गुरुके कहनेसें वधूका पिता, जल, यव, तिलका तेल हाथमें लेके, ऐसें कहे. सुदायंददामि, प्रतिग्रहाण तब वर कहे “प्रतिगृह्णामि प्रतिगृहीतं परिगृहीतं” गुरु कहे “सुगृहीतमस्तु सुपरिगृहीतमस्तु” पुनः तैसेंही वस्त्र, भूषण, हस्ति, अश्वादि दाय, देनेमें वधूके पिताका, और वरका यही वाक्य, और यही विधि है. । पीछे सर्व वस्तुके दीए हुए गुरु ऐसें कहे.

“ ॥ वधूवरौवां, पूर्वकर्म्मानुबंधेन, निविडेन, निकाचितबद्धेन, अनुपवर्त्तनीयेन, अपातनीयेन, अनुपायेन, अश्लथेन, अवश्यभोग्येन, विवाहः प्रतिबद्धो बभूव, तदस्त्वखंडितोऽक्षयोऽव्ययो, निरपायो, निर्व्याबाधः, सुखदोस्तु, शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु,ऋद्धिरस्तु,वृद्धिरस्तु, धनसंतान वृद्धिरस्तु ॥ ”

ऐसा कहके तीर्थोदकोंकरके कुशाग्रसें सिंचन

करे. । फेर गुरु तैसेंही वधूवरको उठाके मातृघरमें ले जावे, तहां ले जाके वधूवरको ऐसें कहे.

"॥ अनुष्ठितो वां, विवाहो, वत्सौ, सस्नेहौ सभोगौ, सायुषौ, सधर्मौ, समदुःखसुखौ, समशत्रुमित्रौ, समगुणदोषौ, समवाङ्मनःकायौ, समाचारौ, समगुणौ, भवतां ॥"

पीछे कन्याका पिता, करमोचनकेवास्ते गुरुप्रतें कहे. । तब गुरु ऐसा वेदमंत्र पढे.

"॥ ॐ अर्हं जीवत्वं कर्मणा बद्धः, ज्ञानावरणेन बद्धः, दर्शनावरणेन बद्धः, वेदनीयेन बद्धः, मोहनीयेन बद्धः, आयुषा बद्धः, नाम्ना बद्धः, गोत्रेण बद्धः, अंतरायेण बद्धः, प्रकृत्या बद्धः, स्थित्या बद्धः, रसेन बद्धः, प्रदेशेन बद्धः, तदस्तु ते मोक्षो गुणस्थानारोहक्रमेण अर्हं ॐ ॥"

इस वेदमंत्रको पढके फेर ऐसें कहे.

मुक्तयोः करयोरस्तु वां स्नेहसंबंधोऽखंडितः ॥"

ऐसें कहके करमोचन करे । कन्याका पिता करमोचनपर्वमें जामातृ (जमाइ) के मांगेप्रमाण, स्वसंपत्तिके अनुसार बहुत वस्तु देवे. । दानविधि, पूर्व मंत्रसेंही जानना. । पीछे मातृघरसें उठके, फेर वेदिघरमें आवें पीछे गुरु, आसनऊपर बैठे दोनोंको ऐसें कहे

"॥ वृत्तम् । पूर्वं युगादिभगवान् विधिनैव येन,

वेश्वस्य कार्यकृतये किल पर्यणैषीत् ॥ नार्याद्वयं
ाद मुना विधिनास्तु युग्म,मेतत्सुकामपरिन्नोगफला
नुबंधि ॥ १ ॥"

ऐसें कहके पूर्वोक्त विधिसें अंचलमोचन करके
'वत्सौ लब्धविषयौ नवतां" ऐसें गुरुअनुज्ञात दोनो
ंपती–स्त्रीन्नर्त्ता, विविध विलासिनीयोंके गणसें
वेष्टित, शृंगारगृहमें प्रवेश करें. । तहां पूर्वस्थापित
मदनकी कुलवृद्धानुसार पूजा करे । पीछे तहां
वधूवरको समहीकालमें क्षीरान्ननोजन कराना.
पीछे यथायुक्तिकरके शयन गृहमें जावे. । *

पीछे तिसही आगमनरीतिकरके उत्सवसहि
त अपने घरको जावे. । पीछे वरके मातापिता, वर
को निंरुंछनमंगलविधी स्वदेशकुलाचारकरके करे. ।
कंकणबंधन, कंकणमोचन, द्यूतक्रीडा, वेणीग्रंथनादि,
सर्व कर्म नी, तिस २ देशकुलाचारकरके करणे
चाहिये. । विवाहसें पहिलें वधूवर दोनोंके पक्षमें
नोजन देना. । तदनंतर धूलिन्नक्त, जन्यन्नक्त, आदि
देशकुलाचारसें करणे । पीछे सात दिनके अनं
तर वरवधू विसर्जन करना, तिसका विधि यह है. ।
सात दिनतक विविध न्नक्तिसे पूजित जमाइको,

* इस कथनसें यो यही सिद्ध होता है कि यौवनप्राप्तोंकाही विवाह होना चाहिये क्योंकि उसहि समय कामक्रीडा करनेका विधि इस ग्रंथमें लिखा है

ोक्त रीतिसें अंचलग्रंथन करके अनेक वस्तुदान
ेक तिसही आडंबरसें स्वगृहको पहुंचावे. । पीछे
त रात्रिपर्यंत, वा मासपर्यंत, वा ७ मासपर्यंत, वा
पर्यंत स्वकुलसंपत्तिदेशाचारानुसार महोत्सव कर
ा. सात रात्रिके अनंतर, वा मासअनंतर, कुला
ारानुसारकरके कन्याके पक्षमें पूर्वोक्त रीतिकरके
ातृविसर्जन करना.—गणपतिमदनादिविसर्जन विधि
ोकमें प्रसिद्ध है.—और वरपक्षमें कुलकर विसर्ज
विधि लिखते हैं. । कुलकरस्थापनानंतर, नित्य कुल
रकी पूजा करनी. । विसर्जनकालमें कुलकरोंका
ूजन करके, गुरु पूर्ववत् "ॐ अमुककुलकराय"
इत्यादि संपूर्णमंत्र पढके "पुनरागमनाय स्वाहा"
ऐसें सर्वकुलकरोंको विसर्जन करे. ॥ पीछे यह पढे.

"आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यत्कृतं ॥
तत्सर्वं कृपया देव क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥"

इतिकुलकरविसर्जनविधिः ॥

पीछे मंडलीपूजा, गुरुपूजा, वासक्षेपादि पूर्ववत्. । साधूओंको वस्त्र पात्र देना. । ज्ञानपूजा करणी. । जैन ब्राह्मणोंको याचकोकों अपर मागनेवालोंको यथासंपत्तिसें दान करणा. ।

तथा देशकुलसमयांतरमें विवाहलग्नके प्राप्त हुए, वरको श्वशुरके घरको प्राप्त हुए, पट् (६) आचार करते हैं. प्रथम अंगणमें आसन देना. । श्वशुर कहे

"विष्टरं प्रतिगृह्याण" तब वर कहे "ॐ प्रतिगृ ह्णामि" ऐसें कहके आसन ऊपर बैठे ॥ १ ॥ पीछे श्वशुर वरके पग प्रक्षालन करे ॥ २ ॥ पीछे दहि चंदन अक्षत दूर्वा कुश पुष्प श्वेतसरसों और जल करके श्वशुर जमाइको अर्घ देवे ॥ ३ ॥ पीछे आचमन देवे ॥ ४ ॥ पीछे गंधअक्षतसें तिलक करे ॥५॥ पीछे वरको मधुपर्क प्राशन करावे ॥ ६ ॥ पीछे गृहके अंदर वधूवरका परस्पर दृष्टिसंयोग और परस्पर दोनोंका नामग्रहण, शेषं पूर्ववत् ॥

इति चतुर्दशमः विवाह संस्कारः समाप्तः ॥

## अथ पंचदशम व्रतारोप संस्कारः प्रारभ्यते ।

इहां जैनमतमें गर्भा धानसें लेके विवाहपर्यंत चतुर्दश १४ संस्कारोंकरके संस्कृत भी पुरुष, व्रतारोपसंस्कारविना इस जन्ममें प्रशंसा पात्र नही होता है. और परलोकमें आर्यदेशादिभावपवित्रित मनुष्य जन्म स्वर्गमोक्षादिका भाजन नही होता है. इस वास्ते व्रतारोपही, मनुष्योंको परमसंस्कार है. यत उक्तमागमे ।

"बंभणो खत्तिउ वावि, वेसो सुद्दो तहेवय ॥
पयई वादि धम्मेण, जुत्तो मुक्खस्स भायणं॥१॥"

अर्थः—ब्राह्मण, वा क्षत्रिय, वा वैश्य, वा शूद्र, धर्मसें युक्त हुआ, मोक्षका भाजन होता है. ॥ १ ॥

वहत्तर कलाकुशल भी, विवेकसहित भी होवे, तो भी वो नर कुशल नही हैं; जो, सर्वकलायोंमें प्रधान जो धर्मकला तिसको नही जाणताहो. ॥ १ ॥ परमतमें भी कहा है । 'उपनीतोपि पूज्योपि कलावानपि भार्गव । न परत्रेह सौख्यानि प्राप्नोति च कदाचन ॥ १ ॥' इसवास्ते सर्वसंस्कार मे प्रधान व्रतसंस्कार कहते हैं. । तिसका विधि यह है.

पीछले विवाहपर्यंत संस्कार गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणने वा क्षुल्लकने कराने. परंतु व्रतारोपसंस्कार तो, निर्ग्रंथ यतिनेही करावणा.प्रथम गुरुकी गवेषणा करणी.

गुरू कैसे होना !

पांच महाव्रतयुक्त,५,पांच प्रकारके आचार पालनेमें समर्थ, ५, पांच समिति, ५, और तीन गुप्ति सहित, ३, एवं छत्तीस गुणोंवाला गुरु होता है । प्रतिरूप, तेजस्वी, युग प्रधान, आगमका जानकार, मधुर वाक्यवाला, गंभीर, बुद्धिमान्, उपदेश देनेमें तत्पर, ऐसा आचार्य होता है. । किसीका आलोचित दूषण अन्यआगे प्रकाशे नही, सोमप्रकृतिवाला होवे, शिष्यादिका संग्रह करनेवाला होवे, द्रव्यादि अभिग्रहमें जिसकी मति होवे, किसीके दूषण न बोले; चपल न होवे, प्रशांतहृदयवाला होवे, ऐसे गुणोंयुक्त गुरु होता है. । कितनेही जिनवरेंद्र अजरामर पदका पंथ दिखाके मोक्षको प्राप्त

हुए है; परं संप्रति कालमें तो, जिनप्रवचन, आचार्य नेही धारण करा है. ॥

अव प्रकारांतरकरके गुरुके छत्तीस गुण कहते हैं. । आचारविनय, श्रुत विनय, विक्षेपनाविनय, दोषका परिघात, एवं चार प्रकारके विनयकी प्रतिपत्ति करनेवाले गुरु होवे.। अथवा सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र, इनप्रत्येकके आठ ८ भेद हैं; एवं २४, और तपके द्वादश १२ भेद हैं, ऐसें आचार्यके छत्तीस गुण होते है. ।

अथवा आचारादि आठ ८, और दश प्रकारका स्थितकल्प १० द्वादश १२ तप और षडावश्यक ६ ये छत्तीस गुण आचार्यके है. ।

अथवा संविग्न १, मध्यस्थ २, शांत ३, मृदु–कोमलस्वभाववाला ४, सरल ५, पंडित ६, सुसंतुष्ट ७, गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके भावको जाननेवाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदेनेमें निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ठ १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुछ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमे निपुण २२, प्रियवचनवाला २३, अच्छे मधुर गंभीर स्वरवाला २४, तप करणेमें रक्त २५, सुंदर शरीरवाला २६, शुभ भली प्रतिभावाला २७, वादियोंको

बहत्तर कलाकुशल भी, विवेकसहित भी होवे, तो भी वो नर कुशल नहीं हैं; जो, सर्वकला थोंमें प्रधान जो धर्मकला तिसको नही जाणताहो. ॥ १ ॥ परमतमें भी कहा है । 'उपनीतोपि पूज्योपि कलावानपि भागेव । न परत्रेह सौख्यानि प्राप्नोति च कदाचन ॥ १ ॥' इसवास्ते सर्वसंस्कार मे प्रधान व्रतसंस्कार कहते हैं. । तिसका विधि यह है.

पीछले विवाहपर्यंत संस्कार गृहस्थगुरु जैन ब्राह्मणने वा क्षुल्लकने कराने. परंतु व्रतारोपसंस्कार तो, निर्ग्रंथ यतिनेही करावणा.प्रथम गुरुकी गवेपणा करणी.

गुरू कैसे होना !

पांच महाव्रतयुक्त, ५, पांच प्रकारके आचार पालनेमें समर्थ, ५, पांच समिति, ५, और तीन गुप्ति सहित, ३, एवं छत्तीस गुणोंवाला गुरु होता है. । प्रतिरूप, तेजस्वी, युग प्रधान, आगमका जानकार, मधुर वाक्यवाला, गंभीर, बुद्धिमान्, उपदेश देनेमें तत्पर, ऐसा आचार्य होता है. । किसीका आलोचित दूषण अन्यआगे प्रकाशे नही, सोमप्रकृतिवाला होवे, शिष्यादिका संग्रह करनेवाला होवे, द्रव्यादि अभिग्रहमें जिसकी मति होवे, किसीके दूषण न बोले; चपल न होवे, प्रशांतहृदयवाला होवे, ऐसे गुणोंयुक्त गुरु होता है. । कितनेही जिनवरेंद्र अजरामर पदका पंथ दिखाके मोक्षको प्राप्त

हुए है; परं संप्रति कालमें तो, जिनप्रवचन; आचार्य नेंही धारण करा है. ॥

अथ प्रकारांतरकरके गुरुके छत्तीस गुण कहते हैं. । आचारविनय, श्रुत विनय, विक्षेपनाविनय, दोषका परिघात, एवं चार प्रकारके विनयकी प्रतिपत्ति करनेवाले गुरु होवे. । अथवा सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र, इनप्रत्येकके आठ ७ भेद हैं; एवं २४, और तपके द्वादश १२ भेद हैं, ऐसें आचार्यके छत्तीस गुण होते हैं. ।

अथवा आचारादि आठ ८, और दश प्रकारका स्थितकल्प १० द्वादश १२ तप और षडावश्यक ६ ये छत्तीस गुण आचार्यके हैं ।

अथवा संविग्न १, मध्यस्थ २, शांत ३, मृदु—कोमलस्वभाववाला ४, सरल ५, पंडित ६, सुसंतुष्ट ७, गीतार्थ ८, कृतयोगी ९, श्रोताके भावको जाननेवाला १०, व्याख्यानादिलब्धिसंपन्न ११, उपदेशदेनेमें निपुण १२, आदेयवचन १३, मतिमान् १४, विज्ञानी १५, निरुपपाति १६, नैमित्तिक १७, शरीरका बलिष्ट १८, उपकारी १९, धारणाशक्तिवाला २०, बहुत कुछ जिसने देखा २१, नैगमादि नयमतमें निपुण २२, प्रियवचनवाला २३, अच्छे मधुर गंभीर स्वरवाला २४, तप करणेमें रक्त २५, सुंदर शरीरवाला २६, शुभ भली प्रतिभावाला २७, वादियोंको

जीतनेवाला २७, परिषदादिको आनंदकारक २९, शुचि–पवित्र ३०, गंजीर ३१, अनुवर्त्ती ३२, अंगीकार करेका पालनेवाला ३३, स्थिरचित्तवाला ३४, धीर ३५, उचितका जाननेवाला ३६, ये पूर्वोक्त ३६, गुण आचार्यके सूत्रमें कहे हैं. ॥

ऐसें पितापरंपरायसें माने गुरुके प्राप्त हुए, वा, तिसके अन्नावमें पूर्वोक्त गुणयुक्त अन्यगच्छीय गुरुके प्राप्त हुए, गृहस्थको व्रतारोपणविधि योग्य है, सो विधि यह है. ॥ चतुर्दश संस्कारोंकरके संस्कृत ऐसा गृहस्थी गृहस्थधर्मको अंगीकार करने योग्य होता है. ।

कहा है की.

अक्षुद्र १, रूपवान् २, प्रकृतिसौम्य ३, लोकप्रिय ४, अक्रूरचित्त ५, नीरु ६, अशठ ७, सुदाक्षिण्य ८, लज्जालु ९, दयालु १० मध्यस्थ सोमदृष्टि ११, गुणरागी १२, सत्कथी १३, सुपक्षयुक्त १४, सुदीर्घदर्शी १५, विशेषज्ञ १६, वृद्धानुग १७, विनीत १८, कृतज्ञ १९, परहितार्थकारी २०, और लब्धलक्ष २१ इकीस गुणोंवाला श्रावक धर्मरत्नके योग्य होता है; अर्थात् इकीस गुण जिस जीवमें होवे, अथवा प्रायः नवीन उपार्जन करे, तिस जीवमें उत्कृष्ट योग्यता माननी. और थोडेसें थोडे इकीस गुणोंमेंसें चाहे कोइ दश गुण जीवमें होवे, तिसको जघन्य योग्य

तावाला जानना, ११–१२–१३–१४–१५–१६–१७–१८–१९–२० शेष गुणवालेको मध्यमयोग्यतावाला जानना. इन इकीस गुणोंका विस्तारसहित वर्णन अज्ञानतिमिरज्ञास्करके द्वितीय खंमके ४६ पृष्ठसें लेके ७३ पृष्ठपर्यंतहे उहांसे देख लेना.

योगशास्त्रमे श्रीहेचंद्राचार्यनेंजी एसाहि कहाहै की.

न्यायसें धन उपार्जन करनेवाला, शिष्टाचारकी प्रशंसा करनेवाला, जिनका कुलशील अपने समान होवे, ऐसे अन्य गोत्रवालेके साथ विवाह किया है जिसने, पापसें मरनेवाला, प्रसिद्ध देशाचारको कर नेवाला, अर्थात् देशाचारका उल्लंघन नही करनेवाला, किसी जगे ज्ञी अवर्णवाद नही बोलनेवाला, राजा दिकोंमें विशेपसें अवर्णवाद वर्जनेवाला; । अतिप्र कट, वा अति गुप्त स्थानमें नही रहनेवाला, अछा पामोसी होवे तिस घरमें रहनेवाला, जिस मकानके अनेक आनेजानेके रस्ते होवे तिस घरको वर्जने वाला; । सदाचारोसें संग करनेवाला, मातापिताकी पूजा ज्ञक्ति करनेवाला, उपद्रवसंयुक्त स्थानको त्यागनेवाला, जगत्मे जो कर्म निंदनीक होवे तिसमें प्रवृत्त नही होनेवाला; । अपनी आमदनीअनुसार खर्च करनेवाला, अपने धनके अनुसार वेप रखने वाला; बुद्धिके आठ गुणोंसें संयुक्त निरंतर धर्मो पदेश श्रवण करनेवाला; अजीर्णमें ज्ञोजनका त्यागी

वखतसर साम्यतासें जोजन करनेवाला, एक दूसरेकी हानी न होवे इस रीतिसें धर्म अर्थ कामको सेवने वाला; । यथायोग्य अतिथि साधु और दीनकी प्रति पत्ति करनेवाला, सदा आग्रहरहित, गुणोंका पक्ष पाती; । देशकालविरुद्धचर्या त्यागनेवाला, । कोइ जी कार्य करनेमें अपना बलाबल जाननेवाला, जे पांच महाव्रतमें स्थित होवे और ज्ञानवृद्ध होवे तिनकी पूजा जक्ति करनेवाला, पोषणेयोग्यका पोषण करने वाला, । दीर्घदर्शी, विशेषज्ञ, कृतज्ञ, लोकवल्लज, लज्जालु, दयालु, सौम्य, परोपकार करणेमें समर्थ, काम, क्रोध, लोज, मान, मद, हर्ष, इन षट ६ अंतरंग वैरियोंके त्याग करनेमें तत्पर, पांच इंद्रियोंके समूहको वश करनेवाला, ऐसा पुरुष गृहस्थधर्मके वास्ते कल्पता है ॥ १० ॥

ऐसे पुरुषको व्रतारोप करना चहिये । प्रायःकरके व्रतारोपमें गुरु शिष्यके वचन प्राकृत जाषामें होते हैं, क्यों कि गर्जाधानादि विवाहपर्यंत संस्कारोंमें प्रायः करके गुरुकेही वचन है, शिष्यके नहीं और गुरु प्रायः शास्त्रविद् होते हैं, इसवास्ते संस्कृतही बोलते है. । इहां व्रतारोपमें बाल, स्त्री, मूर्ख शिष्यों का क्षमाश्रमणदानपूर्वक वचनाधिकार है, तिस वास्ते तिनको संस्कृत उच्चार असामर्थ्य होनेसें प्राकृत वाक्य है. तिसकी साहचर्यतासें तिसके

प्रबोधवास्ते, गुरुके वचन भी, प्राकृतही है. ॥ यत उक्तमागमे ॥

" ॥मुत्तूण दिठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धंतं ॥
थीबालवायणत्थंपाइयमुइयं जिणवरेहिं ॥ १ ॥"

अर्थः—दृष्टिवादको वर्जके कालिक उत्कालिक अंगसिद्धांतको स्त्रीबालकोंके वाचनार्थ जिनवरोंने प्राकृत कथन करे है. ॥ यथाच ॥

बालस्त्रीवृद्धमूर्खाणां नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ॥
अनुग्रहाय तत्त्वज्ञैः सिद्धांतः प्राकृतः कृतः ॥ १ ॥

और दृष्टिवाद बारमा अंग, परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वानुयोग ३, पूर्वगत ४, चूलिकारूप ५ पंचविध संस्कृतमेंही होता है, सो बालस्त्रीमूर्खको पठनीय नही है. संसारपारगामी तत्त्वउपन्यासके वेत्ता गीतार्थोकोंही पठनीय है. शेष एकादशांग कालिक उत्कालिकादिशास्त्र योगवाहि साधु साध्वी और संयमी बालकोंके पढने योग्य है. इसवास्तेही अरिहंत भगवंतोंनें एकादशांगादि शास्त्र प्राकृतमें करे है. तिसवास्ते व्रतारोपमें भी, गृहस्थ बाल स्त्री मूर्ख जनोके उपकारार्थ और, तैसें यतियोंकेभी, वचन, प्राकृतमें कहे है ॥

अथ मृदु, ध्रुव, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें प्रथम भिक्षा, तप, नंदी, आलोचनादि कार्य करणे शुभ है. और मंगल, शनि, विना सर्व वारोंमें. । वर्ष,

मास, दिन, नक्षत्र, लग्न शुद्धिके हुए, विवाहदीक्षा प्रतिष्ठावत्, शुभ लग्नमें गुरु तिसके घरमें शांतिक पौष्टिक करके, फेर देवघरमें, शुभ आश्रममें, अन्यत्र, वा, यथाकल्पित समवसरणको स्थापन करे. । पीछे स्नान करके स्वघरमें महोत्सवसहित आये हुए श्रावकको पूर्वाभिमुख गुरु, अपने वामे पासें स्थापके ऐसें कहे—कैसे श्रावकको—सकक्ष श्वेत वस्त्र और श्वेत उत्तरासंग धारण किया है जिसने, तथा मुखवस्त्रिका हाथमें धारण करी है जिसने, तथा जिसकी चोटी बांधी हुई है, चंदनका मस्तकमें तिलक करा है जिसने, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत वा उत्तरीय, वा उत्तरासंग धारण किया है जिसने ऐसे श्रावकको—क्या कहे सो कहते हैं ।

" सम्मत्तंमि उलद्धे, थइयाइं नरयतिरियदाराइं ॥
दिवाणि माणुसाणि अ, मुरकसुहाइं सहीणाइं ॥ १ ॥"

अर्थः—सम्यक्त्वके लाभ हुए, नरकतिर्यंचगतिके द्वार ढांके है, और देवता मनुष्य मोक्षके सुख स्वाधीन है । पीछे गुरुकी आज्ञासें श्राद्धजन, नालिकेर अक्षत सुपारीसें पूर्ण हस्त करके परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीछे गुरुके पास आयकर, गुरु श्राद्ध दोनोंही इर्यापथिकीपडिक्कमे. । पीछे आसन उपर बैठे गुरुके आगे, श्राद्धजन ऐसें कहे ॥

"इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मह्रएण वंदामि ॥ जगवन् इच्छाकारेण तुम्हे अह्मं सम्मत्ताइतिगारोवणिअंनंदिकढ्ढावणियं वासखेवं करेह ॥"

पीछे गुरु, वासांको, सूरिमंत्रसें, वा, गणिविद्या अर्थात् वर्द्धमान विद्यासें, अजिमंत्रके, परमेष्ठि और कामधेनु दोनों मुद्राकरके, पूर्वाजिमुख खमा होके, वामे पासे रहे श्रावकके शिरमें निक्षेप करे. । तिसके मस्तकके ऊपर हाथ रखके, गणधर विद्यासें रक्षा करे. गुरु आसनऊपर बैठ जावे, और श्राद्ध पूर्ववत् समवसरणको प्रदक्षिणा करके, गुरु आगे क्षमाश्रमण देके कहे.

"॥ इच्छाकारेण तुम्हे अह्मं सम्मत्ताइतिगारोवणिअं चेइआइं वंदावहे ॥"

पीछे गुरु और श्रावक दोनो, चार वर्द्धमानस्तुतियों करके चैत्यवंदन करें. । जो छदसें वर्द्धमान होवे, और चरम जिनकी प्रथम स्तुतिवाली होवे, तिनको वर्द्धमानस्तुति कहते हे । पीछे चारस्तुतिके अंतमें "श्रीशांतिदेवाराधनार्थं करेमि कासग्गं वंदणवत्तियाए पूअणवत्तियाए सक्कारव० स० जावअप्पाणं वोसिरामि" सत्ताइस उह्वासप्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंजीरा' तक चतुर्विंशतिस्तव चिंतवन करे. । पीछे 'नमो अरिहंताणं' कहके पारे. । पार

केहे ' नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ' यह कहके स्तुति पढे । सोलिखतेहैं ।

" श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥"अथवा " शांतिः शांतिकरः, श्रीमान् शांतिं दिशतु मे गुरुः॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥१॥" पीछे

"॥ श्रुतदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्न त्थ उससिएणंयावत्अप्पाणं वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमें एक नवकार चिंतन करे. पीछे 'नमो अरिहंताणं ' कहके पारे, पारके ' नमोर्हत् कहके स्तुति ॥ यथा ॥

' ॥ सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥, तेसिं खवउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥ १ ॥ " अथवा

" अमितसुरभिगंधालब्धभृंगी कुरंगं, मुखशशि नमजस्रं बिभ्रति या बिभर्ति ॥ विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुतांगी ॥ १ ॥ "

" क्षेत्रदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ उससिएणंयावत्अप्पाणं वोसिरामि ॥ "

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे ' नमो अरिहंताणं ' कहके पारे, पारके ' नमोर्ह कहके थूई पढे ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुनिः साध्यते क्रिया ॥
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

"॥ नुवनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्न ब उससिएणं–यावत्–अप्पाणं वोसिरामि ॥"

कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमोअरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमोर्हत्' कहके स्तुति पढे ॥

"ज्ञानादिगुणयुक्तानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥
विदधातु नुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥"

"शासनदेवताराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नछ०" कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमोअरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमोर्हत्सिद्धा०' कहके स्तुति पढे

"या पाति शासने जैनं, सद्य' प्रत्यूहनाशिनी ॥
सानिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, नूयाच्छासनदेवता ॥ १ ॥"

"समस्तवैयावृत्त्यकराराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नछ०" कायोत्सर्गमें एक नमस्कार चिंतन करे, पीछे 'नमो अरिहंताणं' कहके पारे, पारके 'नमोर्हत्सिद्धा' कहके स्तुति पढे.

"ये ये जिनवचनरता वैयावृत्त्योद्यताश्च ये नित्यम् ॥
ते सर्वे शांतिकरा नवंतु सर्वाणुयक्षाद्याः ॥ १ ॥"

'नमो अरिहंताणं' कहके बैठके "नमुथ्थुणं०

जावंतिचेइयाइं० " और " अर्हणादिस्तोत्र " पढे. सो लिखते हे.

अरिहाण नमो पूअं, अरहंताणं रहस्स रहिआणं ॥
पयओ परमिठिणं, अरुहंताणं धुअरयाणं ॥ १ ॥
निद्दढ अठकम्मिंधणाण, वरनाणदंसणधराणं ॥
मुत्ताण नमो सिद्धाणं, परमपरमिठिन्नूयाणं ॥ २ ॥
आयारधराण नमो, पंचविहायारसुठियाणं च ॥
नाणीणायरियाणं, आयारुवएसयाण सया ॥ ३ ॥
वारसविहं अपूव्वं, दिंताण सुअं नमो सुअहराणं ॥
सययमुवज्झायाणं, सज्झायज्झाणजुत्ताणं ॥ ४ ॥
सव्वेसिं साहूणं, नमो तिगुत्ताण सव्वलोएवि ॥
तवनियमनाणदंसण, जुत्ताणं वंनयारीणं ॥ ५ ॥
एसो परमिठीणं पंचन्हवि नावओ नमुक्कारो ॥
सव्वस्स कीरमाणो, पावस्स पणासणो होइ ॥ ६ ॥
नुवणेवि मंगलाणं, मणुयासुरअमरखयरमहियाणं ॥
सव्वेसिमिमो पढमो, होइ महामंगलं पढमं ॥ ७ ॥
चत्तारि मंगलं मे, हुंतु अरहा तहेव सिद्धा य ॥
साहू य सव्वकालं, धम्मो य तिलोयमंगल्लो ॥ ८ ॥
चत्तारि चेव ससुरा, सुरस्स लोगस्स उत्तमा हुंति ॥
अरिहंत सिद्ध साहू, धम्मो जिणदेसियमुयारो ॥९॥
चत्तारिवि अरिहंते, सिद्धे साहू तहेव धम्मं च ॥
संसारघोररक्कस, नएण सरणं पवज्जामि ॥ १० ॥
अह अरहओ नगवओ, महइ महा वद्धमाणसामिस्स

पणयसुरेसरसेहर, वियलिकुसुमुच्चयकमस्स ॥ ११ ॥
जस्स वरधम्मचक्कं, दिणयरबिंबव्व जासुरच्छायं ॥
तेएण पज्जलंतं, गच्छइ पुरओ जिणंदस्स ॥ १२ ॥
आयासं पायालं, सयलं महिमंफलं पयासंतं ॥
मिच्छत्तमोहतिमिरं, हरेइ तिएहंपि लोयाणं ॥ १३ ॥
सयलंमिवि जियलोए, चिंतियमित्तो करेइ सत्ताणं ॥
रक्कं रक्कसमाइणि, पिसायगहजूअजरकाणं ॥ १४ ॥
लहइ विवाए वाए, ववहारे जावओ सरंतो अ ॥
जूए रणे अ रायं, गणे अ विजयं विसुरूप्पा ॥ १५ ॥
पच्चूसपओसेसुं, सययं जव्वो जणो सुहज्काणो ॥
एअं जाएमाणो, मुरकं पइ साहगो होइ ॥ १६ ॥
वेआलरुद्दाणव, नरिंदकोहंमिरेवईणं च ॥
सव्वेसिं सत्ताणं, पुरिसो अपराजिओ होइ ॥ १७ ॥
विज्जुव पज्जलंती, सवेसुवि अरकरेसु मत्ताओ ॥
पंचनमुक्कारपए, इक्किक्के उवरिमा जाव ॥ १८ ॥
ससिधवलसलिलनिम्मल,आयरसहं च वन्नियं बिंदु॥
जोयणसहप्पमाणं, जालासयसहस्सदिप्पंतं ॥ १९ ॥
सोलससु अरकरेसु, इक्किक्क अरकरं जगज्जोअं ॥
जवसयसहस्समहणो, जंमि ठिओ पंच नवकारो॥२०॥
जो गुणइ हु इक्कमणो, जविओ जावेण पंच नवकारं ॥
सो गछइ सिवलोयं, उज्जोअंतो दसदिसाओ ॥२१॥
तवनियमसंजमरहो, पंचनमोक्कारसारहिनिउत्तो ॥
नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ फुडं परमनिव्वाणं ॥ २२ ॥

सुरूप्पा सुरूमणा, पंचसु समिईसु संजय तिगुत्तो ॥
जे तम्मि रहे लग्गा, सिग्घं गछंति सिवलोअं ॥२३॥
थंभेइ जलं जलणं, चिंतियमित्तोवि पंच नवकारो ॥
अरिमारिचोरराउल, घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २४ ॥
अठेवय अठसयं, अठसहस्सं च अठकोमीओ ॥
रखंतु मेसरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ २५ ॥
नमो अरहंताणं, तिलोयपुज्जो अ संथुओ नयवं ॥
अमरनररायमहिओ,अणाइनिहणो सिवं दिसउ॥२६॥
निठा विअ अठ कम्मो,सिवसुहभूओ निरंजणो सिद्धो
अमर नरराय महिओ,अणाइ निहणो सिवं दिसउ। २७
सवे पओसमछर, आहिअहिअया पणासमुवयंति ॥
डुगुणीकयधणुसद्धं, सोउपि महाधणुसहस्सं ॥ २८ ॥
इय तिहुअणप्पमाणं, सोलसपत्तं जलंतदित्तसरं ॥
अठारअद्धवलयं, पंचनमुकारचक्कमिणं ॥ २९ ॥
सयलुजोइअभुवणं, निद्दाविअसेससत्तुसंघायं ॥
नासिअमिछत्ततमं, विअलियमोहं गयतमोहं ॥३०॥
एयस्स य मज्झछो, सम्मदिठीवि सुद्धचारित्ती ॥
नाणी पवयणभत्तो, गुरुजणसुस्सूसणापरमो ॥ ३१ ॥
जो पंच नमुक्कारं, परमो पुरिसो पराइ भत्तीए ॥
परियत्तेइ पइदिणं, पयओ सुद्धप्पओगप्पा ॥ ३२ ॥
अठेवय अठसया, अठसहस्सं च अठलरकं च ॥
अठेवय कोडीओ, सो तइयभवे लहइ सिद्धिं ॥३३॥
एसो परमो मंतो, परमरहस्सं परंपरं तत्तं ॥

नाणं परमं णेश्रं, सुरुं ज्जाणं परं ज्झेयं ॥ ३४ ॥
एवं कवयमभेयं, खाइयमच्छं पराजुवणरक्खा ॥
जोईसुन्नं बिंडु, नाओ तारालवो मत्ता ॥ ३५ ॥
सोलसपरमक्खरबीअबिंडुगब्नो जगुत्तमो जोओ ॥
सुअबारसंगसायर, महह्वपुवन्नपरमत्थो ॥ ३६ ॥
नासेइ चोरसावय, विसहरजलजलणबंधणसयाइं ॥
चिंतिज्जंतो रक्खस, रणरायन्नयाइं नावेण ॥ ३७ ॥

॥ इति अरिहणादिस्तोत्रम् ॥

इस अरिहणादि स्तोत्रको पढके "जय वीयराय जगगुरु०" इत्यादि गाथा पढे. पीछे आचार्य उपाध्याय गुरु साधुओंको वंदना करे. । यह शक्रस्तव विधि, गुरु और श्रावक दोनोंही करे । चैत्यवंदनके अनंतर. श्राद्ध, क्षमाश्रमणदानपूर्वक कहे

"॥ नगवन् सम्यक्त्वसामायिकश्रुतसामायिकदेशविरतिसामायिकआरोवणिअं नंदिकह्वावणिअं काउसग्गं करेमि ॥"

गुरु "कहे करेह" तब श्रावक "सम्मत्ताइतिगारोवणिअं करेमि काउसग्गं अनह्व०" इत्यादि कहके सत्ताइस उच्छ्वास प्रमाण अर्थात् 'सागरवरगंन्नीरा लग कायोत्सर्ग करे । पीछे नमो अरिहंताणं कहके पारके चतुर्विंशतिस्तव अर्थात् लोगस्स संपूर्ण पढे । पीछे मुखवस्त्रिका प्रतिलेखनपूर्वक श्रावक द्वादशावर्त्त वंदन करे, फिर क्षमाश्रमण देके कहे "नग

वन् सम्मत्ताइतिगं आरोवेह" गुरु कहे "आरो वेमि" पीछे श्रावक गुरुके आगे खमा होके, अंज लि करके, मुखवस्त्रिकासें मुखाछादन करके, तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढे। पीछे सम्यक्त्वदंरुक पढे. सयथा॥

"॥ अहणं भंते तुह्माणं समीवे मिछत्ताओ पडी क्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि। तंजहा दवओ खित्तओ कालओ भावओ। दवओणं मिछत्तकार णाइं पच्चक्खामि सम्मत्तकारणाइं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अद्यप्पभिई अन्नउछिए वा अन्नउछिअदे वयाणि वा अन्नउछियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइ आणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुविं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा। खित्तओणं इहेव वा अन्नछ वा। कालओणं जाव ज्जीवाए। भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि जाव छलेणं न छलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नाभि भविस्सामि जाव अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवडइ ताव मे एअं सम्मदंसणं अन्नछ रायाभिओगेणं बलाभिओगेणं गणाभिओ गेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारएणं वोसिरामि॥"

ऐसें तीनवार दंडक पाठ कहना॥ अन्ये तु दंड कमिछमुच्चारयंति यथा॥

"॥ अहण्णं भंते तुह्माणं समीवे मिछत्ताओ पडिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नो मे कप्पइ अज्जप्पभिई अन्नउछिए वा अन्नउछियदेवयाणि वा अन्नउछियपरिग्ग हियाणि चेइआणि वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा अन्नड रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तं चउव्विहं। तंजहा। दवओखित्तओ कालओ भावओ। दवओणं दंसणदव्वाइं अंगीकयाइं। खित्तओणं उद्दलोए वा अहोलोए वा तिरिअलोए वा। कालओणं जाव जीवाए। भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि जाव छलेणं न छलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नाभिभविस्सामि अन्नेण वा केणइ परिणामवसेण परिणामो मे न परिवडइ ताव मे एसा दंसणपडिवत्ती॥

इति गुरुविशेषेण द्वितीयो दंडकः॥ प्रथम दंडक दोनोमेसें कोइ एक दंडक तीन वार उच्चारण करे. पीछे गाथा॥

"इअ मिछत्ताओ विरमिअ सम्मं उवगम्म भणइ गुरुपुरओ॥ अरिहंतो निस्संगो, मम देवो दक्खणा साहू॥ १॥"

गुरु तीन वार यह गाथा पढके श्राद्धके मस्तको

परि वासक्षेप करे. । पीछे गुरु, आसन ऊपर बैठके गंध अक्षत वासांको सूरिमंत्रसें, वा गणिविद्यासें मंत्रे. । पीछे गंधाक्षत वासांको हाथमें लेके जिन चरणोंको स्पर्श करावे. । पीछे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाओंको देवे. ते साधुआदि, मुठीमें लेलेवे. । पीछे श्राद्ध गुरुके आगे क्षमाश्रमण देके कहे ॥ "भयवं तुम्हे अह्मं सम्मत्ताइयतीअंआरोवेह ।" गुरुकहे "आरोवेमि" फिर श्रावक क्षमाक्षमण देके कहे "संदिसह किं भणामि" गुरु कहे "वंदित्तु पवेयह" फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "भयवं तुम्भेहिं अह्मं सामाइयतिअमारोविअं" गुरु कहे "आरोवियं २ खमासमणेणं हत्थेणं सुत्तेणंअत्थेणं तदुभएणं गुरुगुणेहिं वढ्ढाहि नित्थारगपारगो होहि" श्रावक कहे "इच्छामो अणुसट्ठिं" पुनः श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "तुह्माणं पवेइयं संदिसह साहूणं पवेवेमि" गुरु कहे "पवेयह" पीछे श्रावक परमेष्ठिमंत्र पढता हुआ, समवसरणको प्रदक्षिणा करे. । और संघ पूर्वे दिये हुए वासांको, तिसके मस्तकोपरि क्षेपण करे. । गुरु आसनऊपर बैठे, वहांसें लेके वासक्षेपपर्यंत क्रिया, तीन वार इसहि रीतिसें करना. । फिर श्रावक क्षमाश्रमण देके कहे "तुह्माणं पवेइयं" फिर क्षमाश्रमण देके कहे "साहूणं पवेइयं संदिसह काउसग्गं करेमि" गुरु कहे

"करेह" पीछे श्रावक–सम्मत्ताइतिगस्सथिरीकर णत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ०–सागरवरगंभीरातक कायोत्सर्ग करे. पारके संपूर्ण लोगस्स कहे. । पीछे चारथुइवर्जित शक्रस्तवसें चेत्यवंदन करे. । पीछे श्रावक, गुरुको तीन प्रदक्षिणा देवे. पीछे आसन ऊपर बैठा हुआ गुरु, श्रावकको आगे बिठाके निय म देवे. ॥ नियमयुक्तिर्यथा ॥

गुलर, प्लक्षण, काकोडुंबरि, वट और पिप्पल, ये पांच जातिके फल ५. मांस, मदिरा, माखण और मधु, ये चार विकृति ४–एवं ए–अज्ञात फल १०, अज्ञात पुष्प ११, हिम (बरफ) १२, विष १३, करहे (ओले–गडे) १४, सर्वसच्चित्तमट्टी १५, रात्रिभोजन १६, घोलवडा–काचे दूध दहि छाछमें गेरा हुआ विदल १७, वइंगण १८, पपोटा–खसख सका दोडा १९, सिंघाडे २०, वायंगण २१, और कायंवाणि २२, येह बावीस द्रव्य श्रावकोंको भक्ष ण करने योग्य नही है. अन्य प्रकारसे २२ अभक्ष्य यह हे की पांच जातिके उंबरादि फल५ चार महा विगइए, हिम १०, विष ११, करह १२, सर्व मृत्तिका १३, रात्रि भोजन १४, बहुबीज वाले फल १५, अनं त काय १६, अचार १७, घोलवडा १८, वेइंगण १९, अज्ञात फल फूल २०,तुछ फल२१,चलितरस २२ ऐसें नियम देके यह गाथा उच्चारण करावे ॥

" अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपणत्तं तत्तं, इअ समत्तं मए गहिअं ॥ १ ॥ "

तदनंतर अरिहंतको वर्जके अन्यदेवको नमस्कार करनेका, जैनयति महाव्रतधारी गुरू प्ररूपकको वर्जके अन्य लिंग विप्रादिकोंको नावसें अर्थात् मोक्षलाभ जानके वंदना करनेका, और जिनोक्त सप्त तत्त्वको वर्जके तत्त्वांतरकी श्रद्धा करनेका, नियम करना.

अन्य देव और अन्य लिंगि विप्रादिकोंको नमस्कार और दान,लोकिकव्यवहारकेवास्ते करना.और अन्यमतके शास्त्रका श्रवण पठन न्नी, ऐसेंही जानना. । पीछे गुरु सम्यक्त्वकी देशना करे. ॥ सोवताते है. ॥

मानुष्यमार्यदेशश्च जातिः सर्वाक्षपाटवम् ॥
आयुश्च प्राप्यते तत्र कथंचित्कर्मलाघवात् ॥ १ ॥
प्राप्तेषु पुण्यतः श्रद्धा, कथकः श्रवणेष्वपि ॥
तत्त्वनिश्चयरूपं तद्बोधिरत्नं सुदुर्लभम् ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

कुसुमयसुईण महणं सम्मत्तं जस्स सुठिअं हियए ॥
तस्स जगुज्जोयकरं नाणं चरणं च न्नवमहणं ॥ १ ॥

अर्थः–मनुष्यजन्म १, आर्यदेश २, उत्तमजाति ३, सर्वइंद्रि संपूर्ण ४, आयुः ५, ये कथंचित् कर्मकी लाघवतासें प्राप्त होतें है. । पुण्योदयसें पूर्वोक्त

प्राप्ति हुये जी श्रद्धा १, शुद्ध प्ररूपकका योग २, और सुणनेसें तथानिश्चयरूप बोधिरत्न सम्यक्त्व ३, ये अतिही दुर्लभ हैं. ॥ कुत्सितसमयएकांतवादियोंके शास्त्र और तिनकी श्रुतियोंको मथन करनेवाला सम्यक्त्व, जिसके हृदयमें अच्छीतरें स्थित है, तिस पुरुषको जगत्के उद्योत करनेवाले, और जव--संसारको मथनेवाले, ज्ञान और चारित्र प्राप्त होते हैं. ॥

॥ श्लोकाः ॥

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामतिः ॥
धर्मे च धर्मधीः शुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥ १ ॥
अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरौ च या ॥
अधर्म्मे धर्म्मबुद्धिश्च मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात् ॥ २ ॥
सर्वज्ञो जितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः ॥
यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः ॥ ३ ॥
ध्यातव्योयमुपास्योयमयं शरणमिष्यताम् ॥
अस्यैव प्रतिपत्तव्यं शासनं चेतनाऽस्ति चेत् ॥ ४ ॥
ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादिरागाद्यंककलंकिताः ॥
निग्रहानुग्रहपरास्ते देवा स्युर्न मुक्तये ॥ ५ ॥
नाट्याट्टहाससंगीताद्युपप्लवविसंस्थुलाः ॥
लंजयेयुः पदं शांतं प्रपन्नान् प्राणिनः कथं ॥ ६ ॥
महाव्रतधरा धीरा भैक्ष्यमात्रोपजीविनः ॥
सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवो मताः ॥ ७ ॥
सर्वाभिलाषिणः सर्वज्ञोजिनः सपरिग्रहाः ॥

अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥ ८ ॥
परिग्रहारंभमग्नास्तारयेयुः कथं परान् ॥
स्वयं दरिद्रो न परमीश्वरी कर्त्तुमीश्वरः ॥ ९ ॥
दुर्गतिप्रपतत्प्राणिधारणाद्धर्म उच्यते ॥
संयमादिर्दशविधः सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥ १० ॥
अपौरुषेयं वचनमसंभवि भवेद्यदि ॥
न प्रमाणं भवेद्वाचां ह्याप्ताधीना प्रमाणता ॥ ११ ॥
मिथ्यादृष्टिभिराख्यातो हिंसाद्यैः कलुषीकृतः ॥
स धर्म इति वित्तोपि भवभ्रमणकारणम् ॥ १२ ॥
सरागोपि हि देवश्चेद्गुरुरब्रह्मचार्यपि ॥
कृपाहीनोपि धर्मः स्यात् कष्टं नष्टं हहा जगत्॥ १३ ॥
शमसंवेगनिर्वेदानुकंपास्तिक्यलक्षणैः ॥
लक्षणैः पंचभिः सम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ १४ ॥
स्थैर्य प्रभावनाभक्तिः कौशलं जिनशासने ॥
तीर्थसेवा च पंचास्य भूषणानि प्रचक्ष्यते ॥ १५ ॥
शंका कांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रशंसनम् ॥
तत्संस्तवश्च पंचापि सम्यक्त्वं दूषयंत्यमी ॥ १६ ॥

अर्थः—साचे देवमें जो देवपणेकी बुद्धि, साचे गुरुके विषे गुरुपणेकी बुद्धि और साचे धर्मके विषे धर्मकी बुद्धि, कैसी बुद्धि ? शुद्धा सूधी निश्चल संदेहरहित, इसको सम्यक्त्व कहतें हैं. । ऐसी सम्यक्त्वकी बुद्धि थोडे वखत भी जिसको आजा वेगी, सो प्राणि अर्द्धपुद्गलपरावर्तकालमेंही संसार

सें निकलके मोक्षको प्राप्त होगा, यह निश्चय जाणना. यत उक्तम् ॥

अंतोमुहुत्तमित्तंपि फासियं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥
तेसिं अवट्ट पुग्गलपरिअट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥

जावार्थः–अंतर्मुहूर्तमात्र जी जिनोंनें सम्यक्त्व स्पर्श किया है, तिनोंका अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तही उत्कृष्ट संसार जाणना, तदनंतर अवश्यमेव मोक्षको प्राप्त होवे. इति सम्यक्त्वस्वरूपम् ॥ १ ॥

अथ मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ जिसमें देवके गुण नही हें, ऐसे अदेवमें देवकी बुद्धि–जैसें तममें उद्योतकी बुद्धि । जिसमे गुरुके गुण नही हें, ऐसें अगुरुमें गुरुकी बुद्धि–जैसें नीवमे आम्र की बुद्धि । अधर्म यागादि, जीवहिंसादिक के विषे धर्म की बुद्धि–जैसें सर्पके विषे पुष्पमालाकी बुद्धि, सो मिथ्यात्व है. सम्यक्त्वसें विपर्यय होनेसें, अर्थात् साचे देवके ऊपर अदेवपणेकी बुद्धि, जैसें कौशिक (घूअम) की सूर्यके तेजऊपर अंधकारकी बुद्धि, साचे गुरुऊपर अगुरुपणेकी बुद्धि, जैसें श्वेतशंखके ऊपर काचकामलरोगवालेकी नीलशंखकी बुद्धि । तिसको मिथ्यात्व कहतेहें. । सो मिथ्यात्व पांच प्रकारका हें. १ आजिग्रहिक, २ अनाजिग्रहिक, ३ आजिनिवेशिक, ४ सांशयिक, ५ अनाजोगिक. ॥

(१) प्रथम आजिग्रहिकमिथ्यात्व, सो, जिस्को

मिथ्या कुशास्त्रोंके पढनेसें कुदेव कुगुरु कुधर्मके ऊप र आस्था दृढ है, जिससें ऐसा जानता है कि, जो कुछ मैने समझा है सोही सत्य है, औरोंकी समझ ठीक नही है, जिसको सत्यासत्यकी परीक्षा करने का अब मन भी नही है, और जो सत्यासत्यका विचार भी नही करता है. यह मिथ्यात्व, दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारीयोंको होता है. वे अपने मनमें ऐसें जानते हैं कि, जो मत हमने अंगिकार किया है, वोही सत्य है; और सर्व मत झूठे हैं. ऐसें जिसके परिणाम होवे, सो आभिग्र हिक मिथ्यात्व है.

(२) दूसरा अनाभिग्रहिकमिथ्यात्व, सो सर्व मतोंको आच्छा जाणे, सर्व मतोंसें मोक्ष है, इस वास्ते किसीको बुरा न कहना सर्व देवोंको नम स्कार करना, ऐसी जो बुद्धि, तिसको अनाभिग्र हिक मिथ्यात्व कहते हैं. यह मिथ्यात्व जिनोंने कोइ दर्शन ग्रहण नहीं करा ऐसें जो गोपाल बाल कादि तिनको है. क्योंकि, यह अमृत और विषको एकसरिखे जाननेवाले हैं.

(३) तीसरा अभिनिवेशिक मिथ्यात्व, सो जो पुरुष जानकरके झूठ बोले, प्रथम तो अज्ञानसें किसी शास्त्रार्थको भूल गया, पीछे जब कोइ विद्वा न् कहे कि, तुम इस विषयमें भूलते हो, तब अप

ने मनमें सत्य विषयको जाणता हुआ भी, झूठे पक्षका कदाग्रह, ग्रहण करे, जात्यादि अभिमानसें कहना, न माने, उलटी स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियों बनाकरके अपने मनमाने मतको सिद्ध करे, वादमें हार जावे तो भी न माने, ऐसा जीव, अतिपापी, और बहुल संसारी होता है. ऐसा मिथ्यात्व, प्रायः जो जैनी, जैन मतको विपरीतकथन करता है, उस में होता है, गोष्ठमाहिलादिवत् ॥

(४) चौथा सांशयिकमिथ्यात्व, सो देव गुरु धर्म जीव काल पुद्गलादिक पदार्थोंमें यह सत्य है कि, यह सत्य है ? ऐसी बुद्धि, तिसको सांशयिक मिथ्यत्व कहते हैं. तथा क्या यह जीव असंख्य प्रदेशी है ? वा नही है ? इसतरें जिनोक्त सर्व पदार्थमें शंका करनी। "सांशयिकं मिथ्यात्वं तदशेषया शंका संदेहो जिनोक्ततत्त्वेष्वितिवचनात् ॥"

(५) पांचमा अनाभोगिकमिथ्यात्व, सो जिन जीवोंको उपयोग नही कि, धर्म अधर्म क्या वस्तु है ? ऐसें जे एकेंद्रियादि विशेषचैतन्यरहित जीव, तिनको अनाभोगमिथ्यात्व होता है. ॥ २ ॥

अथदेवलक्षणमाह ॥ देव सो कहिये, जो सर्वज्ञ होवे, परंतु जैसें लौकिक मतमें विनायकका मस्तक ईश्वरने छेदन कर दिया, पीछे पार्वतीके आग्रहसें सर्वत्र देखने लगा, परं किसी जगे भी

मस्तक न देखा, तब हाथीके मस्तकको लायके विनायकके मस्तकके स्थानपर चेप दिया, जिसवास्ते विनायकका ( गणेशका ) नाम "गजानन" प्रसिद्ध हुआ. इत्यादि–यदि ईश्वर ( महादेव ) सर्वज्ञ होता तो, पार्वतीका पुत्र जाणके विनायकका मस्तक कभी न छेदन करता. यदि छेदा, तो जगत्में विद्यमान तिस मस्तकको क्यों न देखा ? इसवास्ते ऐसें अधूरेज्ञानवालेको देव न कहिये. । तथा 'जितरागादिदोषः' जे संसारके मूलकारण राग द्वेष काम क्रोध लोभ मोहादिक दोष, तिन सर्वको जिसने जीते हैं, निर्मूल कियें हैं, तिसको देव कहिये. जिसमें रागादि दोष होवे, तिसको अस्मदादिवत् संसारी जीवही कहियें, तिसमें देवपणा न होवे. । तथा 'त्रैलोक्यपूजितः' स्वर्गमर्त्यपातालके स्वामी इंद्रादिक परम भक्तिकरके जिसको वांदे, पूजे, नमस्कार करे, सेवे, सो देव कहिये. परंतु कितनेक इसलोकके अर्थीयोंके वांदनेसें, वा पूजनादिकसें देवपणा नही होता है. । तथा ' यथा स्थित सत्यपदार्थका वक्ता, सो देव कहिये, परंतु जिसका कथन पूर्वापरविरोधि होवे, और विचारते हुए सत्य २ मिले नही, सो देव न कहिये. ॥ देवोर्हत् परमेश्वरः ये पूर्वोक्त चार गुण पूर्ण जिसमें

होवे, सो अरिहंत, वीतराग, परमेश्वर, देव, कहिये, इससें अन्य कोइ देव नही है. ॥ ३ ॥

ऐसा पूर्वोक्त साचा देव, पिछानके आराधना, सोही कहतें हैं । ध्यातव्योयमित्यादि—पूर्वे जो देवके लक्षण कहे, तिन लक्षणों संयुक्त जो देव, तिसको एकाग्र मनसें ध्यावना, जैसें श्रेणिक महाराजने श्रीमहावीरजीका ध्यान किया. । तिस ध्यानके प्रजावसें आगमी चउवीसीमें श्रेणिक, वर्ण, प्रमाण,संस्थान, अतिशयादिकगुणोंकरके श्रीमहावीरस्वामिसरिखा 'पद्मनाज,' नाम प्रथम तीर्थंकर होगा. इसीतरें औरोनें जी तल्लीनपणे देवका ध्यान करना, तथा 'उपास्योयम्' ऐसे पूर्वोक्त देवकी सेवा करनी श्रेणिकादिवत्. । तथा इसी देवका, संसारके जयको टालनहार जाणके, शरण वांछना. । इसी देवका शासन, मत, आज्ञा, धर्म, अंगीकार करना. । 'चेतनास्ति चेत्' जो कोइ चेतना चैतन्यपणा है तो, सचेतन सजाण जीवको उपदेश दिया सार्थक होवे, परंतु अचेतन अजाणको दिया उपदेश क्या काम आवे? इसवास्ते 'चेतनास्ति चेत्' ऐसें कहा. ॥ ४ ॥

अथादेवत्वमाह ॥ अथ अदेवके लक्षण कहतें है. ॥ ये स्त्री० ॥ जिनके पास स्त्री (कलत्र) होवे तथा खड्ग धनुष्य चक्र त्रिशूलादिक शस्त्र (हथियार) होवे, तथा अक्षसूत्र जपमाला आदि शब्द

सें कमंडलुप्रमुख होवे, ये कैसें है ? रा० रागादि
कके अंक–चिन्ह है, सोही दिखावे हैं. स्त्री रागका
चिन्ह है, । जो पासे स्त्री होवे तो जाणना कि
इसमें राग हैं. । शस्त्र द्वेषका चिन्ह है, जो पासे
हाथियार देखीए तो, ऐसा जाणिये कि तिसने
किसी वैरीको मारना चूरना है, अथवा किसीका
जय हैं, जिस वास्ते शस्त्रधारण किये हैं. । अक्ष
सूत्र असर्वज्ञपणाकाचिह्न है. यदि होवे तो, मणके
विना गिणतीकी संख्या जाणलेवे. अथवा तिससें
अधिक वडा अन्य कोइ है, जिसका वो जाप करता
है ? । कमंडलु अशुचिपणेका चिन्ह है, यदि हाथ
में कमंडलु पाणीका भाजन देखीए तो, ऐसा जाणि
ये की, यह अशुचि है. शौच करणेके वास्ते यह
कमंडलु धारण करता है. यतउक्तं ॥
स्त्रीसंगः काममाचष्टे द्वेषं चायुधसंग्रहः ॥
व्यामोहं चाक्षसूत्रादिरशौचं च कमंडलुः ॥ १ ॥
इन पूर्वोक्त दोषोंकरके जे दूषित है, तथा निग्र
हा० जिसके उपर रुष्टमान होवे, तिसको निग्रह
(बंधनमरणादिक) करें, और, जिसके उपर तुष्ट
मान होवे, तिसको अनुग्रह (राज्यादिकके वर)
देवें; तेदेवा० वे देव, मुक्तिके हेतु नही होते हैं.॥५॥
ऐसे पूर्वोक्त देव अपने सेवकोंको मोक्ष नही दे
सकते हैं, सोही वात फिर कहते हैं. । नाट्याट्ट० जे

देव नाटकके रसमें मग्न हैं, अट्टाट्टहास करते हैं, इत्यादि संसारकी चेष्टा जो अस्थिर है; लंजयेयुः—जे आपही ऐसे है, वे देव, अपने आश्रित सेवकोंको शांतपद, ( संसार चेष्टारहित मुक्ति, केवलज्ञानादि कपद, ) कैसें प्राप्त कर सकते हैं? जैसें एरंडवृक्ष कल्प वृक्षकीतरें इच्छा नही पूर सकता है, यदि किसी मूढ पुरुषने एरंडको कल्पवृक्ष मान लिया तो, क्या वो कल्पवृक्षकीतरें मनोवांछित दे सकता है ? ऐसेंही कीसी मिथ्या दृष्टीनें पूर्वोक्त दूषणोंवाले कुदेवोंको देव मान लिये तो, क्या वे देव परमेश्वर मोक्ष दाता हो सकते हैं ? कदापि नही हो सकते हैं.॥६॥

अथगुरुलक्षणमाह ॥ अथ गुरुके लक्षण कहते हैं ॥ महाव्र० अहिंसादि पांच महाव्रतके धारने पालनेवाले और आपदामें भी धीर साहसिक होके अपने व्रतोंको विराधे नही बेंतालीश ( ४२ ) दूषण रहित भिक्षावृत्ति ( माधुकरी वृत्ति ) करके अपने चारित्रधर्मके तथा शरीरके निर्वाहवास्ते भोजन करे, भोजन भी ऊनोदरतासंयुक्त करे, भोजनकेवास्ते अन्न पाणी रात्रिको न राखे, धर्मसाधनके उपकरण विना और कुछ भी संग्रह न करे, तथा धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, मणि. मोती, प्रवालादि परिग्रह, न राखे. । सामा० रागद्वेषके परिणामरहित मध्यस्थ वृत्ति होकर सदा सामायिकमें वर्त्ते. । धर्मोप० जो

धर्मी जीवोंके उद्धारवास्ते सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्ररूप भगवंतके स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण किया है, तिस धर्मका उपदेश करे, परंतु ज्योतिषशास्त्र, अष्टप्रकारका निमित्त शास्त्र, वैद्यकशास्त्र, धन उत्पन्न करनेका शास्त्र, राजसेवादि अनेकशास्त्र, जिनसें धर्मको बाधा पहुंचे तिनका उपदेश न करे; ऐसे गुरु कहियें. । काष्ठमय बेडीसमान आप भी तरें, और औरोंको भी तारें. ॥ ७ ॥

अथ अगुरुलक्षणमाह॥ अथ अगुरुके लक्षण कहते है ॥ सर्वा० स्त्री, धन, धान्य, हिरण्य, रूपादि सर्व धातु, क्षेत्र, हाट, हवेली, चतुःपदादिक अनेक प्रकारके पशु, इन सर्वकी अभिलाषा है जिनको, सर्व भोजिनः । मधु, मांस, मांखण, मदिरा, अनंतकाय, अभक्ष्यादिक सर्व वस्तुके भोजन करनेवाले, सपरिग्रहाः । जे पुत्र, कलत्र, धन, धान्य, सुवर्ण, रूपा, क्षेत्रादि सहित हैं, । अब्रह्म० तथा अब्रह्मचारी हैं । मिथ्यो० मिथ्या धर्मका उपदेश करें, ज्योतिष, निमित्त, वेदक, मंत्र तंत्रादिकका उपदेश देवें, वे गुरु नही. लोहमय बेडी ( नावा ) समान, आप भी डुबें, औरोको भी डुबावे ॥ ८ ॥

पूर्वोक्त बातही कहते हें ॥ परिग्रहा० स्त्री, घर, लक्ष्मी आदि परिग्रह, और क्षेत्र, कृषी, व्यवसायादि आरंभ इनमें जे मग्न है, आपही भवसमु

डमें डुबे हुए, हैं, ता० वे, किसतरेंसें दूसरे जीवोंको संसारसागरसें तार सकते हैं ? इसवातमें दृष्टांत कहते हैं. । जो पुरुष आपही दरिद्री है, सो परको ईश्वर लक्ष्मीवंत करनेको समर्थ नही है; तैसेंही वे कुगुरु, आपही ससारमें डुबे हुए, पर अपने सेवकोंको कैसें तार सके ? ॥ ए ॥

धर्मलक्षणमाह ॥सत्य धर्मका स्वरूप कहते हैं.॥ दुर्गति० नरक, तिर्यंच, कुमनुष्य, कुदेवत्वादि दुर्गति में गिरते हुए प्राणिकी रक्षा करे, गिरने न देवे, इस वास्ते धारण करनेसें धर्म कहिये, सो, संयमादि दशप्र कार सर्वज्ञ कथित धर्म, पालनेवालेको मोक्षकेवास्ते होता है. । संयमादि दश प्रकार ये है. संयम जीवदया १, सत्यवचन २, अदत्तादानत्याग ३, ब्रह्म चर्य ४, परिग्रहत्याग ५, तप ६, क्षमा ७, निरहंका रता ८, सरलता ए, निर्लोजता १०, ॥ इससें उलटा हिंसादिमय असर्वज्ञोक्त धर्म, दुर्गतिकाही कारण है. ॥ १० ॥

अधर्मत्वमाह ॥ अपौरुषेयं० अपौरुषेय वचन, असंजवि–संजवरहित है. क्योंकि, जो वचन है सो किसी पुरुषके बोलनेसेंही है, विना बोले नही. वच् परिज्ञापणे इति वचनात् और अक्षरोत्पत्तिके आठ स्थान नियत है, सो जी पुरुषकोंही होते है. इस वास्ते वचन पुरुषके विना संजवे नही । जवेग

दि–न प्रमाणं । यदि होवे तो, वेदको प्रमाणता नही. क्योंकि, । नवेद्वाचां ह्याप्ताधीना प्रमाणता । वचनोंकी प्रमाणता, आप्त पुरुषोंके आधीन है. ॥ ११ ॥

असर्वज्ञोक्त धर्म प्रमाण नही यही कहते हैं. ॥ मिथ्यादृष्टि असर्वज्ञोंने अपनी बुद्धिसें कहा हुआ, पशुमेध, अश्वमेध, नरमेधादि यज्ञोंके कथनसें, और अपुत्रस्य गतिर्नास्ति इत्यादि कथनसें, जीववधादि कोंकरके जो धर्मही है, ऐसा अजाण लोकोंमें विशेष प्रसिद्ध है. तो नी, नवभ्रमण (संसारभ्रमण) का कारण है. यथार्थ धर्मके अनावसें ॥ १२ ॥

कुदेवकुगुरुकुधर्मनिंदामाह ॥ सरागोपि० यदि जगत्में सरागः रागद्वेषादि सहित नी देव होवे, अब्रह्मचारी मैथुनानिलाषी नी गुरु होवे, और दया हीन नी धर्म होवे, तो, हाहा ! इति खेदे वमा नारी कष्ट है, संसारलक्षण जगत् नष्ट हुआ, दुर्गतिमें पमनेसें. क्योंकि, पूर्वोक्त देव गुरु धर्मकरके भुवनाही होवे यतः उक्तं ॥

रागी देवो दोसी देवो तामिसूमंपि देवो रत्ता मत्ता कंता सत्ता जे गुरू तेवि पुज्जा । मज्जे धम्मो मंसे धम्मो जीव हिंसाइ धम्मो हाहा कट्ठं नठो लोओ अट्टमट्टं कुणंतो ॥ १ ॥ १३ ॥

ऐसें पूर्वोक्त अदेव, अगुरु, अधर्मका परित्याग करके, सत्य देव, गुरु, धर्मकी, आस्था करनी, तिसका नाम

सम्यक्त्व है. सो सम्यक्त्व हृदयमें है, ऐसा पांच लक्षणोंकरके मालुम होता है, वे पांच लक्षण कहते हैं.॥

शमसं०–जिस जीवमें अनंतानुबंधि क्रोध मान माया लोभका उपचय देखिये, अर्थात् अपराध करनेवालेके ऊपर जिसको तीव्र कषाय उत्पन्न होवेही नही, यदि उत्पन्न होवे तो, तिस क्रोधादिको निष्फल करदेवे, इस शमरूप लक्षणसें जाणिये कि, इस जीवमें सम्यक्त्व है।१। संवेग–जिसके हृदयमें संवेग संसारसें वैराग्यपणा होवे, तिस जीवमें संवेगरूप लक्षणसें सम्यक्त्व जाणना।२। संसारके सुखों ऊपर द्वेषी, वैराग्यवान्, परवशपणेसें कुटुंबादिकके दुःखसें गृहस्थपणेमें रहा हुआ मोक्षाभिलाषी, जो जीव है, तिसमें निर्वेदरूप लक्षणसें सम्यक्त्व हैं.।३। जिसके हृदयमे दुःखिजीवोंको देखके अनुकंपा (दया) उत्पन्न होवे, दुःखिजीवोंके दुःखोंको दूर करनेका जिसका मन होवे, जो दुःखिजीवको देखके अपने मनमें दुःखी होवे, शक्तिअनुसार दुःखिजीवके दुःखोंको दूर करें, तिसमें अनुकंपारूप लक्षणसें सम्यक्त्व उपलब्ध होता हैं.।४। जिनोक्त तत्त्वोंमें अस्तिभाव का होना, सो आस्तिक्य।५। एतावता शम १, संवेग २, निर्वेद ३, अनुकंपा ४, और आस्तिक्य ५, इन पांचों लक्षणोंसें हृदयगत सम्यक्त्व जाणना,॥ १४ ॥

॥ अथ सम्यक्त्वके पांच ज्रूषण कहते हैं. ॥ स्थैर्य०–स्थैर्य जिनधर्मकेविषे स्थिरता ।१। जिन धर्मकी प्रज्ञावना।२। जिनधर्ममें ज्ञक्ति ।३। जिन शासनमें कुशलता ।४। और तीर्थसेवा ।५। ये पांच सम्यकत्व के ज्रुषण हैं. ॥ १५ ॥

अथ सम्यक्त्वके पांच दूषण कहते हैं. ॥ शंका० शंका धर्म. है, वा नही ? इत्यादि संदेह ।१। आकांक्षाअन्य २ धर्मकी अज्ञिलाषा ।२। विचिकित्साधर्मके फलका संदेह ।३। मिथ्यादृष्टिकी प्रशंसा ।४। और मिथ्यादृष्टियोंका परिचय ।५। ये पांच सम्यक्त्वको डुषित करते हैं. ॥ १६ ॥ ऐसें पूर्वोक्त उपदेशकरके श्रेणिक, संप्रति, दशार्णज्ञद्रादि सम्यक्त्वमें दृढ राजायोके व्याख्यान करे.। उस दिनमें श्रावक एकज्ञक्त आचाम्लादि तप करे.। साधुयोंको अन्न, वस्त्र, पुस्तक, वसति, यथायोग्य देवे.। मंम्लीपूजा करनी.। चतुर्विधसंघवात्सल्य करना.। और संघपूजा करनी. ॥

इतिव्रतारोपसंस्कारे सम्यक्त्वसामायिकारोपणविधिः।

## देशविरतिसामायिकारोपणविधिः

सम्यक्त्व सामायिकारोपणानंतर तत्कालही, तिसकी वासनानुसारें, वा मास वर्षादिके अतिक्रम हुए,

देशविरतिसामायिक आरोपण करना हैं. । तहां नंदि, चैत्यवंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमणआदि, सर्व विधि पूर्ववत् जाणनी.

परंतु सर्वत्र सम्य क्त्वसामायिकके स्थानमें देशविरतिसामायिकका नाम ग्रहण करना. । सर्वत्र तैसें करके फिर दूसरी नंदि दंडकोच्चारकालमें नमस्कार तीन पाठानंतर, हाथमें ग्रहण करे परिग्रह परिमाण टिप्पनक(फहरिस्त–नोंध) ऐसे श्रावकको गुरु, देशविरतिसा मायिकदंडक उच्चरावे. ॥ सयथा ॥

" ॥ अहण्णं नंते, तुह्माणं समीवे, थुलगं, पाणाइवायं, संकप्पओ, बीइंदिआइजीवनिकायनिग्गहनियट्टिरूवं, निरावराहं, पच्चक्खामि जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स नंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं, वोसिरामि, ॥ '

यह पाठ तीनवार कहना ॥ १ ॥ इसीतरें सर्व व्रतोंमें तीन २ वार पाठ पटना. ॥

" ॥ अहण्णं नंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगं, मुसावायं, जीहाछेयाइनिग्गहहेऊअं, कन्ना, गोनूमि, निक्खेवावहार, कूड सक्खाइ, पंचविहं, दक्खिन्नाइ अविसए, अहागहिअ नंगएणं, पच्चक्कामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेण, मणेणं वायाए, काएणं० ॥ २ ॥ "

" ॥ अहणं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगं, अदिन्नादाणं, खत्तखणणाइचोरकारकरं, रायनिग्गहकरं, सचित्ताचित्त वत्थुविसयं, पच्चक्कामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेणं० ॥ ३ ॥ "

" ॥ अहणं, जंते, तुह्माणं, समीवे, थूलगमेहुणं, उरालिय, वेउवियजेअं, अहागहिअ जंगएणं, तत्र डुविहं तिविहेणं दिवं, एगविहं तिविहेणं तेरिछं, एगविहमेगविहेणं माणुस्सं, पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, डुविहं तिविहेणं० ॥ ४ ॥ "

" ॥ अहणं जंते तुह्माणं, समीवे, अपरिमिअं, परिग्गहं, धणधन्नाइनवविहवत्थुविसयं, पच्चक्कामि, इछापरिमाणं, अहागहिअ जंगएणं, उवसंपज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं० ॥ ५ ॥ "

"अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, पढमं गुणवयं, दिसिपरिमाणरूवं, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं ॥ ६ ॥ "

" ॥ अहणं जंते, तुह्माणं, समीवे, उवजोगपरिजोगवयं, जोयणर्ज, अणंतकाय, बहुबीय राईजोयणाइंबावीसवत्थुंरूवं, कम्मणा, पन्नरस, कम्मादाण, इंगालकम्माइबहुसावज्जं, खरकम्माइ, रायनिर्जगं च, परिहरामि, परिमिअं, जोगउवजोगं, उवसंपज्जामि, जावज्जीवाए, डुविहं, तिविहेणं० ॥ ७ ॥"

" ॥ अहणं जंते, तुह्माणं समीवे, अणत्थदंमउ

एव्वयं, अट्टरुद्दश्राण, पावोवएस, हिंसोवयारदाण, पमायकरणरूवं, चउविहं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, दुविहं तिविहेणं ॥ ८ ॥ ”

“ ॥ अहणं भंते, तुह्माणं समीवे, सामाइयं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं, तिविहेणं ॥ ९ ॥ ”

“ ॥ अहणं भंते, तुह्माणं समीवे, देसावगासिअं, जहासत्तीए पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं तिविहेणं० ॥ १० ॥ ”

“ ॥ अहणं भंते, तुह्माणं समीवे, पोसहोववासं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि, जावज्जीवाए, दुविहं, तिविहेणं० ॥ ११ ॥ ”

“ ॥ अहणं भंते, तुह्माणं समीवे, अतिहिसंविभागं, जहासत्तीए, पडिवज्जामि' जावज्जीवाए, दुविहं' तिविहेणं० ॥ १२ ॥ ”

“ ॥ इच्चेयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवइयं, तिगुणवइयं, चउसिक्खावइयं, दुवालसविहं, सावगधम्मं, उवसंपज्जित्ताणं, विहरामि ॥ इति ॥

दंडकोच्चारणानंतर कायोत्सर्ग, वंदनक, क्षमाश्रमण, प्रदक्षिणा, वासक्षेपादिक पूर्ववत् ॥

परिग्रहप्रमाणटिप्पनकयुक्तिर्यथा ॥

भावार्थः—अमुक जिनेंद्रको नमस्कार करके, अमु

क श्राविका, वा अमुक श्रावक अमुक गुरुके पास, गृहस्थ धर्मको अंगीकार करता है. ॥ १ ॥

श्री अरिहंतको वर्जके अन्य देवको नमस्कार न करुं, जिनमतके सुसाधुकों छोरुके अन्य लिंगिकों धर्मार्थे नमस्कार न करुं. ॥ २ ॥ जिन वचन स्याद्वा दयुक्त सप्त वा नव तत्व को सत्य कर जान ता हुं, मिथ्याशास्त्रोंके श्रवण पठन लिखनेका मुझ को नियम हो. । ३। परतीर्थिको प्रणाम, गुणानुवाद, स्तवन, नक्ति, राग, सत्कार, सन्मान, दान, विनय, वर्जुं–न करुं. ।४। धर्मकेवास्ते अन्य तीर्थमें तप, स्नान, होमादिक नही करुं. तिनके उचित करने योग्य कर्ममें जयणा मुझको हो. ।५। तीन, वा पांच, वा सातवार यथाशक्तिसें चैत्यवंदन करुं; एक, वा दो वा तीन वार, प्रतिदिन सुसाधुको नमस्कार करुं, और तिसकी सेवा करुं. ।६। एक, वा दो, वा तीनवार प्रतिदिन जिनपूजा करुं; और पर्व दिनमें स्नात्रादि अधिक अधिकतर पूजा करुं. इति सम्यक्त्वम् ।

कुलाचार विवाहादि कृत्यमें जीववध होते जयणा करुं ।७। विना प्रयोजन एकेंद्रियका नी वध न करुं, प्रयोजनके हुए जयणा करुं, । इतिप्रथमव्रतम् ।

कन्या आदि पांच प्रकारका मृषावाद, नियमक रके वर्जता हुं. । इतिद्वितीयव्रतम् ।

जिससें चोर नाम पडे, और राजदंम होवे, ऐसा धन वर्जु, अर्थात् चोरी वर्जुं. । इतितृतीयव्रतम् ।

दो करण तीन योगसें देवतासंबधि, एकविध त्रिविधें करी तिर्यच संबंधि, मैथुनका नियम करता हुं. । ए । अनुनव करके स्तंजसमान ब्रह्मव्रतको अपने मनमें धारण करुं, और जावजीव मनुष्य संबंधि मैथुनकायाकरके वर्जु । १० । परनारीको, और परपुरुषको ( स्त्री व्रतग्राहिता आश्रित ) वर्जु. इनके उपरांत अन्यक्रियाकी मुफको जयणा. । इति चतुर्थव्रतम् ॥

नव प्रकारके परिग्रहमें परिग्रहकी संख्याका प्रमाण यह है. । ११ । इतने मात्र रूपय्ये, इतने मोहोर, इतने मात्र गिणतिमें. । १२ । इतने गिणतिमें रूपय्ये, यह गणिमवस्तुका ग्रहण है. इतनी वस्तु तोलमे और मापसें इतनी वस्तु. ।१३। हाथ अंगुलसें मेय वस्तुका इतने प्रमाण मात्रसें मुफको संग्रह करना कल्पे, तथा दृष्टिसें देखके जिनका मोल करा जावे ऐसे पदार्थ इतने रूपइयोंके मोलके रखने. । १४ । इतनी खांमी अन्नकी एक वर्षमें रखनी, इतनी मुफको परिग्रहमें नूमि रखनी कल्पे; इतने पुर, इतने गाम, इतने हाट, इतने घर, और इतने प्रमाण क्षेत्र, मुफको कल्पे. । १५ । इतने सेर, वा इतने तोले प्रमाण सोना, इतना मात्र रूपा,

इतना कांसा, इतना तांबा, इतना लोहा, इतना तरुया, इतना सीसा, अपने घरमे रखना. । १६ । इतने दास, इतनी दासी, इतने सेवक—नौकर और इतने दासचेटकोंकी संख्यां मुझको रखनी कल्पे. । १७ । इतने हाथी, इतने घोडे, इतने बलद, इतने ऊंट, इतने गाडे, इतनी गौ, इतनी महिषी (भैंस) । १८ । इतनी बकरी, इतनी भेरें, और इतने हल रखने मुझको कल्पे. और अमुक अमुक कर्मका मुझको नियम हो. । १९ । इति पंचमव्रतम् ॥

दसोंही दिशायोंमें अपने वशसें इतने योजन प्रमाण जावजीव गमन करना, और तीर्थयात्रामें जानेकी जयणा. । २० । इतिषष्ठव्रतम् ।

कर्ममें जोगोपजोगमें, खरकर्ममें, पंदरा कर्मादानमें, डुप्पोल आहार अज्ञात फूल फल इनको वर्जु. । २१ । पांच ऊंबर ५, चार महाविगइ ४, हिम १०, विष ११, कारक १२, सर्व जातकी मट्टी १३, रात्रिजोजन १४, बहुवीजा १५, अनंतकाय १६, संधान (बोल आचार) १७ । २२ । घोलवडां (विदल) १८, वृंताक १९, अज्ञात फल फूल २० तुछ फल २१ और चलितरस २२, ये बावीस वस्तुओको वर्जुं । २३ । वर्जके अन्य फल फूल पत्रमेसें अमुक अमुक प्राणांतमें जी, जक्षण न करूं. २४ । इतने मात्र प्रासुक अनंतकायकी मुझको जयणा हो, इतने

अपक्क फल और अखंम्डित भी भक्षण न करुं. ।२५। आ जन्मतक इतनी सच्चित्त वस्तुओं मेरेको भक्षण करने योग्य है, इतने पुष्टिकारक द्रव्य और इतने व्यंजन शाकादि मुझको कल्पे; तथा घृत, दुग्ध दहि प्रमुख ।२६। इतनी विगइ मुझको कल्पे. इतने पियादे, इतने गज, इतने तुरग और इतने प्रधान रथोंकी मुझको जयणा हो ।२७। इतनी सुपारी, इतने लवंग, इतने एलाफल (इलायची) जायफल आदि मेरेको नित्य इतने प्रमाण कल्पे. सूतके, रेशमके, ऊनके, औरके, इन चार प्रकारके।२८। वस्त्रोंमें भी इतने वस्त्र पहिरने मुझको कल्पे; और इतनी जातिके फूल मेरे अंगके भोगवास्ते कल्पे । २९ । आसन, सिंहासण, पीठ, पट्टे, बाजोठ, पल्लंक, गदेला, रजाइ, और खाट आदि ये सर्व इतने प्रमाण मुझको कल्पे. ।३०। कर्पूर, अगर, कस्तूरी, चंदन केशरादि मात्र मेरे अंगके वास्ते इतने कल्पे, और पूजामें जयणा. ।३१। इतनी नारी मेरे संभोगमे इतने कालमात्र, इतने घडे, ठाणे हुए जलके और प्रासुक जलके मेरेको स्नान वास्ते कल्पे ।३२। इतनी वार दिनमें इतनी जातिके तेल मर्दन के वास्ते, इतने प्रकारके भात रोटी आदिक भोजन, और दिनमें इतनी वार भोजन न करना. ।३३। यह सच्चित्तादिका भोग परिभोग

जावजीवतक है, इनका नी फेर प्रमाण दिनदिनमें करुं, * । ३४ । इतने मात्र मणि, कनक, रूपा, मोती नूषण, अंगऊपर धारण करुं· इतने मात्र गीत, नृत्य, वाजंत्र, मुऊको उपनोगवास्ते कल्पे· । ३५ । इतिसप्तमव्रतम् ॥

वैरिका घात, वैर लेना, इत्यादिक आर्त्त, रौड़, ध्यान, अदाक्षिण्यताविषे पापोपदेशका देना, इनको वर्जु· । ३६ । अदाक्षिण्यताविषे हिंसाकारी गृहोप करणादि देना तथा कामशास्त्रकापढना, जूआ खेलना, मद्य पीना, इनको परिहरुं· । ३७ ) हिंमोलेका विनोद, नक्त ( नोजन ), स्त्री, देश, और राजा, इनकी स्तुति, वा निंदा; पशु पक्षीका युद्ध, अकालमें नींद लेनी, संपूर्ण रात्रिमें सोना, । ३८ । इत्यादि प्रमाद स्थानक, अनर्थादंमनामक गुण व्रत में वर्जु· । इति अष्टमव्रतम् ॥

एक वर्षमें इतने सामायिक करुं· । इतिनवमव्रतम् ॥

इतने योजन मेरेको दिन, वा रात्रिमें दशोदिशा ओंमें जाना आना कल्पे· । इतिदशमव्रतम् ।

एक वर्षमें इतने पौषध करुं· इत्येकादशव्रतम् ॥

साधुओंको संविनाग नोजन वस्त्र आदिकसें करुं· ४० । प्रथम यतिको देके और नमस्कार करके पीछे

* दिन २ में जो प्रमाण करना है, सो दशम देसावकाशिकव्रतान्तर्गत जाणना ॥

आंप पारणा करुं; जो सुविहित साधुओंका योग न होवे तो, दिशावलोकन करके नोजन करुं. । ४१ । इतिद्वादशव्रतम् ॥

यह द्वादश व्रतरूप श्रावकधर्म, पूर्वोक्त विधिसें पालुं, विना गाएया जलका पान और स्नान, मरणांतमें नी न करुं. । ४२ । कंदर्प, दर्प, थूकना, सोना, चार प्रकारका आहार करना, विकथा, कलह, इत्यादि जिनमंरुपमें वर्जुं. । ४३ ।

अमुक महागछमें, अमुक गुरु सूरिके संतानमें, अमुकके शिष्यके पास, अमुक सूरिके पादांतमें. ४४ ।अमुक संवत्सरमें, अमुक मासमें, अमुक पक्षमें, अमुक तिथिमें, अमुक वारमें, अमुक नक्षत्रमें, अमुक नगरमें. । ४५ । अमुकका पुत्र, अमुक नामका श्रावक, यहां गृहस्थधर्म ग्रहण करता है. अमुककी पुत्री आमुककी नार्या, अमुक नामकी श्राविका, वा व्रत ग्रहण करती है. । ४६ ।

नवरं क्षत्रियकेवास्ते प्राणातिपात स्थानमें प्रथम व्रतमें ४७ । ४८ । यह दो गाथा, अधिक जाननी. । युद्धमें, कोइ गौको चुरा लेजाता होवे तिसके हटानेमें, चैत्य, गुरु, साधु, संघको उपसर्ग देनेवालेको हटानेमे, तथा डुष्टके निग्रहमे, जीवके वध हुए मुझको दोष नहीं । ४९ । जनोंके, और देशके रक्षणवास्ते सिंह, व्याघ्र, शत्रुओंके हननेमें मुझको

दोष नही; अर्थात् इन कामोंके लिए हिंसा करनेसें मेरा व्रत नंग न होवे. । जल पीनेमें गाणना, अन्यत्र स्नाना दिमें यथाशक्ति. । ४७ । इनमें प्रमादके होनेसें, गुरुके वचनसें यह तप करुं; अल्प बहुत नांगेसें, तिससें मेरी विशुद्धि होवे. । ४ए ॥ इति परिग्रह प्रमाणटिप्पनकविधिः ॥

इन बारह व्रतोंमेंसें कोइ कितनेही व्रत अंगी कार करे, तिसको तितनेही उच्चार करावने. । जिस को ब मासिक सामायिक व्रत अरोपतें हैं, तिसका यह विधि है. ॥ चैत्यवंदना, नंदि, क्षमाश्रमणादि सर्वपूर्ववत् सामायिकके अनिलाप करके; । और विशे षयह हैं; । कायोत्सर्गके अनंतर तिसके हस्तगत नूतन मुखवस्त्रिकाके ऊपर वासक्षेप करना. । तिसही मुखवस्त्रिकाकरके षट् (६) मासपर्यंत उनयकाल सामायिक ग्रहण करे. । पीछे तीनवार नमस्कारका पाठ करके दंमक पढावे. सयथा ॥

" ॥ करेमि नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्च क्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स नंते पमिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं, वोसि रामि, । से सामाइए चउव्विहे तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं नावउं दव्वउणं सामाइअं पडुच्च, खित्तउणं इहेव वा अन्नछ वा, कालउणं जाव छम्मासं, नाव

ठणं जाव गद्देणं न गहिज्जामि,जाव ढलेणं न ढलिज्जामि, जावसन्निवाएणं नाजिन्नविज्जामि, ताव मे एसासामाइय पडिवत्ती ॥ ”

ऐसें तीनवार पढावना. । मस्तकोपरि वासक्षेप करना, अक्षतवासाको अजिमंत्रणा, और संघके हाथ में वासक्षेप देना, यहां नही है परंतु प्रदक्षिणा तीन, करावनी. । इतिषाएमासिक सम्यक्त्वारोपणविधिः ॥

इसीतरें सम्यक्त्वका, और द्वादश व्रतोंका जी इसही दंमकसें तिस २ अजिलापसें मास, षट् (६) मास वा वर्ष पर्यंत, सम्यक्त्व व्रतोंका उच्चारण करना. । नवरं सम्यक्त्वका सम्यक्त्वदंडसें उच्चार करना. नवरं इतना विशेष है कि, सम्यक्त्वकी अवधिमें ‘ जावज्जीवाए ’ यह पाठ न कहना. किंतु, ‘ मासं छम्मासं वरिसं ’ इत्यादि कहना. शेष व्रतोंमें जी जावज्जीवाएके स्थानमे ‘ मासं छम्मासं वरिसं ’ इत्यादि कहना ॥

अथ प्रतिमोद्वहनविधिः ॥ यावज्जीवतक नियम स्थिरीकरण प्रतिज्ञा जो है, तिसको प्रतिमा कहते हैं. तिनमें कालादिमें नियमव्यवछेद नही है । ते प्रतिमा एकादश (११) गृहस्थोंकी है. । तद्यथा ॥

“ ॥ दंसण १, वय २, सामाइय ३, पोसह ४, पडिमाय ५, बंज ६, अचित्ते ७, ॥ आरंज ८, पेस ९, उद्दिठ, वज्जाए १०, समणजूए य ११, ॥ १ ॥ ”

अर्थः–तहां जिस प्रतिमामें मासतक श्रावक निःशंकितादि सम्यग् दर्शनवाला होवे, सा प्रथम दर्शनप्रतिमा १. व्रतधारी द्वितीया २. कृतसामायिक तृतीया ३. अष्टमी चतुर्दश्यादिमें चतुर्विध पौषध करना, चतुर्थी ४. पौषधकालमें, रात्रिकी आदि प्रतिमा, अंगीकार करनी, अस्नान, प्रासुकभोजी, दिनमें ब्रह्मचारी, रात्रिमें परिमाण करे और कृत पौषध तो, रात्रिमें भी ब्रह्मचारी, इति पंचमी ५. सदा ब्रह्मचारी षष्ठी ६. सच्चित्ताहारवर्जक सप्तमी ७. आप आरंभ नही करना, अष्टमी ८. नौकरोंसें आरंभ नही करावना, नवमी ९. उद्दिष्टकृताहारव र्जक, क्षुरमुंडित, शिखासहित, वा निराधारीकृतध नका, पुत्रादिकोंको बतलानेवाला, इति दशमी १०. क्षुरमुंडित, लुंचितकेश, वा रजोहरणपात्रधारी, साधु समान, निर्ममत्व, अपनी जातिमें आहारादिकेवास्ते विचरे, इतिएकादशी. ॥ ११ ॥

यहां पहिली एक मास, दूसरी दो मास, तीस री तीन मास, एवं यावत् इग्यारहमी इग्यारह मास पर्यंत. तथा जो अनुष्ठान, पूर्व प्रतिमामें कहा है, सोही अनुष्ठान, आगेकी सर्व प्रतिमायोंमें जानना. इनमें वितथ प्ररूपणा अश्रद्धानादि करना, सो अति चार है. । तिनमें पहिली 'दर्शन प्रतिमा' तिसमें नंदि, चैत्यवंदन, क्षमाश्रमण, वासक्षेप, इनोंका विधि

दर्शनप्रतिमाके अभिलापसें सोही पूर्वोक्त रीतीसें जाननाः और दंडक ऐसें हैं।

"॥अहण्णं भंते तुह्माणं समीवे, मिछत्तं, दवओ वभिन्नं,पच्चक्कामि, दंसणपडिमं, उवसंपज्जामि, नो मे कप्पइ,ज्ञप्पभिइ अन्नउत्थिए वा, अन्नउत्थिअदेवयाणि वा, अन्नउत्थिअपरिग्गहिआणि वा, अरिहंतचेइआणि वा, वंदित्तए वा, नमंसित्तए वा, पुव्विअणालत्तेणं आलवित्तए वा, संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा दाउं वा, अणुप्पयाउं वा, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएण, न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तहा अईअं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चख्खामि, अरिहंतसक्खिअं, सिद्धसक्खिअं, साहुसक्खिअं, अप्पसक्खिअं, वोसिरामि, तहा दवओ खित्तओ कालओ भावओ, दवओणं एसा दंसणपडिमा, खित्तओणं इहेव वा अन्नत्थ वा, कालओणं जाव मास, भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि, जाव छलेणं न छलिज्जामि, जाव सन्निवाएणं नाभिभविजामि, ताव मे एसा दंसणपडिमा ॥"

शेषं पूर्ववत्। प्रदक्षिणात्रयादिक, दर्शनप्रतिमा स्थिरीकरणार्थ कायोत्सर्गादि. यहां अभिग्रह मासातिक यथाशक्ति आचाम्लादि प्रत्याख्यान करना, तीनों संध्यामें विधिसें देवपूजन करणा. पार्श्व

स्थादिवंदनका परिहार करना. शंकादि पांच अतिचारोंका त्याग करना. राजाभियोगादि छ (६) कारणोंसें भी यह दर्शन प्रतिमा नही त्यागनी. ॥ इतिदर्शनप्रतिमा. ॥ १ ॥

अथ दूसरी व्रतप्रतिमा, सा, मास दो तक यावत् निरतिचार पांच अणुव्रत पालनविषया, गुणव्रत ३, शिक्षाव्रत ४, इनका पालना भी साथही जानना. अर्थात् दो मासपर्यंत निरतिचार द्वादश (१२) व्रतोंका पालना. यहां नंदिक्षमाश्रमणादि तिसतिस प्रतिमाके अभिलापसें पूर्ववत् । प्रत्याख्यान नियम चर्यादि सर्व तैसेंही जानने. दंडक भी तिसके अभि लापसें सोही जानना. ॥ इतिव्रतप्रतिमा ॥ २ ॥

अथ तीसरी सामायिक प्रतिमा, सा, तीन मास तक उभयसंध्यामें सामायिक करनेसें होती है. शेष नंदिनियम व्रतादिविधि सोइ अर्थात् पूर्वोक्तही जान ना. और दंडक सामायिकके अभिलापसें कहना. ॥ इतिसामायिकप्रतिमा ॥ ३ ॥

अथ चौथी पौषधप्रतिमा, सा, चार मास यावत् अष्टमी चौदशको चार प्रकारके आहारके त्यागमें रक्तको चार प्रकारके पौषधके करनेसें होती है. इत्यादिग्रंथसें दो आदि मासपर्यंत इस कथनसें यथाशक्ति सूचन किइ गइ. यहां नंदिव्रत नियमा

द्विविधि सोही और दंमक तिसके (पौषधप्रतिमाके) अजिलापसें कहना. ॥ इतिपौषधप्रतिमा ॥ ४ ॥

ऐसें पांचमासादिकालवाली शेषप्रतिमायोमें जी यही पूर्वोक्त विधि है. नंदिक्षमाश्रमण दंमकादि तिसतिस प्रतिमाके अजिलापसें. व्रतचर्या सोही है, परं संप्रतिकालमें, पर्यायसें, वा संहननकी शिथिलतासें, पांचमी प्रतिमासें लेके इग्यारहमीतक प्रतिमाके अनुष्ठानका विधि शास्त्रोंमें नहि दिखतादें प्रतिमाका आरंज शुज मुहुर्तमें करना. ॥ इति देशविरतिसामायिकारोपणविधिः ॥

## उपधान विधि ॥

श्रुतसामायिकारोपणविधि कहते है. ॥ तहां यतियोकों श्रुतसामायिकारोपण, योगोद्वहनविधिसें होता है. उनका श्रुतारोपण, आगम पाठसें होता है. और योगोद्वहन आगमपाठ रहित एसे गृहस्थोंको, श्रुतसामायिकारोपण, उपधानोद्वहनसें होता है. सो श्रुतारोपण, परमेष्ठिमंत्र, ईर्यापथिकी, शक्रस्तव, चैत्यस्तव, चतुर्विंशतिस्तव श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि पाठकरके होता है. ॥

उपधीयते ज्ञानादि परीक्ष्यते अनेनेत्युपधानं–जिससें ज्ञानादिकी परीक्षा करिये, तिसको उपधान कहते है. अथवा चार प्रकारके संवर समाधिरूप सुखशय्यामें उत्तम होनेसें उत्सीर्षक स्थानमें उप

धीयते स्थापन करिये, तिसको उपधान कहिये. तिस उपधानमें ठ (६) श्रुतस्कंधोंका उपधान होता है, सोही दिखाते हैं. परमेष्ठिमंत्रका १, ईर्यापथिकीका २, शक्रस्तवका ३, अर्हत् चैत्यस्तवका ४, चतुर्विंशतिस्तवका ५. श्रुतस्तवका ६.

सिद्धस्तवकी वाचना उपधानविना होती है.

प्रथम परमेष्ठिमंत्र महाश्रुतस्कंधके पांच अध्ययन है, और एक चूलिका है. दो दो पदके आलावे पांच है, सात २ अक्षरके अर्हत् आचार्य उपाध्याय नमस्कार रूप तीन पद है. सिद्धनमस्कृति· रूप दूसरा पद पांच अक्षरोंका है, साधुओंको नमस्काररूप पांचमा पद नव अक्षरोंका है, एवं पांच पद. तिसके पीछे चूलिका, तिसमें दो पदरूप प्रथम आलापक सोलां (१६) अक्षरोंका है, तृतीय पदरूप दूसरा आलापक आठ (८) अक्षरोंका है, और चौथे पदरूप तीसरा आलापक नव (९) अक्षरोंका है. तहां पंचपरमेष्ठिमंत्रमें पांचो पदोंमें तीन उद्देशे है, और चूलिकामें भी उद्देशे तीन है एवं उद्देशे ६. ॥ प्रथमके पांचो पदोंमें पेंतीस (३५) अक्षर है, और चूलिकामें तेतीस (३३) अक्षर है. पांच अध्ययन ऐसें है ॥

नमो अरिहंताणं १। नमो सिद्धाणं २। नमो

आयरिआणं ३। नमो उवज्झायाणं ४। नमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ एका चूलिका यथा ॥

एसो पंच नमुक्कारो; सवपावप्पणासणो, मंगलाणं च सवेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥ दो दो पदके आलापक यह है ॥

नमो अरिहंताणं। नमोसिद्धाणं ॥ १ ॥ ,,
नमो आयरिआणं।नमो उवज्झायाणं ॥ २ ॥ ,,
नमो लोए सवसाहूणं ॥ ३ ॥ ,,
एसो पंच नमुक्कारो। सवपावप्पणासणो ॥४॥,,
मंगलाणं च सवेसिं।पढमं हवइ मंगलं ॥५॥,,

सात ७ अक्षरके तीन पद यह है ॥

नमो अरिहंताणं। ७। नमोआयरिआणं। ७। नमो उवज्झायाणं। ७। ॥ १ ॥ ,,

पांच अक्षरोंका तीसरा पद "नमो सिद्धाणं। ,,२

पांचमां पद नव अक्षरप्रमाण "नमो लोएसवसाहूणं।३,,

चूलिकामें (१६) अक्षरप्रमाण प्रथम आलापक॥

एसो पंच नमुक्कारो, सवपावप्पणा सणो ॥ १ ॥

चूलिकामें आठ अक्षर प्रमाण दूसरा आलापक,,

मंगलाणं च सवेसिं ॥ २ ॥,,

चूलिकामे नव अक्षर प्रकार तीसरा आलापक "पढमं हवइ मंगलं ॥ ३ ॥,,

सर्व अक्षर अडसठ (६८) तिसका उपधान ऐसें है. ॥

नंदि, देववंदन, कायोत्सर्ग, क्षमाश्रमण, वंदनक, प्रमुख नमस्कारश्रुतस्कंधके अनिलापसें पूर्ववत् जाणना. और अनिमंत्रित वासक्षेप नी पूर्ववत् जाणना. । तहां पूर्वसेवामें एकनक्तके अंतरे उपवास पांच, एवं दिन ११, तहां प्रथम नंदिदिनमें एकनक्त, वा निविगइ, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकनक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकनक्त, उठे दिन उपवास, सातमे दिन एकनक्त, आठमे दिन उपवास, नवमे दिन एकनक्त, दशमे दिन उपवास, एकादशमे दिन एकनक्त. ऐसें द्वादशम तप पूर्व सेवामें करना. । तहां पंचपरमेष्ठि पदोंकी वाचना नंदिविना नी देनी. शक्रस्तवका पढना, वासक्षेपपूर्वक तीन नमस्कारोंका पढना, सर्व वाचनाओंमें जाणना. । तहां श्रेणिबरू आठ आचाम्ल करने, ऐसें एकोनविंशति (१ए) दिन. पीछे वीसमे दिन एकनक्त, इकवीसमे दिन उपवास, बावीसमे दिन एकनक्त, तेइवीसमे दिन उपवास, चौवीसमे दिन एकनक्त, पच्चीसमे दिन उपवास. । ऐसें अष्टम तप उत्तर सेवामें. । पीछे चूलिकाकी वाचना एसो पंच यहांसें लेके हवइ मंगलं ॥

इति नमस्कारस्योपधानं॥ पीछे तिसकी वाचना, तिसका विधि यह है. ॥ पहिलां सामाचारीका पुस्तक पूजना, पीछे मुखवस्त्रिकासें मुख ढांकके

ऐर्यापथिकी (इरियावहियं) पमिक्कमके क्षमाश्रमण पूर्वक कहें. ॥

"॥ जगवन् नमुक्कारवायणासंदिसावणियं वाय णालेवावणियं वासरकेवं करेह। चेइयाइं च वंदावेह ॥"

ऐसें नंदि करके उब्बीसमें दिन एकजक्त करें,वाचना देनी. चूलिकाके चारों पदोंके सर्वे उपधानोंमें प्रति दिन अव्यापार पौषध करना, सवेरे २ पौषध पारके पुनः २ नित्य पौषध ग्रहण करना, और नमस्कार सहस्र गुणना. ॥ इतिप्रथममुपधानम् ॥ १ ॥

ऐर्यापथिकीका नी उपधान ऐसेंही है. आदिकी, और अंतकी, दोनोंही नंदि तिसके–ऐर्यापथिकीके अनिलापसें करनी. । तहां वाचनामें आठ अध्ययन, और वाचना दो,–एक पांच पदोंकी और दूसरी तीन पदोंकी; पांच पदोंकी एक चूलिका ॥

"॥ इछामि पडिक्कमिउं इरिआवहिआए विरा हणाए। १। गमणागमणे। २। पाणक्कमणे, वीयक्कमणे हरीयक्कमणे।३। ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कमासं ताणासंकमणे। ४। जे मे जीवा विराहिया।५। यह एक वाचना, द्वादशम तपके पीछे देते हैं. ॥ १ ॥

"॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिदिया। ६। अन्निहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइ या, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,

तस्स मिछामि डुक्कडं । ७ । तस्सउत्तरीकरणेणं, पायछित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं।८। यह दूसरी वाचना, आठ आचाम्लके अंतमें देनी. ॥ २ ॥ इसके पीछे ॥

" ॥ अन्नथ्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डूएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुछाए, ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं।२। एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । ३ । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि । ४ । ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि । ५ ।" यह चूलिकाकी वाचना, अंत दिनमें देनी. ॥ इतिऐर्यापथिक्याउपधानम् ॥ २ ॥

अथ शक्रस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ तहां नंदिआदि सर्व शक्रस्तवके अभिलापसें पूर्ववत्. । तथा प्रथम दिनमें एकभक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकभक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकभक्त, छठे दिन उपवास,॥सातमे दिन एकभक्त; । तहां तीन संपदायोंकी प्रथम वाचना देते हैं. ॥ यथा ॥

"॥ नमुथ्थुणं अरिहंताणं जगवंताणं । १ । आइ गराणं तिथ्थयराणं सयंसंबुद्धाणं । २ । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंमरीआणं पुरिसवरगंधह थ्थीणं । ३ । इत्येका वाचना ।

यह एक वाचना । नमुथ्थुणं । यह पद जिन्न है. । तीनोंही संपदा अनुक्रमे दो, तीन, चार पद वाली है. । पीछे एकश्रेणिकरके निरंतर सोलां (१६) आचाम्ल करने. । तिसमें पांच २ पदोंवाली तीन संपदाकी वांचना देते हैं. ॥ यथा ॥

॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगप ईवाणं लोगपज्जोअगराणं । ४ । अजयदाणं चक्खुद याणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ।५। धम्म दयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । ६ । यह दूसरी वाचना॥२।

पीछे फिर जी तिसही श्रेणिकरके सोलां आचा म्ल करने. । तिसमें दो तीन पदोंवाली तीन संप दाकी वाचना देनी. ॥ यथा ॥

॥ अप्पमिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमा णं । ७ । जिणाणं, जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धा णं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं । ८ । सव्वन्नूणं सव दरिसिणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुण रावित्ति,सिद्धिगइनामधेयं,ठाणं संपत्ताणं,नमो जिणा णं जिअजयाणं । ९ । " यह तीसरी वाचना ॥ ३ ॥

"॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ नविस्संतिणा गए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदामि ॥" इस अंतिमगाथाकी वाचना जी, तीसरी वाचनाके साथही देनी. ॥ इतिशक्रस्तवोपधानम्॥३॥

अथ चैत्यस्तवका उपधान कहते है. ॥ नंदिआदिपूर्ववत्. । प्रथम दिने एक जक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एक जक्त; पीछे श्रेणिकरके तीन आचाम्ल करने. अंतमें तीनोंही अध्ययनोंकी समकालें एक वाचना देनी. ॥ यथा ॥

"॥ अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाजवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । १ । सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामिकाउस्सग्गं । २ । अन्नथ्थउससिएणं–यावत्–वोसिरामि ॥ ३ ॥" यह एकही वाचना है. ॥ इति चैत्यस्तवोपधानम् ॥ ४ ॥

अथ चतुर्विंशतिस्तवका उपधान कहते हैं. ॥ नंदि, दो पूर्ववत् । प्रथम दिने एकजक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकजक्त, चौथे दिन उपवास, पांचमे दिन एकजक्त, छठे दिन उपवास, सातमे दिन एकजक्त. । एसें अष्टम तप । अंतमें प्रथम गाथाकी एक वाचना. यथा ॥

"॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली । १ । " यह एक वाचना ॥ १ ॥

पीछे श्रेणिकरकेही बारां ( १२ ) आचाम्ल करने. तिसके अंतमें तीन गाथाकी वाचना. ॥ यथा ॥

॥ उसन्नमजियं च वंदे, संन्नवमन्निणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।२। सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिंच वंदामि ।३। कुंथुं अरंच मल्लिं, वंदे मुणि सुवयं नमिजिणं च ॥ वंदामिरिठनेमिं, पासं तह वद्ध माणं च ।४। यह दूसरी वाचना. ॥२॥

पीछे तिस श्रेणिकरकेही तेरा ( १३ ) आचाम्ल करने. तिसके अंतमें तीसरी वाचना ॥ यथा ॥

॥ एवं मए अन्निथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिथ्थयरा मे पसीयंतु । ५ । कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवोहिलान्नं समाहिवरमुत्तमं दिंतु । ६ । चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंन्नीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ " यह तीसरी वाचना. ॥ ३ ॥ इति चतुर्विंशतिस्तवोपधानम् ॥ ५ ॥

अथ श्रुतस्तवका उपधान कहते हैं. । नंदि, दो पूर्ववत् । प्रथमदिने एकन्नक्त, दूसरे दिन उपवास, तीसरे दिन एकन्नक्त, पीछे श्रेणिकरके पांच आचाम्ल

करने. तिसके अंतमे दो गाथाओंकी और दोनों वृत्तों की समकालही वाचना.। तिसमें पांच अध्ययन हैं.। तिसमें प्रथमकी दो गाथाओंके दो अध्ययन ॥ यथा ॥

" ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवेअ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि । १ । तम तिमिरपडलविद्धंसणस्स, सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स । २ । तीसरा अध्यायन वसंततिलका वृत्तसें ॥ यथा ॥

॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स । को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं । ३ ।
चौथा अध्ययन शार्दूलविक्रीडितवृत्तके पूर्वार्द्धसें। यथा

॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ।४। ।५।" इति श्रुतस्तवोपधानम् ।६। इति षडुपधानानि ।

तथा सिद्धस्तवमें प्रथम तीन गाथाकी वाचना यथा

" सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं । १ । जो देवाणविदेवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं । २ । इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥" शेष दो गाथा ॥ यथा ॥

॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिरका नाणं च निसीहि
आ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि
। ४ । चत्तारि अठ दस दो अ, वंदिआ जिणवरा
चउवीसं । परमठनिठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसं
तु ॥ ५ ॥" इत्युपधानवाचना स्थितिः ॥ अथ
विस्तार, निशीथसिद्धांतसें उधृत उपधानप्रकरणसें
जानना. ॥

भावार्थः-पांच नमस्कारमें पांच उपवासका उप
धान होता है, आठ आचाम्ल तथा अंतमें एक
अष्टमतप, और वत्तीस आचाम्ल चैत्यस्तवमें एक
उपवास, और तीन आचाम्ल करणे. । चतुर्विंशति
स्तवमें एक षष्ठतप, एक उपवास, और पंचवीस
(२५) आचाम्ल करणे. । श्रुतस्तवमें एक उपवास,
और पांच आचाम्ल. । तीर्थंकर गणधरोंने चैत्यवं
दनादि सूत्रमें यह उपधान कथन करा है. ॥ ५ ॥
व्यापाररहित, विकथाविवर्जित, रौद्र ध्यान रहित,
विश्राम रहित उपयोगसहित, उपधान करे, ॥ ६ ॥
यह उत्सर्ग कहा. अब अपवाद कहते हैं. अथ
कदापि उपधानवाही वालक होवे, वा वृद्ध होवे,
वा शक्तिरहित तरुण होवे तो, अपनी शक्तिप्रमाण
उपधान प्रमाण पूर्ण करे. । रात्रिभोजनकी विरति,
चतुर्विधाहार, वा त्रिविधाहार, वा द्विविधाहार प्रत्या
ख्यानरूप करे; नवकारसहिआदि पच्चरकाण कर

के. । एक शुद्ध आंबिलकरे, अथवा इतर दो आंबि लकरनेसें, एक उपवास होता है. पणतालीस (४५) नवकारसहि करनेसें ,एक उपवास होता है. चौवी स (२४) पोरसि करनेसें, और दश (१०) साढपो रसी करनेसें, एक उपवास होता हैं. तीन निवि करनेसें, और चार एकलठाणे करनेसें, एक उपवास होता हैं. आचरणासें सोलां (१६) पुरिमढ कर नेसें उपवास होता है. चार एकासनेसें, और आठ वियासणे करनेसें जी, उपवास होता है. अर्थात् उपवासका जो फल है, सोही प्रायः पूर्वोक्त तपका फल है. इसवास्ते जिसकी पूर्वोक्त उपधानकी शक्ति न होवे सो, इन तपोंमेसें किसी जी तपके करनेसें उपधान प्रमाण पूर्ण करे. ॥ ११ ॥

गौतमस्वामी कहते हैं. हे जगवान् ! ऐसें करते हुए प्राणीको वहोत काल होवे तो, कदापि नवका रवर्जित जि, तिसका मरण हो जावे, तो नवकार वर्जित सो प्राणी, अनुत्तर, निर्वाण, कैसें प्राप्त करें ? तिसवास्ते नवकार प्रथमही ग्रहण करो, उपधान होवे, वा न होंवे. ॥ १३ ॥

महावीर स्वामी कहते हैं. हे गौतम ! जो प्राणी जिस समयमें व्रतोपचार (उपधानारंज) करे, तिसही समयमें, तूं जिनाज्ञाकरके ग्रहण करा हैं व्रतार्थ जिसनें, ऐसा तिसको जाण. ॥ १४ ॥ ऐसें जिसने

उपधान करा है, सो प्राणी नवांतरमें सुलनबोधि होतेंहैं. और उपधानके अध्यवसायवाले नी, हे गौतम ! आराधक होतें है. परंतु हे गौतम ! नक्ति वाला नी प्राणी, जो उपधानविना श्रुतको ग्रहण करे, तिसको नही ग्रहण करनेवालेके सदृश जाण ना. तथा सो जीव, तीर्थंकरकी, तीर्थंकरके वच नोंकी, संघकी, और गुरुजनकी, आशातना करता है. सो आशातना वहुल प्राणी, हे गौतम संसा रमें न्रमण करता है. उपधानवीना नवकार जिसने पढ लिया है, तिसको नी उपधान पीछेसेनी कर नेसें वोधि, (जिनधर्मप्राप्ति) सुलन कही है. यह उपधानकरके प्रधान, निपुण, संपूर्ण नी वंदन विधान, जिनपूजा, पूर्वकही श्रुतोक्त नीतिकरके पढना. तिस पंच मंगलको स्वर, व्यंजन, मात्रा, विंडु, पदछेद, स्थानोंकरके शुद्ध पढके, चैत्यवंदन सूत्रको, और अर्थको विशेषकरके जाणना. तिसमे जहां सूत्रविपे, वा अर्थविपे, संदेह होवे तो, तिस को वहुशः विचारके संपूर्ण संदेहरहित करना.॥२१॥

अथ शुनतीथि, करण, मुहूर्त्त, नक्षत्र, जोग, लग्नमें, चंद्रवलके अनुकूल हुए, कल्याणकारी प्रश स्त समयमें, अपने विनवानुसार नगवान्का पूजन कर, परम नक्तिसें विधिपूर्वक साधुवर्गको प्रतिलान के, अतिसमूह सहित, हर्पवशसें खडे हुवें हैं,

पुलक ( रोम ) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविडरागद्वेषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिभुवनगुरु जिन भगवानकी प्रतिमामे स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसें मैं धन्य हूं ऐसें मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको भावते ( विचारते ) हुए, ऐसें पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंभीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुभचारित्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण संयुक्त, ऐसें गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनबिंबको वंदना करनी. ॥ २७ ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम भक्तिसें वंदना करे. तथा साधर्मिओंको यथायोग्य प्रणामादि करे. पीछे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक भक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका भारी सन्मान करना. ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अधीतरें जान्या है गंभीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यह चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण जारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीछे तिस जव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

जो जो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तैंने आजसें लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, क्षणजंगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोको वंदना करकेही जोजन करना कल्पे, और अपराह्नमें जी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नही. ॥ ३७ ॥

ऐसें अजिग्रहबंधन करके पीछे वर्द्धमान विद्यासें अजिमंत्रके गुरु सात मुष्टीप्रमाण गंध ( वासक्षेप ) ग्रहण करे. पीछे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर " निथ्थारगपारगो हविज्ज तुमं " ऐसें उच्चारण कर ता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे ( माले ) इस विद्याके प्रजावके जोगसें निश्चय यह जव्य प्रारंजित कार्योंका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघजी, तूं, निस्तारक पारग हो,

पुलक ( रोम ) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविरुरागद्वेषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिभुवनगुरु जिन भगवानकी प्रतिमामे स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसें मैं धन्य हूं ऐसें मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको भावते ( विचारते ) हुए, ऐसें पूर्वोक्त विशेषणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंभीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुभचारित्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण संयुक्त, ऐसें गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनबिंबको वंदना करनी. ॥ ३० ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम भक्तिसें वंदना करे. तथा साधर्मिओंको यथायोग्य प्रणामादि करे. पीछे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक भक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका भारी सन्मान करना. ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अधीतरें जान्या है गंभीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यह चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण नारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीछे तिस नव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

नो नो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तेंने आजसें लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, क्षणनंगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही नोजन करना कल्पे, और अपराह्नमें नी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नही. ॥ ३७ ॥

ऐसें अनिग्रहवंधन करके पीछे वर्द्धमान विद्यासें अनिमंत्रके गुरु सात मुष्टीप्रमाण गंध ( वासक्षेप ) ग्रहण करे. पीछे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर " नित्थारगपारगो हविज्ज तुमं " ऐसें उच्चारण कर ता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे ( माले ) इस विद्याके प्रनावके जोगसें निश्चय यह नव्य प्रारंनित कार्योंका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघनी, तूं, निस्तारक पारग हो,

पुलक ( रोम ) जिसके, श्रद्धासंवेगविवेक परम वैराग्ययुक्त, निविमरागद्वेषमोहमिथ्यात्वमलरूप कलंक रहित, अति उल्लसायमान, निर्मल अध्यवसाय करके, अनुसमय, त्रिभुवनगुरु जिन नगवानकी प्रतिमामे स्थापन किये हैं, नेत्र, और मन जिसने, तथा जिन चंद्रको वंदना करनेसें मैं धन्य हूं ऐसें मानते हुए, अपने मस्तकके ऊपर रचा है करकमलरूप मुकुट जिसने, जंतुरहित स्थानमें पदपदमें निःशंक सूत्रार्थको नावते ( विचारते ) हुए, ऐसें पूर्वोक्त विशेपणवाले उपधानवाहिने, जिननाथके कथन करे गंनीर समयसिद्धांतमें कुशल, शुनचारित्रसंयुक्त, अप्रमादादि बहुविध गुण संयुक्त, ऐसें गुरुके साथ, चतुर्विध संघसंयुक्त, विशेषसें निजबंधु सहित, इस निपुणविधिकरके जिनबिंबको वंदना करनी. ॥ ३० ॥

तदनंतर उपधानवाही, गुणाढ्यसाधुओंको परम नक्तिसें वंदना करे. तथा साधर्मिओंको यथायोग्य प्रणामादि करे. पीछे बहुमोलके उत्कृष्ट वस्त्र प्रदान पूर्वक नक्ति करके उपधानवाहिने, श्रीसंघका नारी सन्मान करना. ॥ ३१ ॥

इस अवसरमें अधीतरें जान्या है गंनीर सिद्धांतका सार जिसने, ऐसे गुरुने, आक्षेपिणी, विक्षेपिणी, संवेदिनी, और निर्वेदिनी, यह चार प्रकारकी

धर्मकथा श्रद्धासंवेग साधनेमें निपुण चारी प्रबंध करके करनी. ॥ ३३ ॥

पीछे तिस भव्यजीवको श्रद्धासंवेगमें तत्पर जाण के, निपुणमति आचार्य, चैत्यवंदनादि करनेमें यह वचन कहे. ॥ ३४ ॥

भो भो देवानुप्रिय ! निज जन्म साफल्यताको प्राप्त करके तेंने आजसें लेके जावजीवपर्यंत तिनों ही कालमें एकाग्र सुस्थिर चित्तकरके अर्हत्प्रतिमा को वंदना करनी. क्योंकि, क्षणभंगुर मनुष्यपणेमें यही सार है, तहां तैंने पुर्वान्हमें जिनप्रतिमाको और साधुयोंको वंदना करकेही भोजन करना कल्पे, और अपराह्नमें भी फिर वंदना कर केही सोना कल्पे, अन्यथा नही. ॥ ३० ॥

ऐसें अभिग्रहबंधन करके पीछे वर्द्धमान विद्यासें अभिमंत्रके गुरु सात मुष्टीप्रमाण गंध ( वासक्षेप ) ग्रहण करे. पीछे तिस उपधानवाहीके मस्तकऊपर "नित्थारगपारगो हविज्ज तुमं" ऐसें उच्चारण कर ता हुआ गुरु, नमस्कारपूर्वक निक्षेप करे ( माले ) इस विद्याके प्रभावके जोगसें निश्चय यह भव्य प्रारंभित कार्योका शीघ्र निस्तार करनेवाला, और पार होनेवाला होवे. ॥ ४१ ॥

अथ चतुर्विध संघभी, तूं, निस्तारक पारग हो,

तूं धन्य है. सलक्षण है, इत्यादि बोलता हुआ, तिसके मस्तकऊपर वासक्षेप करे. ॥ ४२ ॥

पीछे जिनप्रतिमाके पूजादेशसें सुरजिगंधसंयुक्त अम्लान श्वेतमाला ग्रहण करके, गुरु अपने हाथों सें तिस उपधानवाहीके दोनों खंधोंऊपर आरोपण करता हुआ, शुद्ध चित्तकरकेनिसंदेह ऐसा वच न कहे. ॥ ४४ ॥

अछीतरें प्राप्त किया निज जन्म जिसने, तथा संचय करा है अतिजारी पुण्यका समूह जिसने, ऐसें जो जो जव्य ! तेरी नरकगति, और तिर्यग् गति, अवश्यमेव बंद होगई हे सुंदर ! आजसें लेके, तूं, अपयस, नीच गोत्रोंका बंधक नही है. तथा जन्मांतरमें जी, यह पंचनमस्कार तुझको दुर्ल ज नही है. पांच नमस्कारके प्रजावसें जन्मांतरमें जी तुझको प्रधान जाति, कुल, आरोग्य संपदाएं प्राप्त होवेगी. और इसके प्रजावसें मनुष्य कदापि संसारमें दास, प्रेष्य, दुर्जग, नीच. और विकलें द्रिय नही होते हैं. किं बहुना. जोइस विधिसें इस श्रुतज्ञानको पढके श्रुतोक्त विधिसें शुद्ध आचा रमें–क्रिया करे, वे, यदि तिसही जवमें उत्त म निर्वाणको प्राप्त न होवे तो, अनुत्तर ग्रैवेयकादि देवलोकोंमें चिरकाल क्रीडा करके उत्तम कुलमें उत्कृष्ट प्रधान सर्वांगसुंदर प्रकट सर्वकला प्राप्त करी

हैं जिनोंने, ऐसेलोकोंके मनको आनंद देनेवाले होके, देवेंद्रसमान ऋद्धिवाले, दयामें तत्पर, दानविनयसें युक्त, कामजोगोंसें विरक्त, संपूर्ण धर्मके अनुष्ठानसें, शुज ध्यानरूप अग्निसें चार घातिकर्मरूप इंधन कौ दग्ध किये हैं--जिनोंनें, ऐसें महासत्व, निर्मल केवल ज्ञान, सर्व मलकर्मसें रहित, होकर शीघ्र सिद्ध होते हैं. ॥ ५३ ॥ यह निर्मल फल जाणके वहोत मान देने योग्य जो देव, सोही जये सूरि, ऐसें जो जिन तिनके वचनसें यह उपधान महानिशीथ सूत्रसें सिद्ध करो.--इस अंतिम गाथामें प्रकरणकर्त्ता श्रीमान देवसूरिने जगवान्के 'महमाणदेवसूरिस्स' इस विशेषणद्वारा अपना जी नाम, सूचन करा है. ॥ ५४ ॥ इत्युपधानप्रकरणजावार्थः॥

॥ इत्युपधानविधिः ॥

अथ मालारोपण विधि कहते हैं. ॥ तहां पिठलाही नंदि क्रम जाणना. । और इतना विशेष है कि, मालारोपनतपके पूर्ण हुए तत्कालही, वा दिनांतरसें होता है तहां यह विधि है. ॥ मालारोपणसें पहिले दिनमें साधुओंकों अन्न पान वस्त्र पात्र वसति पुस्तक दान देवे, संघको जोजन देवे, वस्त्रादिकसें संघकी पूजा करे, शुज तिथि वार नक्षत्र लग्नमें, दीक्षाके उचित दिनमें, परम युक्तिसें वृहत्स्नात्रविधिसें जिनपूजा करे, माता पिता परिजन साधर्मि

कादिकोंको एकठे करे, पीछे मालाग्राही कृतउचित वेष, कृतधम्मिल, उत्तरासंगवाला, निजवर्णानुसारसें जिनोंपवीत उत्तरीयादिधारी, सज करके प्रचुरगंधादि उपकरण अक्षत नालिकेर हाथमें लेके पूर्ववत् समवसरणको तीन प्रदक्षिणा करे. । पीछे गुरुके समीपे क्षमाश्रमणपूर्वक कहे ॥ " इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं पंचमंगलमहासुअखंध इरिआवहिआ सुअखंध, सक्कथ्थयसुअखंध,चेइअथ्थयसुअखंध,चउवीसथ्थयसुअखंध, सुयथ्थयसुअखंध, अणुजाणावणिअं, वासखेवं करेह " ॥ पीछे गुरु नी अभिमंत्रित वासक्षेप करे. । फिर श्राद्ध क्षमाश्रमणपूर्वक कहे " चेइआइं च वंदावेह " पीछे वर्द्धमानस्तुतियोंसें चैत्यवंदन कराना, शांतिदेवादि स्तुति पूर्ववत्. फिर शक्रस्तव अर्हणादि स्तोत्र कहना. पूर्ववत्. । पीछे उठके "पंच मंगलमहासुअखंध पमिक्कमणसुअखंध भावारिहंतथ्थय ठवणारिहंतथ्थय चउवीसथ्थय नाणथ्थय सिद्धथ्थय अणुजाणावणिअं करेमि काउस्सग्गं अन्नथ्थ उससिएणं–यावत्–अप्पाणं वोसिरामि " कहके चतुर्विंशतिस्तव चिंतन करे, पारके प्रकट चतुर्विंशतिस्तव पढे. । गुरु तीनवार परमेष्ठिमंत्र पढके आसन ऊपर बैठ जावे, संघ और परिजनसहित श्राद्धको भों भो देवाणुपिया, संपाविअ निययजम्मसाफल्लं ॥ तुमए अज्जप्पभिइ, तिक्कालं जावजीवाए ॥ १ ॥

वंदे अवाइं चेइआइं, एगग्गसुथिरचित्तेणं ॥
खणभंगुराओ मणुअ, त्तणाउं इणमेव सारंति ॥ २ ॥
तथ्थ तुमे पुव्वण्हे, पाणंपि न चेव ताव पायव्वं ॥
नो जाव चेइआइं, साहूविअ वंदिआ विहिणा ॥ ३ ॥
मझ्झण्हे पुणरवि, वंदिऊण निअमेण कप्पए भुत्तुं ॥
अवरण्हे पुणरवि, वंदिऊण निअमण सुअणंति॥४॥

इत्यादि महानिशीथमध्यगत वीस गाथामें कही हुई देशना देके, तीन संध्यामे चैत्यवंदन साधुवंदन करनेके अभिग्रह विशेषोंको देवे. पीछे वासमंत्रके सात गंधकी मुष्टी " निथ्थारगपारगो होहि " ऐसें कहता हुआ गुरु, तिसके शिरमें प्रक्षेप करे । पीछे अक्षतसहित वासक्षेपको मंत्रे । तिस समयमें सुर त्रिगंध अम्लान श्वेत पुष्पोंके समूहसें ग्रंथन करी हुई मालाको जिनप्रतिमाके पगोंऊपर स्थापन करे। सूरि खमा होके अभिमंत्रित वासको जिनचरणोंके ऊपर क्षेप करे, पास रहे साधु साध्वी श्रावक श्राविका सबको गंधाक्षत देवे. । श्राद्ध नमस्कारअनुज्ञा केवास्ते तीन प्रदक्षिणा देवे. । तव गुरु " निछारग पारगो होहि गुरुगुणेहिं वुड्ढाहि " ऐसे कहे. और जन (संघ) "पूर्णमनोरथवाला तूं हुआ है, तूं धन्य है, तू पुण्यवान् है ' ऐसें कहते हुए उनके ऊपर गुरुसंघादि वासक्षेप करे। पीछे फिर श्राद्ध समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे। पीछे गुरु और

सम वसरणको तीन प्रदक्षणा देवे, पीछे गुरुसंघसहित समवसरणको तीन प्रदक्षिणा देवे, पीछे नमस्कारादिश्रुतस्कंधअनुज्ञापनार्थ कायोत्सर्ग करे, एकलोगसकाकाउसग करें, पारके प्रगट लोगस्स कहे. पीछे माला धारण करनेवाला तिसके स्वजनोंकेसाथ प्रतिमाके आगे जाके शक्रस्तव पढके "आणुजाणउ मे नयवं अरिहा" ऐसें कहके जिनपादऊपरि पूर्व स्थापित मालाको लेके निजवंधुके हाथमें स्थापन करके नंदिके समिप आय कर, श्राद्ध, मालाको गुरुसे मंत्रित करावे,। पीछे गुरु खमा होकर उपधानविधिका व्याख्यान करे. सो श्राद्ध नी, खमा होके श्रवण करे. "परमपयपुरिपहि" इत्यादि मालाकी गाथा महिमां दर्शकसें गुरु देशना करे.।

तत्तो जिणपडिमाए, पूआदेसाओ सुरनिगंवहं ॥
अमिलाण सिअदामं, गिण्हिअ गुरुणा सहत्थेणं॥१॥
तस्सोनयखंधेसु, आरोवंतेण सुद्धचित्तेण ॥
निसंदेहं गुरुणा,वत्तवं एरिसं वयणं ॥ २ ॥
जो जो सुलद्धनिअजम्म, निचिअअइगरुअपुन्नपब्नार॥
नारयतिरिअगईओ, तुझावस्सं निरुद्धाओ ॥ ३ ॥
नो बंधगोसि सुंदर, तुममित्तो अकयनीअगुत्ताणं ॥
नो डुल्लहो तुह जम्मं, तरेवि एसो नमुक्कारो ॥ ४ ॥
पंचनमुक्कारनावओ अ जम्मंतरेवि किर तुम्ह ॥
जाईकुलरूवग्ग, संपयाओ पहाणाओ ॥ ५ ॥

अन्नं च इमाओ चिअ,न हुंति मणुआ कयावि जीअलोए
दासा पेसा डुन्नगा,नीआ विगलिंदिआ चेव ॥ ६ ॥
किं वहुणा जे इमिणा, विहिणा एअं सुअं अहिज्जित्ता॥
सुअन्नणिअ विहाणेणं, सुद्धे सीले अजिरमिज्जा॥७॥
नो ते जइ तेणंचिअ, नवेण निव्वाणमुत्तमं पत्ता ॥
तोणुत्तर गेविज्जाइएसु सुइरं अन्निरमेउं ॥ ८ ॥
उत्तमकुलम्मि उक्किठ, लठसव्वंगसुंदरापयमा ॥
सव्वकलापत्तठा, जणमणआणंदणा होउं ॥ ए ॥
देविंदोवमरिद्धी, दयावरा दाणविणयसंपन्ना ॥
निव्विणकामनोगा, धम्मं सयलं अणुठेउं ॥ १० ॥
सुहझाणानलनिदड्ढ, घाइकम्मिंधणा महासत्ता ॥
उप्पन्नविमलनाणा, विहुयमला कत्ति सिझंति ॥११॥

यह गाथा तीनवार गुरु कहे । इन गाथायोंका नावार्थ उपधानप्रकरणनावार्थमे लिख दिया है. ॥

पीछे तिसके स्कंधमें मालाप्रक्षेप करनी. ॥ पीछे श्राद्धवर्ग आरात्रिक ( आरती ) गीननृत्यादि वहुत करे. । उपधानवाही श्रावकने तिस दिनमें आचाम्लादि तप करना, यदि पौपधशालामें मालारोपण होवे, तदा संघसहित जिनमंदिरमें जावे, चैत्यवंदना करके फिर पौपधागामें आयकर मंमलीपूजादि करे ॥ इस उपधानविधिको निशीथ, महानिशीथ, सिद्धांतके पढनेवालोंनेश्रुतसामायिकसमान माना है. और निशीथ महानिशथके तिरस्कार

आचार्योंने नहीं अंगीकार करा है. तिनोंने तो प्रतिमोद्वहनविधिकोंही श्रुतसामायिक कथन करा है. ॥ माला भी कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी ( रेशमी ) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्भित, आरोपते हैं. और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं. तिसमें तो, अपनी संपत्तिही प्रमाण है.

॥ इति श्रुतसामायिक विधिः ॥

## ॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता ऊठे, मल मूत्रकी शंका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसें परमेष्टि महामंत्रका जाप करे. पीछे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन करके, अपने घरमें, वा पौषधशालादि में स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे. । पीछे प्रत्युष कालमें अपने घरमें स्नान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, संसारिक सुख, और [illegible] नेवाले, [illegible] पूजा करे. । तिसवास्ते [illegible] धि, [illegible] कथनानुसारें कहते हैं

॥ [illegible] ॥

करी, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासंग धारी, मुखकोश बांधी, एकाग्रचित्त, एकांतमें जिन पूजन, करे. । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गंधादिकोंको निःपापता करे. ॥

॥ जलादिकोकी शुद्धीके मंत्र ॥

"॥ ॐ आपोऽप्कायाः एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥" इति जलाभिमंत्रणम् ॥

"॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥" इतिपत्रपुष्पफलधूपचंदनाद्यभिमंत्रणम् ॥

"॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाःसंतु, निरपाया संतु, सद्गतयः सतु, नमेस्तु संघट्टनहिंसा पापमर्हदर्चने ॥' इति वन्हिदीपाद्यभिमंत्रणम्॥सर्वका अभिमंत्रण वासक्षेपसें तीनवार करना. ॥ पीछे । पुष्पगंधादि हाथमें लेके ॥

"॥ ॐ त्रसरूपोहं, संसारिजीवः, सुवासनः, सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो भूयासं, निःपापो भुयासं, निरुपद्रवो भुयासं, मत्सं श्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा भूयासुः, निःपापा भूयासुः ॥"

करनेवालोंने नही अंगीकार करा है. तिनोंने तो प्रतिमोद्वहनविधिकोंही श्रुतसामांयिक कथन करा है. ॥ माला नी कितनेक कौशेय पट्टसुत्रमयी ( रेशमी ) स्वर्ण, पुष्प, मोति, माणिक्य गर्जित, आरोपते हैं. और कितनेक श्वेत पुष्पमयी आरोपते हैं. तिसमें तो, अपनी संपत्तिही प्रमाण है.

॥ इति श्रुतसामायिक विधिः ॥

## ॥ अथ श्रावक दिन चर्या ॥

दो मुहुर्त्त शेष रात्रि रहे श्रावक सूता ऊठे, मल, मूत्रकी शंका दूर करे, और शुचि होकर पवित्र आसनऊपर स्थित हुआ यथाविधिसें परमेष्टि महा मंत्रका जाप करे. पीछे कुल, धर्म, व्रत, श्रद्धाका, विचार करके, और स्तोत्रपाठसंयुक्त चैत्यवंदन करके, अपने घरमें, वा पौषधशालादि में स्थित होकर, प्रतिक्रमणादि करे. । पीछे प्रत्युष कालमें अपने घरमें स्नान करके, शुचि होके, शुचि वस्त्र पहिरके, संसारिक सुख, और मोक्ष देनेवाले, अरिहंतकी पूजा करे. । तिसवास्ते जिनार्चनविधि, अर्हत्कल्पके कथनानुसारें कहते हैं ॥

## ॥ अर्हत् कल्पोक्त जिनपूजा विधि ॥

श्राद्ध प्राप्तगुरुउपदेश, जिनघरमें, वा वडे मंदिरमें, शिखा बांधी, शुचि वस्त्र पहरि, उत्तरासंग

करी, स्ववर्णानुसार जिनोपवीत उत्तरीय उत्तरासंग धारी, मुखकोश बांधी, एकाग्रचित्त, एकांतमें जिन पूजन, करे. । प्रथम जल, पत्र, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, अग्नि, दीपक, गंधादिकोंको निःपापता करे. ॥

॥ जलादिकोकी शुद्धीके मंत्र ॥

"॥ ॐ आपोऽप्काया एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥" इति जलाभिमंत्रणम् ॥

"॥ ॐ वनस्पतयो, वनस्पतिकाया जीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां, निर्व्यथाः संतु, निरपायाः संतु, सद्गतयः संतु, न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने ॥" इतिपत्रपुष्पफलधूपचंदनाद्यभिमंत्रणम् ॥

"॥ ॐ अग्नयोऽग्निकायाजीवा, एकेंद्रिया, निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाःसंतु, निरपाया संतु, सद्गतयः संतु, नमेस्तु संघट्टनहिंसा पापमर्हदर्चने ॥" इति वन्हिदीपाद्यभिमंत्रणम्॥ सर्वका अभिमंत्रण वासक्षेपसे तीनवार करना ॥ पीछे । पुष्पगंधादि हाथमें लेके ॥

"॥ ॐ त्रसरूपोहं, संसारिजीवः, सुवासनः, सुमेध एकचित्तो, निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथो भूयासं, निःपापो भुयासं, निरुपद्रवो भुयासं, मत्सं श्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा भूयासुः, निःपापाभूयासुः ॥"

ऐसें कहके अपने आपको तिलक करना, पुष्पादिकरके अपना शिर अर्चन करना. ॥ फिर पुष्प अक्षतादि हाथमें लेके ॥

" ॐ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसकाया एकद्वित्रिचतुः पंचेंद्रियास्तिर्यङ्मनुष्यनारकदेवगतिगताश्चतुर्दशरज्वात्मकलोकाकाशनिवासिनः इह जिनार्चने,कृतानुमोदनाः संतु, निःपापाः संतु,निरपायाः संतु, सुखिनः संतु प्राप्तकामाः संतु, मुक्ताः संतु, बोधमाप्नुवंतुः ॥ "

ऐसें पढके दशोंदिशाओंमें गंध, जल, अक्षतादि क्षेप करना. पीछे ।

शिवमस्तु सर्वजगतः,परहितनिरता भवंतु भूतगणाः॥
दोषा प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभवंतु लोकाः ॥ १ ॥
सर्वेपि संतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः ॥
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत् ॥२॥

यह आर्या और अनुष्टुप् छंद पढने. ॥ पीछे ॥

" ॐ भूतधात्री पवित्रास्तु अधिवासितास्तु सुप्रोषितास्तु ॥ " ऐसें पढके प्रथम लीपी हुई भूमिमें जलसें सेचन करे ॥ पीछें ॥

" ॐ स्थिराय शाश्वताय निश्चलाय पीठाय नमः॥ "

ऐसें पढके धोयके चंदनसें लेपन करके कसें अंकित ऐसा पूजापट्ट ( ९ करे, और चैत्यमें तो स्थिरबिंब

मंत्रोंसें भूमिजलपट्टादि अधिवासन करने. पीछे. ॥

"॥ ॐ अत्र क्षेत्रे, अत्र काले, नामार्हतो, रूपार्हतो, द्रव्यार्हतो, भावार्हतः समागताः, सुस्थिताः, सुनिष्ठिताः, सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥"

ऐसें पढके अर्हत् प्रतिमाको स्थापन करे निश्चलबिंबके हुए, चरण अधिवासन करे. ॥ पीछे अंजलि में पुष्प लेके ॥

"॥ ॐ नमोर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यस्तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यो बुद्धेभ्यो बोधकेभ्यः सर्वजंतुहितेभ्यः इह कल्पन बिंबे भगवंतोर्हंतः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥"

ऐसे मौन करके कहके भगवत्के चरणोपरि पुष्प स्थापन करे. । फिर भी जलार्द्र फूलोसें पूजापूर्वक कहे. ॥ यथा ॥

"॥ स्वागतमस्तु सुस्थितमस्तु सुप्रतिष्ठास्तु ॥"
पीछे फिर पुष्पाभिषेक करके ॥

"॥ अर्घ्यमस्तु, पाद्यमस्तु आचमनीय मस्तु, सर्वोपचारे पूजास्तु ॥" इन वचनोंकरके वारंवार जिनप्रतिमाके ऊपर जलार्द्र पुष्पारोपण करे ॥ पीछे जल लेके ।

ॐ अर्हं वं । जीवनं तर्पणं हृद्यं, प्राणदं मलनाशनं ॥
जलं जिनार्चनेत्रैव, जायतां सुखहेतवे ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जलसे प्रतिमाको अभिषेक करे.

पीछे चंदन कुंकुम कर्पूर कस्तूरी आदि सुगंध हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हँ लं । इदं गंधं महामोदं, बृंहणं प्रीणनं सदा ॥ जिनार्चने च सत्कर्म्म, संसिद्ध्यै जायतां मम ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके विविध गंध जिनप्रतिमाको विलेपन करे. ॥ पीछे पुष्पपत्रादि हाथमें लेके ॥

ॐ अर्हँ हं । नानावर्णं महामोदं, सर्वत्रिदशवल्लभं जिनार्चनेत्र संसिद्ध्यै, पुष्पं भवतु मे सदा ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर सुगंधमय विविध वर्णके पुष्प चढावे. ॥

ॐ अर्हँ तं । प्रीणनं निर्मलं वल्यं, मांगल्यं सर्वसिद्धिदं॥ जीवनं कार्यसंसिद्ध्यै, भूयान्मे जिनपूजने ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनप्रतिमाके ऊपर अक्षत आरोपण करे. ॥ सुपारी प्रमुख फल हाथमें लेके

जायफलं स्वर्गफलं, पुण्यमोक्षफलं फलं ॥ दद्याज्जिनार्चनेत्रैव, जिनपादाग्रसंस्थितम् ॥ १ ॥

यह मंत्र पढके जिनपादाग्रे फल ढोवे. ॥ पीछे धूप लेके ॥

ॐ अर्हँ रं । श्रीखंडागरुकस्तूरी, द्रुमनिर्याससंभवः ॥ प्रीणनः सर्व देवानां, धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥

यह पढके अग्निमे धूपक्षेप करे ॥ पीछे फूल लेके।

“ ॥ ॐ अर्हँ भगवद्भ्योर्हद्भ्यो जलगंधपुष्पाक्षत फलधूपदीपैः संप्रदानमस्तु ॐ पुण्याहं प्रीयंतां भग

वंतोर्हंतस्त्रिलोकस्थिताः नामाकृतिद्रव्यभावयुताःस्वाहा ॥ " यह पढके फिर जिनपूजन करे. ॥ पीछे वासक्षेप लेके ॥

" ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुकेतुमुखाग्रहाः इह जिनपादाग्रे समायांतु पूजां प्रतीछंतु ॥ " ऐसें पढके जिनपादसें नीचे स्थापित ग्रहोंके ऊपर, वा स्नानपट्टके ऊपर वासक्षेप करे. ॥ पीछे ॥

" ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥ " ऐसें पढके क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें ग्रहोंका पूजन करे. ॥ पीछे अंजलिमें फूल लेके ।

" ॥ ॐ सूर्यसोमांगारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुकेतुमुखाग्रहाः सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतुं, तुष्टिदा संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ " ऐसें कहके ग्रहोंके ऊपर पुष्पारोपण करे. ॥ फिर इसी रीतिकरके ।

" ॥ ॐ इंद्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुवेरेशाननागब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः इह जिनपादाग्रे समागछंतु पूजा प्रतिछंतु ॥ " ऐसें कहके पूजापट्टो परि लोकपालोंको वासक्षेप करे. ॥ पीछे ॥

" ॥ आचामनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धुपोस्तु दीपोस्तु ॥ " ऐसें पढके

क्रमसें जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, धूप, दीपसें लोकपालोंका पूजन करे. ॥ पीछे अंजलिमें पुष्प लेके।

"॥ ॐ इंद्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुकुबेरेशाननाग ब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपालाः सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥" यह पढके लोकपालोपरि पुष्पारोहण करे. ॥ पीछे पुष्पांजलि लेके ॥

"॥ अस्मत्पूर्वजा गोत्रसंभवा देवगतिगताः सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥" ऐसें कहके जिनपादाग्रे पुष्पांजलिक्षेप करे. ॥ पीछे फिर भी पुष्पांजलि लेके ॥

"॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्ताष्टनवत्युत्तरशतदेवजातयः सदेव्यःपूजां प्रतिच्छंतु सुपूजिताः संतु, सानुग्रहाः संतु तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥" ऐसें कहके जिनपादाग्रे अंजलिक्षेप करे. ॥

पीछे अंजलिके अग्रभागमें पुष्प धारण करके अर्हन्मंत्र स्मरण करके तिस फूलसें जिनप्रतिमाको पूजे ॥ अर्हन्मंत्रो यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं नमो अरहंताणं, ॐ अर्हं नमो सयंसंबुद्धाणं, ॐ अर्हं "

यह त्रिपद मंत्र श्रीमत् अर्हन् जगवंतोंके आगे नित्य स्मरण करे कैसा है मंत्र ? देवलोकादि सुख और मोक्षका, देनेवाला, सर्व पापोंका नाश करने वाला है.। विशेष इतना है कि, यह मंत्र अपवित्र पुरुषोंने, उपयोगरहित पुरुषोंने, नही स्मरण करना. तथा उच्चशब्दसें नही स्मरण करना, नास्तिकोंको और मिथ्यादृष्टियोंको नही सुनाना.। यह पूर्वोक्त अर्हन्मंत्र एकसौआठ ( १०७ ) वार, वा तदर्द्ध ५४ वार जपना ॥ पीछे दो पात्रोंमे नैवेद्य धरे. पीछे एक पात्रमें जल लेके।

'ॐ अर्हं । नानापड्रससंपूर्णं, नैवेद्यं सर्वमुत्तमं।
जिनाग्रे ढौकितं सर्वं, संपदे मम जायतां ॥ १ ॥

यह पढके जलढोकना ॥ फिर दूसरा जल लेके।

"॥ ॐ सर्वेगणेशक्षेत्रपालाद्याः सर्वेग्रहाः सर्वे दिक्पालाः सर्वेऽस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः सर्वे अष्टनवत्युत्तरशतं देवजातयः सदेऽयोऽर्हद्भक्ताः अनेन नैवेद्येन संतर्पिताः संतु, सानुग्रहाः संतु, तुष्टिदाः संतु, पुष्टिदाः संतु, मांगल्यदाः संतु, महोत्सवदाः संतु ॥ "
ऐसें कहके दूसरे नैवद्यके पास जल ढोकन करे. ॥

यो जन्मकाले पुरुषोत्तमस्य, सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च ॥
देवैःप्रदत्त कुसुमांजलिस्स,ददातुसर्वाणिसमीहितानि
राज्याभिषेकसमये त्रिदशाधिपेन ।
छत्रध्वजांक तलयोः पदयोर्जिनस्य ॥

क्षितोतिभक्तिभरतः कुसुमांजलिर्यः ।
स प्रीणयत्वनुदिनं सुधियां मनांसि ॥ २ ॥
देवेंद्रैः कृतकेवले जिनपतौ सानंदभक्त्यागतैः ।
संदेहव्यपरोपणक्षमशुभव्याख्यानबुद्ध्याशयैः ॥
आमोदान्वितपारिजातकुसुमैर्यः स्वामिपादाग्रतो ।
मुक्तस्स प्रतनोतु चिन्मयहृदां भद्राणि पुष्पांजलिः॥३॥

इन तीनों वृत्तोंकरके तीन वार पुष्पांजलिक्षेप करे.॥

लावण्यपुण्यांगभृतोर्हतोय,स्तद्दृष्टिभावं सहसैव धत्ते।
सविश्वभर्तुर्लवणावतारो, गर्भावतारं सुधियां विहंतु॥१॥
लावण्यैकनिधेर्विश्व, भर्तुस्तद्वृद्धिहेतुकृत् ॥
लवणोत्तारणं कुर्या, द्भवसागरतारणम् ॥ २ ॥

इन दो वृत्तोंकरके दो वार लवण उत्तारना. ॥

साक्षारतां सदासक्तां, निहंतुमिव सोद्यमः ॥
लवणाब्धिर्लवणांबु, मिषात्ते सेवते पदौ ॥१॥

यह पढके लवणमिश्र जल उत्तारना. ॥

भुवनजनपवित्रिताप्रमोदप्रणयनजीवनकारणं गरी यः ॥ जलमविकलमस्तु तीर्थनाथक्रमसंस्पर्शिसुखावहं जनानाम् ॥ १ ॥

यह पढके केवल जलक्षेप करे. ॥

सप्तभीतिविघातार्हं सप्तव्यसननाशकृत् ॥
यत् सप्तनरकद्वारसप्तारिरितुलां गतम् ॥ १ ॥
सप्तांगराज्यफलदानकृतप्रमोदं ।
सत्सप्ततत्त्वविदनंतकृतप्रबोधम् ॥

तछक्रहस्तधृतसंगतसप्तदीप, ।
मारात्रिकं जवतु सप्तमसद्गुणाय ॥ २ ॥

यह पढके आरात्रिकावतारण करे. ॥

विश्वत्रयजवैर्जीवैः, सदेवासुरमानवैः ॥
चिन्मंगलं श्रीजिनेंद्रात्, प्रार्थनीयं दिने दिने ॥ १ ॥

यन्मंगलं जगवतः प्रथमार्हतः श्री,
संयोजनैः प्रतिबजूव विवाहकाले ॥
सर्वासुरासुरवधूमुखगीयमानं ।
सर्वर्षिजिश्च सुमनोजिरुदीर्यमाणम् ॥ २ ॥
दास्यंगतेषु सकलेषु सुरासुरेषु ।
राज्येर्हतः प्रथमसृष्टिकृतो यदासीत् ॥
सन्मंगलं मिथुनपाणिगतीर्थवारि ।
पादाजिषेक विधिनात्युपचीयमानम् ॥ ३ ॥

यद्विश्वाधिपतेः समस्ततनुजृत्संसारनिस्तारणे ।
तीर्थे पुष्टिमुपेयुषि प्रतिदिनं वृध्धिं गतं मंगलम् ॥
तत् संप्रत्युपनीतपूजनविधौ विश्वात्मनामर्हतां ।
जूयान्मंगलमक्षयं च जगते स्वस्त्यस्तु सघाय च ॥४॥

इन चारों वृत्तोंकरके मंगल प्रदीप करे । पीछे शक्रस्तव पढे ॥ इति कल्पोक्त जिनपूजन विधि.

## ॥ अथ स्नात्र विधि ॥

अथ अतिशय अर्हद्भक्तिवाला श्रावक, नित्य, वा पर्वदिनमें, वा कीसी कार्यांतरमें, जिनस्नात्र करनेकी इछा करे, तिसका विधि यह है ।

न दुःखमतिमात्रकं न विपदां परिस्फूर्जितं ।
न चापि यशसां क्षितिर्न विषमा नृणां दुस्थता ॥
न चापि गुणहीनता न परमप्रमोद क्षयो ।
जिनार्चनकृतां भवे भवति चैव निःसंशयम् ॥ १ ॥
एतत्कृत्यं परममसमानंदसंपन्निदानं ।
पातालौकः सुरनरहितं साधुभिः प्रार्थनीयम् ॥
सर्वारिंभापचयकरणं श्रेयकां सं निधानं ।
साध्यं सर्वैर्विमलमनसा पूजनं विश्वभर्तुः ॥ २ ॥

यह पढके फिर पुष्पांजलिक्षेप करे. । पीछे धूप हाथमें लेके पढे. ।

कर्प्पूरागरुसिल्हचंदनवलामांसीशशैलेयक ।
श्रीवासद्रुमधूपरालघुसृणैरत्यंतमामोदितः ॥
व्योमस्थप्रसरच्छशांककिरणज्योतिःप्रतिछादको ।
धूपोत् क्षेपकृतो जगत्रयगुरोस्सौभाग्यमुत्तंसतु ॥ १ ॥
सिद्धाचार्यप्रभृतीन्, पंच गुरून् सर्वदेवगणमधिकम् ॥
क्षेत्रे काले धूपः प्रीणयतु जिनार्चने रचितः ॥ २ ॥

यह पढके धूपोत्क्षेप करे. । शक्रस्तव पढे. ॥ पीछे फिर पुष्पांजलि लेके ॥

जन्मन्यनंतसुखदे भुवनेश्वरस्य ।
सुत्रामभिः कनकशैलशिरःशिलायाम् ॥
स्नात्रं व्यधायि विविधां[illegible] । [illegible] ।
कासारपल्वलसरित्स[illegible]

तां बुद्धिमाधाय हृदीदृकाले, स्नात्रं जिनेंद्रप्रतिमागणस्य ॥ कुर्वंति लोकाः शुभभावभाजो, महाजनो येन गतः स पंथाः ॥ २ ॥ यह पढके पुष्पांजलिक्षेप करे ॥ २ ॥

परिमलगुणसारसद्गुणाढ्या, बहुसंसक्तपरिस्फुरद्द्विरेफा ॥ बहुविधबहुवर्णपुष्पमाला, वपुषि जिनस्य भवत्वमोघयोगा ॥ १ ॥

यहवृत्त पढके पगोंसें लेके मस्तकपर्यंत जिनप्रतिमाको पुष्पारोपण करे। पीछे 'कर्पूरसिद्धाधि॰' इसकरके धूपोत्क्षेप करे. । पीछे शक्रस्तव पढे. । पीछे फिर पुष्पांजलि हाथमें लेके ।

साम्राज्यस्य पदोन्मुखे भगवति स्वर्गाधिपैर्गुंफितो । मंत्रित्वं बलनायतामधिकृतिं स्वर्णस्य कोशस्य च ॥ बिभ्रद्भिः कुसुमांजलिर्विनिहितो भक्त्या प्रभोः पादयोर्दुःखौघस्य जलांजलिं सतनुतादालोकनादेव हि॥१॥ चेतः समाधातुमनिंद्रियार्थं, पुण्यं विधातुं गणनाव्यतीतम् ॥ निक्षिप्यतेर्हत्प्रतिमापदाग्रे, पुष्पांजलिः प्रोफतद्भक्तिभावैः ॥ २ ॥

यह पढके पुष्पांजलिक्षेप करे. । सर्व पुष्पांजलियोंके अंतमें धूपोत्क्षेप, और शक्रस्तवपाठ अवश्य करना. ॥ तदनंतर पुष्पादिकरके प्रतिमा पूजे. । पीछे मणि, स्वर्ण, ताम्र, मिश्रधातु. माटीमय, कलशे स्नात्रकी चौकीऊपरि स्थापन करना. तिनमें गंगो

दकमिश्रित सर्व जलाशयोंके पानी स्थापन करे. चंदन केसर कर्पूरादि सुगंधी द्रव्य करके वासित करे. चंदनादि और पुष्पमालासें, कलशोंको पूजे. जल पुष्पादिअभिमंत्रणकेमंत्र पूर्वे कहे हैं सो जानने.। पीछे एक श्रावक, अथवा बहुत श्रावक, पूर्वोक्त वेष शौचवाले गंधसें हस्तको लेपन करके, मालाभूषित कंठवाले तिन कलशोंको हाथऊपरि रखे पीछे स्वस्वबुद्धिअनुसारसें जिनजन्माभिषेकचिन्हित स्तोत्रोंको जिनस्तुतिगर्भित षट्पदादि ( छप्पयआदि ) को पढे । पीछे शार्दूलवृत्त पढे ।

जाते जन्मनि सर्वविष्टपपतेरिंद्रादयो निर्जरा ।
नीत्वा तं करसंपुटेन बहुभिः सार्द्ध विशिष्टोत्सवैः ॥
शृंगे मेरुमहीधरस्य मिलिते सानंददेवीगणे ।
स्नात्रारंभमुपानयंति बहुधा कुंभांबुगंधादिकम् ॥ १ ॥
योजनमुखान् रजतनिष्कमयान् मिश्रधातुमृद्भचितान्
दधते कलशान् संख्या तेषां युगपद्रखदंतिमिता ॥ २ ॥
वापीकूपह्रदांबुधितडागपल्वलनदनिर्झरादिभ्यः ॥
आनीतैर्विमलजलैः स्नानाधिकं पूरयंति च ते ॥ ३ ॥
कस्तूरीघनसारकुंकुमसुराश्रीखंडकंकोल्लकै ।
ह्रीवेरादिसुगंधवस्तुभिरलंकुर्वंति तत्संवरम् ॥
देवेंद्रा वरपारिजातबकुलश्रीपुष्पजातीजपा ।
मालाभिः कलशाननानि दधते संप्राप्तहारस्रजः ॥ ४ ॥
ईशानाधिपतेर्निजांककुहरे संस्थापितं स्वामिनं ।

सौधर्माधिपतिर्म्मिताकृतचतुःप्रांशुंदृश्रृंगोज्जतैः ॥
धारावारिजैरःशशांकविमलैः सिंचत्यनन्याशयः ।
शेषाश्चैव सुराप्सरस्समुदयाः कुर्वंतिकौतूहलम् ॥ ५ ॥

वीणांमृदंगतिमिलाड्कटाऊनूर ।
ढक्कहुडुक्कपणवस्फुटकाहलाञिः ॥
सद्वेणुझर्झरकडुडुञिपुषुणीञि-
र्वाद्यैः सृजंति सकलाप्सरसो विनोदनू ॥ ६ ॥

शेषाः सुरेश्वरास्तत्र, गृहीत्वा करसंपुटे ॥
कलशांस्त्रिजगन्नाथं, स्नपयंति महामुदः ॥ ७ ॥

तस्मिंस्तादृशउत्सवे वयमपि स्वर्लोकसंवासिनो ।
ञ्रांता जन्मविवर्त्तनेन विहितश्रीतीर्थसेवाधियः ॥
जातास्तेन विशुद्धबोधमधुना संप्राप्य तत्पूजनं ।
स्मृत्वैतत्करवाम विष्टपविञोः स्नात्रं मुदामास्पदम्॥८॥

वालत्तणम्मि सामिश्र, सुमेरुसिहरम्मि कणयकलसेहिं ॥ तियसासुरेहि एहविश्रो, ते धन्ना जेहिं दिठोसि ॥ ए ॥

यह पढके कलशोंकरके जिनप्रतिमाको अञिषेक करे । पीठे वडे ठोटेके क्रमकरके सर्व पुरुष स्त्रि ञी गंधोदकोंसें स्नात्र करे. । पीठे अञिषेकके अंतमें गंधोदकपूर्ण कलश लेके वसंततिलकावृत्त पढे. ।

संघे चतुर्विध इह प्रतिञासमाने, श्रीतीर्थपूजनकृत प्रतिञासमाने ॥ गंधोदकैः पुनरपि प्रञवत्वजस्रं, स्नात्रं जगत्रयगुरोरतिपूतधारैः ॥ १ ॥

यह पढके जिनपादोपरि कलशाभिषेक करके स्नात्रनिवृत्ति करे पीछे पुष्पांजलि लेके पढे ।

इंद्राग्ने यम निर्रुते जलेश वायो
वित्तेशेश्वर भुजगा विरंचिनाथ ॥
संघट्टाधिकतमभक्तिभारभाजः
स्नात्रोस्मिन् भुवनविभोः श्रीयं कुरुध्वम् ॥ १ ॥

यह पढके स्नात्रपीठके पास रहे कल्पित दिक् पालपीठऊपरि, पुष्पांजलिक्षेप करे. । पीछे प्रत्येक दिशामें यथाक्रमकरके दिकपालोंको स्थापन करे. ।

पीछे एकैक दिक्पालका पूजन करे ।
सुराधीश श्रीमन् सुदृढतरसम्यक्त्ववसते ।
शचीकांतोपातस्थितविबुधकोट्यानतपद ॥
ज्वलद्भज्राघातक्षपितदनुजाधीशकटक ।
प्रभोः स्नात्रे विघ्नं हर हर हरे पुण्यजयिनाम् ॥ १ ॥

"ॐ शक्र इह जिनस्नात्रमहोत्सवे आगछ २ । इदं जलं गृहाण २ । गधं गृहाण २ । पुष्पं गृहाण २। धूपं गृहाण २ । दिपं गृहण २ । नैवेद्यं गृहाण २ । विघ्नं हर २ । दुरितं हर २ । शांतिं कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । ऋद्धिं कुरु २ । वृद्धिं कुरु २ । स्वाहा ॥" इति पुष्पगंधादिभिरिंद्रपूजनम् ॥ १ ॥

वहिरंतरनंततेजसा विदधत्कारणकार्यसंगतिः ॥
जिनपूजनआशुशुक्षणे, कुरु विघ्नप्रतिघातमंजसा॥१॥

"॥ ॐ अग्ने इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इत्यग्निपूजनम् ॥ २ ॥

दीक्षांजनप्रजनतनो तनुसंनिकर्षे ।
वाहारिवाहनसमुकुरदंरूपाणे ॥
सर्वत्र तुल्यकरणीयकरस्थधर्मे ॥
कीनाश नाशय विपद्विसरं क्षणेत्र ॥ १ ॥

"ॐ यम इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति यमपूजनम् ॥ ३ ॥

राक्षसगणपरिवेष्टितचेष्टितमात्रप्रकाशहृतशत्रो ॥
स्नात्रोत्सवेत्र निर्ऋते, नाशय सर्वाणि डुःखनि ॥ १ ॥

"॥ ॐ निर्ऋते इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति नैर्ऋतपूजनम् ॥ ४ ॥

कल्लोलानीतलीलाधिककिरणगणस्फीतरत्नप्रपंच ।
प्रोद्भूतौर्वाग्निशोचं वरमकरमहापृष्टदेशोक्कमानम् ॥
चचच्चीरिल्लिशृंगिप्रभृतिजपगणैरंचितं वारुणं नो ।
वर्ष्मछिंद्यादपायं त्रिजगदधिपतेः स्नात्रसत्रे पवित्रे॥१॥

"॥ ॐ वरुण इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति वरुणपूजनम् ॥ ५ ॥

ध्वजपटकृतकीर्त्तिस्फूर्त्तिदीप्यद्विमान ।
प्रसृमरबहुवेगत्यक्तसर्वोपमान ॥
इह जिनपतिपूजासंनिधौ मातरिश्व—
न्नपनयसमुदाय मध्यबाह्यातपानाम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ वायो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति वायुपूजनम् ॥ ६ ॥

कैलासवास विलसत्कमलाविलास ।
संशुभ्रहासकृतदौस्थ्यकथानिरास ॥
श्रीमत्कुबेरजगत्स्नपनेत्र सर्वं ।
विघ्नं विनाशय शुभाशय शीघ्रमेव ॥ १ ॥

"॥ ॐ कुबेर इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति कुबेरपूजनम् ॥ ७ ॥

गंगातरंगपरिखेलनकीर्णवारि, प्रोद्यत्कपर्दपरिमंफित पार्श्वदेशम् ॥ नित्यं जिनस्नपनहृष्टहृदः स्मरारे, विघ्नं निहंतु सकलस्यजगत्त्रयस्य ॥ १ ॥

"ॐ ईशान इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इतीशानपूजनम् ॥ ८ ॥

फणमणिमहसा विभासमानाः । कृतयमुनाजलसंश्रयोपमानाः ॥ फणिन इह जिनाभिषेककाले । बलिभवनादमृतंसमानयंतु ॥ १ ॥

"ॐ नागा इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति नागपूजनम् ॥ ९ ॥

विशदपुस्तकशस्तकरद्वयः। प्रथितवेदतया प्रमदप्रदः॥ भगवतः स्नपनावसरे चिरं । हरतु विघ्नभरं द्रुहिणो विभुः ॥ १ ॥

"॥ ॐ ब्रह्मन् इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति ब्रह्मणः पूजनम् ॥ १० ॥

ऐसें क्रमसें दिकपालपूजन करे। पीछे फिर भी हाथमें पुष्पांजलि लेकर आर्या पढे ॥

दिनकरहिमकरभूसुत, शशिसुतबृहतीशकाव्यरवित नयाः ॥ राहो केतो क्षेत्रप, जिनार्चने भवत सन्निहिताः ॥ १ ॥

यह पढके ग्रहपीठोपरि पुष्पांजलिक्षेप करे। पीछे पूर्वादिक्रमसें सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चंद्र, बुध, बृहस्पति, इनको स्थापन करे. हेठ केतु को, और उपर क्षेत्रपालकों स्थापन करे. पीछे प्रत्येक ग्रहकका पूजन करे।

विश्वप्रकाशकलभव्यशुभावकाश।
ध्वांतप्रतानपरिपातनसद्धिकाश ॥
आदित्य नित्यमिह तीर्थकराभिषेके।
कल्याणपल्लवनमाकलय प्रयत्नात् ॥ १ ॥

"॥ ॐ सूर्य इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति सूर्य पूजनम् ॥ १ ॥

स्फटिकधवलशुक्लध्यानविध्वस्तपाप।
प्रमुदितदितिपुत्रोपास्यपादारविंद ॥
त्रिभुवनजनशश्वज्जंतुजीवातुविद्य।
प्रथय भगवतोर्चां शुक्र हे वीतविघ्नाम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ शुक्र इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति शुक्र पूजनम् ॥ २ ॥

प्रबलबलमिलितबहुकुशल, लालनाललितकलित

विघ्नहृते । जौमजिनस्नपनेऽस्मिन् विघटय विघ्नागमं सर्वम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ मंगल इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति मंगलपूजनम् ॥ ३ ॥

अस्तांहः सिंहसंयुक्त, रथ विक्रममंदिर ॥
सिंहिकासुत पूजाया, मत्र संनिहितो जव ॥ १ ॥

"ॐ राहो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति राहुपूजनम् ॥ ४ ॥

फलिनीदल लीलयांतः, स्थगितसमस्तवरिष्ठविघ्नजात । रवितनय प्रबोधमेतात् जिनपूजाकरणैकसावधानान् ॥ १ ॥

"ॐ शने इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति शनिपूजनम् ॥ ५ ॥

अमृतवृष्टिविनाशितसर्वदो, पचितविघ्नविषः शशलांछनः ॥ वितनुतात्तनुतामिह देहिनां, प्रसृततापजरस्य जिनार्च्चने ॥ १ ॥

"॥ ॐ चंद्र इह० शेषं पूर्ववत् ॥" चंद्रपूजनम् ॥ ६ ॥

बुधविबुधगणार्च्चितांघ्रियुग्म, प्रमथितदैत्य विनीतदुष्टशास्त्र ॥ जिनचरणसमीपगोधुनात्वं, रचय मतिं जवधातनप्रकृष्टाम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ बुध इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति बुधपूजनम् ॥ ७ ॥

सुरपतिहृदयावतीर्णमंत्रप्रचुर, कलाविकलप्रकाश भास्वन् ॥ जिनपतिचरणाभिषेककाले, कुरु बृहती वर विघ्नविप्रणाशम् ॥ १ ॥

"॥ ॐ गुरो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति गुरु पूजनम् ॥ ८ ॥

निजनिजोदययोगजगत्त्रयी, कुशलविस्तरकारणतां गतः ॥ भवतुकेतुरनश्वरसंपदां, सततहेतुरवारितविक्रमः ॥ १ ॥

"॥ ॐ केतो इह० शेषं पूर्ववत् ॥" इति केतु पूजनम् ॥ ९ ॥

कृष्णसितकपिलवर्ण, प्रकीर्णकोपासितांघ्रियुग्मसदा ॥ श्रीक्षेत्रपाल पालय, भविकजनं विघ्नहरणेन॥१॥

"॥ ॐ क्षेत्रपाल इह० शेषं पूर्ववत् ॥' इति क्षेत्रपालपूजनम् ॥ १० ॥

पीछे गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसें पूर्व कहे मंत्रोसेंही जिनप्रतिमाकी पूजा करे. पीछे हाथमें वस्त्र लेके वसंततिलकावृत्तपाठ पढे. ।

त्यक्त्वाखिलार्थवनितादिकभूरिराज्यं
निःसंगतामुपगतो जगतामधीशः ॥
भिक्षुर्भवन्नपि स वर्ष्मणि देवदूष्य-
मेकं दधाति वचनेन सुरेश्वराणाम् ॥ १ ॥

यह पढके वस्त्र चढावे. इति वस्त्रपूजा ॥

पीछे नानाविध खाद्य, पेय, भक्ष्य, लेह्यसंयुक्त

नैवेद्य. दो स्थानमें करके तिनमेंसें एक पात्र जिनके आगे स्थापके, श्लोक पढे. ।

सर्वप्रधानसद्भूतं, देहिदेहिसुपुष्टिदम् ॥
अन्नं जिनाग्रे रचितं, दुःखं हरतु नः सदा ॥ १ ॥

यह पढके जलचुलुककरके जिनप्रतिमाको नैवेद्य देवे. पीछे दूसरे पात्रमें चुलुककरकेही, ग्रहदिक्पालादिकोंको श्लोक पढके नैवेद्य देवे. ।

नोनो सर्वे ग्रहालोक, पालाः सम्यग्दृशः सुराः ॥
नैवैद्यमेतद्गृह्णन्तु, नवंतो नयहारिणः ॥ १ ॥

स्नात्र करायाविना नी पूजामें जिनप्रतिमाको इसही मंत्रकरके नैवेद्य देना. ॥ पीछे आरात्रिक मंगलदीपक पूर्ववत् । और शक्रस्तव नी पढना. ॥ जिस प्रतिमाका स्थानस्थितहीका स्नपन कराया जावे, तिसके वास्ते सर्वकुछ तहांही करना. ॥

श्रीखंडकर्पूरकूरंगनानि, प्रियंगुमांसीनखकाकतुंडैः ॥ जगत्रयस्याधिपतेः सपर्या, विधौ विदध्यात्कुशलानि धूपः ॥ १ ॥

इस वृत्तकरके सर्वपुष्पांजलियोंके विचाले धूपोत्क्षेप करना, और शक्रस्तवपाठ पढना. ॥

प्रतिमा विसर्जनं यथा ॥

"॥ ॐ अर्हं नमो नगवतेर्हते समये पुनःपूजां प्रतीछ स्वाहा ॥" इति पुष्पन्यासेन प्रतिमाविसर्जनं ॥

"॥ ॐ फ्रः इंद्रादयोलोकपाला. सूर्यादयो ग्रहा

सदोत्रपालाः सर्वदेवाः सर्वदेव्यः पुनरागमनाय स्वा हा ॥" इति पुष्पादिनिर्दिक्पाल ग्रहविसर्जनम् ॥
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम् ॥
तत्सर्वं कृपया देवाः, क्षमंतु परमेश्वराः ॥ १ ॥
आव्हाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ॥
पूजां चैव न जानामि त्वमेव शरणंमम ॥ २ ॥
कीर्त्तिः श्रियो राज्यपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किंचन देव देव ॥ मत्प्रार्थनीयं जगवत्प्रदेयं त्वदासतां मां नय सर्वदापि ॥ ३ ॥

इति सर्वकरणीयांते जिनप्रतिमादेवादिविसर्जनविधि

अर्हत् अर्चनविधिमें जी ऐसेंही विसर्जन जानना. ॥ इति लघुस्नात्रविधिः ॥

पीठे (गृहचैत्यपूजानंतर) वडे देवमंदिरमें जाकर, शक्रस्तवादिस्तोत्रोंकरके जिनराजकी स्तवना करके, और जिनराजका पूजन करके, प्रत्याख्यान चिंतवन करे.। पीठे चैत्यको प्रदक्षिणा करके, पौषधशाला (उपाश्रय) में जाकर, देवकीतरें वडे आनंदसें साधुउंको वंदन करे. सुंदरबुद्धिवाला होकर, पूजा सत्कार करे। पीठे एकाग्रचित्त होकर साधुके मुखसें धर्मदेशना श्रवण करे पीठे मनमे धारा हुआ प्रत्याख्यान करे. पीठे गुरुको नमस्कार करके कर्मादानको अच्छीतरें त्यागके, धन उपार्जन करे. यथा योग्य स्थानमें व्यापार समाचरे. कुत्सित बुरा कर्म

प्राणोंके नाश हुए न्नी न करे. । पीछे अपने घरदेह रामें अर्हत्की मध्यान्हपूजा करके, अन्नपानी समा चरे. न्नक्तिसें साधुओंको दान देके, अतिथीयोंकी पूजा आदरसत्कार करके, और दीन अनाथ मार्ग एगएको संतोषके, अपने व्रतऔर कुलके उचित न्नोज्य वस्तुका न्नोजन करे. ॥ साधुको आमंत्रण ऐसें करे. ॥ क्षमाश्रमण पूर्वक गृहस्थ कहे ।

" ॥ हे न्नगवन् फासुएणं एसणिज्जेणं असण पाणखाइमसाइमेणं वथ्थकंबलपायपुछणपडिग्गहेणं ओसहन्नेसज्जेणं पाडिहेररूवेणं सिज्जासंथारएणं नयवं मम गेहे अणुग्गहो कायवो ॥ "

न्नोजनानंतर गुरुके पास शास्त्रका विचार करे, पढे, सुने । पीछे धन उपर्जन करके घरको जाकर संध्यापूजा करके सूर्यके अस्त होनेसें दो घडी पहि ले, निजवांछित न्नोजन करे. सायंकालमें धर्मागार में सामायिककरके षडावश्यक प्रतिक्रमण करे. पीछे अपने घरमें आके शांतबुद्धिवाला हुआ, जब एक पहर रात्रि जावे तब अर्हत्स्तवादिक पढके प्रायः ब्रह्मचर्यव्रतधारी होके सुखसें निद्रा लेवे. जब निद्राका अंत आवे तब परमेष्टिमंत्रस्मरणपूर्वक जिन, चक्री, आदिके चरित्रोंको चिंतन करे. और व्रता दिकोंके मनोरथ अपनी इछासे करे, ऐसें अहोरा त्रिकी चर्या अप्रमत्त होके समाचरता हुआ, और

यथावत् कहे व्रतमें रहा हुआ, गृहस्थ जी कल्याण जागी होता है. । इति व्रतारोपसंस्कारे गृहिणां दिनरात्रिचर्या ॥

वासनागुरुसामग्री, विजवो देहपाटवम् ॥
संघश्चतुर्विधो हर्षो, व्रतारोपे गवेष्यते ॥ १ ॥
वरकुसुमगंधअरकय, फलजलनेवज्जधूवदीवेहिं ॥
अठविहकम्ममहणी, जिणपूआ अठाहा होई ॥२॥

इति व्रतारोप संस्कार

## ॥ अथ अंत्य संस्कार विधिः ॥

श्रावक यथावत् व्रतोंकरके निज जवको पालके कालधर्मके प्राप्त हुए, उत्कृष्ट आराधना करे, तिस का विधि यह है. । जिन अरिहंतोंके कल्याणक स्थानोंमें, निर्जीव शुचि पवित्र स्थंमिल–जगामें, वा अरण्यमें, वा अपने घरमें, विधिसें अनशन करना. । तहां शुजस्थानमें ग्लानको पर्यंत आराधना करावनी । तथा अवश्यमेव अमुकवेला निकट मरण होवेगा ऐसें ज्ञानके हुए, तिथिवारनक्षत्रचंद्रवलादि न देखना । तहां संघका मीलना करना । गुरु, ग्लानको जेसें सम्यक्त्वारोपणमें तैसेंही नंदि करे. । नवरं इतना विशेष है सर्व नंदि देववंदन कायोत्सर्गादि पूर्वोक्त विधि 'संलेहणा आराहणा' इस नाम करके करावणा और वैयावृत्य कर कायोत्सर्गानंतर।

"॥ आराधना देवता आराधनार्थं करेमि काउ

स्सग्गं अन्नथ्थउससिएणं० जाव–अप्पाणं वोसिरामि ॥" कहके कायोत्सर्ग करना. कायोत्सर्गमें चार लोगस्स चिंतवन करना, पारके आराधना स्तुति कहनी. ॥ सा यथा ॥

यस्याः सान्निध्यतो नव्या, वांछितार्थप्रसाधकाः श्रीमदाराधना देवी, विघ्नव्रातापहास्तु वः ॥ १ ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

पीछे तिसही पूर्वोक्तविधिसें सम्यक्त्वदंडकका उच्चारण, द्वादशव्रतोंका उच्चारण करावणा. । वासक्षेपकायोत्सर्गादि नी, 'संलेखना आराधना' के आलापककरके तैसेंही जाणना. । प्रदक्षिणा करनी, ग्लानकी शक्तिके अनुसार होवे नी, और नहीं नी होवे. । दंडकादिमें 'जावनियमंपज्जुवासामि' के स्थानमें 'जावज्जीवाए' ऐसें कहना. । पीछे सर्व जीवों केसाथ अपराधकी क्षामणा करनी । पीछे श्रावक परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक गुरुके सन्मुख हाथ जोडके कहें खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे ॥

मित्ती मे सव्वनूएसु वेरं मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ गुरु कहें

"॥ खामेह जो खमइ तस्स अत्थि आराहणा जो न खमइ तस्स नत्थि आराहणा ॥" पीछे श्रावक क्षमाश्रमणपूर्वक कहें । "नयवं अणुजाणह ।" गुरु कहें "। अणुजाणामि ।" श्रावक परमेष्ठिमंत्रपाठपूर्वक कहें ।

"॥ जे मए अणंतेणं जवभ्रमणेणं पुढविकाइआ आउकाइआ तेउकाइआ वाउकाइआ वणस्सइकाइआ एगिंदिआ सुहमा वा, वायरा वा, पज्जत्ता वा, अपज्जत्ता वा, कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण पंचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, घाइआ वा, पीडिआ वा, मणेणं वायाए काएणं, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ जो मेरे जीवने अनंत जव जमते थके पृथिवी अप तेज वायु वणस्पतीके एकेंड्रिय जीव, सुक्ष्महो बादरहो पर्याप्तेहो अपर्याप्तेहो क्रोधसें, मानसें, मायासें, लोजसें, पंचेंड्रियपणे, राग सें, द्वेषसें, घातित किएहों, पीडित किएहों, तिसका मन वचन काया करके मिछामि डुक्कड हो ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके।

"॥ जे मए अणंतेणं जवभ्रमणेणं बेइंदिआ वा सुहमा वा वायरा वा० शेषं पूर्ववत् ॥" जो मेरे जीवनें अनंत जव जमते थके बेरिंड्रिय जीव, सुक्ष्म मबादर क्रोधादिकसें घातित पीडित कीए होय तिनका त्रिकोटी मि०" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके।

"॥ जे मए अणंतेणं जवभ्रमणेणं तेइंदिया सुहमा वा, वायरा वा,० शेषं पूर्ववत् ॥" जो मेनें अनंत जव जमते थके तेरिंडि जीव सुक्ष्म वा बादर क्रोधादिकसें घातित वा पीडित किए होय सो त्रिकोटी मि० ॥ [illegible] पाठपूर्वक कहे

जे मए अणंत नवनमणेण चउरिंदिया जीवा, सुहमा वा बायरावा, शेषं पूर्ववत् । जो मेनें अनंत नव नमते थके चउरिंदिय जीव, क्रोधादिकसें, घातित पीमित किए होय तिनका त्रिकोटी मिछा मि डुक्कम् हो. "॥ जे मए अणंतेणंनवन्नमणेणं पंचिंदिआ देवावा मणुआ वा, नेरइआ वा, तिर स्कजोणिआ वा, जलयरा वा, थवलयरा वा, खयरा वा, सन्निआ वा, असन्निआ वा, सुहमा वा, बायरा वा०शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें अनंत नव नमते थके पंचेंड्रिय जीव, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच, जलच र थलचर, खेचर, संज्ञी,असंज्ञी, सुक्ष्म बादर, क्रोधा, दिकसें घातित पीमित किए होय सो त्रिकोटी मिथ्या डुष्कृत हो. ॥ फिर परमेष्ठिमंत्र पाठपूर्वक श्रावक कहें ।

"॥ जं मए अणंतेणं नवन्नमणेणं अलिअं नणि अं कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोहेण वा, पंचिंदिअट्टेण वा, रागेण वा, दोसेण वा, मणेणं वायाए काएणं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ जो मेंने अनं त नव नमते थके असत्य नाषण कियाहो, क्रोधा दिक करकें सो त्रिकोटी मिथ्याडुष्कृतहो. ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके कहे ।

"॥ जं मए अणंतेणं नवन्नमणेणं अदिन्नं गहि अं कोहेण वा, माणेण वा० शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेनें

अनंत नव नमते थके अदत्त ग्रहण कियाहो क्रोधा
दि करके सो त्रिकोटीसें मिथ्याडुष्कृतहो ॥" फिर
परमेष्ठिमंत्र पढके ।

"॥ जं मए अणंतेणं नवप्नमणेणं दिव्वं माणुस्सं
तिरिछं मेहुणं सेविअं कोहेण वा माणेण वा०
शेषं पूर्ववत् ॥ जो मेने अनंत नव नमते थके देव
संबंधी, मनुष्य संबंधी, तिर्यच संबंधी, क्रोधादि
कसें मैथुन सेवन किया हो सो त्रिकोटी मिथ्या
डुष्कृतहो. ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

"॥ जं मए अणंतेणं नवप्नमणेणं अठारस्स
पावठाणाइं कयाइं कोहेण वा, माणेण वा,० शेषं
पूर्ववत् जो मेनें अनंत नव नमते थके अठारह
पापस्थानक सेवन किए हो सो त्रिकोटी मिथ्याडु
ष्कृत हो ॥" फिर परमेष्ठिमंत्र पढके ।

"॥ ज मे पुढविकायगयस्स सिलालेठुसक्करास
न्हावालुआगेरिअसुवन्नाइमहाधाउरूवं सरीरं पाणि
वहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीकणे पाववद्दणे मिठत्तपो
सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि॥"
जो मेराजीव पृथवी कायगत होके शिला पत्थर कांक
रे रेती वालुका मट्टी सुवर्णादि सप्त धातु रूप शरी
र वान् होके, प्राणिवध, प्राणि संघात, प्राणि पीकन,
पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थानमे लगा होय

तिनकों निंदताहुं गर्हा करताहुं और तिन पापोंकों त्याग करताहुं "

"॥ जं मे पुढविकायगयस्स सिलालेठुसक्करासन्हा वालुआगेरिअसुवन्नाईसहाधाउरूवं सरीरं अरिहंतचेइएसु अरिहंतबिंबेसु धम्मठाणेसु जंतुरक्कणठाणेसु धम्मो वगर णेसु संलग्ग तं अणुमोआमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो में पृथ्वीकायगत शिल्ला पछर कांकरे वालुकारेती माटी सुवर्णादि सप्तधातु रूप शरीर हो के अरिहंत चैत्यमें अरिहंत बिंबमें, धर्म स्थानमें, जीव रक्षण स्थानमें, धर्मोपकरणमें, लगा होउं तो तिनकों अनुमोद ताहुं कल्याण कारक जाणके आ नंदित होता हुं ॥" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ जं मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआ ओस्साहिमहरतणुरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघ ट्टणे पाणिपीरूणे पाववढ्ढणे मिछत्तपोसणे ठाणे संल ग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥"

जो में अपकायगत पानी करा हिम ठार ओस हेम हर तनुरूप शरीर होके प्राणि वध, प्राणि संघा त, प्राणि पीरूक, पाप वर्धक, मिथ्यात्व पोषक स्थान में, लगा होउं तो तिनपापकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं '

"॥ जं मे आउकायगयस्स जलकरगमहिआओ स्साहिमहरतणुरूवं सरीरं अरिहंतचेइएसु अरिहं

तविंवेसु धम्मठाणेसु जतुरक्कणठाणेसु धम्मोवगर णेसु जिणन्हाणेसु तन्हदाहावहरणेसु संलग्गं तं अणु मोआमि कल्लाणेणं अजिनंदेमि ॥ जो में उपरोक्त अप्काय होके अर्हत् चैत्यमे, अर्हत् विंबमें, धर्म स्थानमें, जीव रक्षाकाममें, धर्मोप करण कार्यमें, स्नात्राजिपे कमें, तृषादाह शमनमे, लगा होउं तो तिनकों अनुमोदताहुं ॥ " फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ जं मे तेउकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर जालाअलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि संघट्टणे पाणिपीडणे पाववट्टणे मिछत्तपोसणे ठाणे संसग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ " " जो में अग्नी कायगत अग्नि इंगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्र सहित विद्युत् उल्का रूप शरीर होके प्राणिवधमें, प्राणि संघातनमे, प्राणि पीमनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व पोषककें स्थानमें, लगा होउं तिनकों, निंदा गर्हासें त्यागताहुं "

"॥ जं मे तेउकायगयस्स अगणिइंगालमम्मुर जाला अलायविज्जुउक्कातेअरूवं सरीरं सीआवहारे जिणपूआधूवकरणे नेवेज्जपाए जुल्हाहरणाहारपाए संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अजिनंदेमि ॥" "जो में अग्नीकाय गत अग्नि इंगाला मुर्मुर ज्वाला धूम्रसहित विद्युत् उल्का रूप शरीर होके, ठंमी दूर करनेमे, जिनराजके आगे धूप करनेमे, पूजाके उप

योगमें, नैवेद्य काममें, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकों अनु मोदताहुं कल्या ण कारक जाणके आनंदित होताहुं " फिर परमेष्ठि मंत्र पढके ।

"॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउझंझासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पावबट्टणे मिछत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

" जो में वायु कायगत शुद्धवायु झंझावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥ "

"॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउझंझासासरूवं सरीरं पाणिरक्कणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु झंझावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शांतिके कारणमें, लगाहोउं तिन कों अनु मोदताहुं, कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं " फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंदखंधसाहापत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीडणे पाववड्ढणे मिछत्तपोसणे ठाणे

ग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में
स्पती कायगत मूल डाल काष्ट पत्र पुष्प फल
ज रस अरु रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि
ातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व
क स्थानोमें, लगा होवे तिनकों निंदा गर्हा
के त्याग करता हुं"

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंदुबल्लिपत्त
फफलबीअरसनिज्जासरूवं सरीरं दुहाहरणेसु अरि
चेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जाकरणेसु जंतुर
णठाणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अज्जि
मि॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ट डाल पत्र
प फल बीज रस अरु रूप शरीर होके क्षुधादूर
रनेंमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैव
करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होवे तिन
ं अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनं
त होता हुं" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअट्ठिमज्जा
क्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघ
णे पाणिपीडणे पाववद्धणे मिच्छत्तपोसणे ठाणे संल
गं तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में त्रस
काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म,
रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि
संघातनमें, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

योगमें, नैवेद्य काममें, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकां अनु मोदताहुं कल्या ण कारक जाणके आनंदित होताहुं " फिर परमेष्टि मंत्र पढके ।

"॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउऊंझासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाववद्दणे मिछत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

" जो में वायु कायगत शुद्धवायु ऊंझावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥ "

"॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउऊंझासासरूवं सरीरं पाणिरक्कणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु ऊंझावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शांतिके कारणमें, लगाहोउं तिन को अनु मोदताहुं, कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं " फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंठबल्लिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीडणे पाववद्धणे मिछत्तपोसणे ठाणे

संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मैं वनस्पती कायगत मूल छाल काष्ट पत्र पुष्प फल वीज रस थरू रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीडनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हुं "

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकठ्ठछल्लिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्जासरूवं सरीरं तुहाहरणेसु अरिहंतचेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जाकरणेसु जंतुरक्खणठाणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो मैं वनस्पती कायगत मूल काष्ट छाल पत्र पुष्प फल वीज रस थरू रूप शरीर होके क्षुधादूर करनेमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैवद्य करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउं तिनकों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हुं " फिर परमेष्टिमंत्र पढके ।

" जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जा सुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीडणे पाववद्दणे मिछत्तपोसणे ठाणे संलग्गं तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मे त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमे, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे,

योगमें, नैवेद्य काममें, क्षुधाहरण आहार पाणिके उपयोगमें, लगा होउं तिनकों अनु मोदताहुं कल्या ण कारक जाणके आनंदित होताहुं" फिर परमेष्ठि मंत्र पढके।

"॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउझंझासासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाववड्ढणे मिछत्तपो सणे ठाणे संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि

" जो में वायु कायगत शुद्धवायु झंझावायु श्वास रूप वायु शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, पापवर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषणके कारणमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्यागताहुं ॥"

"॥ जं मे वाउकायगयस्स वाउझंझासासरूवं सरीरं पाणिरक्खणे पाणिजीवणे साहूण वेयावच्चे धम्मावहारे संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभि नंदेमि ॥ जो में वायुकायगत, शुद्धवायु झंझावायु श्वास वायुरूप शरीर होके प्राणि रक्षणके कार्यमे, प्राणि जीवनके कारणमें, साधुओंकी वैय्यावच्चके काममें, गर्मीकी शांतिके कारणमे, लगाहोउं तिन कों अनु मोदताहुं, कल्याण कारक जाणके आनं दित होता हुं" फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकंठवल्लिपत्त पुप्फफलवीअरसनिज्झासरूवं सरीरं पाणिवहे पाणि सघट्टणे पाणिपीलणे पाववड्ढणे मिछत्तपोसणे ठाणे

संलग्गं तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल डाल काष्ट पत्र पुष्प फल बीज रस थरू रूप शरीर होके प्राणि वधमे, प्राणि संघातनमें, पाणि पीरूनमें, पाप वर्द्धनमें, मिथ्यात्व पोषक स्थानोमें, लगा होउं तिनकों निंदा गर्हा करके त्याग करता हुं "

"॥ जं मे वणस्सइकायगयस्स मूलकठ्ठडल्लिपत्त पुप्फफलबीअरसनिज्जासरूवं सरीरं छुहाहरणेसु अरिहंतचेइअपूयणेसु धम्मठाणेसु नेवज्जकरणेसु जंतुरक्खणठाणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो में वनस्पती कायगत मूल काष्ट डाल पत्र पुष्प फल बीज रस थरू रूप शरीर होके क्षुधादूर करनेंमे, अर्हत् प्रतिमाके पूजनमें, धर्म स्थानमें, नैवय करनेमें, जीव रक्षाके कारणमें, लगा होउं तिनकों अनु मोदताहुं कल्याण कारक जाणके आनंदित होता हुं " फिर परमेष्टिमंत्र पढके।

" जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठिमज्जासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं पाणिवहे पाणिसंघट्टणे पाणिपीडणे पाववड्ढणे मिछत्तपोसणे ठाणे संलग्गं तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस मज्जा मेद शुक्र चर्म, रोम नख नसा रूप शरीर होके प्राणि वधमें, प्राणि संघातनमें, प्राणि पीडनमे, पाप वर्द्धनमे, मिथ्यात्व

पोषणमे लगा होउं तिनकों निंदापूर्वक त्यागताहुं ”

“ जं मे तसकायगयस्स रसरत्तमंसमेअअठि मज्जासुक्कचम्मरोमनहनसारूवं सरीरं अरिहंतचेइएसु अरिहंतबिंबेसु धम्मठाणेसु जंतुरक्कणठाणेसु धम्मो वगरणेसु संलग्गं तं अणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो में त्रस काय गत रस रुधीर मांस हाड चरवी शुक्र चर्म रोम नखरूप शरीर होके अर्हच्चैत्यमें, अर्हत् बिंबमें, धर्म स्थानमे, जंतु रक्षामे, धर्मो पकणमें लगा होउं तिनकों अनु मोदके आनंदित होता हुं ॥ ” फिरपरमेष्टिमंत्र पढके ।

“ ॥ जं मए इह नवे, मणेणं वायाए काएणं डुठं चिंतिअं, डुठं भासिअं, डुठं कयं, तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जो मेनें इह नवमें अनंत नव भ्रमणमें मन वचन काया करके डुष्ट विचार कियाहो डुर्वचन वोलेहो, डुष्ट प्रवृत्ति करीहो तिनकों निंदा पूर्वक त्याग करताहुं ”

“ ॥ जं मए इह नवे, मणेणं वायाए काएणं सुठु चिंतिअं, सुठु नासिअं, सुठु कयं, तं अणुमोणुमोएमि कल्लाणेणं अभिनंदेमि ॥ जो मेने इह नवमें, अनंत नव भ्रमणमें, मन वचन काया करके श्रेष्ट विचार कियाहो, श्रेष्ट नाषा वोली हो, श्रेष्ट प्रवृत्ति करीहो तिनकी अनु मोदना करताहुं, कल्याण कारक जानके आनंदित होताहुं ॥ ”

यहां पहिलां समारोपितसम्यक्त्व व्रतको नी फिर सम्यक्त्व व्रतारोप करना. और जिसको पहिलें सम्यक्त्व व्रतारोप न करा होवे, तिसको नी अंतकालमें सम्यत्व व्रतारोप करना योग्य है. । जिसको पहिलां व्रतारोप करा होवे, तिसको इस अंत समयमें एकशोचौवीस अतिचारोंकी आलोचना करानी. । वे अतिचार आवश्यकादि सूत्रोंसे जान लेने.' पीछेआलोचनाविधि करना, सो प्रायश्चित्तविधिसें जानना. । पीछे गुरु सर्व संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके शिरमें निक्षेप करे ॥

॥ इति अंत्य संस्कारे आराधना विधिः ॥

पीछे ग्लान ( रोगी—बीमार ) क्षमाश्रमण परमेष्टिमंत्र पाठपूर्वक कहे ॥

आयरियउवझ्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥
जे मे कया कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सवस्स समणसंघस्स, नगवओ अंजलिं करियसीसे॥
सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥
सवस्स जीवरासिस्स,नावर्ज धम्म निहियनियचित्तो॥
सवं खमावइत्ता, खमामि सवस्सअहयंपि ॥ ३ ॥

“॥ नयवं जं मए चउगइगएणं देवा तिरिआ मणुस्सा नेरइआ चउकसाओवगएणं पंचिंदिअवस हेणं इहम्मि नवे अन्नेसु वा नवग्गहणेसु मणेणं वायाए काएणं दूमिआ संताविआ अनिताइया तस्स

मिछामि दुक्कडं जेहिं अहं अभिद्रूमिओं संताविओ अभिद्दओ तमहंपि खमामि ॥ ”

पीछे गुरु दंमकसहित इन तीनों गाथाका विस्तारसें व्याख्यान करे। पीछे ग्लान, गुरु साधु साध्वी श्रावक श्राविकायोंको प्रत्येकक्षामणां करे. । यहां गुरुओंको वस्त्रादि दान, और संघको पूजासत्कार जानना ॥ इत्यंतसंस्कारे क्षामणाविधिः ॥

अथ मृत्युकालके निकट हुए, ग्लान, पुत्रादिकोंसें जिनचैत्योंमें महापूजा स्नात्रमहोत्सव ध्वजारोपादि करावे, चैत्यधर्मस्थानादिमें धन लगावे.। पीछे परमेष्ठिमंत्रोच्चारपूर्वक पढे.।

जे मे जाणंतु जिणा, अवराहा जेसु २ ठाणेसु ॥
तेहं आलोएमि, उवट्ठिओ सव्वकालंपि ॥ १ ॥
छउमछो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो ॥
जं च न सुमरामि अहं, मिछामि दुक्कडं तस्स ॥२॥
जं जं मणेण बद्धं, जं जं वायाइ नासिअं किंचि ॥
जं जं काएण कयं, मिछामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मझ न केणइ ॥ ४ ॥

पीछे तीन नमस्कार पाठपूर्वक कहें ।

“ ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो, मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगु

त्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगु त्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पव ज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पव ज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं, सरणं, पवज्जामि ॥"

यह पाठ तीन वार पढे । पीछे गुरुके वचनसें अष्टादश ( १८ ) पापस्थानकोंको वोसरावे यथा.

" ॥ सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि । सव्वं मुसावायं पच्चक्खामि । सव्वं अदिन्नादाणं प० । सव्वं मेहुणं प० । सव्वं परिग्गहं प० । सव्वं राईभोअणं प० । सव्वं कोहं प० । सव्वं माणं प० । सव्वं मायं प० । सव्वं लोहं प० । पिज्जं प० । सव्वं दोसं कलहं अब्भक्खाणं अरईरईपेसुन्नं परपरिवायं मिच्छादसंणसल्लं इच्चेइआइं अठारस पावठाणाइं दुविहं तिविहेणं वोसिरामि अपच्छिमम्मि ऊसासे तिविहं तिविहेणं वोसिरामि॥"

पीछे गीतार्थगुरु, श्रीयोगशास्त्रके पांचमे प्रकाशके कथनसें, और कालप्रदीपादिशास्त्रके कथनसें, ग्लानके आयुका क्षय जानके* (भक्तप्रत्याख्यानप्रकीर्णक शास्त्रमें लिखा है कि, यदि कोइ तथ्यज्ञानी कहे, अथवा कोइ सम्यग्दृष्टी देवता कहे कि, अमुकदिन तेरा अवश्य मरण है, तवतो अपना संहननधृतिवल जानके यावत् जीवका अनशन करना. परंतु, जो कोइ मरणदिनके निश्चयविना यावत् जीवका अनशन करे, करावे, सो आत्मघाती साधुश्रावक

घाती पंचेंद्रियघाती है;) (कालज्ञानके विषयमे कितने क शास्त्रोमे एसे लक्षण लिखेहें कि निरंतर पंदरे दिन सूर्यनाडी प्रातःकाल वहे तो पनरे दिनका आयु. एक मास तक प्रातःकाल सूर्यनाडी वहे तोषट् मासायु. पांचदिन अखंड सूर्य नाडी वहे तो ३ मासायु. वायु की नाडि पित्तके स्थानमे, पित्तकी नाडी कफके स्थानमे,कफ कंठमे आवे तो रोगी बचेगा नही. मस्तक गरम हृदय, नाभि, नाशिका हाथ पग ठंडे रहे तो मरण. उश्वास गरम व नीश्वास ठंडा वहे तो मरण. अंग कंप, गतिभंग, शरीरका वर्णका बदलना, स्वाद वा गंधकों न समजे तो अवश्य करण जाणना, हाथ पावकी घुटी,कपोल,गलेके पासकी नाडी चलनी रुक जाय वा मंद पडजाय तो मरण कहना. जो अपनी जिव्हाग्र, नासाग्र, भ्रुकुटी, न देखेतो मरण. अपनी तीन अंगुली मुखमें न जावे तो मरण. भ्रुकुटी न दीखे तो सातदिन, कर्णश्वर न सूने तो पाच दिन कों मरण होना समजना. जिव्हा काली पडे वा, मुख लाल हो जाय तो मरण. पिसावकी धारामें बिंदु होजाय वा वीर्यपात हो जाय तो सातमे दिन मरण. नाडीयोंका मंद पडना, इंद्रियोंके विषयका न समजना,गतीका भंग होना,कंठमें कफका रुकना, नाशिकाके पवनका ठंडा वहना, नाशिका टेडी होना, जमणी भूजा मे ऊर्ध्व श्वासका वहना यह

तात्कालिक मरणके चिन्ह जाणने ॥ रोगी दर्पणमें अपना मस्तक न देखे तो अवश्य मरे. भरणी, मघा, अश्लेषा, मूल, कृत्तिका, जेष्टा, आर्द्रा, शत भिषा, तीनपूर्वा, यह नक्षत्रमे मांदा पडेतो रोगी न वचे. जिस्का वलगम चिकना होके गलेसें छुटे नहीं तो समजो कि अब आयुष्य बिलकुल कम है. जिस्कों छीक आनेके साथ झाडा पेसाब हो जावे तो, जिस्की जबानपर कांटे आ जावे, वा काली पडजावे व अवाज न देशके तो, जानो तीन रोजका जीनाहै. जिस्की नेत्रोंकी एकवा दोनोहि पुतली फिरजाय वा नेत्रो सें दिखाइ न देवे तो जानो कि मरना नजीक है. जिस्के हाथ फेरके वीसोनख काले पडजाय, हाथ पेरमें ठंडाइ होके शिरमे गरमी आजाय तो जानो मरना नजीक आया. जिस्का उच्चार शुद्ध न हो, नेत्रोमें रोशनी नहो, कानोंसे सुनना, नाकसें खुश वो लेना, वंध हो जाय, अनामीका उंची नउपड शके, तो जानोकी अवश्य अपना काल समय नजीक है. यद्यपि यह लक्षणोंसे प्रायः मरणका निश्चय होजोता हि है तथापि कोइ अतिशय ज्ञानी वा देवादिकोंके यथातथ्य वचन सिवाय अनागर अणशन उच्चराने कि आज्ञानहीहै. इसलिये सागारी अनशन कराना उचितहै) संघ की, ग्लानके संवंधियोंकी, तथा नगरके राजादिकी अनुमति लेके, अनशनका उच्चार कराना.

ग्लान, शक्रस्तव पढके तीनवार परमेष्ठिमंत्रको पढके गुरुके मुखसें उच्चरे. । यथा.

" ॥ जवचरिमं पच्चक्कामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥" इति सागारानशनम् ॥

अंतर्मुहूर्त्त शेष रहे हूए, निरागार अनशन कराना.॥ यथा ॥

" ॥ जवचरिमं निरागारं पच्चक्कामि, सव्वं असणं, सव्वं पाणं, सव्वं खाइमं, सव्वं साइमं, अन्नात्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, अईयं निंदामि, पम्पुिन्नं संवरेमि, अणागय पच्चक्कामि, अरिहंतसक्खियं, सिद्धसक्खियं, साहुसक्खियं देवसक्खियं, अप्पसक्खियं, वोसिरामि ॥"

जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्स इमाइ वेलाए ॥ आहारमुवहिदेहं, तिविहं तिविहेण वोसिरिअं ॥१॥

तब गुरु "निछारगपारगो होहि" ऐसें कहता हुआ संघसहित वासअक्षतादि ग्लानके सन्मुख क्षेप करे. । शांतिके वास्ते 'अष्ठावयंमि उसहो' इत्यादि स्तुति पढे. और, 'चवणं जम्मणभूमी' इत्यादि स्तव पढे. । गुरु निरंतर ग्लानके आगे तीनभुवनके चैत्योंका व्याख्यान करे, अनित्यतादि बारां भावनाका व्याख्यान करे, अनादिभवस्थितिका व्याख्यान करे, अनशनके फलका व्याख्यान करे. । और

संघ गीतनृत्यादि उत्सव करे. । ग्लान जीवितमरण की इच्छाको त्यागके समाधिसहित रहे. । पीछे अंतर्मुहूर्त्तके आयां, ग्लान "सवं आहारं, सवं देहं, सवं उवहिं, वोसिरामि" ऐसें कहें । पीछे ग्लान पंचपरमेष्टिस्मरणश्रवणयुक्त शरीरको त्यागे ॥

॥ इति अनशनविधिः ॥

## ॥ अग्निसंस्कार विधि. ॥

मरणकालमें ग्लानको कुशाकी शय्याऊपर स्थापन करना । " । जन्ममरणे नूमावेव इति व्यवहारः । "

अथ सर्वनावके नोक्ता कर्मके जोमनेवाले चेतनारूप जीवके गये हुए, अजीव पुजलरूप तिसके शरीरको सनाथता ख्यापनार्थ, तिसके पुत्रादिकोंके वास्ते, तीर्थसंस्कारविधि कहते है । सर्व ब्राह्मणको शिखा वर्जके शिर दाढी मूंछ मुंमन कराना चाहिये, कितनेक क्षत्रियवैश्यको नी कहते हैं. । तथा शवका संस्कार सर्व स्ववर्ण ज्ञातियोंने करना, अन्यवर्ण ज्ञातिवालोंने तिसका स्पर्श नहीं करना. । पीछे गंध तैलादिसें और जले गंधोदकसें शवको स्नान करना, गंधकुंकुमादिसें विलेपन कराना, मालापहिराना स्वस्वकुलोचित वस्त्राजरणासें विनूषित करना शूद्र जातिकों सर्वथा मुंमन नहीं. । पीछे नवीन काष्ठकी पगविनाकी कुश संथरी जले वस्त्रसें ढांकी

हुई शय्याके ऊपर, शय्याके उपकरणसहित, शवको स्थापन करना। यहां गृहस्थके मृत्युनक्षत्रके नक्षत्रपूतलेका विधान, कुशपुत्रादिविधि यतिकीतरें जानना. नवरं कुशपुत्रक गृहस्थवेषधारी करणे * वर्णानुसार तिसके ऊपर नानाविध वस्त्र सुवर्ण मणि विचित्र वस्त्रका करा प्रासाद (मांडवी) स्थापन करना। पीछे स्वज्ञातीय चारजणे परिजनके साथ स्कंधऊपर उठाए शवको, स्मशानमें ले जावे.। तहां उत्तरभागमें शवका शिर रखके चितामें स्थापन करके, पुत्रादि अग्निसें संस्कार करे.। अन्न नही खानेवाले बालकोंको भूमिसंस्कार करना। तहां प्रेतप्रतिग्राहियोंको दान देना। पीछे सर्व स्नान करके, अन्यमार्ग होकर अपने घरको आवे. तीसरे दिनमें चिताभस्मका, पुत्रादि नदीमें प्रवाह करावे.। तिसके हाड तीर्थोंमें स्थापन करे.। तिसके अगले दिनमें स्नान करके शोक दूर करे.। जिनचैत्योंमें जाके, परिजनसहित जिनबिंबको विना स्पर्शे, चैत्यवंदन करे.। पीछे उपाश्रयमें आके गुरुको नमस्कार करे गुरु भी संसारकी अनित्यतारूप

---

* रोहिणी, विशाखा, पुनर्वसु, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तरा भाद्रपद, ए छ नक्षत्रमेंसें कोइभी एक नक्षत्र मरण समय होय तो दर्भके दो पुतले बनाके मीनामीके साथ रखणा. जेष्टा, आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा, भरणी, अश्लेषा ए छ नक्षत्रमेंसें कोइभी होय तो पुतले न करना. और दुसरे १५ नक्षत्रमेंसें कोइ नक्षत्र होय तो एक पुतला करना.

धर्मदेशना करे. । पीछे स्वस्वकार्यमें सर्व तत्पर होवे. । अंत्य आराधनासें लेके, शोक, दूर करनेतक मुहूर्त्तादि न देखना, अवश्य कर्त्तव्य होनेसें. । यमलयोगमें, त्रिपुष्करयोगमें, मृगशिर । चित्रा । धनिष्ठा । मंगल । गुरु । शनि । २ । १२ । ७ । इतित्रयाणां योगे यमलयोगः ॥ कृतिका । पूर्वाफाल्गुनी । विशाखा । उत्तराषाढा । पूर्वाभाद्रपदा । पुनर्वसु । मंगल । गुरु । शनि २ । १२ । ७ । इति त्रिपुष्करयोगः ॥ कृतिका । विशाखा । भरणी । इति मिश्रनक्षत्राणि ॥ भरणी । मघा । पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा । पूर्वाभाद्रपदा इति क्रूरनक्षत्राणि ॥ रोहिणी । उत्तराफा० । उत्तराषा० । इति ध्रुवनक्षत्राणि ॥ आर्द्रा, मूल, अनुराधा, मिश्र, क्रूर और ध्रूव, इन नक्षत्रोमें प्रेतक्रिया नही करनी । धनिष्ठासें लेके पांच नक्षत्रोंमें तृणकाष्ठादि संग्रह नही करना । शय्या, दक्षिणदिशकी यात्रा, मृतक कार्य, गृहोद्यम, ( घर बनाना ) आदि नही करना. । रेवती, श्रवण, अश्लेषा, अश्विनी, पुष्प, हस्त, स्वाति मृगशिर, इन नक्षत्रोंमें, और सोम, गुरु, शनी, इन वारोंमें प्रेतकर्म करना बुद्धिमान् कहते हैं. । स्वस्व वर्णके अनुसार जन्ममरणका सूतक एकसदृश होता हैं ब्राह्मण,क्षत्रीय,वैश्यकों पुरुषोका दश और स्त्रीका एकादश दिन सूतक होता है. परदेशका जन्म मरण सूतक धार्मिक

कार्यमे बाधकारी न होता है. और गर्नपातमें तीन दिनका सुतक होता है. अन्य वंशवालेके मृत्यु हुए, वा जन्म हुए विवाहित पुत्रिकों सूतकवालेके अन्न के खानेसें, इन सर्वमें तीनदिनका सूतक होता. है.। अन्न नही खानेवाले बालकका सूतक तीन दिनका होता है । आठ वर्षसें कम ऐसें बालकका नी त्रिना गोन सूतक होता है. स्वस्ववर्णानुसार सूतकके अंत में जिनस्तव महोत्सवादि और साधर्मिकवात्सल्या दि करना, जिससेंकल्याणप्राप्ति होवे. ॥

इति अंत्य संस्कार विधिः ॥

तत् समाप्ते समाप्तोयं अष्टम परिछेदः

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहित निरता नवंतु नूत गणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखिनो नवंतु लोकाः ॥ लेखकपाठकयोः शिवमस्त्वीति ॥

॥ इति प्रथम विनागः समाप्तः ॥